परम पूज्य राष्ट्र सन्त दिगम्बराचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी महाराज के सुयोग्य शिष्य एवं परम पूज्य गणधराचार्य श्री 108 कुन्थुसागर जी महाराज द्वारा दीक्षित वात्सल्य दिवाकर, प्राकृत एवं पांडुलिपि के मर्मज्ञ, निस्पृह, निर्द्वन्द शान्तमूर्ति, जन-जन वन्दनीय, सदा करुणा और वात्सल्य का अभीरस बरसाते, तेजस्वी, आत्मीय, आशीष मुद्रा में वरदान की सुधा वृष्टि करता हुआ, ऊपर उठा हाथ, शुचिता एवं सौम्यता, बाल सुलभ ऋजुता के अस्तित्व परम पूज्य एलाचार्य श्री 108 श्रुतसागर जी मुनिराज को कोटि-कोटि नमन्।

श्रद्धासमर्पण

श्री उम्मेदमल जी शाह जैन

गुणमाला देवी (गिरडीड वाले)

पुत्रवधु रेणु शाह धर्मपत्नी विमलशाह, सूर्यनगर

आचार्य गृद्धपिच्छ-उमास्वामी-प्रणीत

तत्त्वार्थसूत्र

व्याख्या-प्रमुख

एलाचार्य श्री श्रुतसागर जी मुनिराज

संपादन एवं प्रस्तावना

डॉ. सुदीप जैन

उपाचार्य, प्राकृतभाषा विभाग,

श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

(मानित विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली-110016

प्रकाशक

पारस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN : 978-93-80216-03-04

तत्त्वार्थसूत्र

• प्रकाशक : पारस प्रकाशन
एन-81, उल्धनपुर, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
फोन : 9818394651, 9811374961

मूल-लेखक : आचार्य गृद्धपिच्छ-उमास्वामी
व्याख्या-प्रमुख : एलाचार्य श्री श्रुतसागर जी मुनिराज
सम्पादन एवं प्रस्तावना : डॉ. सुदीप जैन
सम्पादन-सहयोग : श्रीमती रंजना जैन
संकलन : श्रीमती सरोज जैन
सहयोगी : पं. सचिन जैन, विजय शास्त्री
प्रूफ-सहायक : श्री प्रभात कुमार दास

• संस्करण : षष्ठम/1100 प्रतियाँ

• प्राप्ति स्थल :
1. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कासन, जिला गुड़गाँव (हरियाणा)
2. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, नजफगढ़, दिल्ली

TATTVARTHSUTRA

(A Jain Termonolgical Prose)

Author : H.H. Acharyashree Gridhpichh Umaswami
Vyakhya-Pramukh : Ailacharya Shree Shrutsagar Ji Muniraj
Editing & Preface : Dr. Sudeep Jain

Edition : Sixth/1100 Copies
Pulished by : ***PARAS PARKASHAN***

विषय-अनुक्रमणिका

मंगल-आशीर्वचन

पढमचउक्के पढमं, पंचमे जाण पोंग्गलं तच्चं।
छह-सत्तमेसु आसव, अट्ठमे बंध णावव्वो।।
णवमे संवर-णिज्जर, दहमे मोंक्खं वियाणाहि।
इय सत्त-तच्च भणिदं, जिणवर-पणीदं दहसुत्तं।।

जैन-दर्शन के सम्पूर्ण-तत्त्वज्ञान को सूत्रात्मक-शैली में एक संक्षिप्त-ग्रन्थ में समाहित करनेवाला 'तत्त्वार्थसूत्र' अनुपम ग्रन्थरत्न है। प्रातःस्मरणीय आचार्य गृद्धपिच्छ उमास्वामी ने आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व इस महान् ग्रन्थ की रचना की थी। शिलालेखों से एवं अन्य प्रमाणों से सिद्ध हो जाता है कि आचार्य उमास्वामी युगप्रधान आचार्य कुन्दकुन्द के साक्षात्-शिष्य थे।

तत्त्वार्थसूत्र में मात्र दस-अध्यायों के द्वारा जीव-अजीव आदि सात-तत्त्वार्थों का तथा इनसे सम्बद्ध जैन-तत्त्वज्ञान का अभूतपूर्व-ढंग से निरूपण किया गया है। मात्र इस ग्रन्थ का भली-भाँति अध्ययन कर कोई भी व्यक्ति जैन-सिद्धान्त का ज्ञाता बन सकता है। इसके सूत्र भले ही छोटे-छोटे हैं, फिर भी इनमें इतनी गहराई है कि टीकाकारों ने हजारों श्लोकप्रमाण इसकी टीकायें लिखीं; तब भी वे और अधिक कहने की आवश्यकता का अनुभव करते रहे। इस ग्रन्थ की आचार्य पूज्यपाद देवनन्दि-विरचित 'सर्वार्थसिद्धि' नामक टीका, आचार्य भट्टाकलंकदेव-विरचित 'तत्त्वार्थराजवार्तिक' नामक वार्तिक-ग्रन्थ तथा आचार्य विद्यानन्द स्वामी-विरचित 'तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक' नामक श्लोकमय विशाल-वार्तिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। तथा आचार्य समन्तभद्र द्वारा रचित 'गन्धहस्तिमहाभाष्य' नामक भाष्य-ग्रन्थ की सूचना मिलती है, किन्तु यह अनुपलब्ध है।

श्रावक-श्राविकाओं को इस ग्रन्थ का विषय सरलता से समझ में आ सके, इसलिये हिन्दी-भाषा में सरल-प्रश्नोत्तरों के द्वारा इस संस्करण में समझाया गया है। इसके सम्पादन एवं संशोधन में धर्मानुरागी विद्वान् डॉ. सुदीप जैन ने भरपूर श्रम किया है, अतः उन्हें मैं मंगल-आशीर्वाद देता हूँ। अन्य सभी सहयोगीजनों को भी मेरा बहुत-बहुत मंगल-आशीर्वाद है।

— *उपाध्याय श्रुतसागर मुनि*

अक्षय-तृतीया, 15 मई 2002

प्रकाशकीय

परम पूज्य उपाध्याय श्री श्रुतसागर जी के पावन-सान्निध्य में एक बार 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ का शिक्षण प्राप्त किया, तब मैं इस ग्रन्थ के माहात्म्य से परिचित हुआ। 'तत्त्वार्थसूत्र' की महिमा समाज में अनेक बार सुनी थी, किन्तु इसे पंक्तिशः पढ़कर एक-एक शब्द की विशद-व्याख्या समझना, और सरल-प्रश्नोत्तर शैली में इसके विषय को याद करना एक चिरस्मरणीय सुखद-अनुभूति की भाँति रहा।

मुझे लगा कि यदि यह ग्रन्थ इसी प्रकार अनुवाद एवं सरल-संक्षिप्त भाषा शैली के प्रश्नोत्तरों के साथ सुसम्पादित होकर प्रकाशित हो जाये तो विद्यार्थियों से लेकर समाज के हर वर्ग के लोग इससे लाभान्वित हो सकेंगे, तथा लोगों में जैनाचार्यों के ग्रन्थों के प्रति अनुराग बढ़ेगा।

इस निमित्त मैंने पूज्य उपाध्याय श्री श्रुतसागर जी से अनुरोध करके अपनी भावना व्यक्त की तो उन्होंने अत्यन्त-कृपापूर्वक इसका अनुवाद करके इसके प्रश्नोत्तरों को भी लिपिबद्ध कर दिया। फिर पूज्य उपाध्याय श्री के संकेतानुसार इस ग्रन्थ को सुसम्पादित कर प्रकाशित करने के लिये विशिष्ट-विद्वान् डॉ. सुदीप जैन से अनुरोध किया। तब उन्होंने इसकी सामग्री को लेकर सुसम्पादित कर विशद-प्रस्तावना के साथ इसे कम्प्यूटर पर सुव्यवस्थित कराकर प्रकाशन के योग्य बनाया।

इस सारस्वत-संकल्प का सम्पूर्ण-श्रेय परम पूज्य उपाध्याय श्री श्रुतसागर जी मुनिराज का है, अतः मैं उन्हें सविनय त्रिबार 'नमोऽस्तु' करता हूँ। गरिमापूर्ण-सम्पादन, प्रस्तावना-लेखन एवं संशोधन के लिये डॉ. सुदीप जैन के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। ग्रन्थ की लोकप्रियता व उपयोगिता के देखते हुए द्वितीय संस्करण की आवश्यकता अति आवश्यक हो गयी। प्रथम संस्करण में रह गयी कुछ त्रुटियों को द्वितीय संस्करण में सुधार के लिये मैं श्री विजय शास्त्री को धन्यवाद देता हूँ, तथा अति सुन्दर मुद्रण कार्य के लिये श्री प्रमोद जैन, पारस प्रकाशन का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

साथ ही आशा करता हूँ कि प्रथम संस्करण की तरह ही द्वितीय संस्करण समाज के लिये व्यापक-उपयोगी सिद्ध होगा तथा सभी लाभान्वित होंगे।

- *इं. प्रवीण जैन, बी.ई.,*

बसंत कुंज, नई दिल्ली

प्राचीनकाल में भारतीय दर्शनों एवं अन्य ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों में विभिन्न-विषयों के विशेषज्ञ मनीषियों ने अपने विषय को 'गागर में सागर' की तरह संक्षेप में एक कृति में समाहित करने की दृष्टि से सूत्र-ग्रन्थों की रचना की। 'धर्म' से लेकर 'काम' तक हर विद्या में सूत्रग्रन्थ मिलते हैं। यहाँ विवक्षित विषय 'दर्शन' होने से इस क्षेत्र में विचार करें, तो प्राय: समस्त भारतीय दर्शनों में प्रधान-परिचायक-ग्रंथ के रूप में व्यापक विचार-विमर्शपूर्वक विभिन्न दर्शनों के सूत्रग्रन्थ रचे; यथा—सांख्यदर्शन का 'सांख्यसूत्रम्', वैशेषिक दर्शन का 'वैशेषिकसूत्रम्', न्यायदर्शन का 'न्यायसूत्रम्' तथा योगदर्शन का 'योगसूत्रम्' आदि। जैन एवं बौद्ध दर्शनों के सूत्रात्मक-शैली में ही लिखे गये थे; यथा — 'छक्खंडागमसुत्त' (षट्खण्डागमसूत्र) तथा 'लंकावतारसूत्र' आदि।

किन्तु जहाँ वैदिक-परम्परा के वैशेषिकादि-दर्शनों के सूत्रग्रन्थ जहाँ संस्कृत-भाषा में निबद्ध थे, वहीं जैन सूत्र-ग्रन्थ 'प्राकृतभाषा' में निबद्ध थे तथा बौद्ध सूत्र-ग्रन्थ 'पालि' (मागधी) भाषा में रचे थे। उस युग की यह एक अन्य विशेषता थी कि जहाँ वैदिकजन संस्कृतभाषा को ही लेखन एवं संभाषण का माध्यम बनाते थे; वहीं जैनों एवं बौद्धों ने जनभाषाओं/लोकभाषाओं को अपने ग्रन्थों का आधार बनाया। किन्तु जहाँ जैन एवं बौद्ध लेखनगण संस्कृतभाषा में भली-भाँति समझने, बोलने, लिखने में समर्थ होते हुये भी 'जनसामन्य को तत्त्वज्ञान का प्रतिबोधक हो सके' — इस पावन उद्देश्य से लोकभाषा में ग्रन्थरचना करते रहे। वहीं वैदिकजनों, विशेषत: विद्वानों ने लोकभाषा को अछूत माना, और प्रायश: वाग्व्यवहार में भी संस्कृत का ही प्रयोग किया;लेखन में तो संस्कृत का ही एकछत्र-साम्राज्य वैदिक-दार्शनिकों का रहा। अत: वैदिक-दर्शनों के सूत्रग्रन्थों का ज्ञान करने में जहाँ जैन एवं बौद्ध-दाशनिक सहज ही सक्षम रहें, वहीं वैदिक-दार्शनिकों को शौरसेनी प्राकृत एवं मागधी-पालि आदि भाषाओं का अभ्यास-विशेष न होने से वे जैन एवं बौद्ध दर्शनों में सूत्रग्रन्थों का मर्म नहीं समझ पाते थे। तथापि प्राचीनकाल में विद्धानों ने ही वैचारिक उदारता थी कि वे पारस्परिक विचार-विनिमय एवं ज्ञानार्जन आदि की दृष्टि से एक-दूसरे दर्शनों को सीखते एवं विचार-विमर्श करते थे। अत: वैदिक दार्शनिकों को जैनतत्त्वज्ञान का संक्षेपत: एक ग्रन्थ में ही संग्रह प्राप्त हो जाये, तथा संस्कृत के माध्यम से जैनदर्शन सीखने के इच्छुकजनों को भी ज्ञानलाभ सुलभ हो सकें; संभवत: इसी दृष्टिकोण से **ईसापूर्व प्रथम शताब्दी** की उपान्त्य-बेला में हुये **आचार्य गृद्धपिच्छ उमास्वामी** ने संस्कृतभाषा में **'तत्त्वार्थसूत्र'**

नामक कालजयी प्रतिनिधि सूत्रग्रन्थ की रचना की थी। इस ग्रन्थ की कालान्तर में इतनी महिमा हो गयी कि कहा जाने लगा — **"दशाध्याये परिच्छिन्ने तत्त्वार्थे पठित सति। फलं स्यादुपवासस्य.........॥"** अर्थात् दस अध्यायोंवाले 'तत्त्वार्थसूत्र' का पठन करने में एक 'उपवास' का सुफल प्राप्त होता हैं

सूत्रकार का परिचय

'तत्त्वार्थसूत्र' के प्रणेता आचार्य उमास्वामी युगप्रधान **आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी के साक्षात् शिष्य थे।** इनका दीक्षापूर्व नाम 'शिवकुमार' था। इनका उल्लेख आचार्य कुन्दकुन्द के अन्यतम ग्रन्थ 'प्रवचनसार' की टीका में निम्नानुसार हुआ है —

'प्रवचनसार' ग्रंथारंभ करने का निमित्त क्या है? यह स्पष्ट करते हुये **जयसेनाचार्य** लिखते हैं —

"अथ कश्चिदासन्नभव्यः शिवकुमारनामा स्वसंवित्तिसमुत्पन्न-परमानन्दैकलक्षण सुखामृत-विपरीत-चतुर्गति-संसारदुःख-भयभीतः समुत्पन्नपरमभेदविज्ञान-प्रकाशातिशयः, समस्त-दुर्नयैकान्तनिराकृत-दुराग्रहः, परित्यक्त-समस्त-शत्रु-मित्रादि-पक्षपातेनात्यन्तमध्यस्थो भूत्वा धर्मार्थकामेभ्यः सारभूतामत्यन्ता-त्महिताम-विनश्वरां पञ्चपरमेष्ठिप्रसादोत्पन्नां मुक्तिश्रियमुपादेयत्वेन स्वीकुर्वाणः, श्रीवर्धमानस्वामीतीर्थंकरपरमदेवप्रमुखान् भगवतः पंचरमेष्ठिनो द्रव्यभावनमस्काराभ्यां प्रणम्य परमचारित्रमाश्रयामीति प्रतिज्ञां करोमीति॥"

अर्थ — अनन्तर **शिवकुमार (उमास्वामी)** नामक कोई निकट-भव्य, जो स्वसंवेदन से उत्पन्न होनेवाले परमानन्दमयी एक लक्षण के धारी सुखरूपी अमृत से विपरीत चतुर्गति-रूप संसार के दुःखों से भयभीत है, जिसे परमभेदविज्ञान के प्रकाश का माहात्म्य प्रकट हो गया है, जिसने समस्त दुर्नयरूपी एकान्त के दुराग्रह को दूर कर दिया; तथा सर्व शत्रु-मित्र आदि का पक्षपात छोड़कर व अत्यन्त मध्यस्थ होकर धर्म-अर्थ-काम पुरुषार्थों की अपेक्षा अत्यन्त सार और आत्महितकारी अविनाशी व पञ्चपरमेष्ठी के प्रसाद से उत्पन्न होनेवाले मोक्षरूपी पुरुषार्थ को अंगीकार करते हुये श्री वर्धमान स्वामी तीर्थंकर परमदेव प्रमुख भगवान् पञ्चपरमेष्ठियों को 'द्रव्य' और 'भाव' नमस्कार कर परम-चारित्र का आश्रय ग्रहण करता हूँ — ऐसी प्रतिज्ञा करता हूँ।

ऐसे निकट भव्य **शिवकुमार (उमास्वामी)** को सम्बोधन करने के लिये **श्री कुन्दकुन्दाचार्य** इस ग्रन्थ की रचना करते हैं। आचार्य जयसेनकृत 'प्रतिष्ठापाठ' में भी आचार्य उमास्वामी को आचार्यप्रवर कुन्दकुन्द से सीधा सम्बन्धित ज्ञापित करने के लिये उनके तुरन्त बाद आचार्य उमास्वामी का उल्लेख किया है —

"धरसेनं मुनीन्द्रञ्च पुष्पदंत-समाह्वयम्।
जिनचन्द्रं कुन्दकुन्दमुमास्वामिनमर्थये॥316॥"

इस पद्य में धरसेनाचार्य-पुष्पदन्ताचार्य- जिनचन्द्राचार्य कुन्दकुन्दाचार्य-आचार्य उमास्वामी — ऐसी परम्परा मानी है। प्रतीत होता है कि ये कुन्दकुन्दाचार्य के साक्षात् 'शिष्य' एवं 'अन्तेवासी' भी थे। इनकी रचनाओं का एवं विचारों का उमास्वामी पर गहन-प्रभाव था, जो कि कुन्दकुन्द-साहित्य एवं 'तत्त्वार्थसूत्र' के तुलनात्मक अध्ययन के बाद स्पष्टत: समझा जा सकता है।

तथा आचार्य उमास्वामी आचार्य कुन्दकुन्द के न केवल साक्षात् शिष्य थे, अपितु उनके चिंतन एवं लेखन पर भी कुन्दकुन्दाचार्य के विचार एवं उनकी कृतियों के वाक्यों का घनिष्ट-प्रभाव परिलक्षित होता है। तुलनार्थ नीचे लिखे वाक्यांश एवं सूत्रों को देखें —

आचार्य कुन्दकुन्द के वाक्य	*'तत्त्वार्थसूत्र' के सूत्र*
1. "दव्वं सल्लक्खणियं उप्पादव्वयधुवत्त-संजुत्तं। गुणपज्जयासयं वा जं तं भणंति सव्वण्हू।।" — *(पंचास्तिकाय, 1/10)*	सद् द्रव्यलक्षणम् — *(5/29)* उत्पाद-व्यय-ध्रौव्ययुक्तं सत् — *(5/30)* गुणपर्ययवद् द्रव्यम् — *(5/38)*
2. "देवा चउण्णिकाया...." — *(पंचास्तिकाय, 1/14)*	देवाश्चतुर्निकाया: — *(4/1)*
3. "धम्मत्थिकायाभावे" — *(नियमसार, 185)*	धर्मास्तिकायाभावात् — *(10/8)*
4. "दंसणणाणचरित्ताणि मोक्खमग्गो....." — *(समयसार, 410)*	सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग: — *(1/1)*
5. "मिच्छादंसण-अविरदि-कसाय-जोगा.... बंधस्स हेदव्वो।" — *(मूलाचार, 11/207)*	मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा: बन्धहेतव: — *(8/1)*
6. "जीवो कसायजुत्तो....कम्मणो...जोंग्गा पोंग्गलदव्वे गिण्हदि, सो बंधो।"	सकषायत्वाज्जीव: कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते स बन्ध: — *(8/12)*
7. पयडि-ट्ठिदि-अणुभागप्पदेसबंधो — *(वही, 11/210)*	प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशास्तद्विधय:। — *(8/13)*
8. णाणस्स दंसणस्स य आवरणं वेदणीय-मोहणियं। आउग-णामा गोदं तहंतरायं च मूलाओ।। — *(वही, 11/211)*	आद्यो ज्ञानदर्शनावरण-वेदनीय मोहनीयायुर्नामगोत्रान्तराया:। — *(8/4)*
9. सादमसादं दुविहं — *(वही, 11/215)*	सदसद्वेद्ये। — *(8/8)*
10. णिच्चुच्चगोदं च — *(वही, 11/223)*	उच्चैर्नीचैश्च — *(8/12)*
11. मोहस्स सत्तरिं खलु बीसं णामस्स चेव गोदस्स। तेंत्तीसमाउगाणं उवमाओ सायराणं तु।। — *(वही, 230)*	सप्ततिर्मोहनीयस्य — *(8/15)* विंशतिर्नामगोत्रयो: — *(8/16)* त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुष:— *(8/17)*।

इतने ही नहीं, और भी अनेकों ऐसे प्रसंग हैं, जो शब्दशः मात्र भाषान्तर के साथ कुन्दकुन्द-साहित्य से 'तत्त्वार्थसूत्र' में आगत हैं। स्थानाभाव के कारण सबका उल्लेख यहाँ नहीं किया है। वस्तुतः यह विषय पूर्णतः शोधदृष्टि से अन्वेषणीय है।

आचार्य कुन्दकुन्द एवं आचार्य उमास्वामी की समकालिकता को 'विद्वज्जनबोधक' ग्रन्थ में भी स्वीकार किया गया है।[1] इतना ही नहीं, आधुनिक श्वेताम्बराचार्य आनंद ऋषि जी ने भी लिखा है कि **"आचार्य उमास्वाति ने अचौर्य महाव्रत की भावनाओं में कुन्दकुन्दाचार्य का अनुगमन किया है।"[2] इससे स्पष्ट है कि आचार्य उमास्वामी प्रसिद्ध दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के साक्षात् शिष्य थे, तथा लगभग समकालीन ही थे।**

नामकरण के बारे में भ्रम-निवारण

इनके नामकरण के बारे में एक सुनियोजित भ्रामक-प्रचार दशकों से किया जा रहा है कि इनका नाम '**आचार्य उमास्वाति**' था। किसी व्यक्ति या वर्गविशेष के द्वारा सुनियोजितरूप से ऐसा दुष्प्रचार किया गया — यह बात उतनी खेदजनक नहीं है, जितना खेद इस बात का है कि आधुनिक विद्वानों का भी बहुसंख्यक-वर्ग इस नामकरण का प्रयोग करने लगा तथा 'तत्त्वार्थसूत्र' के कर्त्ता को 'आचार्य उमास्वाति' कहने लगा। अतः यहाँ तात्त्विकदृष्टि से तथ्यपरक चिंतन एवं प्रमाणों का अवलोकन यहाँ अपेक्षित है —

(क) **प्रथम तथ्य** तो यह है कि जिन 'वाचक उमास्वाति' को 'तत्त्वार्थसूत्र' के कर्त्ता के रूप में प्रचारित किया जा रहा है, वे 'तत्त्वार्थसूत्रकर्त्ता' से पर्याप्त परवर्ती हैं। तथा उन्होंने तत्त्वार्थसूत्र की नहीं, अपितु 'तत्त्वार्थाधिगमभाष्य' की रचना की है। इस बारे में छलपूर्वक यह प्रचारित किया गया है कि 'यह स्वोपज्ञ भाष्य है'; जबकि यह नितान्त भ्रमपूर्ण है। इस सम्बन्ध में भारतीय दर्शन-इतिहास एवं संस्कृति के वयोवृद्ध एवं वरिष्ठ मनीषी साधक, निष्पक्ष विद्वान् **प्रोफेसर बलदेव उपाध्याय** ने 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ की 'प्रस्तावना' में स्पष्ट लिखा है कि "जैसा अर्थ-गांभीर्य, भाषा-शैली की प्रौढ़ि एवं विषय का वैशद्य आचार्य **पूज्यपाद देवनन्दिकृत** 'सर्वार्थसिद्धि टीका, **भट्ट अकलंकदेवकृत** 'तत्त्वार्थराजवार्तिक' एवं आचार्य **विद्यानन्दस्वामीकृत** 'तत्त्वार्थ-श्लोकवार्तिक' आदि व्याख्याग्रन्थों में है; उसका शतांश भी वाचक **उमास्वातिकृत** 'तत्त्वार्थाधिगमभाष्य' में नहीं है। इस भाष्यग्रंथ की भाषा, प्रतिपादन-शैली एवं विवेच्य-विषय के आधार पर स्पष्ट-प्रतीत होता है कि यह पर्याप्त-परवर्ती एवं सतही-विवेचनपरक ग्रंथ है। इसके कर्त्ता के द्वारा 'तत्त्वार्थसूत्र' सदृश अतिगंभीर एवं प्रौढ़िपूर्ण-रचना का प्रणेतृत्व कदापि संभव नहीं है।"

उक्त तथ्य के आलोक में स्पष्ट हो जाता है कि 'तत्त्वार्थाधिगमभाष्य' के कर्त्ता वाचक उमास्वाति '**तत्त्वार्थसूत्र**' के कर्त्ता नहीं हैं, तथा '**तत्त्वार्थसूत्र**' के कर्त्ता का

नाम भी 'उमास्वाति' नहीं है। उनका मूलनाम आचार्य उमास्वामी है, तथा 'गृद्धपिच्छ' उनका विशेषण है। ज्ञातव्य है कि इनके साक्षात् गुरु आचार्य कुन्दकुन्द का भी एक विशेषण 'गृद्धपिच्छ' रहा है। अतः संभव है कि गृद्धपिच्छ-आचार्य का शिष्य होने के कारण उन्हें भी 'गृद्धपिच्छ' कहा जाने लगा हो।

दिगम्बर-परम्परा के आचार्यों ने इन्हें 'गृद्धपिच्छाचार्य' के नाम से ही स्मरण किया है —

'तह गिद्धपिंछाइरियप्पयासिदतच्चत्थसुत्ते............।'

— *(आचार्य वीरसेन स्वामी, धवला जीवस्थान, कालानुयोगद्वार, पृष्ठ 316)*

'एतेन गृद्धपिच्छाचार्यपर्यन्तमुनिसूत्रेण व्यभिचारता निरस्ता।'

— *(आचार्य विद्यानन्द स्वामी, तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक, पृष्ठ 6)*

(ख) द्वितीय तथ्य यह है कि 'उमास्वाति' नाम 'वाचक उमास्वाति' के रूप में भले ही इष्ट हो; किन्तु वस्तुतः किसी व्यक्ति का नाम हो — यह व्यावहारिक प्रतीत नहीं होता है। कारण है कि 'स्वाति' शब्द नक्षत्रवाची है, तथा 'नक्षत्र' शब्द नपुंसकलिंग होते हुये भी यह स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग में प्रयुक्त हुआ है। इस बारे में 'शब्द-कल्पद्रुम' के कर्त्ता लिखते हैं — "स्वातिः/ती — पु., स्त्री. अत इम वा ङीष्। हस्ता स्वाती श्रवणा अक्लीबे इति तिथ्यादितत्त्वम्। स च कुंकुंमसदृशारुणतरैकतारकः। अस्याधिदेवता पवनः। — *(शब्दकल्पद्रुम, भाग 5, पृष्ठ 490)*; जबकि आप्टेकृत 'शब्दकोश' *(पृष्ठ 1160)* में इस शब्द को पन्द्रहवें नक्षत्र का वाचक स्त्रीलिंग शब्द माना गया है तथा 'अभिधान-राजेन्द्रकोश' *(खण्ड 7, पृष्ठ 636)* में भी इसे स्त्रीलिंग माना गया है। कहीं भी व्यक्तिवाची-विशेषण या पद के रूप में इसका उल्लेख नहीं मिलता है।

(ग) तृतीय तथ्य यह है कि 'स्वामी' पद की तत्त्वार्थसूत्रकार के साथ सुसंगति बैठती है। देखें — 'धनंजयनाममाला' *(10)* के अनुसार 'स्वामी' शब्द 'पुल्लिंग' है, तथा यह 'धार्मिक पुरुष' या 'सन्यासी' का सूचक है। आप्टेकृत **संस्कृत-हिन्दी-कोश** *(पृ. 1161)* में इसे 'मुनि का विशेषण' भी माना है। **'पाइअसद्दमहण्णव'** *(पृ. 890)* में इसे 'पति' वाचक पुल्लिंग शब्द बताया हैं **'अभिधान राजेन्द्रकोश'** *(7/774)* में 'स्वमस्यास्तीति स्वामी' इस व्युत्पत्ति के साथ पुल्लिंग शब्द माना गया है। तथा 'अपभ्रंश-हिन्दी कोश' *(2/118)* के अनुसार यह 'मालिक' अर्थ का सूचक पुल्लिंग शब्द है।

निष्कर्ष — अतः उक्त तथ्यों के आलोक में 'स्वामी' शब्द 'तत्त्वार्थसूत्र' के कर्त्ता के साथ सुघटित होता है, क्योंकि आचार्य पाणिनी ने 'स्वामीश्वराधिपतिः' *(2/3/30)* कहकर 'स्वामी' शब्द के 'ईश्वर' एवं 'अधिपति' के अर्थ में पुल्लिंग माना है। अतः महावीर स्वामी, गौतम स्वामी जैसे प्रयोगों के आलोक में 'उमास्वामी' शब्द व्यावहारिक

सिद्ध होता है, सहजता को लिये हुये है। जबकि 'उमास्वाति' नाम कृत्रिमता को लिये हुये है। परम दिगम्बराचार्य गृद्धपिच्छ कुन्दकुन्दाचार्य के साक्षात् शिष्य एवं 'तत्त्वार्थसूत्र' के कर्त्ता आचार्य गृद्धपिच्छ उमास्वामी स्वयं दिगम्बर जैन मूलसंघ में दीक्षित कुन्दकुन्दान्वय के निर्ग्रन्थ-श्रमण थे। इसप्रकार सुसिद्ध है कि तत्त्वार्थसूत्र के कर्त्ता का नाम आचार्य गृद्धपिच्छ उमास्वामी था, और ये आचार्य कुन्दकुन्द के साक्षात् शिष्य या अन्तेवासी थे। शिलालेखों तथा अन्य ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों में आचार्य कुन्दकुन्द के अनन्य-शिष्य के रूप में 'आचार्य उमास्वामी' का नाम भी आता है, जो कि 'गृद्धपिच्छ' अपरनाम से अधिक विख्यात हुये। आपकी कालजयी-कृति 'तत्त्वार्थ' 'तत्त्वार्थसूत्र', जिसका अपरनाम आजकल 'मोक्षशास्त्र' भी प्रचलित है, की ख्याति जैन-वाङ्मय के प्रतिनिधि-ग्रन्थ के रूप में सर्वत्र व्याप्त है।

दिगम्बर-परम्परा में इनका निर्विवाद नामकरण आचार्य 'उमास्वामी' ही है। किन्तु श्वेताम्बर-परम्परा में इनके ग्रन्थ 'तत्त्वार्थसूत्र' के भाष्यग्रन्थ 'तत्त्वार्थाधिगमभाष्य' के प्रणेता 'वाचक उमास्वाति'[3] को मूलग्रन्थ का कर्त्ता सिद्ध करने की चेष्टा की गयी है। चूँकि दोनों नाम 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ से सम्पृक्त हैं, अतः इसके बारे में भ्रम की स्थिति आसानी से बन गयी। जबकि 'वाचक उमास्वाति' सूत्रकार 'आचार्य उमास्वामी' से पर्याप्त परवर्ती हैं।[4] किन्तु भ्रम की स्थिति को दृढ़ करने की भावना से एक सुनियोजित प्रचार किया गया कि 'वाचक उमास्वाति' ने ही मूल 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ की रचना की, तथा उन्होंने ही 'तत्त्वार्थाधिगमभाष्य' नाम से स्वोपज्ञ-भाष्य का भी निर्माण किया। किन्तु यह सम्प्रदायगत-व्यामोहमात्र है, जिससे तथ्य की हानि ही हुई है। इसका स्पष्टीकरण निम्नानुसार है —

'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ के कर्त्ता के रूप में 'उमास्वामी' नाम शिलालेखों, वृत्तियों, टीकाओं एवं भाष्यग्रन्थों आदि में अपेक्षाकृत कम प्रयुक्त हुआ है; जबकि 'गृद्धपिच्छ'[5] नाम अधिक प्रयुक्त हुआ है। जहाँ-जहाँ 'उमास्वामी' नाम आया भी है, वहाँ अधिकांशतः उसके विशेषण के रूप[6] में 'गृद्धपिच्छ' नाम का भी प्रयोग मिलता है। इस बिन्दु पर सूक्ष्मता से विचार किया जाये, तो हम पाते हैं कि श्वेताम्बर-परम्परा में इनको 'गृद्धपिच्छ उमास्वामी' की जगह 'वाचक उमास्वाति' अथवा 'आचार्य उमास्वाति' कहा गया है। इसके लिये 'तत्त्वार्थसूत्र' की प्रशस्ति का एक पद्य, जो दोनों परम्पराओं में पाया जाता है, तुलनार्थ देखें —

दिगम्बर-परम्परा — **तत्त्वार्थसूत्रकर्त्तारं गृद्धपिच्छोपलक्षितम्।**
वन्दे गणीन्द्रसंजातमुमास्वामी-मुनीश्वरम्॥

श्वेताम्बर परम्परा — **तत्त्वार्थसूत्रकर्त्तारमुमास्वातिमुनीश्वरम्।**
श्रुतकेवलिदेशीयं वन्देऽहं गुणमन्दिरम्॥

तुलना करने पर हम स्पष्टतः अनुभव करते हैं कि मात्र 'गृद्धपिच्छोपलक्षितम्' पद से बचने के लिये ही 'गुणमन्दिरम्' — इस पादपूर्ति का प्रयोग किया गया है। इसका मूलकारण यह है कि दिगम्बर-परम्परा में श्रमण मयूर के पंखों की पिच्छी अहिंसा एवं जीवदया के पालनार्थ रखते हैं, जबकि श्वेताम्बर-परम्परा के श्रमण कर्पास के सूत की बनी हुई दण्ड में निबद्ध सम्मार्जिनी का प्रयोग करते हैं। यहाँ तक कि किसी भी पक्षी के पंखों की पिच्छी का प्रयोग उनके यहाँ नहीं होता है।

जहाँ तक यह प्रश्न है कि जब दिगम्बर 'मयूरपिच्छी' धारण करते हैं, तो उमास्वामी आचार्य ने गृद्धपिच्छी क्यों धारण की? इसके बारे में प्रचलित कथानक तो यही है कि एक बार उनकी मायूरपिच्छी कोई जानवर या अन्य कोई उठा ले गया, तो उन्होंने तात्कालिक परिस्थितियों में गृद्धपक्षी के पंखों की पिच्छी धारण की थी; क्योंकि दिगम्बर जैन-श्रमण 'पिच्छिका' के बिना गमनागमन आदि कोई भी क्रिया नहीं करते हैं। दिगम्बर-जैन-ग्रंथों में तो यहाँ तक कह दिया गया है कि **"णिप्पिच्छे णत्थि णिव्वाणं"**। हो सकता है कि यह घटना सत्य हो, तथा इसी कारण उसका नाम 'गृद्धपिच्छ' पड़ा हो। परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि संभवतः उस परिस्थिति में उनकी समस्त व्यवहारचर्या रुक गयी होगी; तथा जब किसी श्रावक ने नयी मायूरपिच्छी लाकर दी होगी; तभी उनकी व्यवहारचर्या पुनः प्रारंभ हुई होगी; फलतः वे अपनी मायूरपिच्छी को अधिक संभालकर रखने लगे होंगे। 'पिच्छी' में उनकी गृद्धता (आसक्ति) को देखकर संभवतः किसी ने उन्हें **'पीछी में गृद्धतावाले आचार्य' (गृद्धपिच्छाचार्य)** नाम दे दिया गया होगा, क्योंकि दिगम्बर जैन-श्रमण मायूरपिच्छी ही धारण करते हैं।[7] इसका मूलकारण यही है कि मयूर पक्षी अपने पंखों का अहिंसक-ढंग से कार्तिक मास में स्वतः विसर्जन करता है, अतः वे स्वतः आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। और चूँकि मयूर वन्य-पक्षी है, अतः वनवासी जैनश्रमणों को यह सहज ही मिल जाते हैं। तथा मयूरपक्षी के पंखों के कारण विषैले जीव-जन्तु (सर्प आदि) भी निकट नहीं आते हैं, अतः साधना भी निर्विघ्न बनी रहती है।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में स्पष्ट है कि श्वेताम्बर-परम्परा में तत्त्वार्थसूत्र के कर्त्ता का 'गृद्धपिच्छ' विशेषण स्वीकार नहीं था, जबकि सम्पूर्ण जैन-परम्परा एवं साक्ष्यों में 'तत्त्वार्थसूत्र' के कर्त्ता के लिये 'गृद्धपिच्छ' विशेषण इतना अधिक प्रयुक्त है कि कई लोग इसे उनका मूलनाम समझने लगे हैं। अतः 'गृद्धपिच्छ' उपनाम वाले आचार्य 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रंथ के कर्त्ता हैं — यह तथ्य किसी प्रमाणान्तर की अपेक्षा नहीं रखता है। तथा 'गृद्धपिच्छ' विशेषण दिगम्बर-परम्परा का ही है, अतः उनका दिगम्बर-परम्परा में मान्य नाम 'उमास्वामी' ही मूलनाम सिद्ध होता है, 'उमास्वाति' नहीं।

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि दिगम्बर-परम्परा के कहे जानेवाले श्रवणबेलगोल के शिलालेखों में उनका नाम 'उमास्वाति' क्यों मिलता है? इसके उत्तर के लिये हमें

उन शिलालेखों के बारे में कुछ जानकारी ले लेना अपेक्षित है। यह तथ्य है कि वे शिलालेख चाहे संस्कृतभाषा में हों या प्राकृतभाषा में, किन्तु उनकी लिपि कन्नड़ है, तथा कन्नड़ लिपि में 'ति' एवं 'मि' वर्ण के लेखन में बहुत समानता है। देखें —

ति - ತಿ मि - ಮಿ

अतः हो सकता है कि जिस शिल्पी ने ये शिलालेख उत्कीर्ण किये होंगे, उसको जो लिखकर पाठ दिया गया हो, उसमें पीछे की घुंडी ( ) छूट गई हो; अतः उसने उमास्वामि की बजाय उमास्वाति लिख दिया हो और फिर पाठ-दर-पाठ ऐसे पाठभेद निर्मित होते गये। सम्पादन-कला के निष्णात विज्ञजन भली-भाँति जानते हैं कि लिपिकर्त्ता बहुत विज्ञ एवं भाषाविद् नहीं हुआ करते थे, अतः उनसे ऐसी त्रुटियाँ प्रायः हो जाया करती थीं।

इस बात के पक्ष में एक प्रबल-आधार यह भी है कि 'स्वामी' नामान्तरवाले कई आचार्य हुये हैं, यथा — समन्तभद्र स्वामी, वीरसेन स्वामी, विद्यानन्द स्वामी आदि, तथा 'स्वामी' शब्द का व्यक्ति के नाम के साथ सार्थकता भी है। दक्षिण-भारत में तो आज भी सम्मानसूचक शब्द के रूप में 'स्वामी' पद का प्रयोग करते हैं; किन्तु 'स्वाति' तो किसी नाम के साथ प्रयुक्त हुआ हो — ऐसे प्रमाण मुझे आज तक नहीं मिले; तथा यह शब्द भी मात्र नक्षत्रों के भेदों में परिगणित हुआ है , किसी के नाम के रूप में नहीं। अतः 'उमास्वाति' नाम की कोई तुक या सार्थकता प्रतीत नहीं होती है।

पण्डित जुगलकिशोर मुख्तार ने अपनी पुस्तक 'जैनसाहित्य और इतिहास पर विशद प्रकाश' में पृष्ठ 109 से 148 तक व्यापक प्रमाणों के साथ यह सिद्ध किया है कि 'तत्त्वार्थसूत्र' के प्रणेता तथा श्वेताम्बरीय 'तत्त्वार्थाधिगमभाष्य' के प्रणेता भिन्न-भिन्न हैं, तथा परवर्ती सिद्धसेन गणि आदि प्राचीन टीकाकारों तथा आधुनिक विद्वानों ने भी अनेक प्रमाणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि मूलसूत्र के अभिप्रायों से भाष्यकार का प्ररूपण अनेकों जगह व्यापक मतभेद रखता है। अतः इन दोनों के कर्ता एक व्यक्ति हो नहीं सकते। इस तथ्य से हमारा यह प्ररूपण पुष्ट हो जाता है कि 'तत्त्वार्थाधिगमभाष्य' के कर्ता 'वाचक-उमास्वाति' एवं तत्त्वार्थसूत्र के प्रणेता 'आचार्य गृद्धपिच्छ उमास्वामी' पूर्णतया भिन्न व्यक्तित्व हैं, और ये दोनों समकालीन भी नहीं हैं।

साहित्य

आचार्य उमास्वामी के कृतित्व के रूप में एकमात्र रचना 'तत्त्वार्थसूत्र' ही सर्वमान्य एवं निर्विवादरूप से स्वीकृत है। इसका मूलनाम 'तत्त्वार्थ' मात्र है, किन्तु सूत्रशैली में रचित होने से इसे 'तत्त्वार्थसूत्र' कहा गया। इस तथ्य का पोषण इस ग्रंथ की टीकाओं से होता है, जिनमें नाम के साथ 'सूत्र' पद का प्रयोग नहीं मिलता है।[8]

यह दस अध्यायों में निबद्ध ग्रंथ है। अन्य वैशेषिक आदि दर्शनों के मूलग्रंथ

भी लगभग इसी शैली में निबद्ध हैं, तथा उनकी अध्याय-संख्या एवं सूत्र-संख्या भी लगभग इसके समान ही है।

विषयवस्तु — दस अध्यायों में जीवाजीवादि सात तत्त्वार्थों का सूत्रात्मक-शैली में वर्णन होने से इसकी 'तत्त्वार्थसूत्र' संज्ञा अन्वर्थिका है। इसके प्रथम चार अध्यायों में 'जीव' का, पाँचवें-अध्याय में 'अजीव' का, छठे-सातवें अध्याय में 'आस्रव' का, आठवें-अध्याय में 'बंध' का, नौवें-अध्याय में 'संवर-निर्जरा' का तथा दसवें-अध्याय में 'मोक्ष' तत्त्वार्थ का निरूपण है। दिगम्बर-परम्परा के अनुसार दसों-अध्यायों की सूत्र-संख्या इसप्रकार है — 33+53++30+42+42+27+39+26+47+9 = 357, तथा श्वेताम्बर-परम्परा के अनुसार दसों-अध्यायों की सूत्र-संख्या इसप्रकार है — 35+52+18+53+44+26+34+26+49+7 = 344।

प्रायः ऐसा समझा व समझाया जाता है कि जैन-आचार्य जीवों पर करुणा-बुद्धिपूर्वक आत्महितकारी-उपदेश देते थे, और उन्हीं को वे प्रायः लिपिबद्ध कर देते थे, जिन्हें हम 'शास्त्र' के रूप में पाते हैं। इससे ऐसा भ्रम होता है कि जैन-आचार्यों का लेखन किसी व्यवस्था के अन्तर्गत नहीं होता था, बस स्व-परहित की कामना जो कुछ जिनशासन के सिद्धान्तों का लेखन कर दिया; उसी को 'शास्त्र' कहा गया है। जबकि ऐसा कहना पूर्णतः सत्य नहीं है। अभिप्राय यह है कि यह तो सत्य है कि 'जैनाचार्य करुणाबुद्धिपूर्वक उपदेश[9] देते थे एवं स्व-पर हितकामना[10] से शास्त्र-रचना करते थे; किन्तु वे यादृच्छिकरूप से मात्र उपदेश-शैली में ही शास्त्र-रचना कर देते थे, शास्त्र-निर्माण के नियमों के बारे में विशेष-सावधानी या ज्ञान नहीं रखते थे' — ऐसा सोचना व कहना, दोनों ही जैनाचार्यों व जैनशास्त्रों की गरिमा को कम करना है।

प्रथमतः 'शास्त्र' का लक्षण यहाँ विवक्षित है। आचार्य विद्यानन्दि स्वामी ने 'शास्त्र' का लक्षण निम्नानुसार बतलाया है —

'वर्णात्मकं हि पदं, पदसमुदायविशेषः सूत्रं, सूत्रसमूहः प्रकरणं, प्रकरणसमितिराह्निकम्, आह्निकसंघातोऽध्यायः, अध्यायसमुदायः शास्त्रमिति शास्त्रलक्षणम्।।[11]

अर्थ — 'वर्णों की एकात्मकता को 'पद' कहते हैं, पदों के विशेष-समुदाय को 'सूत्र' कहते हैं, एक विषय के कतिपय-सूत्रों के समूह को 'प्रकरण' कहते हैं, कतिपय-विषयों के निरूपण करनेवाले प्रकरणों के समुदाय को 'आह्निक' कहते हैं। आह्निकों के समुदाय को 'अध्याय' कहते हैं, और अध्यायों का का समुदाय 'शास्त्र' है।

वर्णों के द्वारा पदों की रचना का उल्लेख आचार्य अमृतचन्द्र ने भी किया है —

"वर्णैः कृतानि चित्रैः पदम्.....।"[12]

वर्ण और पद की स्थिति के बारे में 'वाक्यपदीय' के कर्त्ता लिखते हैं कि "पद

के बदलने पर भी वर्णों का एकत्व नष्ट नहीं होता है। भिन्न-भिन्न वाक्यों में भी वही पद मिलते हैं।"[13]

इसप्रकार 'वर्ण' और 'पद' के बारे में संक्षिप्त-रूप से कथन हुआ; अब पदों से निर्मित होनेवाले 'सूत्र' का परिचय अपेक्षित है। 'जयधवला' में सूत्र का लक्षण निम्नानुसार प्रतिपादित किया गया है —

"अल्पाक्षरमसन्दिग्धं, सारवद्गूढनिर्णयम्।
निर्दोषं हेतुमत्तथ्यं, सूत्रमित्युच्यते बुधैः॥ — एवं सव्वं वि सुत्तलक्खणं।"[14]

अर्थात् जिसमें अक्षर कम हों, जो सन्दिग्ध-वर्णनों से रहित हो, जिसमें 'सार' अर्थात् निचोड़-भर दिया गया हो, जिसका अर्थ गूढ़ हो, जो निर्दोष हो, सयुक्तिक हो और तथ्यात्मक हो; उसे विद्वज्जन 'सूत्र' कहते हैं। ये ही सातों सूत्र के लक्षण हैं। तत्त्वार्थसूत्र के सूत्रों में सूत्रत्व के ये सातों-गुण भली-भाँति समाये हुये हैं —

(1) **अल्पाक्षरत्व** — इसमें कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक ज्ञान को भरा गया है, अतः इसका अल्पाक्षरत्व-गुण प्रत्येक-सूत्र में स्पष्ट है।

(2) **असन्दिग्धत्व** — केवलज्ञानगम्य तत्त्व-व्यवस्था को श्रुतज्ञान के माध्यम से प्रस्तुत करने पर भी इसमें कोई भी पद संदेह-उत्पादक नहीं है, अतः सूत्र का असन्दिग्धत्व-गुण भी इस ग्रन्थ में सर्वत्र व्याप्त है।

(3) **सारवत्त्व** — इसमें 'तु' एवं 'च' जैसे एकाक्षरी-अव्ययों का प्रयोग भी व्यापक अर्थ को समाहित किये हुये है, इससे इस ग्रन्थ की सारवत्ता सिद्ध होती है।

(4) **गूढ़निर्णयत्व** — परमाणु एवं कर्मबन्ध-विवेचन जैसे गूढ़तम-विषयों को इसमें दो-टूक निर्णय की शैली में स्पष्ट-रीति से प्रतिपादित किया गया है। अतः सूत्र का गूढ़निर्णयत्व-गुण भी इसमें भली-भाँति घटित होता है।

(5) **निर्दोषत्व** — व्याकरण, कोश, सिद्धान्त एवं प्रतिपादन-शैली; सभी दृष्टियों से यह ग्रन्थ दोषमुक्त होने से इसका निर्दोषत्व-गुण अच्छी तरह फलित होता है।

(6) **हेतुमत्त्व** — इस ग्रन्थ में जितना भी प्रतिपादन है, वह सहेतुक ही है, तथा 'धर्मास्तिकायाभावात्' जैसे सूत्र इस ग्रन्थ की हेतुमत्ता को प्रमाणित करते हैं।

(7) **तथ्यपरकता** — विषय से असम्बद्ध तथा प्रकरण-विरुद्ध एक भी प्रतिपादन इस ग्रन्थ में नहीं है, तथा जितना भी प्रतिपादन है, वह तथ्यात्मक-रीति से किया गया होने से इसकी तथ्यपरकता भी सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है।

इसप्रकार हम पाते हैं कि 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ में सूत्र के सभी लक्षण पूरी गरिमा के साथ भली-भाँति घटित होते हैं।

इस ग्रंथ में जहाँ 'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः' का अस्तिरूप में वर्णन है, वहीं इसमें 'मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्राणि-संसारमार्गः' का भी बिना सूत्र-निर्माण किये ही सक्षम-प्ररूपण किया गया है। सूक्ष्मतम-विषयों का संक्षिप्त एवं अतीव वैज्ञानिक-शैली में प्रामाणिक-निरूपण इस ग्रंथ की महती-विशेषता है।

जहाँ आचार्य कुन्दकुन्द में मात्र अवग्रह-ईहा-अवाय एवं धारणा — इन चारों-ज्ञानों के धारी-आचार्य को नमस्कार किया है; वहीं इन चार-ज्ञानों को मात्र एक-सूत्र (अवग्रहेहावाय-धारणा) में ग्रंथित करने में सक्षम 'तत्त्वार्थसूत्र' के पूर्ण-तत्त्वज्ञान को समझ सकने की सामर्थ्यवाले व्यक्ति की कितनी महिमा होगी — यह अनुमान लगाया जा सकता है।

इस सूत्र-ग्रंथ में सम्पूर्ण जैन-तत्त्वज्ञान समाहित है। अतः इसका वाचन-परायण करना प्रत्येक जैन-श्रावक-श्राविका का अनन्य-कर्तव्य है, ताकि हम कम-से-कम जैन-तत्त्वज्ञान की शब्दावली से तो परिचित रह सकें। इसका उद्देश्य मात्र तत्त्वार्थ का ही निरूपण नहीं है, अपितु मोक्षमार्ग एवं मोक्ष का कथन भी है; अतएव इसे 'मोक्षशास्त्र' भी कहा जाता है।

यह मूल दिगम्बर-ग्रन्थ है, इसका एक प्रधान-आधार यह है कि इसमें तीर्थंकर प्रकृति की कारणभूत सोलह भावनाओं (दर्शनविशुद्ध्यादि) का वर्णन है; जबकि श्वेताम्बर-मान्यतानुसार तीर्थंकर-प्रकृति की कारणभूत-भावनाओं की संख्या बीस है। विद्वानों ने ऊहापोहपूर्वक इस तथ्य को अन्यत्र सिद्ध किया है।

इस संस्करण में 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ की आचार्य पूज्यपाद देवनन्दि जी द्वारा रचित 'सर्वार्थसिद्धि' नामक टीका की सामग्री को आधार बनाकर चुने हुये सरल एवं संक्षिप्त-प्रश्नोत्तर बनाए गये हैं, ताकि जिज्ञासु-पाठकों को आसानी से इस सिद्धान्तग्रन्थ में वर्णित-विषय का स्पष्टीकरण हो सके। उसमें कुछ प्रश्नोत्तर अन्य सिद्धान्तग्रन्थों के आधार पर भी दिये गये हैं। प्रश्नोत्तरों का चयन विषय के स्पष्टीकरण की दृष्टि से ही किया गया है। अनावश्यक-पांडित्य या तार्किक ऊहापोहवाले प्रश्नोत्तर नहीं रखे गये हैं।

प्रस्तुत-प्रस्तावना में ग्रन्थकर्त्ता आचार्य और उनकी परम्परा के बारे में संक्षिप्त-परिचय दिया गया है। तुलनात्मक अध्ययन के विशेष-विवरण के बारे में और अधिक विस्तार से जानने के लिये पाठकगण भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित 'सर्वार्थसिद्धि' की प्रस्तावना (लेखक : पं. फूलचंद्र जी सिद्धान्ताचार्य) का अवलोकन कर सकते हैं। यहाँ पर मुख्यतः ग्रन्थकर्त्ता के बारे में विवेचन विविध-आयामों से अनेक प्रमाणों के आधार पर किया गया है। ग्रन्थ के विषय में विशेष-विवेचन न करके संक्षेप में ही यहाँ कथन किया गया है। ❖❖

अक्षय-तृतीया, 15 मई 2002 — डॉ. सुदीप जैन

सन्दर्भसूची

1. "वर्षे सप्तशते चैव सप्तत्या च विस्मृतौ।
   उमास्वामिमुनिर्जातः कुन्दकुन्दस्तथैव च॥"
2. द्र., भावना योग : एक विश्लेषण, पृष्ठ 28.
3. द्र., जैनेन्द्र सिद्धान्तकोश भाग 1, परिशिष्ट 4/4, पृष्ठ 490-491।
4. द्र., सर्वार्थसिद्धि (भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन) की पं. फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्रीकृत 'प्रस्तावना'।
5. (क) "तह गिद्धपिंछाइरियप्पयासिद-तच्चत्थसुत्तो वि 'वर्तना-परिणाम-क्रिया-परत्वापरत्वे च कालस्य' — इति दव्वकालो परूविदो।"
   — *(आचार्य. वीरसेनस्वामीकृत धवला, 4/1, 5, 2/316 पृष्ठ)*
   (ख) "एतेन गृद्धपिच्छाचार्य-पर्यन्त-मुनिसूत्रेण व्यभिचारिता निरस्ता।"
   — *(आ. विद्यानन्दस्वामिकृत 'तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक', पृष्ठ 6)*
   (ग) अतुच्छगुणसम्पातं गृद्धपिच्छं नतोऽस्मि तम्।
   पक्षीकुर्वन्ति यं भव्या निर्वाणायोत्पतिष्णवः॥
   — *(आ. वादिराजकृत 'पार्श्वनाथचरित', 1/16)*
   (घ) श्रवणबेलगोल के शिलालेख क्र. 40, 42, 43, 47, 50, 105 एवं 108 में भी इनका नाम 'गृद्धपिच्छ' आया है। — *(द्र., शिलालेख-संग्रह, भाग 1)*
6. "तत्त्वार्थसूत्र-कर्त्तारं गृद्धपिच्छोपलक्षितम्।
   वन्दे गणीन्द्रसंजातमुमास्वामी-मुनीश्वरम्॥" — *('तत्त्वार्थसूत्र' की प्रशस्ति का अंतिम-पद्य)*
7. "तत्र दिगम्बराणां मायूरपिच्छे पिच्छिका।"
8. द्र., आचार्य अकलंकदेव एवं आचार्य विद्यानंद स्वामी आदि की तत्त्वार्थसूत्र-विषयक टीकायें।
9. "कहैं सीख गुरु करुणाधार" — 'छहढाला', दौलतराम जी।
10. "स्व-पर हितमागि" — 'स्वरूपसम्बोधनपंचविंशति' की कन्नड़-टीका, महासेन पंडितदेव।
11. 'श्लोकवार्तिक' 1, पृ. 19.
12. 'पुरुषार्थसिद्ध्युपाय', 226.
13. "पदभेदेऽपि वर्णानामेकत्वं न निवर्तते।
    वाक्येषु पदमेकञ्च भिन्नेष्वप्युपलभ्यते॥" — 'वाक्यपदीयम्', 1/71.
14. 'जयधवला', 1/68, पृ. 82.

आचार्य गृद्धपिच्छ उमास्वामी

द्वारा

विरचित

तत्त्वार्थसूत्र

संक्षिप्त-प्रश्नोत्तर सहित

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥1॥

अर्थ — जो मोक्षमार्ग के नेता हैं, कर्मरूपी-पर्वतों को भेदनेवाले हैं, और विश्वतत्त्वों के ज्ञाता हैं, मैं उनके समान गुणों की प्राप्ति के लिये उनकी वन्दना करता हूँ।

प्र. 1. *मोक्षमार्ग का नेता कौन है?*

उत्तर— जो हितोपदेशी है, वह मोक्षमार्ग का नेता है।

प्र. 2. *कर्मरूपी पर्वतों को भेदनेवाला कैसा होता है?*

उत्तर— जो वीतरागी है, वही कर्मरूपी पर्वतों को भेदनेवाला होता है।

प्र. 3. *विश्व-तत्त्वों का ज्ञाता कौन है?*

उत्तर— जो सर्वज्ञ है, वह ही विश्व-तत्त्व का ज्ञाता है।

प्र. 4. *सर्वज्ञ को कौन-सा ज्ञान होता है?*

उत्तर— सर्वज्ञ को केवलज्ञान होता है।

प्र. 5. *'मंगलाचरण' में कौन-से परमेष्ठी को नमस्कार किया है?*

उत्तर— 'मंगलाचरण' में अरिहंत-परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है।

प्र. 6. *अरिहंत-परमेष्ठी के विशेष-गुण कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— अरिहंत-परमेष्ठी के विशेष-गुण सर्वज्ञता, वीतरागता, और हितोपदेशिता हैं।

प्र. 7. *'परमेष्ठी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो परमपद में स्थित हों, उन्हें 'परमेष्ठी' कहते हैं।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि-मोक्षमार्गः ।।1।।

अर्थ — सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र — ये तीनों मिलकर मोक्ष का मार्ग हैं।

प्र. 1. 'सम्यक्' शब्द का अर्थ क्या है?

उत्तर— 'सम्यक्' शब्द का अर्थ 'समीचीन' है।

प्र. 2. 'सम्यक्' शब्द कैसे बना है?

उत्तर— 'सम्' उपसर्गपूर्वक 'अञ्च्' धातु से 'क्विप्' प्रत्यय करने पर 'सम्यक्' शब्द बना है।

प्र. 3. 'सम्यक्' शब्द को दर्शन, ज्ञान, चारित्र में किसके साथ जोड़ना चाहिये?

उत्तर— तीनों में जोड़ना चाहिए — सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र।

प्र. 4. 'सम्यग्दर्शन' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'तत्त्वार्थ-श्रद्धान' को 'सम्यग्दर्शन' कहते हैं।

प्र. 5. 'दर्शन' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'श्रद्धा' को 'दर्शन' कहते हैं।

प्र. 6. 'ज्ञान' किसे कहते हैं?

उत्तर— जानने को 'ज्ञान' कहते हैं।

प्र. 7. 'सम्यग्ज्ञान' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिस-जिस प्रकार के जीवादि पदार्थ अवस्थित हैं, उनको उसी-उसी रूप में जानना 'सम्यग्ज्ञान' है।

प्र. 8. 'सम्यक्चारित्र' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'कर्मों के ग्रहण करने में निमित्तभूत क्रिया के त्याग' को 'सम्यक्चारित्र' कहते हैं। समीचीन आचरण को भी 'सम्यक्चारित्र' कहते हैं।

प्र. 9. 'चारित्र' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'आचरण' को 'चारित्र' कहते हैं।

प्र. 10. क्या सम्यग्दर्शन अकेला मोक्षमार्ग है?

उत्तर— नहीं, सम्यग्दर्शन अकेला मोक्षमार्ग नहीं है।

प्र. 11. यदि तीनों अलग-अलग मोक्ष नहीं हैं, तो कैसे हैं?

उत्तर— तीनों की एकरूपता ही मोक्षमार्ग है।

❀❀

तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।2।।

अर्थ — अपने-अपने स्वरूप के अनुसार तत्त्वार्थों का जो श्रद्धान होता है, वह सम्यग्दर्शन है।

प्र. 1. *'तत्त्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो पदार्थ जिस रूप में है, उसका भाव ही 'तत्त्व' है।

प्र. 2. *'अर्थ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो निश्चय किया जाता है, वह 'अर्थ' है।

प्र. 3. *'तत्त्वार्थ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तत्त्व ही अर्थ है जिसका, वह 'तत्त्वार्थ' है।

प्र. 4. *'श्रद्धा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— श्रद्धा 'आस्था' को कहते हैं।

प्र. 5. *'दर्शन' का अर्थ 'देखना' है, तो 'श्रद्धा' क्यों लिया?*

उत्तर— यहाँ मोक्षमार्ग के प्रकरण होने से देखने के अलावा 'श्रद्धा' अर्थ को ग्रहण किया है।

प्र. 6. *यदि 'दर्शन' को 'श्रद्धा' न लेकर 'देखना' अर्थ को ग्रहण करें, तो क्या हानि होगी?*

उत्तर— तो प्रत्येक जीव के सम्यग्दृष्टि होने का प्रसंग आ जायेगा।

प्र. 7. *'सम्यग्दर्शन' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— 'सम्यग्दर्शन' के दो भेद हैं — सराग-सम्यग्दर्शन एवं वीतराग-सम्यग्दर्शन।

प्र. 8. *'सराग-सम्यग्दर्शन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रशम, संवेग, अनुकम्पा, आस्तिक्य आदि की अभिव्यक्ति को 'सराग-सम्यग्दर्शन' कहते हैं।

प्र. 9. *'वीतराग-सम्यग्दर्शन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'आत्मा की विशुद्धि'-मात्र को 'वीतराग-सम्यग्दर्शन' कहते हैं।

प्र. 10. *'प्रशम' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'रागादि की तीव्रता का ना होना' 'प्रशम' है।

प्र. 11. *'संवेग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संसार शरीर के दुःख से भयभीत होना 'संवेग' है।

प्र. 12. *'अनुकम्पा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'सब जीवों पर दयाभाव रखना' 'अनुकम्पा' है।

प्र. 13. *'आस्तिक्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'जीवादि पदार्थ' हैं — ऐसी आस्था की बुद्धि का होना 'आस्तिक्य' है। ✿✿

तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥3॥

अर्थ — वह (सम्यग्दर्शन) 'निसर्ग' से और 'अधिगम' से उत्पन्न होता है।

प्र. 1. *सूत्र में 'तत्' अर्थात् 'वह' शब्द क्यों लिखा है?*

उत्तर— 'सम्यग्दर्शन' के ग्रहण करने के लिए 'तत्' शब्द को लिखा है।

प्र. 2. *'निसर्गज-सम्यग्दर्शन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'जो दूसरे के उपदेश के बिना स्वयं अपने आप से उत्पन्न होता है', उसे 'निसर्गज-सम्यग्दर्शन' कहते हैं।

प्र. 3. *'अधिगमज-सम्यग्दर्शन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'जो गुरु आदि के उपदेश से उत्पन्न होता है', वह 'अधिगमज-सम्यग्दर्शन' है।

प्र. 4. *'निसर्गज' और 'अधिगमज' में क्या अंतर है?*

उत्तर— 'निसर्गज' स्वयं से और 'अधिगमज' प्रत्यक्ष-निमित्त से उत्पन्न होता है।

प्र. 5. *क्या 'निसर्गज' में उपदेश की जरूरत है?*

उत्तर— इस भव में नहीं, पूर्वभव में उपदेश का सुनना जरूरी है।

प्र. 6. *यदि उपदेश ही कारण है, तो उसे 'निसर्गज' क्यों कहा है?*

उत्तर— इस भव की दृष्टि से उपदेश की जरूरत नहीं है, इसलिए 'निसर्गज' में 'उपदेश' की आवश्यकता नहीं है — ऐसा कहा गया है

प्र. 7. *'निसर्गज' तथा 'अधिगमज' में उपदेश का क्या अंतर है?*

उत्तर— 'निसर्गज' में पूर्वभव का उपदेश कार्य करता है और 'अधिगमज' में इसी भव का उपदेश कार्य करता है। ✿✿

जीवाजीवास्त्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम् ॥4॥

अर्थ — जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष — ये सात तत्त्व हैं।

प्र. 1. *'जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें चेतना पाई जाती है, उसे 'जीव' कहते हैं

प्र. 2. *'चेतना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जानना, देखना, सुनना, और सुख-दुःख आदि अनुभव करना 'चेतना' है।

प्र. 3. *'अजीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें 'चेतना' नहीं पाई जाती है, उसे 'अजीव' कहते हैं।

प्र. 4. *'आस्रव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शुभ और अशुभ-कर्मों के आत्मा के प्रदेशों में आने को 'आस्रव' कहते हैं।

प्र. 5. *'प्रदेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक-परमाणु जितने आकाश को घेरता है, उतने क्षेत्र को एक 'प्रदेश' कहते हैं।

प्र. 6. *'परमाणु' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पुद्गल के अंतिम टुकड़े को, जिसका और दूसरा टुकड़ा न हो सके, उसे 'परमाणु' कहते हैं।

प्र. 7. *'आत्म-प्रदेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'आत्मा' आकाश के जितने क्षेत्र को घेरता है, उतने क्षेत्र को 'आत्म-प्रदेश' कहते हैं।

प्र. 8. *'शुभ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शुभ 'पुण्य' को कहते हैं।

प्र. 9. *'अशुभ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अशुभ 'पाप' को कहते हैं।

प्र. 10. *'बन्ध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मा और कर्मों के प्रदेशों का परस्पर मिलना 'बंध' है।

प्र. 11. *'संवर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'आस्रव' का रोकना 'संवर' है।

प्र. 12. *'निर्जरा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों का एकदेश-क्षय होना 'निर्जरा' है।

प्र. 13. *'एकदेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आंशिकरूप को यहाँ एकदेश कहा गया है।

प्र. 14. *'मोक्ष' किसे कहते हैं?.*

उत्तर— समस्त कर्मों का आत्मा से अलग होना 'मोक्ष' है। ✿✿

नाम-स्थापना-द्रव्य-भावतस्तन्न्यासः ।।5।।

अर्थ — नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव रूप से उन सम्यग्दर्शन आदि और जीव आदि का 'न्यास' अर्थात् 'निक्षेप' होता है।

प्र. 1. *'निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'निक्षेप' का अर्थ 'रखना' है। इसे 'न्यास' भी कहा गया है।

प्र. 2. *'नाम-निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गुण, जाति, द्रव्य और क्रिया की अपेक्षा के बिना अपनी इच्छानुसार नाम रखना 'नाम-निक्षेप' है।

प्र. 3. *'स्थापना-निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर *काष्ठ, धातु, पाषाण आदि से मूर्ति बनाकर किसी व्यक्ति-विशेष की कल्पना करना 'स्थापना-निक्षेप' है।*

प्र. 4. *'स्थापना-निक्षेप' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— इसके दो भेद हैं — 'तदाकार-स्थापना' एवं 'अतदाकार-स्थापत्ता'।

प्र. 5. *'तदाकार-स्थापना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसकी आकृति उसी आकार में हो, उसे 'तदाकार' बोलते है, जैसे पाषाण में भगवान् महावीर या पार्श्वनाथ की मूर्त्ति बनाना।

प्र. 6. *'अतदाकार-स्थापना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी वस्तु में बिना आकार के स्थापना करने को 'अतदाकार-स्थापना' कहते हैं, जैसे शतरंज की मोहरों में हाथी, घोड़ा आदि की स्थापना करना। ठोने में चावल आदि में भगवान् आदि की स्थापना करना।

प्र. 7. *'द्रव्य-निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भूत-भविष्यत-पर्याय की मुख्यता लेकर 'वर्तमान' में कहना सो 'द्रव्य-निक्षेप' है, जैसे — कभी पूजा करता था, उसे 'पुजारी' कहना। या आगे कभी करनेवाला है, उसे अभी 'पुजारी' कहने लगना।

प्र. 8. *'भाव-निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वर्तमान की पर्याय की मुख्यता से पदार्थ जैसा है, उसको उसी रूप में कहना 'भाव-निक्षेप' है।

प्र. 9. *एक ही उदाहरण में चारों निक्षेप बताइए?*

उत्तर— जिनेन्द्र भगवान् का नाम 'नाम-जिन' है; जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा 'स्थापना-जिन' है; भगवान् का जीव 'द्रव्य-जिन' है; जो साक्षात् समवसरण में स्थित है, वे 'भाव-जिन' हैं।

✿✿

प्रमाणनयैरधिगमः ॥6॥

अर्थ — प्रमाण और नयों से पदार्थों का ज्ञान होता है।

प्र. 1. *'प्रमाण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो सम्पूर्ण पदार्थ को ग्रहण करता है, वह प्रमाण है; जैसे द्रव्य कहने से जीवादि छहो द्रव्यों को ग्रहण करता है।

प्र. 2. *प्रमाण के कितने भेद हैं और कौन-कौन से हैं।*

उत्तर— 'प्रमाण' के दो भेद हैं — प्रत्यक्ष-प्रमाण एवं परोक्ष-प्रमाण।

प्र. 3. *'प्रत्यक्ष-प्रमाण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मा अपने ज्ञान के द्वारा बाह्य इन्द्रियादि के निमित्त के बिना ही स्वयं जानता है, वह ज्ञान 'प्रत्यक्ष-प्रमाण' है।

प्र. 4. *'परोक्ष-प्रमाण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो ज्ञान इन्द्रिय आदि की सहायता से होता है, वह ज्ञान 'परोक्ष-प्रमाण' है।

प्र. 5. *'नय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो पदार्थ के एकदेश को ग्रहण करता है, वह 'नय' है; अथवा वक्ता या ज्ञाता के अभिप्राय को भी 'नय' कहते हैं।

प्र. 6. *'नय' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— 'नय' के दो भेद हैं — 'द्रव्यार्थिकनय' एवं 'पर्यायार्थिकनय'।

प्र. 7. *'द्रव्यार्थिक-नय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'द्रव्य' जिसका प्रयोजन है, वह 'द्रव्यार्थिक-नय' है।

प्र. 8. *'द्रव्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो पर्यायों को प्राप्त करता है, प्राप्त होगा, प्राप्त हुआ था, वह 'द्रव्य' है।

प्र. 9. *'पर्याय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो कालकृत-भेद को प्राप्त होता है, उसे 'पर्याय' कहते हैं, जैसे — कल बालक था, आज युवा है, कल वृद्ध होगा।

निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः ॥7॥

अर्थ – निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण, स्थिति और विधान से सम्यग्दर्शन आदि विषयों का ज्ञान होता है।

प्र. 1. *'निर्देश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वस्तु के स्वरूप का कथन करना 'निर्देश' है।

प्र. 2. 'स्वामित्व' किसे कहते हैं?

उत्तर— वस्तु के आधिपत्य को 'स्वामित्व' कहते हैं।

प्र. 3. 'साधन' किसे कहते हैं?

उत्तर— वस्तु की उत्पत्ति के कारण को 'साधन' कहते हैं।

प्र. 4. *'अधिकरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वस्तु के आधार को 'अधिकरण' कहते हैं।

प्र. 5. *'स्थिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वस्तु की काल-अवधि को 'स्थिति' कहते हैं।

प्र. 6. *'विधान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वस्तु के भेदों को 'विधान' कहते हैं।

प्र. 7. एक उदाहरण में निर्देश, स्वामित्व, साधन, अधिकरण आदि बताओ?

उत्तर— 'सम्यग्दर्शन कहना 'निर्देश' है; भव्यसंज्ञी पर्याप्तक-जीव इसका 'स्वामी' है; परोपदेश (देव, शास्त्र और गुरु) इसके 'साधन' है। भव्यों की आत्मा ही इसका 'आधार' है। अंतर्मूहर्त से अनन्तकाल इसकी 'स्थिति' है। इसके तीन भेद हैं जिन्हें 'विधान' कहते हैं।

प्र. 8. सम्यग्दर्शन के तीन भेद कौन-कौन से हैं?

उत्तर— सम्यग्दर्शन के तीन भेद हैं — औपशमिक, क्षायोपशमिक, तथा क्षायिक।

प्र. 9. 'औपशमिक, क्षायोपशमिक और क्षायिक' किसे कहते हैं?

उत्तर— अनन्तानुबंधी-क्रोध, मान, माया, लोभ एवं मिथ्यात्व, सम्यक्-मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति — इन सात कर्म-प्रकृतियों के 'उपशम' से औपशमिक, 'क्षयोपशम' से क्षायोपशमिक एवं 'क्षय' से क्षायिक-सम्यग्दर्शन होता है। ❀❀

सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्पबहुत्वैश्च ॥8॥

अर्थ – सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्प बहुत्व से भी सम्यग्दर्शन आदि विषयों का ज्ञान होता है।

प्र. 1. 'सत्' किसे कहते हैं?

उत्तर— वस्तु के 'अस्तित्व' को 'सत्' कहते हैं।

प्र. 2. 'संख्या' किसे कहते हैं?

उत्तर— वस्तु के परिमाण की गिनती को 'संख्या' कहते हैं।

प्र. 3. 'क्षेत्र' किसे कहते हैं?

उत्तर— वस्तु के वर्तमानकाल के निवास को 'क्षेत्र' कहते हैं।

प्र. 4. 'स्पर्शन' किसे कहते हैं?

उत्तर— वस्तु के तीनकाल-सम्बन्धी निवास को 'स्पर्शन' कहते हैं।

प्र. 5. 'काल' किसे कहते हैं?

उत्तर— वस्तु के ठहरने की मर्यादा को 'काल' कहते हैं।

प्र. 6. 'अन्तर' किसे कहते हैं?

उत्तर— वस्तु के विरहकाल को 'अन्तर' कहते हैं।

प्र. 7. 'विरहकाल' किसे कहते हैं?

उत्तर— एक बार सम्यक्त्व होकर के छूटने के बाद दोबारा सम्यक्त्व होने के बीच के अंतराल को 'विरह' कहते हैं।

प्र. 8. 'भाव' किसे कहते हैं?

उत्तर— औपशमिक आदि परिणाम को 'भाव' कहते हैं।

प्र. 9. *'अल्पबहुत्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अन्य वस्तु की अपेक्षा किसी वस्तु की हीनाधिकता के वर्णन करने को 'अल्पबहुत्व' कहते हैं।

प्र. 10. *इन सभी को एक उदाहरण से समझाइए?*

उत्तर— 'कलम' — ग्राहक दुकानदार से पूछता है, "'कलम' है?" "हाँ है" — यह 'सत्' हो गया; "कितनी हैं" — यह 'संख्या' हो गई; "कहाँ रखी है?" यह 'क्षेत्र' हो गया; "कितने समय तक चलेगी" — यह 'काल' हो गया; "पहले ले गए थे, अब एक साल बाद और ले जा रहा हूँ" — यह 'अन्तर' हो गया; "बहुत अच्छा लिखती है" — यह 'भाव' हो गया; "पहले कम ली थीं, अब ज्यादा चाहिये" — यह 'अल्पबहुत्व' हो गया। ✿✿

मति-श्रुतावधि-मनःपर्यय-केवलानि ज्ञानम् ॥9॥

अर्थ — मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान — ये पाँच ज्ञान है।

प्र. 1. *'ज्ञान' कितने हैं?*

उत्तर— 'ज्ञान' पाँच हैं — मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान।

प्र. 2. *'मतिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मतिज्ञानावरणकर्म के क्षयोपशमपूर्वक इन्द्रिय और मन के द्वारा पदार्थों का जो ज्ञान होता है, उसे 'मतिज्ञान' कहते हैं।

प्र. 3. *'श्रुतज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— श्रुतज्ञानावरणकर्म के क्षयोपशम से जो ज्ञान होता है, वह 'श्रुतज्ञान' है या 'मतिज्ञान' के द्वारा जाने हुए पदार्थों को विशेषरूप से जानना 'श्रुतज्ञान' है।

प्र. 4. *'अवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो ज्ञान इन्द्रियों की सहायता के बिना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लेकर 'रूपी-पदार्थ' को स्पष्ट जानता है, वह 'अवधिज्ञान' है।

प्र. 5. *'मनःपर्यय-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना ही अन्य-पुरुष के मन में स्थित रूपी पदार्थ को जानता है, वह 'मनःपर्ययज्ञान' है।

प्र. 6. *'रूपी-पदार्थ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण पाए जायें, वह 'रूपी-पदार्थ' है; उसे 'पुद्गल' भी कहते हैं।

प्र. 7. *'केवलज्ञान' किसे कहते हैं।*

उत्तर— जिस ज्ञान द्वारा सभी द्रव्यों तथा उनकी त्रिकालवर्ती सभी पर्यायों को एकसाथ जाना जाता है, उसे 'केवलज्ञान' कहते हैं। ✿✿

तत्प्रमाणे ।।10।।

अर्थ — वह पाँचों प्रकार का ज्ञान दो प्रकार के प्रमाण रूप है।

प्र. 1. *'प्रमाण' किसे कहते है?*

उत्तर— जो सम्यक्-प्रकार से जानता है, वह 'प्रमाण' है।

प्र. 2. *सूत्र में 'तत्' शब्द ग्रहण क्यों किया है?*

उत्तर— पूर्व-सूत्र में कथित पाँचों ज्ञानों को ग्रहण करने के लिए इस सूत्र में 'तत्' शब्द ग्रहण किया है।

प्र. 3. *इस सूत्र में 'तत्प्रमाणे' जैसा द्विवचन प्रयोग क्यों किया गया है।*

उत्तर— 'प्रमाण' दो-प्रकार के हैं — इस बात को कहने के लिए 'द्विवचन' कहा है।

प्र. 4. *'दो-प्रकार' के प्रमाण कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'प्रत्यक्ष-प्रमाण' और 'परोक्ष प्रमाण' — ये दो प्रमाण हैं। ✿✿

आद्ये परोक्षम् ।।11।।

अर्थ — प्रथम दो ज्ञान 'परोक्ष-प्रमाण' हैं।

प्र. 1. *'परोक्ष-प्रमाण' कितने हैं?*

उत्तर— आदि के दो ज्ञान अर्थात् 'मतिज्ञान' और 'श्रुतज्ञान' 'परोक्ष-प्रमाण' हैं।

प्र. 2. *'परोक्ष-प्रमाण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो ज्ञान इन्द्रिय और मन आदि पर के निमित्त से होता है, वह 'परोक्ष-ज्ञान' है।

प्र. 3. *सूत्र में 'आद्ये' शब्द क्यों ग्रहण किया है?*

उत्तर— 'मति' और 'श्रुत' — इन दोनों ज्ञानों को ग्रहण करने के लिये 'आद्ये' शब्द का प्रयोग किया है।

प्र. 4. *दोनों ज्ञान 'परोक्ष' क्यों हैं?*

उत्तर— दोनों ज्ञान पराधीन हैं, क्योंकि ये इन्द्रियों और मन के आधीन हैं। ✿✿

प्रत्यक्षमन्यत् ।।12।।

अर्थ — शेष सब ज्ञान 'प्रत्यक्ष प्रमाण' हैं।

प्र. 1. *'प्रत्यक्ष-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो ज्ञान बाह्य-इन्द्रियों की सहायता के बिना होता है, वह 'प्रत्यक्ष-ज्ञान' है।

प्र. 2. *'प्रत्यक्ष-ज्ञान' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अवधिज्ञान', 'मनःपर्यय-ज्ञान' और 'केवलज्ञान' — ये तीन 'प्रत्यक्षज्ञान' हैं।

प्र. 3. *'प्रत्यक्ष-ज्ञान' के कितने भेद हैं? और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'प्रत्यक्ष-ज्ञान' के दो भेद हैं — देश-प्रत्यक्ष, और सकल-प्रत्यक्ष।

प्र. 4. *'देशप्रत्यक्ष-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्रियों और मन की सहायता के बिना रूपी-पदार्थों को एकदेश-रूप में जानना 'देशप्रत्यक्ष-ज्ञान' है।

प्र. 5. *'देशप्रत्यक्ष-ज्ञान' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अवधिज्ञान', और 'मनःपर्ययज्ञान' — ये दोनों ज्ञान 'देशप्रत्यक्ष' हैं।

प्र. 6. *'सकलप्रत्यक्ष-ज्ञान किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो ज्ञान लोकालोक के समस्त-द्रव्यों की त्रिकालवर्ती समस्त-पर्यायों को एकसाथ जानता है, वह 'सकलप्रत्यक्ष-ज्ञान' है।

प्र. 7. *'सकलप्रत्यक्ष-ज्ञान' कौन-सा है?*

उत्तर— 'केवलज्ञान' 'सकलप्रत्यक्ष-ज्ञान' है। ✿✿

मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ।।13।।

अर्थ – मति, स्मृति, संज्ञा, चिंता, और, अभिनिबोध–ये मतिज्ञान के पर्यायवाची नाम हैं।

प्र. 1. *'मति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मनन करना 'मति' कहलाता है।

प्र. 2. *'मति' का क्या कार्य है?*

उत्तर— पाँचों इन्द्रिय और मन से जो अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणारूप-ज्ञान का होना 'मति' का कार्य है।

प्र. 3. *'स्मृति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्मरण करना 'स्मृति' है।

प्र. 4. *'स्मृति' का क्या कार्य है?*

उत्तर— पहले जाने हुए पदार्थ को वर्तमान में स्मरण करना 'स्मृति' का कार्य है।

प्र. 5. *'संज्ञा' किसे कहते हैं?*

उत्तर– प्रत्याभिज्ञान अर्थात् जोड़रूप ज्ञान को संज्ञा कहते हैं।

प्र. 6. *'संज्ञा' का क्या कार्य है?*

उत्तर— जिसे पूर्व में देखा था, ऐसे स्मृति और प्रत्यक्ष के जोड़रूप-ज्ञान का कराना

संज्ञा का कार्य है, जैसे — 'यह वही है', जिसे पूर्व में देखा था।

प्र. 7. *'चिन्ता' किसे कहते हैं?*

उत्तर— व्याप्ति के ज्ञान को 'चिंता' कहते हैं। इसका दूसरा नाम तर्क भी है।

प्र. 8. *'चिंता' का कार्य क्या है?*

उत्तर— जहाँ-जहाँ धुआँ है, वहाँ-वहाँ अग्नि है — ऐसे ज्ञान कराना चिंता का कार्य है।

प्र. 9. *'अभिनिबोध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— साधन से साध्य के ज्ञान को 'अभिनिबोध' कहते हैं। इसका दूसरा नाम अनुमान भी है; जैसे — उस पहाड़ पर अग्नि है, क्योंकि धुआँ दिखाई दे रहा है।

प्र. 10. *'अभिनिबोध' का कार्य क्या है?*

उत्तर— साधन से साध्य के ज्ञान को कराना, 'अभिनिबोध' का कार्य है; जैसे पहाड़ पर अग्नि है, क्योंकि उस पर धुआँ है। ✿✿

तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम् ॥14॥

अर्थ — वह मतिज्ञान इन्द्रिय और अनिन्द्रिय (मन) के निमित्त से होता है।

प्र. 1. *'इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मा के पहचान के चिह्न को 'इन्द्रिय' कहते हैं।

प्र. 2. *'अनिन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'मन' को 'अनिन्द्रिय' कहते हैं।

प्र. 3. *'मन' को 'अनिन्द्रिय' क्यों कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्रिय स्थूल-आकारवान्, दृष्टिगम्य होती है, जैसे — जीभ, आँख, नाक, कान और त्वचा अपेक्षाकृत-स्थूल होते हैं। परन्तु मन सूक्ष्म होने से दृष्टिगम्य नहीं होता, और सारे विषय को ग्रहण कर लेता है।

प्र. 4. *चक्षु-इन्द्रिय के 'विषय' कितने हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— चक्षु-इन्द्रिय के विषय पाँच हैं, जैसे — सफेद, नीला, पीला, लाल, और काला। ये पाँचों वर्ण हैं।

प्र. 5. *'रसना-इन्द्रिय' के 'विषय' कितने हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'रसना-इन्द्रिय' के 'विषय' पाँच हैं, जैसे — चरपरा, कड़वा, कषैला, खट्टा, मीठा।

प्र. 6. *'रसना-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे चखकर खट्टा, मीठा आदि रसों का ज्ञान होता है, उसे 'रसना-इन्द्रिय'

कहते हैं।

प्र. 7. *'घ्राण-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— **जिससे सूँघकर सुगंध और दुर्गंध का ज्ञान होता है, उसे 'घ्राण-इन्द्रिय' कहते हैं।**

प्र. 8. *'घ्राण-इन्द्रिय' के विषय कितने हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'घ्राण-इन्द्रिय' के विषय दो हैं — सुगंध और दुर्गन्ध।

प्र. 9. *'स्पर्शन-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे स्पर्श करने से ठंडा, गरम आदि का ज्ञान होता है, वह 'स्पर्शन-इन्द्रिय' है।

प्र. 10. *'स्पर्शन-इन्द्रिय' के 'विषय' कितने हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'स्पर्शन-इन्द्रिय' के 'विषय' आठ हैं — ठंडा-गरम, चिकना-रूखा, मुलायम-कठोर, और भारी-हल्का।

प्र. 11. *'कर्ण-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे सुनकर ज्ञान होता है, उसे 'कर्ण-इन्द्रिय' कहते हैं।

प्र. 12. *'कर्ण-इन्द्रिय के 'विषय' कितने हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'कर्ण-इन्द्रिय' के 'विषय' समस्त प्रकार की ध्वनियाँ और शब्द हैं।

प्र. 13. *'निमित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कार्य की उत्पत्ति में जो अनुकूल होता है, उसे 'निमित्त' कहते हैं। ✿✿

अवग्रहेहावाय-धारणाः ।।15।।

अर्थ — अवग्रह, ईहा, अवाय, और धारणा — ये मतिज्ञान के चार-भेद हैं।

प्र. 1. *'मतिज्ञान' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'मतिज्ञान' के चार-भेद हैं — अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा।

प्र. 2. *'अवग्रह-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दर्शन के बाद सर्वप्रथम जिस पदार्थ का ग्रहण होता है, वह 'अवग्रह' है, जैसे — 'यह शुक्ल है।'

प्र. 3. *'ईहा-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'अवग्रह' के द्वारा जाने हुए पदार्थों को विशेषरूप से जानने की चेष्टा करना 'ईहा-ज्ञान' है, जैसे — यह शुक्लरूप बगुला है, या पताका है।

प्र. 4. *'अवाय-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— विशेष-चिह्न देखकर वस्तु का ज्ञान होना 'अवाय-ज्ञान' है, जैसे शुक्ल-पदार्थ

में पंखों का फड़फड़ाना, उड़ना आदि चिह्न देखकर 'बगुला है' का निश्चय होता है।

प्र. 5. *'धारणा-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'अवाय' से निश्चय किए हुए पदार्थ को कालान्तर में नहीं भूलना 'धारणा-ज्ञान' है, जैसे — बगुला को एक बार देख लिया कि ये बगुला है, दोबारा नहीं भूलना। ✿✿

बहु-बहुविध-क्षिप्रानिःसृतानुक्त-ध्रुवाणां सेतराणाम् ॥16॥

अर्थ — सेतर अर्थात् प्रतिपक्षसहित बहु, बहुविध, क्षिप्र, अनिःसृत, अनुक्त और ध्रुव (आदि पदार्थों) का अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणरूप मतिज्ञान होता है।

प्र. 1. *'बहु' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बहुत-वस्तुओं को 'बहु' कहते हैं। यह वैपुल्यवाची भी है।

प्र. 2. *'बहुविध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनेकप्रकार के पदार्थों को 'बहुविध' कहते हैं।

प्र. 3. *'क्षिप्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शीघ्र जाते हुए पदार्थ के ज्ञान को 'क्षिप्र' कहते हैं, जैसे — दौड़ते हुए घोड़े का ज्ञान होना।

प्र. 4. *'अनिःसृत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी पदार्थ के एक-देश को देखकर सम्पूर्ण-पदार्थ का ज्ञान हो जाना 'अनिःसृत' कहलाता है, जैसे — पानी में डूबे हुये हाथी की सूंड को देखकर कहना कि 'ये हाथी है।'

प्र. 5. *'एकविध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एकप्रकार के पदार्थ को 'एकविध' कहते हैं।

प्र. 6. *'अनुक्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिना कहे जिसका ज्ञान हो, वह 'अनुक्त' है, जैसे — किसी को बैठने का इशारा किया।

प्र. 7. *'ध्रुवज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस पदार्थ का बहुत-काल तक ज्ञान हो, वह 'ध्रुवज्ञान' है, जैसे — मंदिर के शिखर का ज्ञान होना।

प्र. 8. *'सेतर-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बहु, बहुविध आदि के प्रतिपक्ष (उल्टे) एक, एकविध अक्षिप्र, निःसृत, उक्त और अध्रुव आदि को जानना 'सेतर-ज्ञान' है।

प्र. 9. *'एक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अल्प अथवा एक-पदार्थ के ज्ञान को 'एक' कहते हैं।

प्र. 10. *'अक्षिप्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मंद-गति से जाते हुए पदार्थ का ज्ञान होना 'अक्षिप्र-ज्ञान' है, जैसे — मंदगति से जाते हुए कछुए का ज्ञान होना।

प्र. 11. *'निःसृत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रकट-पदार्थ के ज्ञान को 'निःसृत' कहते हैं, जैसे पूरे हाथी को देखकर ज्ञान होना कि 'यह हाथी है।'

प्र. 12. *'उक्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वचन को सुनकर पदार्थ का ज्ञान होना 'उक्त' कहलाता है।

प्र. 13. *'अध्रुव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसका ज्ञान बहुत समय तक एक सा न रहे, वह 'अध्रुव' है, जैसे — बादलों को देखकर बादलों का ज्ञान होना, बादल थोड़ी देर के लिए आए और निकल गए।✿✿

अर्थस्य ॥17॥

अर्थ — उपर्युक्त बहु-बहुविध आदि बारह विशेषण पदार्थ के हैं।

प्र. 1. *'अर्थ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'पदार्थ' को 'अर्थ' कहते हैं।

प्र. 2. *'बहु-बहुविध' आदि बारह-विशेषण किसके हैं?*

उत्तर— 'बहु-बहुविध' आदि बारह-विशेषण 'पदार्थ' के हैं। ✿✿

व्यञ्जनस्यावग्रहः ॥18॥

अर्थ — 'व्यंजन' अर्थात् (अस्पष्ट-शब्दादि) का अवग्रह ही होता है?

प्र. 1. *'व्यंजन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अस्पष्टरूप शब्द-आदि के ज्ञान को 'व्यंजन' कहते हैं।

प्र. 2. *'अवग्रह' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— 'अवग्रह' के दो भेद — व्यंजनावग्रह, और अर्थावग्रह हैं।

प्र. 3. *'व्यंजनावग्रह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अस्पष्ट-पदार्थ के अवग्रह को 'व्यंजनावग्रह' कहते हैं, जैसे — बाजार के कोलाहल में सुनाई देनेवाले शब्द।

प्र. 4. *'अर्थावग्रह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्पष्ट-पदार्थ के अवग्रह को 'अर्थावग्रह' कहते हैं, जैसे दो आदमियों की आपस में बातचीत।

न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ॥19॥

अर्थ — 'चक्षु' और 'मन' से 'व्यंजनावग्रह' नहीं होता।

प्र. 1. *'व्यंजनावग्रह' किस-किससे नहीं होता है?*

उत्तर— 'चक्षु' और 'मन' से 'व्यंजनावग्रह' नहीं होता है।

प्र. 2. *संक्षेप से 'मतिज्ञान' के कितने भेद होते हैं?*

उत्तर— 'मतिज्ञान' के चार-भेद होते हैं — अवग्रह, ईहा, अवाय, और धारणा।

प्र. 3. *मतिज्ञान के कितने अवान्तर-भेद होते हैं?*

उत्तर— मतिज्ञान के अवान्तर-भेद 336 होते हैं।

प्र. 4. *मतिज्ञान 48 भेद कैसे होते हैं?*

उत्तर— अवग्रह आदि के चार-भेदों में बहु-बहुविध के बारह-भेदों का गुणा करने से 48 भेद होते हैं। (4×12=48)

प्र. 5. *प्रत्येक-ज्ञान कितने प्रकार से होता है।*

उत्तर— प्रत्येक-ज्ञान पाँचों इन्द्रियों और मन के द्वारा होता है।

प्र. 6. *अर्थावग्रह के कितने भेद हुये।*

उत्तर— अर्थावग्रह के कुल 288 भेद हुए। (48×6=288)

प्र. 7. *'व्यंजनावग्रह' के कितने भेद हैं, और कैसे?*

उत्तर— 'व्यंजन' अर्थात् अस्पष्ट-शब्दादि का ज्ञान 'चक्षु' और 'मन' से नहीं होता है, तथा इसका मात्र 'अवग्रह' ही होता है, ईहा आदि नहीं। अत: 'व्यंजनावग्रह' के मात्र 48 भेद होते हैं।

प्र. 8. *'व्यंजनावग्रह' के 48 भेद कैसे होते हैं?*

उत्तर— बहु-बहुविध आदि के बारह-भेद और स्पर्शन, रसना, कर्ण, घ्राण — इन चारों इन्द्रियों से गुणा करने से 48 भेद होते हैं। (12×4=48)

प्र. 9. *मतिज्ञान के 336 भेद कैसे होते हैं?*

उत्तर— 'अर्थावग्रह' आदि के 288 एवं 'व्यंजनावग्रह' के 48 भेदों को मिलाने से 'मतिज्ञान' के 336 भेद होते हैं। (288+48=336)

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक-द्वादशभेदम् ॥20॥

अर्थ — 'श्रुतज्ञान' मतिज्ञानपूर्वक होता है। वह दो-प्रकार का, अनेक-प्रकार

का और बारह-प्रकार का है।

प्र. 1. *'श्रुतज्ञान' कैसे होता है?*

उत्तर— 'मतिज्ञान' के पश्चात् 'श्रुतज्ञान' होता है।

प्र. 2. *'श्रुतज्ञान' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— श्रुतज्ञान के दो-भेद, अनेक-भेद और बारह-भेद कहे गये हैं।

प्र. 3. *'श्रुतज्ञान' के 'दो-भेद' कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अंगबाह्य' और 'अंगप्रविष्ट' — ये दो-भेद 'श्रुतज्ञान' के हैं।

प्र. 4. *'श्रुतज्ञान' के 'अनेक-भेद' कौन से हैं?*

उत्तर— 'अंगबाह्य-श्रुतज्ञान' के 'दशवैकालिक, उत्तराध्ययन' आदि अनेक-भेद हैं।

प्र. 5. *'श्रुतज्ञान' के 'बारह-भेद' किस अपेक्षा से हैं?*

उत्तर— 'अंगप्रविष्ट' के 'बारह-भेदों' की अपेक्षा 'श्रुतज्ञान' के 'बारह-भेद' हैं।

प्र. 6. *'अंगप्रविष्ट-श्रुतज्ञान' के 'बारह-भेद' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग, व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञातृधर्म-कथांग, उपासकाध्यनांग, अंतःकृद्दशांग, अनुत्तरोपपादिकदशांग, प्रश्नव्याकरणांग, विपाक्सूत्रांग, दृष्टिप्रवादांग — ये 'अंगप्रविष्ट-श्रुतज्ञान' के बारह-भेद हैं।

प्र. 7. *'दृष्टिप्रवादांग' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'दृष्टिप्रवादांग' के पाँच-भेद हैं — परिकर्म, सूत्र, प्रथमानुयोग, पूर्वगत, और चूलिका।

प्र. 8. *'परिकर्म' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— 'परिकर्म' के पाँच-भेद हैं — व्याख्या-प्रज्ञप्ति, द्वीपसागर-प्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्ति, सूर्य-प्रज्ञप्ति, और चन्द्र-प्रज्ञप्ति।

प्र. 9. *'सूत्र' और 'प्रथमानुयोग' के कितने-कितने भेद हैं?*

उत्तर— 'सूत्र' और 'प्रथमानुयोग' का एक-एक भेद है।

प्र. 10. *'चूलिका' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'चूलिका' के पाँच-भेद हैं — जलगता, स्थलगता, मायागता, आकाशगता, और रूपगता।

प्र. 11. *'पूर्वगत' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'पूर्वगत' के चौदह-भेद हैं — जैसे उत्पादपूर्व, अग्रायणीपूर्व, वीर्यानुवादपूर्व, अस्तिनास्तिप्रवाद, ज्ञानप्रवाद, सत्यप्रवाद, आत्मप्रवादपूर्व, कर्मप्रवादपूर्व, प्रत्याख्यानपूर्व, विद्यानुवादपूर्व, कल्याणानुवादपूर्व, प्राणानुवादपूर्व, क्रियाविशालपूर्व, और लोकबिन्दुसारपूर्व।

प्र. 12. *'अंगबाह्य-श्रुतज्ञान' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— 'अंगबाह्य-श्रुतज्ञान' के चौदह-भेद हैं — सामायिक, स्तव, वंदना, प्रतिक्रमण, वैनयिक, कृतिकर्म, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, कल्पव्यवहार, कल्पाकल्प, महाकल्प, पुण्डरीक, महापुण्डरीक, अशीतिका (निषिद्धिका)। ✿✿

भवप्रत्ययोऽवधिर्देव-नारकाणाम् ॥21॥

अर्थ — 'भवप्रत्यय'अवधिज्ञान देवों और नारकियों के होता है।

प्र. 1. *'भव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'आयु' और 'नामकर्म' के उदय से जीव की जो पर्याय होती है, वह 'भव' कहलाता है।

प्र. 2. *'प्रत्यय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'निमित्त' या 'कारण' को 'प्रत्यय' कहते हैं।

प्र. 3. *'भव-प्रत्यय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भव ही जिस अवधिज्ञान में कारण है, वह 'भव-प्रत्यय'अवधिज्ञान है।

प्र. 4. *'भवप्रत्यय-अवधिज्ञान' किसे होता है?*

उत्तर— 'देवों' और 'नारकियों' को 'भवप्रत्यय-अवधिज्ञान' होता है।

प्र. 5. *यदि 'देव' और 'नारकियों' को अवधिज्ञान होता है, तो 'क्षयोपशम' की क्या आवश्यकता है?*

उत्तर— 'देव' और 'नारकियों' को अवधिज्ञान 'क्षायोपशम' से ही होता है; परन्तु भव उस क्षयोपशम में 'कारण' बनता है।

प्र. 6. *भव कैसे 'कारण' बनता है?*

उत्तर— जैसे पक्षियों को आकाश-गमन में भव ही कारण बनता है, शिक्षा-गुण की अपेक्षा से नहीं होता है; वैसे ही देवों और नारकियों को व्रतादि के अभाव में भी अवधिज्ञान होता है।

प्र 7. *क्या सभी देवों-नारकियों को 'अवधिज्ञान' होता है?*

उत्तर— ऐसा नहीं है। सम्यग्दृष्टि-देवों, नारकियों को 'अवधिज्ञान' होता है; मिथ्यादृष्टि-देवों, नारकियों को 'कुअवधिज्ञान' होता है, जिसे 'विभंगावधि-ज्ञान' भी कहते हैं।

प्र. 8. *क्या अन्य किसी जीव के 'भवप्रत्यय-अवधिज्ञान' होता है?*

उत्तर— जी हाँ, तीर्थंकरों को भी 'भवप्रत्यय-अवधिज्ञान' होता है।

प्र. 9. *'अवधिज्ञान' के कितने भेद हैं, और वे कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अवधिज्ञान' के दो भेद हैं — भवप्रत्यय तथा गुणप्रत्यय।

प्र. 10. *'गुणप्रत्यय-अवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'क्षयोपशम-गुण' जिसको कारण है, वह 'क्षयोपशमनिमित्तक-अवधिज्ञान' है।

प्र. 11. *'क्षयोपशम-निमित्तक अवधिज्ञान' किसको होता है?*

उत्तर— क्षयोपशम-निमित्तक अवधिज्ञान 'मनुष्यों' और 'तिर्यंचों' को होता है।

प्र. 12. *क्या सभी मनुष्यों और तिर्यंचों को 'गुणप्रत्यय-अवधिज्ञान' होता है?*

उत्तर— नहीं, जिनके 'अवधिज्ञानावरणी-कर्म' के क्षयोपशम हुआ है, केवल ऐसे सम्यग्दृष्टि-जीवों को ही 'गुणप्रत्यय-अवधिज्ञान' होता है।

प्र. 13. *मिथ्यादृष्टि-जीवों के कौन-सा 'अवधिज्ञान' होता है?*

उत्तर— मिथ्यादृष्टि-जीवों के 'कुअवधिज्ञान' होता है। ✿✿

क्षयोपशम-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ॥22॥

अर्थ — 'क्षयोपशमनिमित्तक'-अवधिज्ञान छह-प्रकार का है, जो शेष अर्थात् तिर्यंचों और मनुष्यों के होता है।

प्र. 1. *सूत्र में 'क्षयोपशम' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— मनुष्यों और तिर्यंचों में मात्र 'क्षयोपशम-निमित्तक अवधिज्ञान' होता है, 'भव-निमित्तक' नहीं; इसी बात को कहने के लिए 'क्षयोपशम' शब्द ग्रहण किया है।

प्र. 2. *'क्षयोपशमनिमित्तक-अवधिज्ञान' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'क्षयोपशमनिमित्तक-अवधिज्ञान' के छह-भेद हैं — अनुगामी, अननुगामी, वर्धमान, हीयमान, अवस्थित, अनवस्थित।

प्र. 3. *'अनुगामी-अवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो अवधिज्ञान सूर्य के प्रकाश की तरह (दूसरे भव या क्षेत्र में भी) जीव के साथ-साथ जाता है, वह 'अनुगामी-अवधिज्ञान' है।

प्र. 4. *'अनुगामी-अवधिज्ञान' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— इसके तीन-भेद हैं — क्षेत्रानुगामी, भवानुगामी, तथा उभयानुगामी।

प्र. 5. *'क्षेत्रानुगामी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'अवधिज्ञान' एक-क्षेत्र से दूसरे-क्षेत्र तक साथ-साथ चलता है, वह 'क्षेत्रानुगामी-अवधिज्ञान' है।

प्र. 6. *'भवानुगामी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो एक-भव से दूसरे-भव तक साथ-साथ जाता है, उसे 'भवानुगामी' कहते हैं।

प्र. 7. *'उभयानुगामी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो ज्ञान 'क्षेत्रानुगामी' और 'भवानुगामी' — दोनों है, उसे 'उभयानुगामी' कहते हैं।

प्र. 8. *'अनुनगामी-अवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो अवधिज्ञान दूसरे भव या क्षेत्र में जीव के साथ नहीं जाता, उसे 'अननुगामी-अवधिज्ञान' कहते हैं।

प्र. 9. *'अननुगामी-अवधिज्ञान' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— इसके तीन-भेद हैं — 'क्षेत्र-अननुगामी', 'भव-अननुगामी', तथा 'उभयाननुगामी।

प्र. 10. *'क्षेत्र-अननुगामी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'अवधिज्ञान' एक-क्षेत्र से दूसरे-क्षेत्र तक साथ-साथ नहीं चलता है। वह 'क्षेत्र-अननुगामी' कहलाता है।

प्र. 11. *'भव-अननुगामी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक-भव से दूसरे-भव तक साथ-साथ नहीं जाता है, वह भवाननुगामी कहलाता है।

प्र. 12. *'उभय-अननुगामी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो ज्ञान 'क्षेत्राननुगामी' और 'भवाननुगामी' – दोनों है, उसे 'उभयाननुगामी' कहते हैं।

प्र. 13. *'वर्धमान-अवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो शुक्ल-पक्ष के चन्द्रमा की तरह बढ़ता रहे, उसे 'वर्धमान-अवधिज्ञान' कहते हैं।

प्र. 14. *'हीयमान-अवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो कृष्ण-पक्ष के चन्द्रमा की तरह घटता रहे, उसे 'हीयमान-अवधिज्ञान' कहते हैं।

प्र. 15. *'अवस्थित-अवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'अवधिज्ञान' न घटे, न बढ़े, उसे 'अवस्थित-अवधिज्ञान' कहते हैं।

प्र. 16. *'अनवस्थित-अवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो जल की तरंगों की तरह घटता-बढ़ता है, वह 'अनवस्थित-अवधिज्ञान' कहते हैं।

प्र. 17. *'अवधिज्ञान' के और कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अवधिज्ञान' के तीन-भेद और हैं — देशावधि, परमावधि, सर्वावधि।

प्र. 18. *'देशावधि-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो अविरति-सम्यग्दृष्टि को होता है, वह 'देशावधि-ज्ञान' है।

प्र. 19. *'परमावधि-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— असंख्यात लोकप्रमाण संयमी-मनुष्य को होनेवाला ज्ञान 'परमावधि-ज्ञान' है।

प्र. 20. *'सर्वावधि-अवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो परमावधि से भी अधिक जानता है, वह ज्ञान 'सर्वावधि-अवधिज्ञान' है।

प्र. 21. *ये 'तीनों-अवधिज्ञान' किन-किन को होते हैं?*

उत्तर— सामान्य अवधिज्ञान तो चारों गतियों के जीवों के होता है, किन्तु 'देशावधि-ज्ञान' 'सम्यग्दृष्टि-मनुष्यों और तिर्यंचों के होता है तथा 'परमावधि' और 'सर्वावधिज्ञान' 'मोक्षगामी-मुनियों' को होता है। ✿✿

ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः ॥23॥

अर्थ — 'ऋजुमति' और विपुलमति' मनःपर्यय-ज्ञान के दो-भेद हैं।

प्र. 1. *'मनःपर्यय-ज्ञान' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'मनःपर्यय-ज्ञान' के दो भेद हैं — ऋजुमति और विपुलमति।

प्र. 2. *'ऋजुमति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो दूसरों के मन में स्थित सरल रूपी-पदार्थ है, उसका ज्ञान 'ऋजुमति' कहलाता है।

प्र. 3 *'विपुलमति' किसे कहते हैं।*

उत्तर— जो दूसरों के मन में स्थित सरल एवं कुटिल — दोनों प्रकार के रूपी-पदार्थों को जान लेता है, वह 'विपुलमति' मनःपर्ययज्ञान कहलाता है।

प्र. 4. *'मनःपर्यय-ज्ञान' कितने काल, और कितने क्षेत्र को जानता है?*

उत्तर— जघन्यरूप से दो-तीन भवों को, उत्कृष्ट से असंख्यात-भवों को जानता है, तथा क्षेत्र की अपेक्षा उत्कृष्ट मानुषोत्तर-पर्वत के भीतर तक की बात को जानता है। ✿✿

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥24॥

अर्थ — 'विशुद्धि' और 'अप्रतिपात' की अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है।

प्र. 1. *'विशुद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'आत्मा की निर्मलता' को 'विशुद्धि' कहते हैं।

प्र. 2. *'अप्रतिपात' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'गिरने' का नाम 'प्रतिपात' है, तथा 'नहीं गिरने' को 'अप्रतिपात' कहते हैं।

प्र. 3. *'ऋजुमति' और 'विपुलमति' में क्या अन्तर है?*

उत्तर— अन्तर — (1) ऋजमति की विशुद्धि कम है, जबकि विपुलमति की अधिक है; (2) ऋजुमति प्रतिपाती है, किन्तु विपुलमति अप्रतिपाती है; (3) ऋजुमति होकर छूट जाता है, जबकि विपुलमति मोक्ष जाने तक नहीं छूटता है।

✿✿

विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्योऽवधि-मनःपर्ययोः ॥25॥

अर्थ — विशुद्धि, क्षेत्र, स्वामी और विषय की अपेक्षा 'अवधिज्ञान' और 'मनःपर्यग-ज्ञान' में भेद है।

प्र. 1. *'क्षेत्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो जितने स्थानों में स्थित मन के भाव को जानता है, वह उसका 'क्षेत्र' है।

प्र. 2. *'स्वामी' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— जो मनःपर्यय-ज्ञानी है, वही उसका 'स्वामी' है।

प्र. 3. *'विषय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मनःपर्यय-ज्ञान द्वारा जाननेयोग्य दूसरे के मन में स्थित रूपीपदार्थ को 'विषय' कहते हैं।

प्र. 4. *'विशुद्धि' की अपेक्षा 'अवधिज्ञान' और 'मनःपर्यय-ज्ञान' में क्या अंतर है?*

उत्तर— 'अवधिज्ञान' से 'मनःपर्यय-ज्ञान' की 'विशुद्धि' अधिक है।

प्र. 5. *'क्षेत्र' की अपेक्षा 'अवधिज्ञान' और 'मनःपर्ययज्ञान' में क्या अंतर है?*

उत्तर— 'मनःपर्यय-ज्ञान' का क्षेत्र 'मानुषोत्तर-पर्वत' के भीतर तक है, जबकि 'अवधिज्ञान' का क्षेत्र 'सर्वलोक' है।

प्र. 6. *'स्वामी' की अपेक्षा और 'मनःपर्यय-ज्ञान' में क्या अंतर है?*

उत्तर— 'मनःपर्यय-ज्ञानी' उत्कृष्ट-चारित्रवाले होते हैं, 'प्रमत-संयत' नामक छठे-गुणस्थानवर्ती-मुनि से बारहवें-गुणस्थान तक के मुनि इसके 'स्वामी' हैं, तथा 'अवधिज्ञान' के स्वामी चारों-गतियों के संयमी और अंसयमी — दोनों-प्रकार के जीव हैं।

प्र. 7. *'विषय' की अपेक्षा 'अवधि' और 'मनःपर्ययज्ञान' में क्या अंतर है?*

उत्तर— 'अवधिज्ञान' की प्रवृति 'रूपी-पदार्थों' में होती है। मनःपर्ययज्ञान की प्रवृत्ति 'अवधिज्ञान' के विषय के 'अनन्तवें-भाग' में होती है। ✿✿

मति-श्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥26॥

अर्थ — 'मतिज्ञान' और 'श्रुतज्ञान' की प्रवृत्ति कुछ पर्यायों से युक्त सब द्रव्यों

में होती है।

प्र. 1. ***'निबंध' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **'विषय-सम्बन्ध' को 'निबंध' कहते हैं।**

प्र. 2. ***'द्रव्य' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **जो पर्यायों के द्वारा प्राप्त किए जाते हैं, या पर्यायों को प्राप्त होते हैं; उन्हें 'द्रव्य' कहते हैं।**

प्र. 3. ***'पर्याय' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **'द्रव्य' की अवस्था-विशेष को 'पर्याय' कहते हैं, जैसे मनुष्य-पर्याय — बचपन, जवानी और बुढ़ापा आदि अनन्त-पर्यायें हैं।**

प्र. 4. ***'असर्व-पर्याय' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **जो सर्व-पर्याय नहीं हो, उसे असर्व-पर्याय कहते हैं। अर्थात् थोड़ी ही पर्याय को 'असर्व-पर्याय' कहते हैं।**

प्र. 5. ***'मतिज्ञान' और 'श्रुतज्ञान' की प्रवृत्ति कहाँ-कहाँ होती है?***

उत्तर— **'मति' और 'श्रुतज्ञान' की प्रवृत्ति कुछ पर्यायों से युक्त सब द्रव्यों में होती है।**

प्र. 6. ***'मति' और 'श्रुतज्ञान' की प्रवृत्ति 'धर्म, अधर्म, आकाश और काल' — इन द्रव्यों में कैसे होती है?***

उत्तर— 'मतिज्ञान' धर्म-आदि द्रव्यों की गति-आदि परिणमन को जान लेता है, इसीप्रकार 'श्रुतज्ञान' भी धर्म-आदि पर्यायों को जानता है।

प्र. 7. *'मति-श्रुतज्ञान' धर्म-आदि द्रव्यों को कैसे जानते है, उदाहरण-सहित समझाइये?*

उत्तर— जैसे जीव और पुद्गल को चलने में धर्मद्रव्य सहायक होता है, रुकने में अधर्मद्रव्य, अवकाश के लिए आकाशद्रव्य, परिवर्तन के लिए कालद्रव्य — ये सब क्रियायें दिखाई देती हैं; इसप्रकार 'मतिश्रुतज्ञान' धर्म-आदि द्रव्यों की पर्यायों को जानता है, जैसे जल की पर्याय 'तरंगें' हैं। ✿✿

रूपिष्ववधेः ॥27॥

अर्थ — 'अवधिज्ञान' की प्रवृत्ति 'रूपी-पदार्थों' में होती है।

प्र. 1. *'अवधिज्ञान' रूपीद्रव्य में किसको विषय करता है?*

उत्तर— 'अवधिज्ञान' रूपी-पुद्गल और कर्म-सहित संसारी-जीव के कुछ पर्यायों को जानता है।

प्र. 2. *'मति, श्रुत और अवधिज्ञान' में विशेष-अंतर क्या है?*

उत्तर— 'मति, श्रुतज्ञान परोक्षरूपी-पदार्थ को जानते हैं, और 'अवधिज्ञान' एक-देश

को प्रत्यक्ष-रूप से जानता है।

प्र. 3. *क्या 'अवधिज्ञान' में इन्द्रियों और मन की आवश्यकता है?*

उत्तर— अवधिज्ञान में इन्द्रियों और मन की आवश्यकता नहीं है। ✿✿

तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥28॥

अर्थ — 'मनःपर्यय-ज्ञान' की प्रवृत्ति 'अवधिज्ञान' के विषय के अनन्तवें-भाग में होती है।

प्र. 1. *'अवधिज्ञान' से 'मनःपर्यय-ज्ञान' में क्या विशेषता है?*

उत्तर— 'मनःपर्यय-ज्ञान' 'अवधिज्ञान' से जाने गए पदार्थ को सूक्ष्मरूप से जानता है।

प्र. 2. *'मनःपर्यय-ज्ञान' कितने सूक्ष्मविषय को जानता है?*

उत्तर— जितना उत्कृष्ट सर्वावधिज्ञान जानता है, उसके अनन्त-भाग करने पर उसके एक-एक भाग सूक्ष्म-विषय को मनःपर्ययज्ञान जानता है।

प्र. 3. *क्या 'मनःपर्यय-ज्ञान' मन में स्थित अमूर्तिक-द्रव्य को भी जानता है?*

उत्तर— 'मनःपर्यय-ज्ञान' मन में स्थित रूपी-पदार्थ से सम्बन्धित-पर्यायों को ही जानता है, अमूर्तिक या अरूपी-द्रव्य का नहीं। ✿✿

सर्वद्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य ॥29॥

अर्थ — 'केवलज्ञान' की प्रवृत्ति सब-द्रव्य, और उनकी सब पर्यायों में होती है।

प्र. 1. *'सर्व-द्रव्य' कितने हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'सर्व-द्रव्य' छह हैं — जीव, पुदगल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।

प्र. 2. *'सब-द्रव्य' कितने-कितने हैं?*

उत्तर— 'जीव' अनन्त हैं। 'पुद्गल-द्रव्य' उससे अनन्तानन्त हैं। धर्म, अधर्म और आकाश एक-एक ही हैं। काल-द्रव्य लोकप्रमाण अंख्यात हैं।

प्र. 3. *'द्रव्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो सत् है, उसे 'द्रव्य' कहते हैं; या जो गुणपर्यायों से युक्त हैं, उसे 'द्रव्य' कहते हैं।

प्र. 4. *'सत्' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य-गुणों से युक्त है, उसे 'सत्' कहते हैं।

प्र. 5. *'सब-द्रव्यों' की 'पर्याय' कितनी हैं?*

उत्तर— छह-द्रव्यों की अलग-अलग तीनों कालों में अनन्त-पर्यायें होती हैं?

प्र. 6. *'पर्याय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो चारों-तरफ से 'द्रव्य' के प्रत्येक-गुण को प्राप्त होती है, वह 'पर्याय' है।

प्र. 7. *'केवलज्ञान' कैसा है?*

उत्तर— 'केवलज्ञान' 'सम्पूर्ण-ज्ञानावरण' से रहित है।

प्र. 8. *'केवलज्ञान' किस-किस को होता है?*

उत्तर— 'केवलज्ञान' मनुष्यों को होता है।

प्र. 9. *'केवलज्ञान' किस-किस को नहीं होता है?*

उत्तर— 'केवलज्ञान' देवों, नारकियों, और तिर्यंचों को नहीं होता है।

प्र. 10. *'केवलज्ञान' मनुष्यों में भी किस-किस को होता है?*

उत्तर— 'केवलज्ञान' उसी भव में 'मोक्ष' आनेवाले 'भव्य-मनुष्यों' को ही होता है। ✿✿

एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।।30।।

अर्थ — एक आत्मा के एकसाथ एक से लेकर चार-ज्ञान तक हो सकते हैं।

प्र. 1. *'एकादीनि' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'एकादीनि' का अर्थ है 'एक से लेकर'।

प्र. 2. *'भाज्यानि' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— जो अलग-अलग करने योग्य है, उसे 'भाज्यानि' कहते हैं।

प्र. 3. *'युगपद्' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— एकसाथ होने को 'युगपद्' कहते हैं।

प्र. 4. *सूत्र में 'एकस्मिन' का अर्थ क्या होता है?*

उत्तर— सूत्र में 'एक-जीव में' होने को 'एकस्मिन्' पद से कहा है।

प्र. 5. *एक साथ एक-जीव में कितने ज्ञान होते हैं।*

उत्तर— एकसाथ एक-जीव में चार-ज्ञान तक हो सकते हैं।

प्र. 6. *एकजीव में एक-ज्ञान हो, तो वह कौन-सा हो सकता है?*

उत्तर— एकजीव में एक-ज्ञान हो, तो वह 'केवलज्ञान' हो सकता है।

प्र. 7. *एकजीव में एकसाथ दो ज्ञान होंगे, तो कौन-कौन-से होंगे?*

उत्तर— एकजीव में एकसाथ 'मति' और 'श्रुत' — ये दो ज्ञान होते हैं।

प्र. 8. *एकजीव में एकसाथ तीन-ज्ञान हों, तो वे कौन-कौन-से होते हैं?*

उत्तर— एकजीव में एकसाथ मति, श्रुत-अवधि — ये तीन ज्ञान अथवा मति, श्रुत और मनःपर्ययज्ञान होते हैं।

प्र. 9. ***एकजीव में एकसाथ चार-ज्ञान होंगे, तो वे कौन-कौन-से होंगे?***

उत्तर— **एकजीव में एकसाथ मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय — ये चार ज्ञान हो सकते हैं।**

प्र. 10. ***क्या एक-जीव में एकसाथ पाँच-ज्ञान हो सकते हैं?***

उत्तर— **नहीं, एक-जीव में एकसाथ पाँच-ज्ञान नहीं हो सकते।**

प्र. 11. ***एक-जीव में पाँच-ज्ञान एकसाथ क्यों नहीं हो सकते?***

उत्तर— **केवलज्ञान के होने पर बाकी ज्ञान नहीं होते।**

प्र. 12. ***केवलज्ञान के होने पर शेष ज्ञान नहीं होने का क्या कारण है?***

उत्तर— **केवलज्ञान सम्पूर्ण ज्ञानावरणी-कर्म के क्षय से होता है, जबकि शेष ज्ञान क्षयोपशम से उत्पन्न होते हैं।** ✿✿

मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ।।31।।

अर्थ — मति, श्रुत और अवधि — ये तीनों-ज्ञान विपरीत भी होते हैं।

प्र. 1. *'विपरीत-मतिज्ञान' को क्या कहते हैं?*

उत्तर— 'विपरीत-मतिज्ञान' को 'कुमतिज्ञान' कहते हैं।

प्र. 2. *'विपरीत-श्रुतज्ञान' को क्या कहते हैं?*

उत्तर— 'विपरीत-श्रुतज्ञान' 'कुश्रुतज्ञान' कहते हैं।

प्र. 3. *'विपरीत-अवधिज्ञान' को क्या कहते हैं?*

उत्तर— 'विपरीत-अवधिज्ञान' को 'कुअवधिज्ञान' या 'विभंगावधि-ज्ञान' भी कहते हैं।

प्र. 4. *'विपर्यय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'विपरीत' को 'विपर्यय' कहते हैं।

प्र. 5. *'विपरीत-ज्ञान' कितने हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'विपरीत-ज्ञान' तीन हैं — कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, और कुअवधिज्ञान (विभंगावधिज्ञान)।

प्र. 6. *उक्त-ज्ञानों में 'सम्यक्' कितने हैं, और कितने 'मिथ्या' हैं?*

उत्तर— उक्त-ज्ञानों में पाँचों 'सम्यग्ज्ञान' हैं, और तीन 'मिथ्याज्ञान' हैं।

प्र. 7. *कितने ज्ञान 'सम्यक्' भी हैं, और 'मिथ्या' भी हैं?*

उत्तर— मति, श्रुत और अवधि — ये तीन-ज्ञान 'सम्यक्' भी हैं, और 'मिथ्या' भी।

प्र. 8. *ज्ञान के कुल कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— ज्ञान के कुल आठ-भेद हैं — मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यय, केवलज्ञान तथा कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान या विभंगावधि।

प्र. 9. *मति, श्रुत, और अवधिज्ञान 'विपरीत' क्यों होते हैं?*

उत्तर— 'मिथ्यात्व' के कारण तीनों-ज्ञान 'विपरीत' होते हैं, जैसे कड़वी-तुंबी में रखा हुआ दूध भी कड़वा हो जाता है।

प्र. 10. *जैसे 'रत्न' कीचड़ आदि में गिरकर दूषित नहीं होता, वैसे ही 'सम्यग्ज्ञानरूपी-रत्न' भी दूषित नहीं होना चाहिए; फिर भी दूषित क्यों होता है?*

उत्तर— 'मिथ्यात्वरूपी-कीचड़' के दोष के संसर्ग से 'सम्यग्ज्ञानरूपी-रत्न' दूषित हो जाता है।

प्र. 11. *क्या दूषित 'ज्ञानरूपी-रत्न' शुद्ध हो सकता है?*

उत्तर— हाँ, हो सकता है, जैसे कीचड़ में गिरा रत्न जल के द्वारा शुद्ध हो सकता है।

प्र. 12. *'ज्ञानरूपी-रत्न' कैसे शुद्ध होता है?*

उत्तर— 'सम्यग्दर्शन' रूपी-जल द्वारा 'मिथ्याज्ञान' रूपी-मलिन रत्न भी शुद्ध हो सकता है। ✿✿

सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ॥32॥

अर्थ — 'वास्तविक' और 'अवास्तविक' के अन्तर के ज्ञान बिना यदृच्छोपलब्धि (जब जैसा जी में आया, उस रूप ग्रहण होने) के कारण उन्मत्त की तरह 'ज्ञान' भी 'अज्ञानरूप' हो जाता है।

प्र. 1. *'सत्' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'सम्यग्ज्ञान' को 'सत्' कहते हैं।

प्र. 2. *'असत्' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'मिथ्याज्ञान' को 'असत्' कहते हैं।

प्र. 3. *'अविशेष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'विशेष-ज्ञान' के बिना होता है, वह 'अविशेष' है।

प्र. 4. *'यदृच्छोपलब्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपनी इच्छानुसार या वस्तु के मनमाने-अर्थ को ग्रहण करना 'यदृच्छोपलब्धि' है।

प्र. 5. *'उन्मत्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'विक्षिप्त' या 'पागल' को 'उन्मत्त' कहते हैं।

प्र. 6. *'वत्' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'वत्' का अर्थ है — 'तरह', जैसे 'उन्मत्तवत्' का अर्थ होगा 'पागल की तरह'।

प्र. 7. *मति, श्रुत एवं अवधिज्ञान 'विपरीत' किस कारण से होते हैं?*

उत्तर— सत्-असत्-सम्बन्धी निर्णय न करके अपनी मोहप्रेरित इच्छानुसार वस्तु या पदार्थ का निर्णय करने से मति आदि ज्ञान 'विपरीत' होते हैं।

प्र. 8. *दृष्टान्त द्वारा मति, श्रुत एवं अवधिज्ञान के 'विपर्यय' को समझाइए?*

उत्तर— 'मिथ्यादर्शन' के उदय से इन तीनों से आत्मा-रूपादिक 'अविद्यमान' को 'विद्यमान' कहता है, कभी 'विद्यमान' को 'अविद्यमान' कहता है, कभी 'अविद्यमान' को 'अविद्यमान' कहता है, कभी 'विद्यमान' को 'विद्यमान' कहता है; जैसे मदिरापान करनेवाला व्यक्ति कभी भाई को भाई, कभी भाई को शत्रु, कभी शत्रु को भाई, कभी शत्रु को शत्रु कहता है।

प्र. 9. *'विपर्यास' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'विपरीत-कल्पना' को 'विपर्यास' कहते हैं।

प्र. 10. *'विपर्यास' कितने-प्रकार के होते हैं, तथा वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'विपर्यास' तीन-प्रकार के होते हैं — कारण-विपर्यास, तथा भेदाभेद-विपर्यास एवं स्वरूप-विपर्यास।

प्र. 11. *'कारण-विपर्यास' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण आदि हो, वह 'मूर्त्तिक' है; कोई मानता है स्पर्श-रस आदि अमूर्त्त-द्रव्य से बना है; कोई मानता है अग्नि, पृथ्वी आदि परमाणुओं से बना है — यह 'कारण-विपर्यास' है।

प्र. 12. *'भेदाभेद-विपर्यास' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कोई कारण से कार्य का भेद मानते हैं, कोई कारण से कार्य को अभेद मानते हैं, जैसे — रोटी आटे से बनी है; रोटी को अलग तथा आटे को सर्वथा अलग मानते हैं।

प्र. 13. *'स्वरूप-विपर्यास' किसे कहते हैं।*

उत्तर— कोई रूपादि को निर्विकल्प और कोई रूपादि को भिन्न ही कल्पना करते हैं। इसीप्रकार जीव को कोई शरीर अर्थात् 'पंचभूत' मानता है, और कोई जीव को 'जीव' मानता है।

प्र. 14. *मति, श्रुत, अवधिज्ञान किस कारण से 'विपर्यासरूप' होते हैं?*

उत्तर— ज्ञानावरणी-कर्म के उदय से मति, श्रुत एवं अवधिज्ञान में 'विपर्यास' होता है।

प्र. 15. *'मति-विपर्यास' या 'कुमतिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— *दूसरे के उपदेश के बिना ही मंत्र, कूट, पंजर, विष तथा बंध आदि के विषय में जो बुद्धि प्रवृत्त होती है, उसे 'कुमतिज्ञान' कहते हैं।*

प्र. 16. *'कुश्रुतज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हिंसादी पाप-कर्म के उत्पन्न करनेवाले तप एवं मिथ्या-तत्त्वों के प्रतिपादक ग्रंथों को 'कुश्रुत' कहते हैं।

प्र. 17. *'कुवधिज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'मिथ्या-अवधिज्ञान' को 'कुवधिज्ञान' कहते हैं। ✿✿

नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जुसूत्र-शब्द-समभिरूढैवंभूता नयाः ॥33॥

अर्थ — नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ और एवंभूत — ये सात नय हैं।

प्र. 1. *'नय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वस्तु के अनेक धर्मों को मुख्य-गौण विवक्षा से जानना 'नय' कहलाता है।

प्र. 2. *यह नय सामान्य से कितने प्रकार का है?*

उत्तर— इसके दो भेद हैं — द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक।

प्र. 3. *'द्रव्यार्थिक-नय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— द्रव्य-मात्र के अस्तित्व को ग्रहण करनेवाला 'द्रव्यार्थिक-नय' है।

प्र. 4. *'पर्यायार्थिक-नय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पर्याय-मात्र के अस्तित्व को ग्रहण करनेवाला 'पर्यायार्थिक-नय' है।

प्र. 5. *नय के विशेष-लक्षण कितने हैं, तथा वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— नय के विशेष-लक्षण सात हैं — नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ़ और एवंभूत।

प्र. 6. *'नैगम-नय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनिष्पन्न-अर्थ में संकल्प-मात्र ग्रहण करना 'नैगम-नय' है, जैसे चावल चुगते हुए महिला कहती है — "मैं भात पका रही हूँ।"

प्र. 7. *'अनिष्पन्न' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'अधूरे-कार्य' को 'अनिष्पन्न' कहते हैं।

प्र. 8. *'संग्रहनय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भेद-सहित सब पर्यायों को अपनी जाति के अविरोध द्वारा एक मानकर सबको ग्रहण करनेवाले नय को 'संग्रहनय' कहते हैं, जैसे — 'द्रव्य' कहने से सब द्रव्यों का 'संग्रह' हो जाता है।

प्र. 9. *'व्यवहारनय' किसे कहते हैं।*

उत्तर— 'संग्रहनय' द्वारा ग्रहण किये पदार्थों की विधिपूर्वक भेद करना 'व्यवहारनय' है, जैसे — द्रव्य दो हैं — 'जीव' और 'अजीव'। जीव के 'संसारी' और

'मुक्त' दो भेद हैं। इसप्रकार सबका क्रम से भेद करना।

प्र. 10. *'ऋजुसूत्रनय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भूत और भविष्यकाल के विषय को ग्रहण न करके मात्र वर्तमान को विषय बनाना 'ऋजुसूत्रनय' कहलाता है।

प्र. 11. *'शब्दनय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लिंग, संख्या आदि की गल्तियों को दूर करनेवाला 'शब्दनय' हैं, जैसे 'वह लड़की जाता है' — यहाँ लिंगदोष है।

प्र. 12. *'लिंगदोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पुल्लिंग के साथ स्त्रीलिंग का व्यवहार करना 'लिंगदोष' है, जैसे — 'वह लड़का जाती है।'

प्र. 13. *'संख्यादोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बहुवचन को एकवचन में बोलना 'संख्यादोष' है, जैसे — वे लड़के जाता है।

प्र. 14. *'समभिरूढ़-नय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अन्य अर्थों को छोड़कर प्रधान-अर्थ को ग्रहण करना 'समभिरूढ़नय' है, जैसे — गो कहने से पशुमात्र को ग्रहण करना, केवल गाय को नहीं।

प्र. 15. *'एवंभूतनय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो वस्तु जिस पर्याय में उसका उसी रूप में निश्चय करना 'एवंभूतनय' है, जैसे — यदि 'डॉक्टर' वर्तमान में मंदिर में पूजा कर रहा है, तो उस समय वह 'पुजारी' है।

प्र. 16. *नैगम, संग्रह, व्यवहार आदि 'नयों' को इसी क्रम से क्यों कहा है?*

उत्तर— ये नैगम-संग्रह आदि 'नय' आगे-आगे के नय पीछे-पीछे के नय से सूक्ष्म-विषय को ग्रहण करते हैं; इसलिए इन्हें इसी क्रम से कहा है।

प्र. 17. *क्या ये सातों-नय निरपेक्ष होकर के सम्यक्त्व के कारण हो सकते हैं?*

उत्तर— नहीं, क्योंकि यदि वे निरपेक्ष हो गये, तो मिथ्या हो जायेंगे। किन्तु सापेक्ष रहकर 'सम्यक्' होते हैं।

प्र. 19. *'कार्यसिद्धि' के लिए कितने 'नयों' की आवश्यकता होती है?*

उत्तर— सातों-नय 'कार्यसिद्धि' में सहायक होते हैं।

प्र. 20. *सातों-नय में 'द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिक' या 'शब्द-अर्थनय' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— सातों-नयों में नैगम-संग्रह और व्यवहार — ये 'द्रव्यार्थिकनय' अथवा 'शब्दनय' हैं। ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ और एवंभूत — ये 'पर्यायार्थिकनय' हैं अथवा 'अर्थनय' हैं।

✿✿

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिक-पारिणामिकौ च ॥1॥

अर्थ – औपशमिक, क्षायकि, मिश्र, औदयिक और पारिणामिक भाव – ये 'जीव' के 'स्वतत्त्व' हैं।

प्र. 1. *'जीव' के 'स्वतत्त्व' कितने और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'जीव' के 'स्वतत्त्व' पाँच हैं — औपशमिक, क्षायिक, मिश्र, औदयिक, तथा पारिणामिक।

प्र. 2. *'औपशमिक-भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों के उपशम से आत्मा का जो भाव होता है, वह 'औपशमिक-भाव' है।

प्र. 3. *'उपशम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों का उदय में नहीं आना ही 'उपशम' है, जैसे — गिलास के अन्दर पानी में मिट्टी का नीचे दब जाना।

प्र. 4. *'क्षायिक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों के क्षय से जो भाव होता है, वह 'क्षायिक-भाव' है।

प्र. 5. *'क्षय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों का आत्मा से अलग होना 'क्षय' कहलाता है, जैसे मिट्टी-रहित जल को दूसरे बर्तन में डाल देने से जल शुद्ध हो जाता है।

प्र. 6. *'मिश्र-भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'क्षायोपशमिक-भाव' को 'मिश्र-भाव' कहते हैं।

प्र. 7. *'क्षायोपशमिक-भाव' किसे कहते हैं।*

उत्तर— कर्मों के 'क्षयोपशम' से जो भाव होता है, उसे 'क्षायोपशमिक-भाव' कहते हैं, जैसे पानी की निर्मलता को नष्ट करनेवाले कीचड़ के कण बार-बार पानी में आने से स्वच्छास्वच्छ जैसी मिश्र-अवस्था उत्पन्न होती है।

प्र. 8. *'क्षयोपशम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वर्तमानकाल में उदय में आनेवाली सर्वघाती-स्पर्द्धकों का उदयाभाविक-क्षय तथा उन्हीं स्पर्द्धकों के आगामीकाल में उदय में आनेवाले निषेकों का सदवस्थारूप-उपशम और देशघाती-स्पर्द्धकों का उदय होने को 'क्षयोपशम' कहते हैं।

प्र. 9. 'सर्वघाती' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव के सम्यक्त्व तथा ज्ञान-आदि 'अनुजीवी-गुणों' को पूरीतरह से ढँक दें, अथवा घात करे, उन्हें 'सर्वघाती' कहते हैं।

प्र. 10. 'उदयाभाविक-क्षय' किसे कहते हैं?

उत्तर- सर्वघाती स्पर्द्धकों के उदय का अभाव होना और उन्हीं का देशघाती रूप होकर उदय में आना उदयाभावी क्षय है।

प्र. 11. 'स्पर्द्धक' किसे कहते हैं?

उत्तर- कर्मों के समूह को 'स्पर्द्धक' कहते हैं।

प्र. 12. 'निषेक' किसे कहते हैं?

उत्तर- एक समय में जितने कर्म- परमाणु उदय में आते हैं, उनके समूह को निषेक कहते हैं।

प्र. 13. 'अनुजीवी- गुण' किसे कहते हैं?

उत्तर- जीव के 'सम्यक्त्व' और ज्ञान आदि गुणों को 'अनुजीवी- गुण' कहते हैं।

प्र. 14. 'सदावस्थारूप-उपशम' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो कर्म सत्तारूप में दबे हुये हैं, उन्हें 'सदावस्थारूप- उपशम' कहते हैं।

प्र. 15. 'देशघाती' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव के ज्ञान आदि गुणों को एकदेश घातते हैं, उन्हें 'देशघाती' कहते हैं।

प्र. 16. 'एकदेश' किसे कहते हैं?

उत्तर- बहुत में से थोड़े को 'एकदेश' कहते हैं।

प्र. 17. 'औदयिक-भाव' किसे कहते हैं?

उत्तर- कर्मों के उदय से जो भाव होता है, वह 'औदयिक-भाव' है।

प्र. 18. 'उदय' किसे कहते हैं?

उत्तर- द्रव्य-आदि निमित्त के वश से कर्मों का फल देना 'उदय' है।

प्र. 19. पारिणामिक-भाव' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो भाव कर्म-निरपेक्ष है, उन्हें पारिणामिक-भाव कहते हैं, अथवा जो भाव कर्मो के उपशम, क्षय, क्षयोपशम की अपेक्षा नहीं रखता है, वह 'पारिणामिक-भाव' है; अथवा आत्मा के स्वभावमात्र को 'पारिणामिक-भाव' कहते हैं।

प्र. 20. 'कर्म-निरपेक्ष' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो भाव-कर्मों की अपेक्षा नही रखते हैं, वे 'कर्म-निरपेक्ष' कहलाते हैं।

प्र. 21. 'कर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव के गुणों को ढ़क देता है, पराधीन करता है, उसे 'कर्म' कहते हैं।

प्र. 22. 'कर्म' कितने और कौन-कौन से हैं?

उत्तर- 'कर्म' आठ हैं - ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम,

गोत्र, तथा अंतराय।

प्र. 23. 'ज्ञानावरणी' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव के ज्ञान को ढ़क दे, उसे 'ज्ञानावरणी' कहते हैं।

प्र. 24. दर्शनावरणी किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव के दर्शनगुण को ढ़क दे वह दर्शनावरणी है।

प्र. 25. 'वेदनीय-कर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव को कर्मजनित सुख-दुःख प्राप्त कराता है, उसे 'वेदनीय-कर्म' कहते हैं।

प्र. 26. 'मोहनीय-कर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव को मदिरा की तरह मदोन्मत्त करता है, वह 'मोहनीय-कर्म' है।

प्र. 27. 'आयुकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव को निश्चित-समय तक गतिविशेष में रोक कर रखता है, वह 'आयुकर्म' है।

प्र. 28. 'नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव को नाना-प्रकार के रूपों में बनाता है, वह 'नामकर्म' है।

प्र. 29. 'अंतराय-कर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव के कार्यों में विघ्न उत्पन्न करता है, वह 'अंतराय-कर्म' है।

प्र. 30. 'गोत्रकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर- जो जीव को छोटा, बड़ा या ऊँच, नीच बनाता है, वह 'गोत्रकर्म' है।

प्र. 31. 'घातिया-कर्म' कौन-कौन-से हैं?

उत्तर- ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, और अंतराय 'घातिया-कर्म' हैं।

प्र. 32. 'अघातिया-कर्म' कौन-कौन-से हैं?

उत्तर- वेदनीय, नाम, आयु तथा गोत्र 'अघातिया-कर्म' हैं।

प्र. 33. 'क्षायिक-भाव' कौन-से कर्मक्षय के निमित्त से होता है?

उत्तर- ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अंतराय और मोहनीय कर्मों के क्षय के निमित्त से होता है।

प्र. 34. 'औदयिक-भाव' कौन-कौन-से 'कर्मों' के उदय निमित्त से होता है?

उत्तर- ज्ञानावरण आदि आठों-कर्मों के उदय के निमित्त से 'औदयिक-भाव' होता है।

प्र. 35. ''पारिमाणिक-भाव' किस जीव को होता है?

उत्तर- 'पारिमाणिक-भाव' 'भव्य और अभव्य'- दोनों प्रकार के जीवों को होता है।

प्र. 36. 'परमपारिणामिक-भाव' का अनुभव किस जीव को होता है?

उत्तर- 'परमपारिणामिक-भाव' का अनुभव मात्र 'भव्य-जीवों' को होता है।

प्र. 37. मात्र सम्यग्दृष्टि-जीव को कौन-कौन-से 'भाव' होते हैं?

उत्तर- क्षायिक' और 'औपशमिक-भाव' मात्र 'सम्यग्दृष्टि-जीवों' को होते हैं।

प्र. 38. 'मिथ्यादृष्टि' और 'सम्यग्दृष्टि-जीव' को कौन-कौन-से भाव होते हैं?

उत्तर— 'क्षायोपशमिक', 'औदयिक' और 'पारिणामिक-भाव' दोनों-जीवों को होते हैं।

प्र. 38. 'भाव' का क्या अर्थ है?

उत्तर— 'भाव' का अर्थ 'पर्याय' है।

प्र. 39. 'पर्याय' का क्या अर्थ है?

उत्तर— वस्तु की अलग-अलग अवस्थाओं को 'पर्याय' कहते हैं। ✿✿

द्वि-नवाष्टादशैकविंशति-त्रिभेदाः यथाक्रमम् ॥2॥

अर्थ — उक्त पाँच-भावों के क्रम से दो, नौ, अठारह, इक्कीस और तीन-भेद हैं।

प्र. 1. 'भाव' के 'उत्तर-भेद' कितने हैं?

उत्तर— 'भाव' के 'उत्तर-भेद' तिरेपन (53) हैं।

प्र. 2. 'औपशमिक-भाव' के कितने भेद हैं?

उत्तर— 'औपशमिक-भाव' के दो-भेद हैं?

प्र. 3. 'क्षायिक-भाव' के कितने भेद हैं?

उत्तर— 'क्षायिक-भाव' के नौ-भेद हैं।

प्र. 4. 'मिश्र-भाव' के कितने भेद हैं?

उत्तर— 'मिश्र-भाव' के अठारह-भेद हैं।

प्र. 5. 'औदयिक-भाव' के कितने भेद हैं?

उत्तर— 'औदयिक-भाव' के इक्कीस-भेद हैं।

प्र. 6. 'पारिणामिक-भाव' के कितने भेद हैं?

उत्तर— 'पारिणामिक-भाव' के तीन-भेद हैं। ✿✿

सम्यक्त्व-चारित्रे ॥3॥

अर्थ — 'औपशमिक-भाव' के दो भेद हैं — औपशमिक-सम्यक्त्व, और औपशमिक-चारित्र।

प्र. 1. 'औपशमिक-भाव' के कितने भेद हैं?

उत्तर— 'औपशमिक-सम्यक्त्व' और 'औपशमिक-चारित्र' — ये 'औपशमिक-भाव' के दो भेद हैं।

प्र. 2. 'औपशमिक-सम्यक्त्व' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो 'सम्यक्त्व' 'उपशम' से प्राप्त होता है, उसे 'औपशमिक-सम्यक्त्व' कहते हैं।

प्र. 3. 'औपशमिक-चारित्र' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो चारित्र 'उपशम' से प्राप्त होता है, उसे 'औपशमिक-चारित्र' कहते हैं।

प्र. 4. *'औपशमिक-सम्यक्त्व' की परिभाषा बताओ?*

उत्तर— अनंतानुबंधी-क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व — इन सातों-प्रकृतियों के उपशम से जो सम्यक्त्व होता है, उसे 'औपशमिक-सम्यक्त्व' कहते हैं।

प्र. 5. *जिस 'मिथ्यादृष्टि' को प्रथमबार 'उपशम' होता है, वह कैसे होता है?*

उत्तर— काल-आदि लब्धि के निमित्त से जो 'भव्य' हैं, उन्हें इन सात-प्रकृतियों का 'उपशम' होता है।

प्र. 6. *'काललब्धि' किसे कहते हैं, और ये कितने प्रकार की है?*

उत्तर— जिस समय को निमित्त पाकर कार्य सम्पन्न होता है, उस समय को 'काललब्धि' कहते हैं।

प्र. 7. *'लब्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— यहाँ 'लब्धि' 'निमित्त' या 'कारण' को कहा है।

प्र. 8. *'अर्द्धपुद्गल-परावर्तन' की अपेक्षा 'काललब्धि' बताओ?*

उत्तर— कर्मयुक्त कोई भी भव्य-आत्मा 'अर्द्धपुद्गल-परावर्तन' कालशेष रहने पर प्रथम उपशम-सम्यक्त्व के ग्रहण करने योग्य होता है, वह 'अर्द्धपुद्गल-परावर्तन' की अपेक्षा 'काललब्धि' है।

प्र. 9. *'कर्म-स्थिति' की अपेक्षा 'काललब्धि' बताओ?*

उत्तर— जो कर्मों की स्थिति 'अन्तःकोडाकोडी सागर' पड़ती है, निर्मल परिणाम से उस कर्म-स्थिति का संख्यात हजार सागर कम 'अन्तः कोड़ा-कोड़ी सागर' प्राप्त हो, तब जीव प्रथम उपशम-सम्यक्त्व के योग्य होता है, यह स्थिति की अपेक्षा 'काललब्धि' है।

प्र. 10. *'परावर्तन' कितने होते हैं?*

उत्तर— 'परावर्तन' पाँच होते हैं — द्रव्य-परावर्तन, क्षेत्र-परावर्तन, काल-परावर्तन, भव-परावर्तन, तथा भाव-परावर्तन।

प्र. 11. *'द्रव्य-परावर्तन' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— 'कर्म' और 'नोकर्म' — ये दो भेद हैं।

प्र. 12. *'अर्द्धपुद्गल-परावर्तन' कितना है?*

उत्तर— 'नोकर्म-परावर्तन' का जितना काल है, उतना काल 'अर्द्धपुद्गल-परावर्तन' का है। ✿✿

ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च ।।4।।

अर्थ — 'क्षायिक-भाव' के नौ भेद हैं — क्षायिक-ज्ञान, क्षायिक-दर्शन,

क्षायिक-दान, क्षायिक-लाभ, क्षायिक-भोग, क्षायिक-उपभोग, क्षायिक-वीर्य, क्षायिक-सम्यक्त्व और क्षायिक-चारित्र।

प्र. 1. *'क्षायिक-भाव' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'क्षायिक-भाव' के नौ भेद हैं — क्षायिक-ज्ञान, क्षायिक-दर्शन, क्षायिक-दान, क्षायिक-लाभ, क्षायिक-भोग, क्षायिक-उपभोग, क्षायिक-वीर्य, क्षायिक-सम्यक्त्व और क्षायिक-चारित्र।

प्र. 2. *'क्षायिक-ज्ञान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्पूर्ण 'ज्ञानावरणी-कर्म' के क्षय से जो ज्ञान होता है, उसे 'क्षायिक-ज्ञान' कहते हैं।

प्र. 3. *'क्षायिक-दर्शन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्पूर्ण 'दर्शनावरणी-कर्म' के क्षय से जो 'दर्शन' होता है, उसे 'क्षायिक-दर्शन' कहते हैं।

प्र. 4. *'क्षायिक-दान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्पूर्ण 'दानांतराय-कर्म' के क्षय से अनन्त-प्राणियों के समूह का उपकार करनेवाला 'क्षायिक-दान' है।

प्र. 5. *'क्षायिक-लाभ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्पूर्ण 'लाभांतराय-कर्म' के क्षय से जो लाभ होता है, उसे 'क्षायिक-लाभ' कहते हैं।

प्र. 6. *'क्षायिक-लाभ' किसको होता है?*

उत्तर— 'क्षायिक-लाभ' 'कवलाहार-क्रिया' से रहित केवलियों को होता है।

प्र. 7. *'कवलाहार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो ग्रासरूप में भोजन लेता है, उसे 'कवलाहार' कहते हैं।

प्र. 8. *'कवल' या 'ग्रास' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'भोजन का टुकड़ा' 'कवल' या 'ग्रास' कहलाता है।

प्र. 9. *बिना 'कवलाहार' के 'केवली' कैसे रह सकते है?*

उत्तर— परमऔदारिक-शरीर के योग्य शुभ-सूक्ष्म और अनन्त-परमाणु सम्पूर्ण-शरीर को प्रतिसमय प्राप्त होते और छोड़ते रहते हैं, इसलिए उन्हें 'कवलाहार' की आवश्यकता नहीं होती।

प्र. 10. *'क्षायिक-भोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्पूर्ण 'भोगांतराय-कर्म' के क्षय से जो भोग होता है, वह 'क्षायिक-भोग' है, जैसे — पुष्पवृष्टि आदि।

प्र. 11. *'क्षायिक-उपभोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— समस्त उपभोगांतराय-कर्म के क्षय से जो उपभोग होता है, वह 'क्षायिक-उपभोग' है, जैसे — सिंहासन, तीन छत्र आदि।

प्र. 12. *'भोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'एकबार' प्रयोग में आती है, वह सामग्री 'भोग' कहलाती है, जैसे — भोजन।

प्र. 13. *'उपभोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'बार-बार' प्रयोग में आनेवाली सामग्री को 'उपभोग' कहते हैं, जैसे — मेज कुर्सी, वस्त्र आदि।

प्र. 14. *'क्षायिक-वीर्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'वीर्यांतराय-कर्म' के क्षय से जो होता है, वह 'क्षायिक-वीर्य' है।

प्र. 15. *'क्षायिक-वीर्य' शब्द का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'अनंत-शक्ति' को 'क्षायिक-वीर्य' कहते हैं।

प्र. 16. *'वीर्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शक्ति को 'वीर्य' कहते हैं।

प्र. 17. *'क्षायिक-सम्यक्त्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनन्तानुबंधी-क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, सम्यक्-मिथ्यात्व, सम्यक्त्व प्रकृति इन सात प्रकृतियों के क्षय जो होता है, उसे 'क्षायिक-सम्यक्त्व' कहते हैं।

प्र. 18. *'क्षायिक-चारित्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'सम्पूर्ण-चारित्र-मोहनीय-कर्म' के क्षय से जो होता है, वह 'क्षायिक-चारित्र' है। ✿✿

ज्ञानाज्ञान-दर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रि-त्रि-पंचभेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमासंयमाश्च ॥5॥

अर्थ — 'क्षायोपशमिक-भाव' के अठारह-भेद हैं — चार-ज्ञान, तीन-अज्ञान, तीन-दर्शन, पाँच-दानादि-लब्धियाँ, क्षायोपशमिक-सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक-चारित्र और संयमासंयम।

प्र. 1. *'क्षायोपशमिक-भाव' के कितने भेद हैं और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'क्षायोपशमिक-भाव' के अठारह-भेद हैं — चार-ज्ञान, तीन-अज्ञान, तीन-दर्शन, पाँच-दानादि-लब्धियाँ, क्षायोपशमिक-सम्यक्त्व, क्षायोपशमिक-चारित्र और संयमासंयम।

प्र. 2. चार *'क्षायोपशमिक-ज्ञान' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, और मनःपर्ययज्ञान — ये चार 'क्षायोपशमिक-ज्ञान' हैं।

प्र. 3. *तीन 'क्षायोपशमिक-अज्ञान' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान और कुअवधिज्ञान — ये तीन 'क्षायोपशमिक-अज्ञान' हैं।

प्र. 4. *तीन 'क्षायोपशमिक-दर्शन' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन — ये तीन 'क्षायोपशमिक-दर्शन' हैं।

प्र. 5. *पाँच 'क्षायोपशमिक-लब्धियाँ' कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— दान, लाभ, भोग, उपभोग, और वीर्य — ये पाँच 'क्षायोपशमिक-लब्धियाँ' हैं।

प्र. 6. *'क्षायोपशमिक-सम्यक्त्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनन्तानुबंधी-क्रोध, मान, माया, लोभ, मिथ्यात्व, सम्यक्-मिथ्यात्व — इन छह-प्रकृतियों का उदयाभाविक-क्षय, और इन्हीं के सदावस्थारूप-उपशम से एवं देशघाती-स्पर्द्धकरूपी-सम्यक्प्रकृति के उदय होने से जो श्रद्धान होता है, वह 'क्षायोपशमिक-सम्यक्त्व' होता है।

प्र. 7. *'क्षायोपशमिक-चारित्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनन्तानुबंधी के चार, अप्रत्याख्यान के चार, तथा प्रत्याख्यान के चार — इन बारह-कषायों के उदयाभाविक-क्षय होने से और इन्हीं के सदवस्थारूप-उपशम होने से चार संज्वलन-कषायों में से किसी एक प्रकृति के उदय होने पर तथा नो-कषायों का यथासम्भव उदय होने पर जो त्यागरूप-परिणाम होता है, वह 'क्षायोपशमिक-चारित्र' होता है।

प्र. 8. *'संयमासंयम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संयम और असंयम — दोनों जब साथ-साथ हों, तो उसे 'संयमासंयम' कहते हैं, जैसे — श्रावक।

प्र. 9. *'संयमासंयम' की परिभाषा बताओ?*

उत्तर— अनन्तानुबंधी की चार, तथा अप्रत्याख्यान की चार — इन आठ प्रकृतियों के उदयाभाविक-क्षय होने से इन्हीं प्रकृतियों का सदावस्थारूप-उपशम होने से, तथा प्रत्याख्यान-कषाय और संज्वलन-कषाय के देशघाती-स्पर्द्धकों के उदय होने पर तथा नो-कषायों का यथासम्भव उदय होने पर जो विरत और अविरत-परिणाम होते हैं, उन्हें 'संयमासंयम' कहते हैं।

प्र. 10. *'अन्तानुबंधी-कषाय' किसे कहते हैं, और वे कितने हैं?*

उत्तर— जो कषाय अंनतकाल से जुड़ी हुई हो एवं जो सम्यक्त्व-प्राप्ति में बाधक हो, उसे 'अनंतानुबंधी-कषाय' कहते हैं, जैसे — अनन्तानुबंधी-क्रोध, अनन्तानुबंधी-मान, अनन्तानुबांधी-माया, तथा अनन्तानुबंधी-लोभ आदि।

प्र. 11. 'अप्रत्याख्यान-कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो त्यागरूप-परिणाम को नहीं होने देता है, वह 'अप्रत्याख्यान-कषाय' है, जैसे — अप्रत्याख्यान-क्रोध, अप्रत्याख्यान-मान, अप्रत्याख्यान-माया, तथा अप्रत्याख्यान-लोभ आदि।

प्र. 12. 'प्रत्याख्यान-कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो पूर्ण-संयम को धारण करने में बाधक है, उसे 'प्रत्याख्यान-कषाय' कहते हैं, जैसे प्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ।

प्र. 13. 'संज्वलन-कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो कषाय 'क्षायिक-चारित्र' में बाधक होती है, वह 'संज्वलन-कषाय' है, जैसे — संज्वलन-क्रोध, मान, माया, लोभ।

प्र. 14. 'संयमासंयम-भाव' में 'संयम-भाव' किस अपेक्षा से और 'असंयम-भाव' किस अपेक्षा से होता है?

उत्तर— 'त्रस-जीवों' की हिंसा के त्याग की अपेक्षा से संयम होता है, तथा 'स्थावर-जीवों' की हिंसा के अभाव की अपेक्षा से 'असंयम' होता है।

प्र. 15. 'त्रस-जीव' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'त्रस-नामकर्म' के उदय से जीव की जो अवस्था होती है, ऐसे दो-इन्द्रिय, तीन-इन्द्रिय, चार-इन्द्रिय, पाँच-इन्द्रिय-जीवों को 'त्रस-जीव' कहते हैं।

प्र. 16. 'स्थावर-जीव' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'स्थावर-नामकर्म के उदय से जीव की जो अवस्था होती है, ऐसे एक-इन्द्रियजीव — पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक-जीवों को 'स्थावर-जीव' कहते हैं।

प्र. 17. नो-कषाय किन्हें कहते हैं, और वे कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर— जो किंचित्-कषाय हैं, अर्थात् कषाय की तरह हैं; परन्तु पूरी-कषाय नहीं हैं, जैसे — हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद, नपुंसकवेद आदि।

प्र. 18. 'क्षायिक-भाव' और 'क्षायोपशमिक-भाव' में 'पाँच-लब्धियों' का वर्णन किया है, इन दोनों में क्या अंतर है?

उत्तर— 'क्षायिक-भाव' में 'पाँच-लब्धियाँ' 'अंतराय-कर्म' के क्षय से प्राप्त होती हैं, और 'क्षायोपशमिक-भाव' में 'अंतराय-कर्म' के 'क्षयोपशम' से प्राप्त होती हैं। ✿✿

गति-कषाय-लिंग-मिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्ध-लेश्याश्चतु-श्चतुस्त्र्येकैकैकैक-षड्भेदा: ॥6॥

अर्थ — 'औदयिक-भाव' के इक्कीस-भेद हैं — चार-गति, चार-कषाय,

तीन-लिंग, एक-मिथ्यादर्शन, एक-अज्ञान, एक-असंयम, एक-असिद्धभाव और छह-लेश्यायें।

प्र. 1. 'औदयिक-भाव' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'औदयिक-भाव' के इक्कीस-भेद हैं — चार-गति, चार-कषाय, तीन-लिंग, एक-मिथ्यादर्शन, एक-अज्ञान, एक-असंयम, एक-असिद्धभाव और छह-लेश्यायें।

प्र. 2. 'गति' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'आयुकर्म' के उदय से जो अवस्था होती है, उसे 'गति' कहते हैं।

प्र. 3. 'गति' कितनी हैं, और वे कौन-कौन-सी है?

उत्तर— 'गति' चार हैं — मनुष्य-गति, देव-गति, तिर्यंच-गति, तथा नरक-गति।

प्र. 4. 'कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो आत्मा की शक्ति को 'कृश' अर्थात् 'कमजोर' करता है, उसे 'कषाय' कहते हैं।

प्र. 5. 'कषाय' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'कषाय' के चार-भेद हैं — क्रोध, मान, माया, तथा लोभ।

प्र. 6. 'लिंग' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'वेद' के उदय से जो अवस्था उत्पन्न होती है, उसे 'लिंग' कहते हैं।

प्र. 7. 'लिंग' कितने प्रकार के होते हैं, और कौन-कौन-से?

उत्तर— 'लिंग' तीन-प्रकार के होते हैं — स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, तथा नपुंसकलिंग।

प्र. 8. 'पुल्लिंग', 'स्त्रीलिंग', तथा 'नपुंसकलिंग' किन्हें कहते हैं?

उत्तर— 'पुंवेद' के उदय से 'पुल्लिंग' होता है, 'स्त्रीवेद' के उदय से 'स्त्रीलिंग' बनता है, तथा 'नपुंसक-वेदं' के उदय से 'नपुंसक-लिंग' कहलाता है।

प्र. 9. 'मिथ्यादर्शन' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'दर्शन-मोहनीय-कर्म' के उदय से तत्त्वों का मिथ्याश्रद्धान होना 'मिथ्यादर्शन' कहलाता है।

प्र. 10. सूत्र में जो 'मिथ्यादर्शन' शब्द आया है, वह कौन-सा 'मिथ्यादर्शन' है?

उत्तर— सूत्र में जो 'मिथ्यादर्शन' आया है, वह 'औदयिक-मिथ्यादर्शन' है।

प्र. 11. 'औदयिक-मिथ्यादर्शन' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'दर्शन-मोहनीय-कर्म' के उदय से जो मिथ्यादर्शन होता है, वह 'औदयिक-मिथ्यादर्शन' है।

प्र. 12. 'अज्ञान' किसे कहते हैं?

उत्तर— पदार्थों के नहीं जानने को 'अज्ञान' कहते हैं।

प्र. 13. *'असंयम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संयम का नहीं होना 'असंयम' कहलाता है।

प्र. 14. *'असिद्धभाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सिद्ध-अवस्था के अभाव को 'असिद्धभाव' कहते हैं।

प्र. 15. *'लेश्या' किसे कहते हैं?.*

उत्तर— कषाय से अनुरंजित (रंगे हुये) योग की प्रवृत्ति को 'लेश्या' कहते हैं।

प्र. 16. *'योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन, वचन, काय के परिस्पंदन (हलन-चलन) को 'योग' कहते हैं।

प्र. 17. *'लेश्या' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— लेश्या के छह-भेद हैं — पीत, पद्म, शुक्ल, कपोत, नील, तथा कृष्ण।

✿✿

जीवभव्याभव्यत्वानि च ॥7॥

अर्थ — 'पारिणामिक-भाव' के तीन भेद हैं -- जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व।

प्र. 1. *'पारिणामिक-भाव' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— 'पारिणामिक-भाव' के तीन भेद हैं — जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व।

प्र. 2. *'जीवत्व-भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें 'ज्ञान-दर्शन-चेतना' पाई जाती है, ऐसे चेतन-स्वभाव को 'जीवत्व' कहते हैं।

प्र. 3. *'भव्यत्व-भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस जीव में सम्यग्दर्शन, ज्ञान-चारित्र-भाव प्रकट होने की योग्यता आती है, वह 'भव्यत्व-भाव' है।

प्र. 4. *'अभव्यत्व-भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर जिस जीव में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रकट होने की योग्यता नहीं आती है, उसे 'अभव्यत्व-भाव' कहते हैं।

प्र. 5. *'जीवत्व'-आदि को 'पारिणामिक-भाव' क्यों कहते हैं?*

उत्तर— जीवत्व, भव्यत्व और अभव्यत्व — ये तीन भाव कर्म के उदय, उपशम, क्षय और क्षायोपशम के बिना ही होते हैं, उन्हें 'पारिणामिक-भाव' कहते हैं।

प्र. 6. *'जीव' के 'अस्तित्व-वस्तुत्व-भाव' भी पारिणामिक हैं, फिर 'जीवत्व, भव्यत्व, और अभव्यत्व' — इन तीनों का ही ग्रहण क्यों किया?*

उत्तर— 'जीवत्व'-आदि तीन-भाव 'आसाधारण-भाव' हैं। 'अस्तित्व' आदि 'असाधारण-भाव' नहीं हैं, इसलिए इनका ग्रहण नहीं किया है।

प्र. 7. 'असाधारण-भाव' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो 'जीव' या अन्य एक 'द्रव्य' में पाए जाते हों, तथा अन्य किसी दूसरे द्रव्यों में नहीं पाए जाते हों, उन्हें 'असाधारण-भाव' कहते हैं, जैसे — 'जीवत्व, भव्यत्व, और अभव्यत्व' जीव में ही पाए जाते हैं, अन्य द्रव्यों में नहीं।

प्र. 8. 'साधारण-भाव' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो 'जीव-द्रव्य' में पाया जाता हो, और अन्य 'द्रव्य' में भी पाया जाता हो, उसे 'साधारण-भाव' कहते हैं।

प्र. 9. क्या 'असाधारण-साधारण-भाव' जीवद्रव्य में या अन्य द्रव्य में भी हैं? यदि अन्य द्रव्य में हैं, तो कैसे?

उत्तर— ये तीनों भाव अन्य-द्रव्यों में भी हैं, जैसे 'धर्मद्रव्य' 'गति-हेतुत्व-भाव' है। 'अधर्मद्रव्य' में 'स्थिति-हेतुत्व-भाव' है, 'कालद्रव्य' में 'वर्तना-हेतुत्व-भाव' हैं, 'आकाशद्रव्य' में 'अवगाहना-हेतुत्व-भाव' है, शेष सब 'साधारण-भाव' हैं।

प्र. 10. जीव 'अमूर्त' है, कर्म 'मूर्त' है — इन दोनों में आपस में बंध कैसे होता है? यदि बंध नहीं होता है, तो 'औदयिक-भाव' कैसे बनता है?

उत्तर— जैनदर्शन अनेकान्त-स्वरूप है। आत्मा अनादि-कर्मबंध के कारण व्यवहार से 'मूर्तिक' है, तथा 'औदयिक-आदि-भाव' हैं। 'निश्चयनय' से आत्मा 'अमूर्तिक' है, और कर्मबंध से परे है — यह अनेकान्त से सिद्ध होता है।

प्र. 11. वर्तमान में 'संसारी-जीव' के कितने भाव हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— वर्तमान में 'संसारी-जीव' के चार-भाव हैं — औपशमिक, क्षायोपशमिक, औदयिक, और पारिणामिक।

प्र. 12. 'सिद्ध-भगवान्' के कितने भाव हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'सिद्ध-भगवान्' के दो-भाव हैं — 'क्षायिक' और 'पारिणामिक'।

प्र. 13. कौन-कौन-से भाव कौन-कौन-से गुणस्थान तक होते हैं?

उत्तर— 'औपशमिक-भाव' चौथे से ग्यारहवें गुणस्थान तक होते हैं; 'क्षायिक-भाव' चौथे से चौदहवें गुणस्थान तक होते हैं, और सिद्धों के भी होते हैं। 'क्षायोपशमिक-भाव' एक से बारहवें गुणस्थान तक होते हैं; 'औदयिक-भाव' एक से चौदहवें गुणस्थान तक होते हैं; 'पारिणामिक-भाव' एक से चौदहवें गुणस्थान तक होते हैं, और सिद्धों में भी होते हैं।

प्र. 14. सबसे अधिक एवं सबसे कम भाव कौन-से हैं?

उत्तर— 'औदायिक-भाव' सबसे अधिक हैं, और 'पारिणामिक-भाव' सबसे कम हैं।

प्र. 15. एक-जीव के एक-काल में कितने भाव होते हैं, और कैसे?

उत्तर— एक-जीव के एक-काल में सत्रह-भाव हो सकते हैं — 'पारिणामिक' के दो-भाव, 'औदयिक-भाव' के आठ-भेद, एक-ज्ञान, एक-दर्शन और पाँच-लब्धियाँ।

प्र. 16. एक-जीव के दो 'पारिणामिक-भाव' कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— जीवत्व, भव्यत्व या अभव्यत्व — इनमें से कोई दो 'पारिणामिक-भाव' एक-जीव के होते हैं।

प्र. 17. एक-जीव के 'औदयिक-भाव' के आठ-भेद कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— एक-गति, एक-कषाय, एक-लिंग, एक-मिथ्यादर्शन, एक-अज्ञान, एक-असंयम, एक-असिद्धभाव और एक-लेश्या।

प्र. 18. 'शुभ-भाव' कितने है?

उत्तर— 'शुभ-भाव' बाइस हैं।

प्र. 19. 'अशुभ-भाव' कितने है?

उत्तर— 'अशुभ-भाव' उन्नीस हैं।

प्र. 20. 'शुद्ध-भाव' के कितने भेद हैं?

उत्तर— 'शुद्ध-भाव' के नौ-भेद हैं।

प्र. 21. 'पारिणामिक-भाव' के कितने भेद ह?

उत्तर— 'पारिणामिक-भाव' के तीन-भेद हैं।

प्र. 22. 'कर्मसापेक्ष-भाव' कितने हैं?

उत्तर— 'कर्मसापेक्ष-भाव' चार हैं।

प्र. 23. 'मोक्षमार्ग' के भाव कितने हैं?

उत्तर— 'मोक्षमार्ग' के भाव उन्नीस हैं।

प्र. 24. 'अरिहंत-भगवान्' के कितने भाव हैं?

उत्तर— 'सयोग-केवली-जिन' के चौदह भाव हैं, तथा 'अयोग-केवली-जिन' के तेरह-भाव हैं।

प्र. 25 'सयोग-केवली' और 'अयोग-केवली' कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— तेरहवें-गुणस्थानवर्ती 'सयोग-केवली' और चौदहवें-गुणस्थानवर्ती 'अयोग-केवली' हैं।

प्र. 26. 'सयोग-केवली' के चौदह-भाव बताओ।

उत्तर— नौ-क्षायिक, तीन-औदायिक, और दो-पारिणामिक-भाव — ये चौदह-भाव सयोग-केवली के होते हैं।

प्र. 27. 'सिद्ध-भगवान्' के कितने भाव हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'सिद्ध-भगवान्' के पाँच-भाव हैं — चार-क्षायिक, और एक-पारिणामिक।

✿✿

उपयोगो लक्षणम् ।।8।।

अर्थ — 'उपयोग' जीव का लक्षण है।

प्र. 1. 'जीव' का क्या लक्षण है?

उत्तर— 'उपयोग' 'जीव' का लक्षण है।

प्र. 2. 'उपयोग' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिस परिणाम से जीव देखता या जानता है, वह 'उपयोग' है।

प्र. 3. 'उपयोग' और 'आत्मा' में क्या अंतर है?

उत्तर— 'उपयोग' आत्मा का 'गुण' है, और 'आत्मा' 'गुणी' है। इसप्रकार इन दोनों में गुण-गुणी-सम्बन्ध है।

प्र. 4. 'उपयोग' किस-किसके होता है।

उत्तर— 'उपयोग' 'जीव' के होता है।

प्र. 5. चक्षु-आदि इन्द्रियों से हम देखते-जानते हैं, क्या वे भी सारी इन्द्रियाँ चेतन हैं?

उत्तर— नहीं, वे मात्र 'उपकरण' हैं, जीव जिनके द्वारा देखता है। ✿✿

स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः ।।9।।

अर्थ — वह 'उपयोग' दो-प्रकार का है, ज्ञानोपयोग और दर्शनापयोग 'ज्ञानोपयोग' आठ-प्रकार का है, और 'दर्शनोपयोग' चार-प्रकार का है।

प्र. 1. 'उपयोग' के कितने भेद हैं, और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'उपयोग' के दो-भेद हैं — 'ज्ञानोपयोग' और 'दर्शनोपयोग'।

प्र. 2. 'दर्शनोपयोग' के कितने भेद हैं, और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'दर्शनोपयोग' के चार-भेद हैं — चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन।

प्र. 3. 'ज्ञानोपयोग' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'ज्ञानोपयोग' के 'आठ-भेद' हैं — मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, केवलज्ञान, कुमतिज्ञान, कुश्रतुज्ञान, तथा कुअवधिज्ञान।

प्र. 4. 'मनःपर्यय-दर्शन' क्यों नहीं है?

उत्तर— क्योंकि मनःपर्ययज्ञान ईहा-मतिज्ञानपूर्वक होता है, इसलिए 'मनःपर्यय-दर्शन' नहीं होता।

संसारिणो मुक्ताश्च ॥10॥

अर्थ — 'जीव' दो-प्रकार के हैं — 'संसारी' और 'मुक्त'।

प्र. 1. *'जीव' कितने प्रकार के हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'जीव' दो-प्रकार के होते हैं — 'संसारी' और 'मुक्त'।

प्र. 2. *'संसार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें जीव 'संसरण' अर्थात् भ्रमण करता है, उसे 'संसार' कहते हैं, या 'परिवर्तन' को 'संसार' कहते हैं।

प्र. 3. *'संसारी-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मसहित-जीवों को 'संसारी-जीव' कहते हैं, अथवा जो 'परिवर्तनशील-संसार' में परिभ्रमण करता है, वह 'संसारी-जीव' है।

प्र. 4. *'मुक्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'कर्मरहित' या 'परिवर्तनरहित-अवस्था' को 'मुक्त' कहते हैं।

प्र. 5. *'मुक्त-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो जीव आठ-कर्मों से रहित आठ-गुणों से सहित 'सिद्ध-अवस्था' को प्राप्त करता है, वह 'मुक्त-जीव' है। ✿✿

समनस्काऽमनस्का ॥11॥

अर्थ — 'मनवाले' (समनस्क) और 'मनरहित' (अमनस्क) — ऐसे दो प्रकार के 'संसारी-जीव' हैं।

प्र. 1. *'संसारी-जीव' कितने प्रकार के हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'संसारी-जीव' दो-प्रकार के हैं — 'मनवाले' और 'मनरहित'।

प्र. 2. *'समनस्क' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'मनसहित-जीवों' को 'समनस्क' कहते हैं।

प्र. 3. *'अमनस्क' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'मनरहित-जीवों' को 'अमनस्क' कहते हैं।

प्र. 4. *'मन' कितने प्रकार के हैं?*

उत्तर— मन दो-प्रकार के होते हैं — 'द्रव्यमन' तथा 'भावमन'।

प्र. 5. *'द्रव्यमन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हृदय में स्थित पुद्गल से निर्मित अष्टदल-कमलाकार 'द्रव्यमन' है।

प्र. 6. *'भावमन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'चेतनभाव' विचारशक्ति से सहित हैं, उसे 'भावमन' कहते हैं।

प्र. 7. *'भावमन' का दूसरा नाम क्या है?*

उत्तर— 'भावमन' का दूसरा नाम 'चित्त' है।

प्र. 8. *सूत्र में 'समनस्क' और 'अमनस्क' में से समनस्क को पहले क्यों रखा है?*

उत्तर— 'समनस्क' पूज्य होने के कारण पहले रखा गया है।

प्र. 9. *'समनस्क' पूज्य कैसे हैं?*

उत्तर— 'मनसहित-जीव' ही 'सम्यग्दर्शन' को प्राप्त कर सकता है, इसलिए 'समनस्क' 'पूज्य' है।

प्र. 10 'द्रव्यमन' की परिभाषा क्या है?

उत्तर— 'अंगोपांग-नामकर्म' के उदय से जो पुद्गल से बना हुआ अष्टदल-कमलाकार हृदय में स्थित मन है, उसे 'द्रव्यमन' कहते हैं।

प्र. 11. *'भावमन' की परिभाषा क्या है?*

उत्तर— वीर्यान्तराय और 'नो-इन्द्रिय आवरण-कर्म' के क्षयोपशम से जो आत्मा की विशुद्धि होती है, उसे 'भावमन' कहते हैं। ✿✿

संसारिणस्त्रस-स्थावरः ॥12॥

अर्थ — तथा 'संसारी-जीव' 'त्रस' और 'स्थावर' के भेद से दो-प्रकार के हैं।

प्र. 1. *'संसारी-जीव' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'संसारी-जीव' के दो भेद हैं — 'त्रस-जीव' तथा 'स्थावर-जीव'।

प्र. 2. *'त्रस-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'त्रस' नाम के उदय से जीव की जो अवस्था होती है। ऐसे दो-इन्द्रिय, तीन-इन्द्रिय, चार-इन्द्रिय और पाँच-इन्द्रिय-जीव को 'त्रस-जीव' कहते हैं?

प्र. 3. *'स्थावर-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'स्थावर' नाम के उदय से जो जीव की अवस्था होती है, ऐसे एक-इन्द्रिय — पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पति-कायिक को 'स्थावर-जीव' कहते हैं।

प्र. 4. *'त्रस-जीव' को पहले ग्रहण क्यों किया है?*

उत्तर— 'त्रस-शब्द' में कम अक्षर हैं, इसलिए इसको पहले ग्रहण किया है।

प्र. 5. *'त्रस-जीव' में क्या विशेषता है, जो सूत्र में पहले आता है?*

उत्तर— 'त्रस-जीव' 'पूज्य' होने से सूत्र में पहले लिखा है।

प्र. 6. *'त्रस-जीव' पूज्य कैसे हैं?*

उत्तर— 'त्रस-जीव' ही 'रत्नत्रय' को प्राप्त कर सकता है, और मोक्ष जा सकता है, इसलिए 'पूज्य' है।

प्र. 7. *'स्थावर-जीव' 'पूज्य' क्यों नहीं है?*

उत्तर— 'स्थावर-जीव' 'सम्यग्दर्शन' को प्राप्त नहीं कर सकता, इसलिए 'स्थावर-जीव' 'पूज्य' नहीं है।

पृथिव्यप्तेजो-वायु-वनस्पतयः स्थावराः ॥13॥

अर्थ — पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक — ये पाँच 'स्थावरजीव' हैं।

प्र. 1. *'स्थावर-जीवों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'स्थावर-जीवों' के पाँच भेद हैं — पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, और वनस्पतिकायिक।

प्र. 2. *'पृथिवीकायिक-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस जीव की 'पृथिवी' की 'काय' अर्थात् 'शरीर' है, वह 'पृथिवीकायिक-जीव' है।

प्र. 3. *'जलकायिक-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस जीव की 'जल' ही 'काय' अर्थात् 'शरीर' है, वह 'जलकायिक-जीव' है।

प्र. 4. *'अग्निकायिक-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस जीव की 'अग्नि' की 'काय' अर्थात् शरीर है, वह 'अग्निकायिक-जीव' है।

प्र. 5. *'वायुकायिक-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस जीव की 'वायु' ही 'काय' अर्थात् शरीर है, वह 'वायुकायिक-जीव' है।

प्र. 6. *'वनस्पतिकायिक-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस जीव की 'वनस्पति' ही 'काय' अर्थात्-शरीर है, वह 'वनस्पतिकायिक-जीव' है।

प्र. 7. *'पृथिवी' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'पृथिवी' के चार-भेद हैं — पृथिवी, पृथिवीकाय, पृथिवीकायिक और पृथिवी-जीव।

प्र. 8. *'पृथिवी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'पृथिवी' का ऊपरी-भाग जिस में जीव नहीं होता, उसे 'पृथिवी' कहते हैं।

प्र. 9. *'पृथिवीकाय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'पृथिवी' का शरीर 'पृथिवीकाय' कहलाता है।

प्र. 10. *'पृथिवीकायिक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस जीव के 'पृथिवीरूपी-काय' अर्थात् शरीर विद्यमान है, उसे 'पृथिवीकायिक' कहते हैं।

प्र. 11. *'पृथिवी-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— विग्रह-गति में स्थित जीव को 'पृथिवी-जीव' कहते हैं।

प्र. 12. *'विग्रह-गति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जीव मरकर एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को प्राप्त करने में जो गति होती है, वह विग्रह-गति होती है, अथवा 'विग्रह' अर्थात् शरीर के लिए जो गति होती है, वह 'विग्रह-गति' होती है।

प्र. 13. *'अग्नि' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अग्नि' के चार-भेद हैं — अग्नि, अग्निकाय, अग्निकायिक और अग्निजीव।

प्र. 14. *'अग्नि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'अग्नि' का शरीर 'अग्निकाय' कहलाता है।

प्र. 15. *'अग्निकायिक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस जीव के अग्निरूपीकाय अर्थात् शरीर विद्यमान है, उसे 'अग्निकायिक' कहते हैं।

प्र. 16. *'अग्नि-जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'विग्रह-गति' में स्थित जीव को 'अग्नि-जीव' कहते हैं।

प्र. 17. *जल के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'जल' के चार-भेद हैं — जल, जलकाय, जलकायिक, और जलजीव।

प्र. 18. *'जल' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'जल' का ऊपरी-भाग, जिसमें 'जीव' नहीं होता, उसे 'जल' कहते हैं।

प्र. 19. *'जलकाय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'जल' का शरीर 'जलकाय' कहलाता है।

प्र. 20. *'जलकायिक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस जीव के 'जलरूपी-काय' अर्थात् शरीर विद्यमान है, उसे 'जलकायिक कहते हैं।

प्र. 21. *'जलजीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर- 'विग्रह-गति' में स्थित जीव को 'जलजीव' कहते हैं।

प्र. 22. 'वायु' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर- 'वायु' के चार-भेद हैं-वायु, वायुकाय, वायुकायिक, वायुजीव।

प्र. 23. 'वायु' किसे कहते हैं?

उत्तर- 'वायु' का ऊपरी-भाग, जिसमें 'जीव' नहीं होता, उसे 'वायु' कहते हैं।

प्र. 24. 'वायुकाय' किसे कहते हैं?

उत्तर- 'वायु' का शरीर 'वायुकाय' कहलाता है।

प्र. 25. 'वायुकायिक' किसे कहते हैं?

उत्तर- जिस जीव के 'वायुरूपी-काय' अर्थात् शरीर विद्यमान है, उसे 'वायुकायिक' कहते हैं।

प्र. 26. 'वायु-जीव' किसे कहते हैं?

उत्तर- 'विग्रह-गति' में स्थित जीव को 'वायु-जीव' कहते हैं।

प्र. 27. 'वनस्पति' के कितने भेद हैं और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर- 'वनस्पति' के चार-भेद हैं-वनस्पति, वनस्पतिकाय, वनस्पतिकायिक तथा वनस्पति-जीव।

प्र. 28. 'वनस्पति' किसे कहते हैं?

उत्तर- 'वनस्पति' का ऊपरी-भाग, जिसमें जीव नहीं होता, उसे 'वनस्पति' कहते हैं।

प्र. 29. 'वनस्पतिकाय' किसे कहते हैं?

उत्तर- वनस्पति का शरीर 'वनस्पतिकाय' कहलाता है।

प्र. 30. 'वनस्पतिकायिक' किसे कहते हैं?

उत्तर- जिस जीव के 'वनस्पतिरूपी-काय' अर्थात् शरीर विद्यमान है, उसे 'वनस्पतिकायिक' कहते हैं।

प्र. 31. 'वनस्पति-जीव' किसे कहते हैं?

उत्तर- 'विग्रह-गति' में स्थित जीव को 'वनस्पति-जीव' कहते हैं। ✿✿

द्वीन्द्रियादयस्त्रसा: ।। 14 ।।

अर्थ - 'दो-इन्द्रिय' आदि 'त्रस-जीव' हैं।

प्र. 1. 'त्रस-जीव' कौन-से हैं?

उत्तर- 'दो-इन्द्रिय' आदि 'त्रस-जीव' हैं।

प्र. 2. 'दो-इन्द्रिय' आदि कौन-कौन से 'त्रस-जीव' हैं?

उत्तर- दो-इन्द्रिय, तीन-इन्द्रिय, चार-इन्द्रिय और पाँच-इन्द्रिय जीव 'त्रस-जीव' हैं।

प्र. 3. 'त्रस' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'त्रस-नामकर्म' के उदय से जीव की जो अवस्था होती है, उसे 'त्रस' कहते हैं।

प्र. 4. *'दो-इन्द्रिय' किसे कहते हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'स्पर्शन' और 'रसना' — ये दो-इन्द्रियाँ जिस जीव के होती हैं, उसे 'दो-इन्द्रिय' कहते हैं, जैसे — चावल में रहनेवाले लट, शंख, पेट में रहनेवाले कीड़े आदि।

प्र. 5. *'त्रीन्द्रिय-जीव' किसे कहते हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— स्पर्शन, रसना और घ्राण — ये तीन-इन्द्रियाँ जिस जीव के होती हैं, उसे 'त्रीन्द्रिय-जीव' कहते हैं। जैसे – चींटी, खटमल, बिच्छू आदि।

प्र. 6. *'चतुरिन्द्रिय' किसे कहते हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु — ये चार-इन्द्रियाँ जिस जीव के होती हैं, उसे 'चतुरिन्द्रिय' कहते हैं, जैसे — भौंरा, मक्खी आदि।

प्र. 7. *'पचेन्द्रिय' किसे कहते हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— स्पर्शन, रसना घ्राण, चक्षु, और कर्ण — ये पाँचों-इन्द्रियाँ जिस जीव के होती हैं, उसे 'पंचेन्द्रिय' कहते हैं, जैसे मनुष्य, तिर्यंच आदि। ✿✿

पंचेन्द्रियाणि ॥15॥

अर्थ — 'इन्द्रियाँ' पाँच हैं।

प्र. 1. *'इन्द्रियाँ' कितनी होती हैं, और कौन-कौन-सी?*

उत्तर— 'इन्द्रियाँ' पाँच होती हैं — स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण इन्द्रिय।

प्र. 2. *'इन्द्रियाँ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे जीव की पहचान होती है, उसे 'इन्द्रियाँ' कहते हैं।

प्र. 3. *'स्पर्शन-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— छूकर जो जानती है, वह 'स्पर्शन-इन्द्रिय' है।

प्र. 4. *'रसना-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चखकर जो जानती है, वह 'रसना-इन्द्रिय' है।

प्र. 5. *'घ्राणेन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'सूंघकर' जो जानता है, वह 'घ्राणेन्द्रिय' है।

प्र. 6. *'चक्षुरिन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— देखकर जो जानती है, वह 'चक्षुरिन्द्रिय' है।

प्र. 7. *'कर्णेन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सुनकर जो जानती है, वह 'कर्णेन्द्रिय' है।

प्र. 8. *इन्द्रियों को पाँच क्यों कहा, तथा हाथ-पैर को इन्द्रियों में क्यों नहीं कहा?*

उत्तर— हाथ-पैर आदि 'कर्मेन्द्रिय' हैं, यहाँ उपयोग का प्रकरण होने से 'ज्ञानेन्द्रिय' की बात की है।

प्र. 9. *'ज्ञानेन्द्रिय' किसे कहते हैं।*

उत्तर— जिसके द्वारा जाना जाता है, वह 'ज्ञानेन्द्रिय' है, जैसे — स्पर्शन, रसना आदि।

प्र. 10. *'कर्मेन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कार्य करने में 'साधनभूत-इन्द्रिय' को 'कर्मेन्द्रिय' कहते हैं, जैसे — हाथ, पैर आदि। ✿✿

द्विविधानि ॥16॥

अर्थ — वे 'इन्द्रियाँ' प्रत्येक दो-दो प्रकार की हैं।

प्र. 1. *'इन्द्रियों' के भेद कितने है?*

उत्तर— 'इन्द्रियों' के दो-दो भेद हैं।

प्र. 2. *सूत्र में 'द्विविध' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— दो-प्रकार हैं जिसके उसे 'द्विविध' कहते हैं, या दो-भेद हैं जिसके, उसको 'द्विविध' कहते हैं।

प्र. 3. *क्या पाँचों-इन्द्रियों के दो-प्रकार हैं?*

उत्तर— हाँ, पाँचों-इन्द्रियों के दो-प्रकार हैं।

प्र. 4. *इन्द्रियों के दो-भेद कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'द्रव्येन्द्रिय' और 'भावेन्द्रिय' दो-भेद हैं।

प्र. 5. *'द्रव्येन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'नामकर्म की रचना' को 'द्रव्येन्द्रिय' कहते हैं।

प्र. 6. *'भावेन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'ज्ञानावरण का क्षयोपशम' 'भावेन्द्रिय' है। ✿✿

निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥17॥

अर्थ — 'निर्वृत्ति' और 'उपकरण' रूप 'द्रव्येन्द्रिय' है।

प्र. 1. *'द्रव्येन्द्रिय' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'द्रव्येन्द्रिय' के दो भेद हैं — 'निवृत्ति' और 'उपकरण'।

प्र. 2. *'निर्वृत्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'नामकर्म' के उदय से रचे गये निश्चित-आकार और निश्चित-स्थानवाले पुद्गल की रचना को 'निर्वृत्ति' कहते हैं।

प्र. 3. *'निर्वृत्ति' के कितने भेद हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'निर्वृत्ति' के दो-भेद हैं — 'आभ्यन्तर-निर्वृत्तिं' और 'बाह्य-निर्वृत्ति'।

प्र. 4. *'आभ्यन्तर-निर्वृत्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मा के प्रदेश में चक्षु-आदि इन्द्रिय के आकार होनेवाले परिणमन को 'आभ्यन्तर-निर्वृत्ति' कहते हैं।

प्र. 5. *'बाह्य-निर्वृत्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्रियों के आकार के पुद्गल की रचना को 'बाह्य-निर्वृत्ति' कहते हैं।

प्र. 6. *'उपकरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'निर्वृत्ति' का 'उपकार' करे, उसे 'उपकरण' कहते हैं।

प्र. 7. *'उपकरण' कितने हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'उपकरण' दो-प्रकार के हैं — 'बाह्य-उपकरण' और 'आभ्यन्तर-उपकरण'।

प्र. 8. *'बाह्य-उपकरण' कौन-सा है?*

उत्तर— जैसे 'चक्षु-इन्द्रिय' के जो पलक और पलकों के बाल आदि।

प्र. 9. *'आभ्यन्तर-उपकरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भीतरी-संरचना को 'उपकरण' कहते हैं, जैसे चक्षु-इन्द्रिय आदि के कृष्णशुक्ल आदि मण्डल एवं रेटिना-लैंस आदि। ✿✿

लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥18॥

अर्थ — 'लब्धि' और 'उपयोग' रूप 'भावेन्द्रिय' है।

प्र. 1. *'भावेन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'लब्धि' और 'उपयोग' को 'भावेन्द्रिय' कहते हैं।

प्र. 2. *'लब्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मा में ज्ञानावरण-कर्म के क्षयोपशम से होनेवाली पदार्थ-ग्रहण करने की शक्ति को 'लब्धि' कहते हैं।

प्र. 3. *'उपयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पदार्थ-ग्रहण करने के प्रति आत्मा के व्यापार को 'उपयोग' कहते हैं। ,

प्र. 4. *'लब्धि' और 'उपयोग' में क्या अन्तर है?*

उत्तर— 'लब्धि' 'जानने की शक्ति' को कहते हैं, तथा 'उपयोग' 'जानने की क्रिया' को कहते हैं।

प्र. 5. *'उपयोग' और 'योग' में क्या अन्तर है?*

उत्तर— 'उपयोग' 'ज्ञान' की परिणति है, और 'योग' मन, वचन, काय की परिणति है।

प्र. 6. *'शुभ-उपयोग' किसे होता है, और 'शुभयोग' किसे होता है?*

उत्तर— 'शुभ-उपयोग' मात्र 'सम्यग्दृष्टि' को ही होता है, जबकि 'शुभ-योग' 'मिथ्यादृष्टि' और 'सम्यग्दृष्टि' — दोनों को हो सकता है।

प्र. 7. *'उपयोग' के कितने भेद हैं, और ये कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'उपयोग' के तीन-भेद हैं — अशुभोपयोग, शुभोपयोग, और शुद्धोपयोग।

प्र. 8. *'शुद्धोपयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'शुद्ध' अर्थात् आत्म-स्वभावरूप-धर्म में परिणति को 'शुद्धोपयोग' कहते हैं।

✿✿

स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि ।।19।।

अर्थ — स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय (कर्णेन्द्रिय) — ये पाँच इन्द्रियाँ हैं।

प्र. 1. *इन्द्रियाँ कितनी और कौन-कौन सी हैं?*

उत्तर— 'इन्द्रियाँ' पाँच हैं — स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण।

प्र. 2. *'स्पर्शन-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके द्वारा स्पर्श करके ज्ञान होता है, उसे 'स्पर्शन-इन्द्रिय' कहते हैं।

प्र. 3. *'रसना-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके द्वारा 'चखकर' ज्ञान होता है, वह 'रसना-इन्द्रिय' है।

प्र. 4. *'घ्राण-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके द्वारा 'सूंघकर' ज्ञान होता है, वह 'घ्राणेन्द्रिय' है।

प्र. 5. *'चक्षु-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके द्वारा 'देखकर' ज्ञान होता है, वह 'चक्षुरिन्द्रिय' है।

प्र. 6. *'कर्ण-इन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके द्वारा 'सुनकर' ज्ञान होता है, वह 'कर्ण-इन्द्रिय' है।

प्र. 7. *इन सभी इन्द्रियों को कौन-से 'क्षयोपशम'' और किसके अवलम्बन की आवश्यकता है?*

उत्तर— 'वीर्यान्तराय' व 'मतिज्ञानावरण' का 'क्षयोपशम' और 'आगोपांग-नामकर्म' के अवलम्बन की आवश्यकता है।

✿✿

स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः ।।20।।

अर्थ — स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण, और शब्द — ये क्रम से उन इन्द्रियों के

विषय है।

प्र. 1. *'विषय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण करनेयोग्य पुद्गल के गुणों' को 'विषय' कहते हैं, जैसे — स्पर्शन, रस, गंध वर्ण और शब्द आदि।

प्र. 2. *'इन्द्रियों' के 'विषय' कितने हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'इन्द्रियों' के विषय पाँच हैं — स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण और शब्द

प्र. 3. *'स्पर्श' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसे 'छूकर' जाना जाए, वह 'स्पर्श' है।

प्र. 4. *'रस' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसे 'चखकर' ज्ञान होता है, वह 'रस' है।

प्र. 5. *'गन्ध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसे 'सूंघकर' ज्ञान होता है, वह 'गंध' है।

प्र. 6. *'वर्ण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसे 'देखकर' ज्ञान होता है, वह 'वर्ण' है।

प्र. 7. *'शब्द' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसे 'सुनकर' ज्ञान होता है, वह 'शब्द' है।

प्र. 8. *'स्पर्शन-इन्द्रिय' के विषय के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'स्पर्शन-इन्द्रिय' के आठ-भेद हैं, जैसे — ठंडा-गरम, चिकना-रूखा, मुलायम-कठोर, तथा भारी-हल्का।

प्र. 9. *'रसना-इन्द्रिय' के विषय कितने भेद हैं, तथा वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'रसना-इन्द्रिय' के पाँच-भेद हैं — चरपरा, कड़वा, कषैला खट्टा, और मीठा।

प्र. 10. *'घ्राण-इन्द्रिय' के विषय के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं।*

उत्तर— 'घ्राण-इन्द्रिय' के विषय के दो भेद हैं — सुगंध, तथा दुर्गंध।

प्र. 11. *'चक्षु-इन्द्रिय' के विषय के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'चक्षु-इन्द्रिय' के विषय के पाँच-भेद हैं — सफेद, नीला, पीला, लाल, और काला।

प्र. 12. *'कर्ण-इन्द्रिय' के विषय के कितने के भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'कर्ण-इन्द्रिय' के विषय शब्दमात्र हैं। किंतु स्थूलरूप में उनके सात-भेद हैं — सा, रे, गा, मा, पा, धा, और नि।

प्र. 13. *'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'एक-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?*

उत्तर— 'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'एक-इन्द्रिय-जीव' का 400 धनुष-प्रमाण विषय का क्षेत्र है।

प्र. 14. 'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'दो-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'दो-इन्द्रिय-जीव' का 800 धनुष-प्रमाण विषय का क्षेत्र है।

प्र. 15. 'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'तीन-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'तीन-इन्द्रिय-जीव' का 1600 धनुष-प्रमाण विषय का क्षेत्र है।

प्र. 16. 'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'चार-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'चार-इन्द्रिय-जीव' का 3200 धनुष-प्रमाण विषय का क्षेत्र है।

प्र. 17. 'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'पाँच-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'स्पर्शन-इन्द्रिय' में 'पाँच-इन्द्रिय-जीव' का 6400 धनुष-प्रमाण का विषय-क्षेत्र है।

प्र. 18. 'रसना-इन्द्रिय' में 'दो-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'रसना-इन्द्रिय' में 'दो-इन्द्रिय-जीव' का 64 धनुष-प्रमाण क्षेत्र है।

प्र. 19. 'रसना-इन्द्रिय' में 'तीन-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'रसना-इन्द्रिय' में 'तीन-इन्द्रिय-जीव' का 128 धनुष-प्रमाण क्षेत्र है।

प्र. 20. 'रसना-इन्द्रिय' में 'चार-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'रसना-इन्द्रिय' में 'चार-इन्द्रिय-जीव' का 256 धनुष-प्रमाण क्षेत्र है।

प्र. 21. 'रसना-इन्द्रिय' में 'पाँच-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'रसना-इन्द्रिय' में 'पाँच-इन्द्रिय-असंज्ञी' जीव का 512 धनुष-प्रमाण होता है, तथा 'संज्ञी-पंचेन्द्रिय-जीव' के 9 योजन-प्रमाण होता है।

प्र. 22. 'घ्राण-इन्द्रिय' में 'तीन-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'घ्राण-इन्द्रिय' में 'तीन-इन्द्रिय-जीव' का 100 धनुष प्रमाण-क्षेत्र है।

प्र. 23. 'घ्राण-इन्द्रिय' में 'चार-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'घ्राण-इन्द्रिय' में 'चार-इन्द्रिय-जीव' का 200 धनुष प्रमाण-क्षेत्र है।

प्र. 24. 'घ्राण-इन्द्रिय' में 'पाँच-इन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'घ्राण-इन्द्रिय' में 'पंचेन्द्रिय' असंज्ञी-जीव का 400 धनुष प्रमाण-क्षेत्र तथा 'संज्ञी-पंचेन्द्रिय-जीव' का 9 योजन-प्रमाण होता है।

प्र. 25. 'चक्षु-इन्द्रिय' में 'चार-इन्द्रिय'जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'चक्षु-इन्द्रिय' में 'चार-इन्द्रिय-जीव' का 2954 योजन प्रमाण-क्षेत्र है।

प्र. 26. 'चक्षु-इन्द्रिय' में पाँच-इन्द्रिय 'असंज्ञी-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?

उत्तर— 'चक्षु-इन्द्रिय में 'पाँच-इन्द्रिय 'असंज्ञी-जीव' का 5908 योजन प्रमाण-क्षेत्र है।

प्र. 27. *'चक्षु-इन्द्रिय' में 'पंचेन्द्रिय-संज्ञी-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?*
उत्तर— 'चक्षु-इन्द्रिय' में 'पंचेन्द्रिय-संज्ञी-जीव' का 47263 योजन प्रमाण-क्षेत्र है।
प्र. 28. *'कर्णेन्द्रिय' में 'असंज्ञी-पंचेन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?*
उत्तर— 'कर्णेन्द्रिय' में 'असंज्ञी-पंचेन्द्रिय-जीव' का 8000 धनुष प्रमाण-क्षेत्र है।
प्र. 29. *'कर्णेन्द्रिय' में 'संज्ञी-पंचेन्द्रिय-जीव' के विषय का कितना क्षेत्र है?*
उत्तर— 'कर्णेन्द्रिय' में 'संज्ञी-पंचेन्द्रिय-जीव' का 12 योजन प्रमाण-क्षेत्र है।
प्र. 30. *'स्पर्शन-इन्द्रिय' का आकार क्या है?*
उत्तर— 'स्पर्शन-इन्द्रिय' अनेक-आकार की होती है।
प्र. 31. *'रसना-इन्द्रिय' का आकार क्या है?*
उत्तर— 'रसना-इन्द्रिय' का आकार 'खुरपे' के समान-आकार का है।
प्र. 32. *'घ्राण-इन्द्रिय' का आकार क्या है?*
उत्तर— 'घ्राण-इन्द्रिय' का आकार 'तिल के पुष्प' के आकार-समान है।
प्र. 33. *'चक्षु-इन्द्रिय' का आकार क्या है?*
उत्तर— 'चक्षु-इन्द्रिय' का आकार 'मसूर' के समान-आकार का है।
प्र. 34. *'कर्ण-इन्द्रिय' का आकार क्या है?*
उत्तर— 'कर्ण-इन्द्रिय' का आकार 'जब (जौ) की नली' के समान-आकार का है। ✿✿

श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥21॥

अर्थ — 'श्रुतज्ञान' मन का विषय है।

प्र. 1. *'मन' का 'विषय' क्या है?*
उत्तर— 'श्रुतज्ञान' मन का विषय है।
प्र. 2. *'मन' का विषय 'श्रुत' किस कारण से हैं?*
उत्तर— 'श्रुतज्ञान' मन के अवलम्बन से होता है, अत: मन का विषय 'श्रुतज्ञान' है।
प्र. 3. *क्या मन के निमित्त से मात्र 'श्रुतज्ञान' ही होता है?*
उत्तर— 'मतिज्ञान' जैसे पाँचों-इन्द्रियों और मन के निमित्त से होता है, इसीप्रकार 'श्रुतज्ञान' मात्र 'मन' के निमित्त से होता है, दोनों के निमित्त से नहीं।
प्र. 4. *क्या 'मनरहित-जीवों' को 'श्रुतज्ञान' होता है?*
उत्तर— हाँ, 'मनरहित-जीवों' को 'श्रुतज्ञान' होता है। वहाँ 'श्रुतज्ञानावरणी-कर्म' के क्षयोपशम से उन्हें भी 'श्रुतज्ञान' होता है।
प्र. 5. *आचार्यश्री ने सूत्र में मन का विषय 'श्रुत' कहा है? इससे क्या तात्पर्य है?*
उत्तर— 'श्रुत-ज्ञानावरणी-कर्म' के क्षयोपशम से प्राप्त 'श्रुतज्ञान' के विषय में 'मन'

अवलम्बन-मात्र है।

प्र. 6. *सूत्र में मन का विषय 'श्रुत' क्यों बताया है?*

उत्तर— 'मन' मतिज्ञान के द्वारा विशेषरूप से जानता है, इसलिए सूत्र में मन का विषय 'श्रुत' कहा है।

प्र. 7. *क्या 'श्रुत' का अर्थ 'सुनना' है?*

उत्तर— 'श्रुत' का अर्थ मात्र 'सुनना' इस प्रकार रूढ़ि में प्रचलित है, वास्तव में मतिज्ञान से विशेष जाननेवाला 'श्रुतज्ञान' है। ✿✿

वनस्पत्यन्तानामेकम् ।।22।।

अर्थ — 'वनस्पतिकायिक' तक के जीवों के अर्थात् सभी स्थावर-जीवों के एक अर्थात् 'स्पर्शन-इन्द्रिय' होती है।

प्र. 1. *'वनस्पतिकायिक-जीवों' को कौन-सी इन्द्रिय होती है?*

उत्तर— 'वनस्पतिकायिक-जीवों' को मात्र 'स्पर्शन-इन्द्रिय' होती है।

प्र. 2. *'वनस्पत्यन्तानाम्' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'पृथिवीकायिक' से लेकर 'वनस्पतिकायिक' तक — ये इसका अर्थ है।

प्र. 3. *'पृथिवीकायिक' से लेकर 'वनस्पतिकायिक' तक कौन-कौन-से जीव हैं?*

उत्तर— पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक।

प्र. 4. *'वनस्पतिकायिक' को अन्त में क्यों ग्रहण किया है?*

उत्तर— पृथिवीकायिक से वनस्पतिकायिक को जानना कठिन है, पृथिवीकायिक से सरल है जलकायिक को जानना, जलकायिक से सरल अग्निकायिक को जानना, वायुकायिक से सरल वनस्पतिकायिक को जानना; इसलिए 'वनस्पतिकायिक' को अन्त में लिया है?

प्र. 5. *'वनस्पतिकायिक-जीव' को आधुनिक-विज्ञान में सबसे पहले किसने खोजा?*

उत्तर— 'वनस्पतिकायिक-जीव' को आधुनिक-विज्ञान में 'जगदीशचन्द्र बसु' ने खोजा था।

प्र. 6. *'स्पर्शन-इन्द्रिय' के स्वामी कौन-कौन हैं?*

उत्तर— पृथिवीकायिक, अग्निकायिक, जलकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक।

प्र. 7. *पृथिवीकायिक-आदि को इसी क्रम से क्यों बताया है?*

उत्तर— क्योंकि पृथ्वी का आधार 'जल' है एवं जल का परिपात 'अग्नि' से होता है एवं अग्नि के जलने में 'वायु' सहायक होती है, तथा 'वनस्पति' की उत्पत्ति पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु — चारों की सहायता से होती है। ✿✿

कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ।।23।।

अर्थ — कृमि, पिपीलिका, भ्रमर, और मनुष्य आदि के क्रम से एक-एक इन्द्रिय अधिक होती है।

प्र. 1. *'दो-इन्द्रिय' आदि के स्वामी कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'दो-इन्द्रिय' का स्वामी कृमि, लट, केंचुआ आदि, 'तीन-इन्द्रिय' का स्वामी पिपीलिका (चींटी) आदि, तथा 'चतुरिन्द्रिय' का स्वामी भौंरा मक्खी आदि, पंचेन्द्रिय का स्वामी मनुष्य आदि हैं।

प्र. 2. *'कृमि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चावल में जो कीड़ा होता है, उसे 'कृमि' कहते हैं।

प्र. 3. *'भ्रमर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भ्रमर 'भौंरे' को कहते हैं।

प्र. 4. *'विकलेन्द्रिय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दो-इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय को 'विकलेन्द्रिय' कहते हैं।

प्र. 5. *सूत्र में 'मनुष्य' शब्द है, तो 'पंचेन्द्रिय' का स्वामी मात्र 'मनुष्य' है या कोई और भी है?*

उत्तर— यहाँ मनुष्यमात्र 'पंचेन्द्रिय' को संकेत किया है। 'मनुष्य' कहने से संज्ञी, असंज्ञी — दोनों को ग्रहण करना चाहिए।

प्र. 6. *'पंचेन्द्रिय' कहने से किस-किस का ग्रहण होता है?*

उत्तर— 'पंचेन्द्रिय' कहने से मनुष्य के अलावा देव, नारकी, पंचेन्द्रिय तिर्यंच आते हैं।

प्र. 7. *'तिर्यंच' कहने से किस-किस का ग्रहण होता है?*

उत्तर— 'तिर्यंच' कहने से 'एक-इन्द्रिय' से लेकर 'पंचेन्द्रिय-तिर्यंच' — सभी आते हैं।

प्र. 8. *'विकलत्रय' के स्वामी कौन-कौन हैं?*

उत्तर— 'विकलत्रय' के स्वामी लट, चींटी, और भौंरा-आदि हैं। ✿✿

संज्ञिनः समनस्काः ।।24।।

अर्थ — मनवाले-जीव 'संज्ञी' होते हैं।

प्र. 1. *'संज्ञी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'मनसहित-जीव' को 'संज्ञी-जीव' कहते हैं।

प्र. 2. *'समनस्क' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'समनस्क' का अर्थ भी 'मनसहित' होता है, तथा 'संज्ञी' और 'समनस्क'

— दोनों ही पर्यायवाची हैं।

प्र. 3. *सूत्र में मात्र 'संज्ञी' कहा है, तो 'असंज्ञी' का ग्रहण कैसे करते हैं?*

उत्तर— 'संज्ञी' कहने से 'असंज्ञी' का भी ग्रहण होता है।

प्र. 4. *'संज्ञी' शब्द का क्या अर्थ है?*

उत्तर— मन से युक्त विचार-शक्ति को 'संज्ञा' कहते हैं; जिसमें 'संज्ञा' है, वह 'संज्ञी' है, जो शिक्षा, दीक्षा-ग्रहण कर सकता है।

प्र. 5. *'असंज्ञी' शब्द का क्या अर्थ है?*

उत्तर— मन से रहित जीवों को 'असंज्ञी' कहते हैं, जो शिक्षा, दीक्षा-ग्रहण नहीं कर सकते। ✿✿

विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥25॥

अर्थ — 'विग्रहगति' में कर्मयोग होता है।

प्र. 1. *'विग्रह-गति' में कौन-सा 'योग' रहता है?*

उत्तर— 'विग्रह-गति' में 'कर्मयोग' रहता है।

प्र. 2. *'विग्रह-गति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'विग्रह' अर्थात् शरीर के लिए जो गति होती है, वह 'विग्रह-गति' है।

प्र. 3. *'विग्रह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'विग्रह' 'शरीर' को कहते हैं।

प्र. 4. *'गति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'गमन' को 'गति' कहते हैं।

प्र. 5. *'कर्मयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'कर्म' के निमित्त से जो 'योग' होता है, वह 'कर्मयोग' होता है।

प्र. 6. *'योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'मन, वचन, काय' के निमित्त से होनेवाले आत्म-प्रदेशों के हलन-चलन को 'योग' कहते हैं।

प्र. 7. *'कार्माण-शरीर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'कर्मों' से निर्मित्त शरीर है, वह 'कार्माण-शरीर' है।

प्र. 8. *'विग्रह-गति' का विशेष-अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'जीव' के एक शरीर का छोड़कर दूसरे शरीर को प्राप्त करने के बीच में जो 'गति' होती है, वह 'विग्रह-गति' है।

प्र. 9. *किस योग के कारण 'कर्मबंध' होता है?*

उत्तर— वहाँ 'कार्मण-योग' की वजह से 'कर्मबंध' होता है।

प्र. 10. *'विग्रह-गति' में 'नोकर्मरूप-आहार' का ग्रहण होता है या नहीं?*

उत्तर— 'विग्रह-गति' में 'नोकर्म-शरीर' नहीं है, इसलिए आहार का ग्रहण नहीं करेगा; लेकिन 'कार्मण-योग' होने की वजह से कर्मों को ग्रहण करता है। ✿✿

अनुश्रेणि गतिः ॥26॥

अर्थ — गति 'श्रेणी' के अनुसार होती है।

प्र. 1. *'जीव' और 'पुद्गल' की गति कैसे होती है?*

उत्तर— 'जीव' और 'पुद्गल' की गति 'श्रेणी' के अनुसार होती है।

प्र. 2. *'श्रेणी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लोक के अन्दर आकाश की पंक्तियाँ हैं, उन्हें 'श्रेणी' कहते हैं, जैसे टी.वी. के ऊपर शुरू करते ही लाइनें आती हैं।

प्र. 3. *'अनुश्रेणि' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'अनुश्रेणि' अर्थात् 'सरल-रेखा' के अनुसार या 'श्रेणी' के अुनसार या 'पंक्ति' के अनुसार अर्थात् 'क्रम से'।

प्र. 4. *'अनुश्रेणि-गति' कौन-कौन-से द्रव्यों की होती है?*

उत्तर— 'जीव' और 'पुद्गलों' की 'अनुश्रेणि-गति' होती है।

प्र. 5. *'अनुश्रेणि-गति' किस समय होती है?*

उत्तर— मृत्यु के बाद दूसरे-जन्म में जाते वक्त एवं मोक्ष जाते वक्त ऊर्ध्वगमन करते वक्त जीव के 'अनुश्रेणि' गति होती है।

प्र. 6. *'श्रेणीरहित-गति' किसके होती है?*

उत्तर— शेष समस्त-जीवों के गति 'श्रेणीरहित' होती है।

प्र. 7. *'अनुश्रेणि-गति' कौन-से आकाश में होती है?*

उत्तर— 'अनुश्रेणि-गति' 'लोकाकाश' में होती है। ✿✿

अविग्रहा जीवस्य ॥27॥

अर्थ — 'मुक्त-जीव' की गति 'विग्रहरहित' होती है।

प्र. 1. *'मुक्त-जीव' की 'गति' कैसी होती है?*

उत्तर— 'मुक्त-जीव' की गति 'विग्रहरहित' होती है।

प्र. 2. *'अविग्रह-गति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'सीधी-गति' होती है, वह 'अविग्रह-गति' है।

प्र. 3. *क्या विग्रह-गति 'सीधी' नहीं होती?*

उत्तर— 'विग्रह-गति' 'सीधी' भी होती है, 'आड़ी-टेढ़ी' भी होती है।

प्र. 4. *'विग्रह-गति' मात्र 'जीव' के होती है, या 'पुद्‌गल' के भी होती है?*

उत्तर— 'विग्रह-गति' मात्र 'जीव' के होती है।

प्र. 5. *'विग्रह-गति' केवल 'जीव' के ही क्यों होती है?*

उत्तर— क्योंकि 'विग्रह' का अर्थ है 'शरीर'। संसारी-जीव ही मृत्यु के बाद दूसरे-शरीर के लिए गमन करता है, इसलिए केवल 'जीव' के ही विग्रह-गति होती है। ✿✿

विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥28॥

अर्थ — 'संसारी-जीव' की गति 'विग्रहरहित' और 'विग्रहवाली' होती है। उसमें 'विग्रहवाली' गति चार-समय से पहले अर्थात् तीन-समय तक होती है।

प्र. 1. *'संसारी-जीवों' की 'गति' कैसी होती है?*

उत्तर– 'संसारी जीवों' की गति 'विग्रह रहित एवं विग्रह-गति' अर्थात् 'वक्रगति' होती है।

प्र. 2. *'विग्रह-गति' कितने समय से पहले-पहले तक होती है?*

उत्तर— 'विग्रह-गति' अर्थात् 'वक्रगति' चार-समय से पहले होती है।

प्र. 3. *सूत्र में 'प्राक्-चतुर्भ्यः' का क्या अर्थ है।*

उत्तर— 'चार-समय' से पहले-पहले तक।

प्र. 4. *'प्राक्' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'प्राक्' का अर्थ है 'पहले-पहले'।

प्र. 5. *सूत्र में 'च' शब्द क्यों ग्रहण किया है।*

उत्तर— आगे के सूत्र में 'अविग्रह-गति' को बताने के लिए 'च' शब्द का ग्रहण किया है। ✿✿

एकसमया अविग्रहा ॥29॥

अर्थ — 'एक-समयवाली' गति 'विग्रहरहित' होती है।

प्र. 1. *'अविग्रह-गति' कितने समय की होती है?*

उत्तर— 'अविग्रह-गति' एक समयवाली होती है।

प्र. 2. *'अविग्रह' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'अविग्रह' अर्थात् 'सरल-रेखा'।

प्र. 3. *'एक-समय' की 'गति' का क्या नाम है?*

उत्तर– 'एक-समय' की गति का नाम 'इषु' है।

प्र. 4. 'इषु-गति' किसे कहते है?

उत्तर– 'इषु' अर्थात् 'जीव' 'बाण' की तरह सीधा जाता है, उसे 'इषु-गति' कहते हैं।

प्र. 5. 'विग्रह-गति' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर– 'विग्रह-गति' के तीन भेद हैं- पाणिमुक्ता-गति, लाङ्गुलिका-गति तथा गोमूत्रिका-गति।

प्र. 6. 'पाणिमुक्ता-गति' किसे कहते है?

उत्तर– हाथ में पानी लेकर ऊपर फेंकने से जो एक 'मोडा' लेता है, उसे 'पाणिमुक्ता-गति' कहते है।

प्र. 7. 'पाणिमुक्ता-गति' में कितने समय लगते हैं?

उत्तर– 'पाणिमुक्ता-गति' में 'दो-समय' लगते हैं।

प्र. 8. 'लाङ्गुलिका-गति' किसे कहते हैं?

उत्तर– जैसे हल दो-जगह से मुड़ी हुई होती है, उसी प्रकार जो दो-बार मोड़े ले, उसे 'लाङ्गुलिका-गति' कहते हैं।

प्र. 9. 'लाङ्गुलिका-गति' में कितने समय लगते हैं?

उत्तर– 'लाङ्गुलिका-गति' में तीन-समय लगते हैं।

प्र. 10. 'गोमूत्रिका-गति' किसे कहते हैं?

उत्तर– गाय जब मूत्र करती है, उसमें तीन मोड़े होते हैं, इसी तरह जीव भी यदि तीन-मोड़े ले, तो उसे 'गोमूत्रिका-गति' कहते हैं।

प्र. 11. 'गोमूत्रिका-गति' में कितना समय लगते हैं?

उत्तर– 'गोमूत्रिका-गति' में चार-समय लगते हैं।

प्र. 12. जीव 'मरण' के बाद दूसरे-शरीर को कितने समय में धारण करता है?

उत्तर– कम से कम एक-समय में, और ज्यादा से ज्यादा चार-समय से पहले-पहले तक जीव 'नए-शरीर' को धारण कर लेता है। ✿✿

एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः ॥30॥

अर्थ – 'विग्रहगति' में एक, दो या तीन समय तक जीव 'अनाहारक' रहता है

प्र. 1. 'विग्रह-गति' में जीव कितने समय तक 'अनाहारक' रहता है?

उत्तर– 'विग्रह-गति' में जीव एक, दो या तीन-समय तक 'अनाहारक' रहता है।

प्र. 2. 'आहारक' और 'अनाहारक' किसे कहते हैं?

उत्तर– औदारिक, वैक्रियक और आहारक-शरीर के छह-पर्याप्तियों के योग्य

पुद्गल-परमाणुओं को ग्रहण करने को 'आहारक' कहते हैं। इसके विपरीत ग्रहण नहीं करने को 'अनाहारक' कहते हैं।

प्र. 3. *'छह-पर्याप्तियाँ' कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर- आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन:पर्याप्ति-ऐसे 'छह-पर्याप्तियाँ' हैं।

प्र. 4. *जीव पाणिमुक्ता-गति में कितने समय तक 'अनाहारक' रहता है?*

उत्तर- जीव पाणिमुक्ता-गति में एक-समय तक 'अनाहारक' रहता है।

प्र. 5. *'लाङ्गलिका-गति' में जीव कितने समय तक 'अनाहारक' रहता है?*

उत्तर- 'लाङ्गलिका-गति' में जीव 'दो-समय' तक 'अनाहारक' रहता है।

प्र. 6. *'गोमूत्रिका-गति' में जीव कितने समय तक 'अनाहारक' रहता है?*

उत्तर- 'गोमूत्रिका-गति' में जीव तीन-समय तक 'अनाहारक' रहता है।

प्र. 7. *जीव विग्रह-गति में 'अनाहारक' कब होता है?*

उत्तर- जीव क्रम से एक, दो, तीन-मोड़ावाली विग्रह-गति में दो, तीन-समय तक 'अनाहारक' रहता है चौथे-समय में नियम से 'आहारक' होता है। ✿✿

सम्मूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म ॥31॥

अर्थ - सम्मूर्च्छन, गर्भ और उपपाद- ये तीन-जन्म हैं।

प्र. 1. *'जन्म' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर- जन्म के तीन-भेद हैं- सम्मूर्च्छन, गर्भ और उपपाद।

प्र. 2. *'जन्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर- नवीन-शरीर धारण करने को 'जन्म' कहते हैं।

प्र. 3. *'सम्मूर्च्छन-जन्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर- अपने शरीर के योग्य पुद्गल-परमाणु को वातावरण से स्वयं ही ग्रहण करके माता-पिता के बिना ही होते हैं, अर्थात् जन्म लेते हैं, वह 'सम्मूर्च्छन-जन्म' है।

प्र. 4. *'गर्भजन्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर- जो माता के रज एवं पिता के वीर्य के संयोग से माता के गर्भ से जन्म लेता है, वह 'गर्भजन्म' है। जैसे-मनुष्यों-आदि का जन्म।

प्र. 5. *'उपपाद-जन्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर- माता-पिता के बिना जो उपपाद-शैय्या से जन्म होता है, उसे 'उपपाद-जन्म' कहते हैं। जैसे- देव और नारकियों का होता है। ✿✿

सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥32॥

अर्थ — सचित्त, शीत और संवृत तथा इनके 'प्रतिपक्षभूत' अचित्त, उष्ण और विवृत तथा 'मिश्र' अर्थात् सचित्ताचित्त, शीतोष्ण और संवृतविवृत — ये 'जन्म' की योनियाँ हैं।

प्र. 1. *जन्म की आधारभूत-योनियाँ कितनी हैं, और कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— जन्म की आधारभूत-योनियाँ हैं, जैसे — सचित्त, शीत, संवृत, अचित्त, उष्ण, विवृत, सचित्ताचित्त, शीतोष्ण और संवृतविवृत।

प्र. 2. *'योनि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जीव के 'उत्पत्ति-स्थान' को 'योनि' कहते हैं।

प्र. 3. *'योनि' और 'जन्म' में क्या अन्तर है?*

उत्तर— 'योनि' और 'जन्म' में 'आधार' और 'आधेय' का अन्तर है।

प्र. 4. *'आधार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें जिसपर कार्य होता है, वह 'आधार' है।

प्र. 5. *'आधेय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'जन्मरूप-कार्य' को 'आधेय' कहते हैं।

प्र. 6. *'सचित्त' और 'अचित्त-योनि' किसे कहते हैं।*

उत्तर— 'चित्त' अर्थात् 'जीवसहित-योनि' को 'सचित्त-योनि' कहते हैं, और 'जीवरहित-योनि' को 'अचित्त-योनि' कहते हैं।

प्र. 7. *'संवृत' एवं 'विवृत-योनि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो किसी के देखने में ना आए, वह 'संवृत-योनि' है, जो किसी के देखने में आए, वह 'विवृत-योनि' है।

प्र. 8. *'शीत' और 'उष्ण-योनि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो जन्मस्थान 'शीत' है, उसे 'शीत-योनि' कहते हैं, जो जन्मस्थान उष्ण है, उसे 'उष्ण-योनि' कहते हैं।

प्र. 9. *'मिश्र-योनि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शीत और उष्ण, संवृत और विवृत, सचित्त और अचित्त की विपरीत-अवस्था मिलने पर 'मिश्र-योनि' होती है।

प्र. 10. *सचित्त, अचित्त, सचित्ताचित्त — ये योनियाँ कौन-से जीव के होती है?*

उत्तर— 'सचित्त-योनि' साधारण-शरीर के होती है, 'अचित्त-योनि' देव और नारकियों के होती है, तथा 'सचित्ताचित्त-गर्भजजीव' के होती है।

प्र. 11. *शीत, उष्ण और शीतोष्ण — ये योनियाँ कौन-से जीव के होती है?*

उत्तर– तेजस्कायिक और देव-नारकीयों को छोड़कर बाकी सबके शीत-योनि होती है, शीतोष्ण-योनि 'देव और नारकियों' के होती है।

प्र. 12. संवृत, विवृत और संवृत-विवृत-योनियाँ कौन-कौन से जीवों के होती है?

उत्तर– संवृत-योनि 'देव-नारकी' और 'एकेन्द्रिय-जीवों' के होती है। विवृत-योनि 'विकलेन्द्रिय-जीवों' के होती है। संवृत-विवृत-योनि 'गर्भज-जीवों' के होती है।

प्र. 13. 'योनि' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन से हैं?

उत्तर– योनि के दो भेद हैं (1) गुणयोनि (2) आकारयोनि

प्र. 14. गुण योनि के कितने भेद हैं और कौन-कौन से हैं?

उत्तर– 'गुण-योनि' के नौ भेद हैं, जो सूत्र में कहे हैं, और उत्तर-भेद '84 लाख' हैं।

प्र. 15. '84 लाख योनियाँ' कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर–		
	नित्य निगोद	7 लाख
	इतर निगोद	7 लाख
	पृथिवीकायिक	7 लाख
	अप:कायिक	7 लाख
	तेज:कायिक	7 लाख
	वायुकायिक	7 लाख
	वनस्पतिकायिक	10 लाख
	विकलेन्द्रिय	2-2-2 लाख = 6 लाख
	देव-नारकी	4-4 लाख = 8 लाख
	तिर्यंचों की	4 लाख
	मनुष्यों की	14 लाख
		84 लाख योनियाँ

प्र. 16. 'आकार-योनि' के कितने व कौन-कौन-से भेद हैं?

उत्तर– 'आकार-योनि' के 'शंखावर्त योनि, कूर्मोन्नत-योनि और वंशपत्र-योनि' – ये तीन-भेद हैं।

प्र. 17. 'शंखावर्त' आदि तीनों-योनियों में कौन-कौन से जीव उत्पन्न होते हैं?

उत्तर– 'शंखावर्त-योनि' में गर्भ रुकता नहीं है, 'कूर्मोन्नत-योनि' में त्रेसठ 'शलाका' के पुरुष उत्पन्न होते हैं, तथा 'वंशपत्र-योनि' में सामान्य-जीव उत्पन्न होते हैं। ✿✿

जरायुजाण्डज-पोतानां गर्भ: ।।33।।

अर्थ – 'जरायुज', 'अण्डज' और 'पोतज'–जीवों का 'गर्भ जन्म' होता है।

प्र. 1. 'गर्भ-जन्म' कौन-कौन से जीवों का होता है?

उत्तर— 'गर्भ-जन्म' 'जरायुज', 'अण्डज' और 'पोतज'-जीवों का होता है।

प्र. 2. *'जरायुज' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके जन्म के समय जो झिल्ली के समान शरीर पर आवरण रहता है, उसे 'जरायु' कहते हैं। इस जन्मवाले जीव को 'जरायुज' कहते हैं।

प्र. 3. *'अण्डज' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो अण्डों से पैदा होता है, उसे 'अण्डज' कहते हैं।

प्र. 4. *'पोतज' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके अवयव बिना आवरण के खुले हैं, जन्म के साथ ही चलने-फिरने लगते हैं, उन्हें 'पोतज' कहते हैं।

प्र. 5. *'जरायुज', 'अण्डज' और 'पोतज' के उदाहरण क्या हैं?*

उत्तर— 'जरायुज' में मनुष्य आदि 'अण्डज' में पक्षी आदि, 'पोतज' में शेर आदि। ✿✿

देव-नारकाणामुपपादः ।।34।।

अर्थ — 'देव' और 'नारकियों' का 'उपपाद' जन्म होता है।

प्र. 1. *'देव' और 'नारकियों' का कौन-सा जन्म होता है?*

उत्तर— 'देव' और 'नारकियों' का 'उपपाद-जन्म' होता है।

प्र. 2. *'उपपाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उपपाद 'जन्म-शैय्या' होती है, जिसपर जिसतरह सोकर उठते हैं, इसतरह जन्म होता है।

प्र. 3. *'देवों' के 'उपपाद' कैसे होता है?*

उत्तर— 'देवों' के 'उपपाद' सुन्दर और शुभंकर होता है।

प्र. 4. *'नारकियों' का 'उपपाद' कैसे होता है?*

उत्तर— 'नारकियों' का 'उपपाद' 'अशुभ' और 'दु:खकर' होता है।

प्र. 5. *'देव' और 'नारकियों' के 'उपपाद-शैय्या' का आकार कैसा होता है?*

उत्तर— 'देवों' के 'संपुष्ट-शैय्या' और 'नारकियों' के ऊँट के मुख के आकार की 'उपपाद-शैय्या' होती है।

प्र. 6. *'देवों' को 'उपपाद-शैय्या' पर किसका अनुभव होता है?*

उत्तर— 'देवों' को 'उपपाद-शैय्या' पर सुख का अनुभव होता है।

प्र. 7. *'नारकियों' को 'उपपाद-शैय्या' से कैसा अनुभव होता है?*

उत्तर— 'नारकियों' को 'उपपाद-शैय्या' से गिरते ही एक-हजार बिच्छुओं के काटने जैसी वेदना होती है। ✿✿

शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥ 35॥

अर्थ – शेष सब जीवों का 'सम्मूर्च्छन-जन्म' होता है।

प्र. 1. *शेष सब जीवों का कौन-सा 'जन्म' होता है?*
उत्तर– शेष सब जीवों का 'सम्मूर्च्छन-जन्म' होता है।
प्र. 2. *'शेष-जीव' कौन-कौन-से हैं?*
उत्तर– 'एकेन्द्रिय' से लेकर 'संज्ञी-पंचेन्द्रिय-जीवों' का 'सम्मूर्च्छन-जन्म' होता है।
प्र. 3. *क्या मनुष्य का भी 'सम्मूर्च्छन-जन्म' हो सकता है?*
उत्तर– 'लब्धि-अपर्याप्तक-मनुष्य' का 'सम्मूर्च्छन-जन्म' होता है।
प्र. 4. *'स्वयंभू-रमणसमुद्र' में स्थित 'महामत्स्य' का जन्म कैसे होता है?*
उत्तर– 'स्वयंभू-रमणसमुद्र' में स्थित 'महामत्स्य' का जन्म 'सम्मूर्च्छन-जन्म' होता है।
प्र. 5. *'तंदुल-मत्स्य' और 'सालिसिक्थ-मत्स्य' का जन्म कैसे होता है?*
उत्तर– 'तंदुल-मत्स्य' और 'सालिसिक्थ-मत्स्य' का 'सम्मूर्च्छन-जन्म' होता है। ✿✿

औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥ 36॥

अर्थ – औदारिक वैक्रियिक, आहारक, तैजस और कार्मण- ये पाँच-शरीर हैं।

प्र. 1. *'शरीर' कितने होते हैं और कौन-कौन-से होते हैं?*
उत्तर– 'शरीर' 'पाँच' होते हैं- औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस और कार्मण।
प्र. 2. *'शरीर' किसे कहते हैं?*
उत्तर– 'नामकर्म' के उदय से प्राप्त होकर जो बनता-बिगड़ता है, उसे 'शरीर' कहते हैं।
प्र. 3. *'औदारिक-शरीर' किसे कहते है?*
उत्तर– जो उदार अर्थात् स्थूलरूप होता है, वह 'औदारिक-शरीर' है, जैसे-मनुष्यों व तिर्यंचों के स्थूल-शरीर।
प्र. 4. 'वैक्रियिक-शरीर' किसे कहते है?
उत्तर– 'विक्रिया' जिस शरीर का प्रयोजन है, उसे 'वैक्रियक-शरीर' कहते हैं।
प्र. 5. *'आहारक-शरीर' किसे कहते हैं?*
उत्तर– 'सूक्ष्म-पदार्थ' के निर्णय के लिए या 'संयम' की रक्षा के लिए छठवें गुणस्थानवर्ती-मुनि के 'मस्तक' से एक-हाथ का जो सफेद-रंग का पुतला निकलता है, उसे 'आहारक-शरीर' कहते हैं।
प्र. 6. *'तैजस-शरीर' किसे कहते हैं?*
उत्तर– जो 'दीप्ति' एवं 'कान्ति' का कारण है, उसे 'तैजस्-शरीर' कहते हैं, या 'विद्युत्-शरीर' को 'तैजस्-शरीर' कहते हैं। 'तैजस्-शरीर' सभी संसारी-जीवों

के होते हैं।

प्र. 7. *'कार्मण-शरीर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'कर्मों' से बना है, वह 'कार्मण-शरीर' है। ये शरीर भी सभी संसारी-जीवों के होता है। ✿✿

परं परं सूक्ष्मम् ॥37॥

अर्थ — आगे-आगे का शरीर 'सूक्ष्म' है।

प्र. 1. *क्या इन्द्रियों के द्वारा ये 'शरीर' दिखाई देते हैं?*

उत्तर— नहीं, एक-शरीर को छोड़कर आगे-आगे का शरीर 'सूक्ष्म' है, इसलिए दिखाई नहीं देते हैं।

प्र. 2. *कौन-सा 'एक-शरीर' है, जो इन्द्रियों द्वारा जाना जा सकता है?*

उत्तर— 'औदारिक-शरीर' को इन्द्रियों द्वारा जाना जा सकता है।

प्र. 3. *आगे-आगे का शरीर किससे 'सूक्ष्म' है?*

उत्तर— औदारिक से वैक्रियिक, वैक्रियिक से आहारक, आहारक से तैजस्, तैजस् से कार्मण-शरीर सूक्ष्म है। ✿✿

प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक् तैजसात् ॥38॥

अर्थ — 'तैजस्' से पूर्ववर्ती तीन-शरीरों में आगे-आगे का शरीर प्रदेशों की अपेक्षा अंसख्यातगुणित प्रदेशोंवाले हैं।

प्र. 1. *क्या 'प्रदेश' की अपेक्षा में आगे-आगे के शरीर 'सूक्ष्म' हैं?*

उत्तर— नहीं, आगे-आगे के शरीर सूक्ष्म नहीं हैं। तैजस से पहले-पहले सभी शरीर असंख्यातगुणे ज्यादा प्रदेशोंवाले हैं।

प्र. 2. *यहाँ 'प्रदेश' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— यहाँ 'प्रदेश' का अर्थ 'परमाणु' है।

प्र. 3. *किस शरीर से कौन-से शरीर में अधिक प्रदेश हैं?*

उत्तर— 'औदारिक-शरीर' से असंख्यातगुणा अधिक-प्रदेश 'वैक्रियिक-शरीर' में हैं, 'वैक्रियिक-शरीर' से अंसख्यातगुणा-प्रदेश 'आहारक-शरीर' में हैं। ✿✿

अनन्तगुणे परे ॥39॥

अर्थ — 'परवर्ती' अर्थात् अन्त के (तैजस् और कार्मण) दो-शरीर-प्रदेशों की अपेक्षा उत्तरोत्तर अनन्तगुणित प्रदेशोंवाले हैं।

प्र. 1. 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' के प्रदेश कितने हैं?
उत्तर- 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' अनन्तगुणे प्रदेशवाले हैं।
प्र. 2. 'आहारक-शरीर' से 'तैजस्-शरीर' के प्रदेश कितने अधिक हैं?
उत्तर- 'आहारक-शरीर' से 'तैजस्-शरीर' के प्रदेश अनन्तगुणा अधिक है।
प्र. 3. 'तैजस्-शरीर' से 'कार्मण-शरीर' के प्रदेश कितने अधिक हैं?
उत्तर- 'तैजस्-शरीर' से 'कार्मण-शरीर' के प्रदेश अनन्तगुणा अधिक हैं। ✿✿

अप्रतीघाते ॥ 40 ॥

अर्थ - वे दोनों (तैजस् और कार्मण-शरीर) 'प्रतीघात'-रहित भी हैं।
प्र. 1. 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' में क्या विशेषता है?
उत्तर- 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' प्रतीघात-रहित हैं।
प्र. 2. 'प्रतीघात' किसे कहते हैं?
उत्तर- एक मूर्तिक-पदार्थ दूसरे मूर्तिक-पदार्थ के द्वारा जो व्याघात होता है, उसे 'प्रतीघात' कहते हैं।
प्र. 3. 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' व्याघात-रहित कैसे हैं?
उत्तर- जैसे अग्नि 'सूक्ष्म' होने से लोहे में प्रवेश कर जाती है, उसीप्रकार 'तैजस्' और कार्मण-शरीर' भी वज्रपटल को पार कर लेता है।
प्र. 4. 'वैक्रियिक' और 'आहारक-शरीर' सूक्ष्म हैं, फिर उसमें प्रतिघात क्यों है?
उत्तर- वैक्रियिक' और आहारक-शरीर' सर्वत्र-प्रतीघातरहित नहीं हैं। 'तैजस -शरीर' और कार्मण-शरीर' लोकपर्यन्त-प्रतिघातरहित हैं।
प्र. 5. लोकपर्यन्त 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर कैसे अप्रतिघात हैं?
उत्तर- 'केवली' समुद्घात की अपेक्षा से लोकपर्यन्त तक अप्रतिघात माने गए हैं। ✿✿

अनादिसम्बन्धे च ॥ 41 ॥

अर्थ - वे दोनों-शरीर 'आत्मा' के साथ 'अनादि-सम्बन्धवाले' हैं।
प्र. 1. कौन-से शरीर 'आत्मा' के साथ 'अनादि-सम्बन्धवाले' हैं?
उत्तर- 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' आत्मा के साथ 'अनादि-सम्बन्धवाले हैं।
प्र. 2. क्या 'तैजस्-कार्मण-शरीर' सादि-सम्बन्ध है?
उत्तर- 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' अनादि सम्बन्धवाले हैं, परन्तु कर्मबन्ध और निर्जरा की अपेक्षा सादि-सम्बन्ध भी हैं।

प्र. 3. 'अनादि' एवं 'सादि' का क्या अर्थ है?

उत्तर— जिसका आदि नहीं हो, उसे 'अनादि' कहते हैं, जिसके आदि है, उसे 'सादि' कहते हैं। ✿✿

सर्वस्य ॥42॥

अर्थ — ये दोनों शरीर (तैजस् और कार्मण) सब संसारी-जीवों के होते हैं।

प्र. 1. 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' कौन-कौन-से जीवों के होते हैं?

उत्तर— 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' सभी 'संसारी-जीवों' के होते हैं।

प्र. 2. 'सर्वस्य' कहने से सभी जीवों के दोनों-शरीर मानने चाहिये, तो क्या 'सिद्ध-भगवान्' के भी दोनों-शरीर मानने चाहिये?

उत्तर— 'सिद्ध-भगवान्' का शरीर होता ही नहीं है, इसमें सिद्ध-भगवान् नहीं आते।

प्र. 3. क्या 'अरिहंत-भगवान्' के दोनों-शरीर हैं? कैसे?

उत्तर— 'अरिहंत-भगवान्' के दोनों-शरीर विद्यमान हैं, क्योंकि इन दोनों का जीव के साथ अनादिकाल तक सम्बन्ध है। ✿✿

तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥43॥

अर्थ — एक-जीव के एकसाथ 'तैजस्' और 'कार्मण' से लेकर चार-शरीर तक विकल्प होते हैं।

प्र. 1. एक-जीव के एकसाथ कितने-कितने शरीर हो सकते हैं?

उत्तर— एक-जीव के एकसाथ चार-शरीर तक हो सकते हैं।

प्र. 2. दो-शरीर किसके होते हैं?

उत्तर— 'कार्मण' और 'तैजस्' — ये दो-शरीर 'विग्रह-गति' में स्थित-जीव के होते हैं।

प्र. 3. 'तीन-शरीर' किसके होते हैं?

उत्तर— 'मनुष्यों' और 'तिर्यंचों' के 'औदारिक', 'तैजस्' और 'कार्मण' – ये तीन शरीर होते हैं। एवं देवों और नारकियों के वैक्रियिक, तैजस् और 'कार्मण'ये तीन शरीर होते हैं।

प्र. 4. 'चार-शरीर' किस जीव के होते हैं?

उत्तर— आहारक-ऋद्धियुक्त छटे-गुणस्थानवर्ती-मुनि को 'औदारिक', 'आहारक', 'तैजस्' और 'कार्मण-शरीर' होते हैं।

प्र. 5. क्या कभी एक-जीव के साथ 'पाँच-शरीर' होते हैं?

उत्तर— नहीं, एकसाथ एक-जीव के 'पाँच-शरीर' कभी नहीं हो सकते हैं।

प्र. 6. क्या 'चक्रवर्ती-नारायण' और 'बलभद्र'-आदि का 'वैक्रियिक-शरीर' होता

है? वे विक्रिया कैसे करते हैं।

उत्तर– 'चक्रवर्ती–नारायण' और 'बलभद्र'–आदि के 'वैक्रियिक–शरीर' नहीं होता है। 'औदारिक–शरीर' के दो भेद–'विक्रियात्म' और 'अविक्रियात्मक' हैं। 'विक्रियात्मक–औदारिक–शरीर' से विक्रिया बनाते हैं। ✿✿

निरूपभोगमन्त्यम् ॥ 44 ॥

अर्थ – अन्तिम–शरीर उपभोग–रहित है।

प्र. 1. 'कार्मण–शरीर' उपभोगरहित है या नहीं?

उत्तर– 'कार्मण–शरीर' उपभोगरहित है।

प्र. 2. 'उपभोग' किसे कहते हैं?

उत्तर– इन्द्रियों के द्वारा शब्दादि को ग्रहण करने को 'उपभोग' कहते हैं।

प्र. 3. 'कार्मण–शरीर' को 'निरूपभोग' क्यों कहा है?

उत्तर– क्योंकि 'विग्रह–गति' में 'भावेन्द्रिया' होती हैं, 'द्रव्येन्द्रिय' नहीं। इसलिए 'कार्मण–शरीर' को 'निरूपभोग' कहा है। ✿✿

गर्भ-सम्मूर्च्छनजमाद्यम् ॥ 45 ॥

अर्थ – 'पहला–शरीर' (औदारिक–शरीर) 'गर्भ' और 'सम्मूर्च्छन' जन्म से पैदा होता है।

प्र. 1. 'औदारिक–शरीर' कैसे उत्पन्न होता है?

उत्तर– 'औदारिक–शरीर' 'गर्भ' और 'सम्मूर्च्छन'–जन्म से पैदा होता है।

प्र. 2. 'गर्भज' किसे कहते हैं?

उत्तर– जो 'गर्भ' से जन्म लेता है उसे 'गर्भज' कहते हैं।

प्र. 3. सूत्र में आए 'सम्मूर्च्छनज'–शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर– जो चारों–तरफ से वातावरण से शरीर–योग्य–परमाणु को ग्रहण करके जन्म लेता है वह 'सम्मूर्च्छन–जन्म' है। ✿✿

औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥ 46 ॥

अर्थ – 'वैक्रियिक–शरीर' 'उपपाद–जन्म' से पैदा होता है।

प्र. 1. 'वैक्रियिक–शरीर' कैसे पैदा होता है?

उत्तर– 'वैक्रियिक–शरीर' 'उपपाद–जन्म' से पैदा होता है।

प्र. 2. 'औपपादिक' का क्या अर्थ है?

उत्तर— 'उपपाद' से जो होता है, उसे 'औपपादिक' कहते हैं।

प्र. 3. *'वैक्रियिक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो विक्रिया से उत्पन्न होता है, वह 'वैक्रियिक' कहलाता है। ✿✿

लब्धि-प्रत्ययं च ॥47॥

अर्थ — तथा वैक्रियिक-शरीर 'लब्धि' से भी पैदा होता है।

प्र. 1. *'वैक्रियिक-शरीर' और कैसे पैदा होता है?*

उत्तर— 'वैक्रियिक-शरीर' 'लब्धि' से भी पैदा होता है।

प्र. 2. *'लब्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तप, व्रत, संयम-आदि द्वारा जो ऋद्धि प्राप्त होती है, उसे 'लब्धि' कहते हैं।

प्र. 3. *सूत्र में 'च' शब्द आया है, इसका क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'च' शब्द का अर्थ है कि वैक्रियिक-शरीर 'भवप्रत्यय' अर्थात् भवनिमित्तरूपी होता है, जैसे — देवों और नारकियों का वैक्रियिक-शरीर भवप्रत्यय होता है। ✿✿

तैजसमपि ॥48॥

अर्थ — तैजस्-शरीर भी लब्धि से उत्पन्न होता है।

प्र. 1. *सूत्र में प्रयुक्त 'अपि' शब्द का क्या अर्थ है?*

उत्तर— सूत्र में प्रयुक्त 'अपि' शब्द से यहाँ 'लब्धि-प्रत्ययं' पद का ग्रहण होता है, जिसका अभिप्राय है कि वैक्रियिक-शरीर के समान तैजस्-शरीर भी लब्धि के निमित्त से प्राप्त होता है।

प्र. 2. *लब्धि से प्राप्त होनेवाले तैजस्-शरीर के कितने भेद हैं?*

उत्तर— लब्धि से प्राप्त होनेवाले तैजस्-शरीर के निःसरणात्मक और अनिःसरणात्मक — ऐसे दो भेद हैं। उनमें से जो निःसरणात्मक-तैजस्-शरीर है, वह 'शुभ-तैजस्' और 'अशुभ-तैजस्' के भेद से दो प्रकार का है।

प्र. 3. *अनिःसरणात्मक-तैजस्-शरीर कौन-सा है?*

उत्तर— औदारिक, वैक्रियिक, अहारक-शरीरों में 'तेज' अर्थात् 'चमक लानेवाला' शरीर 'अनिःसरणात्मक-तैजस्-शरीर' है। यह शरीर खाये गये भोजन-पान-आदि को पचानेवाला होकर प्राप्त-शरीर के भीतर रहकर उसे चमक प्रदान करता है।

प्र. 4. *निःसरणात्मक-तैजस्-शरीर कौन-सा है?*

उत्तर— जो लब्धि से प्राप्त होता है, वह 'निःसरणात्मक-तैजस्-शरीर' है।

प्र. 5. *'अशुभ-तैजस्' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उग्र-चारित्रवाले अतिक्रोधी-यति के तैजस्-लब्धि होने पर जिसपर वह क्रोध करता है, तो उसके बायें-कंधे से बारह-योजन लम्बा, नौ-योजन चौड़ा तथा सूच्यंगुल के संख्यातवें-भागप्रमाण मोटा जपा-कुसुम के समान लाल-रंगवाला तेज-चमकदार शरीर निकलता है, और मुनि के क्रोध के पात्र-पदार्थ को भस्म करके उस मुनि के शरीर में प्रवेश कर जाता है, और उसे भी भस्म कर देता है। इस तैजस्-शरीर को 'अशुभ-तैजस्-समुद्घात' भी कहते हैं।

प्र. 6. *'शुभ-तैजस्' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उग्र-चारित्र वाले दया और अनुकम्पा से भरे हुये मनवाले संयमी-मुनि के लोक-कल्याण की भावना से दाहिने-कंधे से हंस और शंख के समान श्वेतवर्णवाला शीतल-शरीर निकलकर आसपास के 12 योजन के क्षेत्र में व्याप्त महामारी, दुर्भिक्ष और उपसर्ग-आदि को दूर करता हुआ पुनः उसी मुनि के शरीर में समा जाता है, इसे 'शुभ-तैजस्-समुद्घात' भी कहते हैं। इसका आकार अशुभ-तैजस् के समान ही होता है।

प्र. 7. *'तैजस्-समुद्घात' किसके होता है?*

उत्तर— महाव्रतों एवं पूर्णसंयम के धनी महामुनि के ही 'तैजस्-समुद्घात' होता है; किन्तु मात्र उपशम-सम्यक्त्ववाले मुनि के तैजस्-समुद्घात नहीं होता।

प्र. 8. *तैजस्-समुद्घात किन-किन दिशाओं में फैलता है?*

उत्तर— तैजस्-समुद्घात दसों-दिशाओं में फैलता है।

प्र. 9. *तैजस्-समुद्घात की स्थिति कितने समय की होती है?*

उत्तर— तैजस्-समुद्घात की स्थिति संख्यात-समय की होती है। ✿✿

शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥49॥

अर्थ — आहारक-शरीर शुभ, विशुद्ध और व्याघात-रहित होता है, तथा वह प्रमत्त-संयत-मुनि के ही होता है।

प्र. 1. *आहारक-शरीर को 'शुभ' क्यों कहा गया है?*

उत्तर— चूँकि यह शरीर आहारक काययोगरूपी शुभकर्म का कारण है, अतः इसे 'शुभ' कहा गया है।

प्र. 2. *आहारक-शरीर को 'विशुद्ध' क्यों कहा गया है?*

उत्तर— चूँकि यह शरीर विशुद्ध-कर्म का कार्य है, अतः इसे 'विशुद्ध' कहा गया है।

प्र. 3. *आहारक-शरीर को 'व्याघात-रहित' क्यों कहा गया है?*

उत्तर- चूँकि यह आहारक-शरीर वज्र-पटल आदि से भी व्याघातित नहीं होता, इसलिए इसे 'व्याघात-रहित' कहा गया है।

प्र. 4. *इस सूत्र में 'प्रमत्त-संयत के ही' कहने का क्या अभिप्राय है?*

उत्तर- इसका अर्थ है कि आहारक-शरीर न तो अव्रती के होता है, और न ही देशव्रती के होता है, तथा श्रेणी-आरोहण करनेवाले जीव के भी आहारक-शरीर नहीं होता।

प्र. 5. *सूत्र में कथित 'च' शब्द का क्या अभिप्राय है?*

उत्तर- सूत्र में कथित 'च' शब्द का अभिप्राय है कि आहारक-शरीर कभी लब्धिविशेष का सद्भाव बताने के लिये, कभी सूक्ष्म-पदार्थ का निर्णय करने के लिये, और कभी संयम की रक्षा के लिये उत्पन्न होता है।

प्र. 6. *आहारक-शरीर का आकार-प्रकार कैसा होता है?*

उत्तर- आहारक-शरीर एक हाथ प्रमाण, सर्वाङ्ग-सुन्दर, समचतुरस्र-संस्थान से युक्त, हंस के समान धवलवर्णवाला, सप्त-धातुओं के रहित, विष-अग्नि और शस्त्र-आदि बाधाओं से मुक्त तथा वज्र-शिला-स्तम्भ-जल-पर्वत-आदि में गमन करने में समर्थ होता है यह प्रमत्त-संयत-मुनि के मस्तक से उत्पन्न होता है, तथा केवली के पादमूल में जाकर वापस लौट आता है।

नारक-सम्मूर्च्छनो नपुंसकानि ॥ 50 ॥

अर्थ - 'नारकी-जीव' और 'सम्मूर्च्छन-जीव' 'नपुंसक' होते हैं।

प्र. 1. *'नारकी' और 'सम्मूर्च्छन-जीवों' के कौन-सा लिंग होता है?*

उत्तर- 'नारकी' और 'सम्मूर्च्छन-जीव' 'नपुंसकलिंग' वाले होते हैं।

प्र. 2. *कितनी इन्द्रियों तक 'सम्मूर्च्छन-तिर्यंच' नपुंसक होते हैं?*

उत्तर- दो-इन्द्रिय से लेकर पंच-इन्द्रिय तक 'सम्मूर्च्छन-तिर्यंच' नपुंसक होते हैं।

प्र. 3. *'सम्मूर्च्छन-जीव' कौन-सी गति के 'जीव' कहलाते हैं?*

उत्तर- 'सम्मूर्च्छन-जीव' 'तिर्यंच-गति' के 'जीव' कहलाते है।

न देवा: ॥ 51 ॥

अर्थ- 'देव' नपुंसक नहीं होते।

प्र. 1. *'देवों' के कौन-सा 'वेद' नहीं होता?*

उत्तर- 'देवों' के 'नपुंसक-वेद' नहीं होता।

प्र. 2. *'देवों' के कौन-कौन-से 'वेद' होते हैं?*

उत्तर— 'देवों' के 'स्त्री' और 'पुरुष' — दो ही 'वेद' होते हैं।

प्र. 3. *सूत्र में 'न देवाः' कहने का क्या अर्थ है?*

उत्तर— पीछे के सूत्र से 'नपुंसक' शब्द की अनुवृत्ति आती है, जिससे देव 'नपुसंक' नहीं हैं — यह अर्थ निकलता है। इस बात को बताने के लिए सूत्र में 'न देवाः' कहा है। ✿✿

शेषास्त्रिवेदाः ॥52॥

अर्थ — शेष सब-जीव (अर्थात् मनुष्य और तिर्यंच) 'तीन-वेदवाले' होते हैं।

प्र. 1. *'मनुष्य' और 'तिर्यंचों' के कौन-सा वेद होता है?*

उत्तर— 'मनुष्य' और 'तिर्यंच' के 'तीनों-वेद' होते हैं।

प्र. 2. *'तीन-वेद' कौन-कौन-से होते हैं?*

उत्तर— 'स्त्रीवेद', 'पुरुषवेद' और 'नपुसंक-वेद' — ये 'तीन-वेद' होते हैं।

प्र. 3. *'अरिहंत' और 'सिद्ध-परमेष्ठी' के कौन-सा 'वेद' होता है?*

उत्तर— 'अरिहंत' और 'सिद्ध-परमेष्ठी' 'वेद-रहित' होते हैं। ✿✿

औपपादिक-चरमोत्तमदेहासंख्येय-वर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥53॥

अर्थ — 'उपपाद-जन्मवाले', 'चरमोत्तम-देहवाले' और 'असंख्यात-वर्ष' की आयुवाले-जीव 'अनपवर्त्य' आयुवाले होते हैं।

प्र. 1. *कौन-कौन-से जीव के 'अपवर्त्य-आयु' नहीं होता है?*

उत्तर— 'उपपाद-जन्मवाले', 'चरमोत्तम-देहवाले' और 'असंख्यात-वर्ष' की आयुवाले-जीवों के 'अपवर्त्य-आयु' नहीं होता है।

प्र. 2. *'अपवर्त्य-आयु' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— आयुबंध के समय आयुकर्म का जितना स्थितिबंध हुआ हो, उससे पूर्व ही आयुकर्म के बंधे हुए सभी निषेकों को भोगकर जीव मरण को प्राप्त होता है, इसी को 'अपवर्त्य-आयु' कहते हैं। ऐसी स्थिति जिनके संभव नहीं होती, वे 'अनपवर्त्य-आयु' कहलाते हैं।

प्र. 3. *'चरमोत्तम' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'अंतिम' को 'चरम' और वज्रवृषभनाराचसंहनन आदि श्रेष्ठगुणों से युक्त शरीर को 'उत्तम-शरीर' कहते हैं। ऐसे 'चरम' और 'उत्तम-शरीर' को 'चरमशरीर' कहते हैं, जैसे 'मोक्ष' जाने से पहले जो शरीर होता है।

प्र. 4. *क्या मात्र 'चरमशरीरी' की 'दुर्घटना-आयु' हो सकती है? यदि हाँ, तो कैसे?*

उत्तर— जैसे पाण्डव और 'गजकुमार-मुनि' आदि की 'उपसर्ग' से 'मृत्यु' देखी जाती है, इसलिए 'चरम-शरीरी' की 'दुर्घटना-मृत्यु' न होने का नियम नहीं है। हो भी सकती है, और नहीं भी हो सकती।

प्र. 5. *क्या 'उत्तम-शरीरी' की 'दुर्घटना-मृत्यु' हो सकती है?*

उत्तर— 'सुभौम' और 'ब्रह्मदत्त-चक्रवर्ती' आदि 'उत्तम-शरीरवालों' की भी 'दुर्घटनानिमित्तक-मृत्यु' हो सकती है?

प्र. 6. *कौन-से 'चरमोत्तम-शरीरी' की 'दुर्घटना-मृत्यु' नहीं हो सकती?*

उत्तर— 'तीर्थंकरों' के 'दुर्घटना-मृत्यु' नहीं होती, शेष के लिये कोई नियम नहीं है।

प्र. 7. *'आयुकर्म' किन बाह्य-कारणों से क्षीण हो जाता है?*

उत्तर— विष खाने से, रक्त के क्षय हो जाने से, भय से, शस्त्र-घात से, संक्लेश से, श्वास के रुक जाने से, आहार के न मिलने-आदि से आयुकर्म क्षीण होता है।

तृतीय अध्याय

रत्न-शर्करा-बालुका-पंक-धूम-तमो-महातमःप्रभा भूमयो घनाम्बु-वाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः ॥1॥

अर्थ - रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, और महातमःप्रभा-ये सात-भूमियाँ 'घन', 'अम्बु', 'वात' और 'आकाश' के सहारे स्थित हैं, तथा क्रम से नीचे-नीचे स्थित हैं।

प्र. 1. 'नरक' की कितनी 'भूमियाँ' हैं, और वे कौन-सी हैं?

उत्तर- 'नरक' की सात-भूमियाँ हैं-'रत्नप्रभा', 'शर्कराप्रभा', 'बालुकाप्रभा', 'पंकप्रभा', 'धूमप्रभा', 'तमःप्रभा' तथा 'महातमःप्रभा'।

प्र. 2. सूत्र में 'प्रभा' शब्द क्यों प्रयोग किया गया है?

उत्तर- सूत्र में 'प्रभा' शब्द का प्रयोग सात-भूमियों में प्रकाश की स्थिति की विशेषता बताने के लिए किया है।

प्र. 3. 'रत्नप्रभा' व 'शर्कराप्रभा' का क्या अर्थ है?

उत्तर- जिसमें 'रत्न' जैसी चमक है, वह 'रत्नप्रभा' है, तथा जिसमें 'शक्कर' जैसी चमक है, वह 'शर्कराप्रभा' है।

प्र. 4. 'बालुकाप्रभा' और पंकप्रभा' का क्या अर्थ है?

उत्तर- जिसमें 'रेत' जैसी चमक है, वह 'बालुकाप्रभा' है तथा जिसमें 'कीचड़' जैसी चमक है, वह 'पंकप्रभा' है।

प्र. 5. धूमप्रभा' का क्या अर्थ है?

उत्तर- 'धुयें' जैसी चमकवाली 'धूमप्रभा' है।

प्र. 6. 'तमःप्रभा' और 'महातमःप्रभा' का क्या अर्थ है?

उत्तर- जो 'अंधेरे' जैसी काली हो, वह 'तमःप्रभा'-भूमि है, तथा जिसमें उससे भी अधिक गहरे-अँधेरे जैसी चमक है, वह 'महातमःप्रभा' है।

प्र. 7. 'घन', 'अम्बु' तथा 'वात' का क्या अर्थ है?

उत्तर- 'घन' का अर्थ 'मोटा', 'अम्बु' का अर्थ 'जल' तथा 'वात' का अर्थ 'वायु' है।

प्र. 8. 'घन', 'अम्बु', 'वात' - ये तीनों क्या हैं?

उत्तर- ये तीनों वलय है, जिनके आधार पर 'नरक' की भूमियाँ खड़ी हैं।

प्र. 9. ये तीनों-वलय किसके आधार पर हैं?

उत्तर- ये तीनों 'आकाश' के आधार पर हैं।

प्र. 10. 'आकाश' किसके आधार पर खड़ा है?

उत्तर- 'आकाश' का आधार 'आकाश' ही है, क्योंकि आकाश में 'अवगाहना-गुण' है, जो सबको स्थान देता है।

प्र. 11. सूत्र में 'अधोऽध:' का क्या अर्थ है?

उत्तर- सूत्र में 'अधोऽध:' शब्द इस बात को बताने के लिए प्रयोग किया गया है, कि 'नरक' क्रम से एक के नीचे एक है।

प्र. 12. सातों-भूमियों के दूसरे 'प्रसिद्ध-नाम' क्या है?

उत्तर- 'सातों-भूमियों' के दूसरे 'प्रसिद्ध-नाम' है-'धम्मा', 'वंशा', 'मेघा', 'अञ्जना', 'अरिष्टा', 'मघवा' और 'माघवी'।

प्र. 13. 'अवग्रह'-चिह्न का क्या अर्थ है?

उत्तर- 'अवग्रह' (ऽ) इसप्रकार के चिह्न को 'खण्डाकार' या 'द्विखण्डाकार कहते हैं, जो अकार के लोप होने पर उसके संकेत के लिए लिखा जाता है। इसका उच्चारण नहीं किया जाता है।

प्र. 14. 'प्रथम-पृथिवी' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन से हैं?

उत्तर- प्रथम-पृथिवी के 'तीन-भेद' हैं - 'खरभाग', 'पंकभाग', तथा 'अब्बहुल-भाग'।

प्र. 15. 'नरत' एवं 'नरक' का दूसरा-नाम क्या है?

उत्तर- 'नरत' एवं 'नरक' का दूसरा-नाम 'अधोलोक' है।

तासु त्रिंशत्पञ्चविंशति-पञ्चदश-दश-त्रि-पञ्चोनैक-नरक-शत-सहस्राणि पंच चैव यथाक्रमम् ॥2॥

अर्थ - उन भूमियों में क्रम से तीस-लाख, पच्चीस-लाख, दस-लाख, तीन-लाख, पाँच कम एक-लाख और पाँच-नरक हैं।

प्र. 1. 'रत्नप्रभा' और 'शर्कराप्रभा-भूमि' में कितने-कितने बिल हैं?

उत्तर- 'रत्नप्रभा-भूमि' में तीस-लाख और 'शर्कराप्रभा-भूमि' में पच्चीस-लाख बिल हैं।

प्र. 2. 'बालुकाप्रभा-भूमि' और 'पंकप्रभा-भूमि' में कितने-कितने बिल हैं?

उत्तर- 'बालुकाप्रभा-भूमि' में पन्द्रह-लाख तथा 'पंकप्रभा-भूमि' में दस-लाख बिल हैं।

प्र. 3. 'धूमप्रभा-भूमि' में कितने बिल हैं?

उत्तर— 'धूमप्रभा-भूमि' में तीन-लाख बिल हैं।

प्र. 4. *'तम:प्रभा-भूमि' और 'महातम:प्रभा-भूमि' में कितने-कितने बिल हैं?*

उत्तर— 'तम:प्रभा-भूमि' में पाँच कम एक-लाख, और 'महातम:प्रभा-भूमि' में पाँच ही बिल हैं।

प्र. 5. *'सातों-नरकों' में कुल कितने बिल हैं?*

उत्तर— सातों-नरकों में कुल 84 लाख बिल हैं। ✿✿

नारका नित्याशुभतरलेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रिया: ।।3।।

अर्थ — 'नारकी' निरन्तर 'अशुभतर-लेश्या', 'अशुभतर-परिणाम' 'अशुभतर-देह', 'अशुभतर-वेदना' और 'अशुभतर-विक्रियावाले' होते हैं।

प्र. 1. *'नारकी' कैसे होते हैं?*

उत्तर— 'नारकी' निरन्तर अशुभतर-लेश्या, परिणाम, देह, वेदना और विक्रियावाले होते हैं।

प्र. 2. *'नारकी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'नरत' अर्थात् किसी भी अवस्था में सुखी नहीं है, उन्हें 'नारकी' कहते हैं।

प्र. 3. *नारकीयों के कितने-प्रकार की 'अशुभतर-अवस्थायें' हैं, और वे कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— नारकीयों की 'लेश्या', 'परिणाम', 'देह', 'वेदना', तथा 'विक्रिया' — ये 'अशुभतर-अवस्थायें' हैं।

प्र. 4. *नारकीयों में निरन्तर कौन-सी 'लेश्या' होती है?*

उत्तर— नारकीयों में निरन्तर 'अशुभ-लेश्या' होती है।

प्र. 5. *नारकीयों के 'अशुभतर-परिणाम' क्या हैं?*

उत्तर— नारकीयों के 'अशुभतर-परिणाम' — 'स्पर्श', 'रस', 'गंध' और 'वर्ण' हैं।

प्र. 6. *नारकीयों के 'अशुभतर-शरीर' कैसे होते हैं?*

उत्तर— नारकीयों के 'अशुभतर-शरीर' 'भयंकर', 'क्रूर' और 'डरावने' होते हैं।

प्र. 7. *नरकों में 'प्रथम' तथा 'दूसरी-भूमि' में कौन-कौन-सी 'लेश्या' होती है?*

उत्तर— प्रथम तथा 'दूसरी-पृथ्वी' में 'कपोत-लेश्या' होती है।

प्र. 8. *'तीसरी' तथा 'चौथी-पृथ्वी' में कौन-कौन-सी 'लेश्या' होती है?*

उत्तर— 'तीसरी-पृथ्वी' में ऊपर-भाग में 'कपोत-लेश्या' और नीचे के भाग में 'नील-लेश्या' है। 'चौथी-पृथ्वी' में 'नील-लेश्या' है।

प्र. 9. *'पाँचवी-पृथ्वी' में कौन-सी 'लेश्या' है?*

उत्तर— 'पाँचवी-पृथ्वी' के ऊपर के भाग में 'नील-लेश्या' होती है, तथा नीचे के भाग में 'कृष्ण-लेश्या' है।

प्र. 10. *'छठी' तथा 'सातवीं-पृथ्वी' में कौन-कौन-सी 'लेश्या' होती है?*

उत्तर— 'छठी-पृथ्वी' में 'कृष्ण-लेश्या' है, और सातवीं-पृथ्वी में 'परमकृष्ण-लेश्या' होती है।

प्र. 11. *'नारकीयों' में कौन-सी 'वेदना' होती है?*

उत्तर— 'नारकीयों' में 'अशुभतर-वेदना' होती है।

प्र. 12. *'नारकीयों' की 'अशुभतर-विक्रिया' किसप्रकार की होती है?*

उत्तर— 'नारकी' विचार करते हैं कि 'शुभ-विक्रिया' करेंगे, पर 'अशुभ-विक्रिया' को ही करते हैं; अर्थात् विकृत-शरीर की रचना करते हैं। इसीप्रकार वे 'सुख' का विचार करते हैं, पर 'दुःख' ही उत्पन्न करते हैं। ✿✿

परस्परोदीरित-दुःखाः ॥4॥

अर्थ — तथा वे 'परस्पर-उत्पन्न' किये गए 'दुःखवाले' होते हैं।

प्र. 1. *नारकीयों को 'दुःख' कैसे होता है?*

उत्तर— नारकीयों को 'परस्पर-उत्पन्न' किए गए कार्यों से 'दुःख' होता है।

प्र. 2. *नारकीयों को और किसतरह का 'दुःख' होता है?*

उत्तर— नारकीयों को शीत और उष्णजनित आदि कारणों से भी दुःख होता है।

प्र. 3. *नारकी आपस में कैसे दुःख उत्पन्न कराते है?*

उत्तर— नारकी 'कुवधिज्ञान' द्वारा दुःख उत्पन्न कराते हैं; भयानक क्रूर-पशुओं के रूप धारण करके, तीखे-शस्त्रों का रूप धारण करके आपस में लड़ते हैं। ✿✿

संक्लिष्टाऽसुरोदीरितदुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥5॥

अर्थ — 'चौथी-भूमि' से पहले तक वे 'संक्लिष्ट-असुरों' के द्वारा उत्पन्न किये गये 'दुःखवाले' भी होते हैं।

प्र. 1. *'नारकीयों' के 'दुःखों' के अन्य-कारण क्या हैं?*

उत्तर— 'नारकीयों' के 'दुःखों' के अन्य-कारण 'संक्लिष्ट-असुरों' द्वारा उत्पन्न किये गए 'दुःख' भी हैं।

प्र. 2. *'संक्लिष्ट' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'तीव्र-संक्लेश-परिणाम' से युक्त अवस्था को 'संक्लिष्ट' कहते हैं।

प्र. 3. 'संक्लिष्ट-भाव' किसे होता है?

उत्तर— 'संक्लिष्ट-भाव' असुरों को होता है।

प्र. 4. 'असुर' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'देवगति' में 'असुर-नामकर्म' के उदय से जो अवस्था होती है, उसे 'असुरदेव' कहते हैं।

प्र. 5. क्या 'असुरजाति के देव' 'नरक' में जाकर 'दुःख' देते हैं?

उत्तर— नहीं, मात्र 'अम्बावरीश' नाम के 'असुर-देव' ही नरक में जाकर 'दुःख' देते है।

प्र. 6. कौन-से नरक तक 'अम्बावरीश' नाम के 'देव' जा सकते हैं।

उत्तर— 'चौथे-नरक' तक 'अम्बावरीश' नाम के देव जा सकते हैं।

प्र. 7. 'अम्बावरीश' नाम के देव 'नारकीयों' को आपस में कैसे लड़ाते हैं?

उत्तर— 'कुवधिज्ञान' के द्वारा 'अम्बावरीश' नाम के 'देव' नारकीयों को उनके पूर्वकृत बुरे-कार्यों का स्मरण कराके आपस में लड़ाते हैं।

प्र. 8. क्या 'नारकी-जीव' असहनीय-दुःख को प्राप्त करके 'अकाल-मृत्यु' को प्राप्त होते हैं?

उत्तर— नहीं, नारकियों की अकाल-मृत्यु नहीं होती, इसलिए 'नारकी-जीव' असहनीय-दुःख को आयु पूरी होने तक सहते रहते हैं।

प्र. 9. 'नारकियों' की कितनी विक्रियायें होती है, और एकसाथ कितनी विक्रिया बना सकते है?

उत्तर— 'नारकी-जीवों' के अपृथक्-विक्रिया होती है, वे एक समय में एक ही विक्रिया बना सकते है। ❁❁

तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा-स्थितिः ॥6॥

अर्थ — उन 'नरकों' में 'जीवों' की 'उत्कृष्ट-स्थिति' (आयु) क्रम से एक, तीन, सात, दस, सत्रह, बाईस, और तैतीस-सागरोपम है।

प्र. 1. 'नारकियों' की 'उत्कृष्ट-आयु' कितनी है?

उत्तर— 'नारकियों' की 'उत्कृष्ट-आयु' क्रम से एक, तीन, सात, दस, सत्रह, बाईस, और तैंतीस सागरोपम है।

प्र. 2. 'रत्नप्रभा' और 'शर्करा-भूमि' में उत्कृष्ट-आयु कितनी है?

उत्तर— 'रत्नप्रभा' में एक-सागर, 'शर्कराप्रभा' में तीन-सागर उत्कृष्ट-आयु है।

प्र. 3. *'बालुकाप्रभा' व 'पंकप्रभा' में 'उत्कृष्ट-आयु' कितनी है?*

उत्तर— 'बालुकाप्रभा' में सात-सागर, 'पंकप्रभा' में दस-सागर 'उत्कृष्ट-आयु' है।

प्र. 4. *'धूमप्रभा' में 'उत्कृष्ट-आयु' कितनी है?*

उत्तर— 'धूमप्रभा' में 'उत्कृष्ट-आयु' सत्रह-सागर की है।

प्र. 5. *'तमःप्रभा' और 'महातमःप्रभा' में 'उत्कृष्ट-आयु' कितनी है?*

उत्तर— 'तमःप्रभा' में बाईस-सागर, 'महातमःप्रभा' में तैतीस-सागर 'उत्कृष्ट-आयु' है।

प्र. 6. *'नारकियों' के एक-एक पृथ्वी में कितने पटल हैं?*

उत्तर— 'प्रथम-नरक' में 13-पटल, 'दूसरे नरक' में 11-पटल, 'तीसरे-नरक' में 9-पटल, 'चौथे-नरक' में 7-पटल, 'पाँचवे-नरक' में 5-पटल, 'छठे-नरक' में 3-पटल, 'सातवें-नरक' में 1-पटल, — इसप्रकार कुल मिलाकर 49 पटल हैं।

प्र. 7. *'नरकों' की 'जघन्य-आयु' कितनी है?*

उत्तर— 'प्रथम-नरक' के प्रथम-पटल में 'जघन्य-आयु' 10 हजार-वर्ष तथा 'उत्कृष्ट-आयु' 90 हजार-वर्ष है। प्रथम-पटल की 'उत्कृष्ट-आयु' दूसरे-पटल की 'जघन्य-आयु' है, इसीप्रकार आयु आगे के पटलों में है। इसप्रकार में एक सागर-आयु है। प्रथम-नरक की 'उत्कृष्ट-आयु' दूसरे नरक की 'जघन्य-आयु' है। ऐसे 'सातों-नरकों' की जाननी चाहिए।

प्र. 8. *'नरकों' में कौन-से जीव उत्पन्न होते हैं?*

उत्तर— 'सप्त-व्यसनी', 'तीव्र-कषायी', 'तीव्र-मिथ्यात्वी', 'बहुत-आरंभ' और 'बहुत-परिग्रह' के धारक-मनुष्य, 'तिर्यंच-नरकों' में पैदा होते हैं।

प्र. 9. *'नारकी-जीवों' की उत्पत्ति कैसे होती है?*

उत्तर— 'नारकी-जीव' उत्पत्ति के समय 'पैर' 'ऊपर की ओर' तथा 'मस्तक' 'नीचे की ओर' किये हुए अधोमुख से नीचे गिरते हैं।

प्र. 10. *तीव्र-भूख-प्यास लगने पर 'नारकियों' को क्या खाने पीने को मिलता है?*

उत्तर— तीव्र-भूख-प्यास लगने पर भी 'नारकियों' को खाने पीने के लिए अन्न का कणमात्र भी नहीं मिलता, और जल की एक-बूंद भी प्राप्त नहीं होती है।

प्र. 11. *'सातों-नरकों' में 'जीवों' का निरन्तर-गमन कितनी बार हो सकता है?*

उत्तर— 'पहले-नरक' में आठ-बार, 'दूसरे-नरक' में सात-बार, 'तीसरे-नरक' में छह-बार, 'चौथे-नरक' में पाँच-बार, 'पाँचवे-नरक' में चार-बार, छठे-नरक में तीन-बार और सातवें-नरक में दो-बार तक गमन हो सकता है।

प्र. 12. *'सातों-नरकों' में कौन-कौन-से जीव जा सकते हैं?*

उत्तर— 'असंज्ञी' प्रथम-नरक तक, 'सरीसृप' दूसरे-नरक तक, 'पक्षी' तीसरे-नरक

तक, 'भुजंग' चौथे-नरक तक, 'सिंह' पाँचवे-नरक तक, 'स्त्रियाँ' छठे-नरक तक, 'मगरमच्छ' और 'पुरुष' सातवें-नरक तक जाते हैं।

प्र. 13. *'सातों-नरकों' से आकर 'जीव' कौन-कौन हो सकते हैं?*

उत्तर— 'सप्तम-नरक' से निकला हुआ 'नारकी' नियम से तिर्यंच-गति में ही जन्म लेता है। 'छठे-नरक' से निकला 'नारकी' 'मनुष्य' हो सकता है, परन्तु 'देशव्रती' नहीं बन सकता, 'सम्यग्दृष्टि' बन सकता है। पाँचवे-नरक से निकला 'जीव' मनुष्य-भव प्राप्त कर 'देशव्रती' एवं 'महाव्रती' बन सकता है; परन्तु उस भव से 'मोक्ष-पद' प्राप्त नहीं कर सकता है। चौथे-नरक से निकलकर कोई प्राणी 'महाव्रती' बनकर 'मोक्ष-पद' प्राप्त कर सकता है; परन्तु 'तीर्थंकर' नहीं हो सकता।

प्र. 14. *पहले दूसरे और तीसरे नरक से निकलकर जीव कौन-कौन हो सकता है?*

उत्तर— पहले, दूसरे और तीसरे नरक से निकले नारकी तीर्थंकर भी हो सकते है। और उसी भव से मोक्ष भी जा सकते है।

प्र. 15. *जो महान्-आत्मा 'नरक' से निकलकर 'तीर्थंकर' होनेवाला है, उसकी वहाँ क्या स्थिति रहती है?*

उत्तर— जो महान्-आत्मा आगामीकाल में 'तीर्थंकर' होनेवाला है, तथा जिनके पापकर्मों का उपशम हो गया है, देवलोग भक्तिवश छह-माह पहले से उनके उपसर्ग दूर कर देते हैं। ✿✿

जम्बूद्वीप-लवणोदादयः शुभनामानो द्वीप-समुद्राः ॥7॥

अर्थ — 'जम्बूद्वीप' आदि शुभ-नामवाले 'द्वीप' और 'लवणोदधि' आदि शुभ-नामवाले 'समुद्र' हैं।

प्र. 1. *'मध्यलोक' में क्या-क्या है?*

उत्तर— 'जम्बूद्वीप' आदि शुभ-नामवाले द्वीप और 'लवणोदधि' आदि शुभ-नामवाले समुद्र हैं।

प्र. 2. *वे 'द्वीप-समुद्र' कितने-कितने हैं?*

उत्तर— वे द्वीप-समुद्र असंख्यात हैं।

प्र. 3. *'जम्बूद्वीप' आदि प्रसिद्ध-द्वीपों के नाम क्या-क्या हैं, और वे कितने हैं?*

उत्तर— जम्बूद्वीप, घातकीखंड-द्वीप, पुष्करवर-द्वीप, वारुणीवर-द्वीप, क्षीरवर-द्वीप, इक्षुवर-द्वीप, नन्दीश्वर-द्वीप, अरुणवर-द्वीप, कुण्डलवर-द्वीप, शंखवर-द्वीप, रुचकवर-द्वीप — इसप्रकार 'असंख्यात-द्वीप' हैं। अंत में 'स्वयंभूरमण-द्वीप' है।

प्र. 4. *'जम्बूद्वीप' आदि प्रसिद्ध-समुद्रों के नाम क्या-क्या हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— लवण-समुद्र, कालोदधि-समुद्र, पुष्करवर-समुद्र, वारुणीवर-समुद्र, क्षीरवर-समुद्र, घृतवर-समुद्र इक्षुवर-समुद्र, नन्दीश्वर-समुद्र, अरुणवर-समुद्र, अरुणाभास-समुद्र, कुण्डलवर-समुद्र, शंखवर-समुद्र और रुचकवर-समुद्र — इसप्रकार असंख्यात-समुद्र है, और अंतिम में 'स्वयंभूरमण-समुद्र' है।

प्र. 5. *'जम्बूद्वीप' का नाम 'जम्बूद्वीप' कैसे पड़ा?*

उत्तर— 'जम्बूवृक्ष' से उपलक्षित होने के कारण इस द्वीप का नाम 'जम्बूद्वीप' पड़ा।

प्र. 6. *'जम्बूवृक्ष' कैसा होता है?*

उत्तर— 'जम्बूवृक्ष' पृथिवीकायिक, अकृत्रिम और शाश्वत होता है।

प्र. 7. *'जम्बूवृक्ष' कहाँ है?*

उत्तर— 'मेरू' की उत्तर-दिशा में विदेह-क्षेत्र के अन्तर्गत 'उत्तरकुरु' नामक 'उत्तम-भोगभूमि' के मध्य 'जम्बू' नामक वृक्ष है।

प्र. 8. *'जम्बूवृक्ष' का 'परिवार' कितना है?*

उत्तर— इस वृक्ष के चारों ओर चारों-दिशाओं में चार 'परिवार-वृक्ष' हैं। सारे 'परिवार-वृक्ष' एक-लाख चालीस-हजार एक-सौ पन्द्रह है। मूल-वृक्षों के साथ मिलाकर सारे वृक्ष एक-लाख चालीस-हजार एक-सौ बीस हैं।

प्र. 10. *'घातकी द्वीप' और 'पुष्कर-द्वीप' इन द्वीपों के नाम क्यों पड़े हैं?*

उत्तर — 'घातकी द्वीप' घातकी-वृक्ष से उपलक्षित है। 'पुष्करद्वीप' पुष्कर-वृक्ष से उपलक्षित है, इसलिए इनके नाम सार्थक हैं।

प्र. 11. *'अष्टम-द्वीप' कौन-सा है?*

उत्तर — अष्टम-द्वीप का नाम 'नन्दीश्वर-द्वीप' है।

प्र. 12. *'नन्दीश्वर-द्वीप' में कितने जिनालय हैं, कितनी मूर्त्तियाँ और उनकी ऊँचाई कितनी है?*

उत्तर— 'नन्दीश्वर-द्वीप' में पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर-दिशाओं में 13-13 के क्रम से कुल बावन-जिनालय है। इनमें एक-एक मंदिर में 108-108 मूर्त्तियाँ हैं, कुल-मिलाकर 5616 हैं। सभी मूर्त्तियाँ 500-धनुष ऊँची 'पद्मासन' में विराजमान है।

प्र. 13. *'व्यवहार-पल्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दो-हजार कोश गहरे और दो-हजार कोश गोल गड्ढे में (कैंची से जिसका दूसरा-भाग न हो सके इतना छोटा) मेंढे के बालों को भरना। जितने बाल उसमें समायें इसमें भर दें, उनमें से एक-एक बाल को सौ-सौ वर्ष बाद

निकालना। जितने वर्षों में वे सब बाल निकल जायें, उतने वर्षों के जितना समय हो उतने समयों को 'व्यवहार-पल्य' कहते हैं।

प्र. 14. *'उद्धार-पल्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'व्यवहार-पल्य' से असंख्यात-गुणा 'उद्धार-पल्य' होता है। ✿✿

द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ।।8।।

अर्थ — वे सभी-द्वीप और समुद्र उत्तरोत्तर दूने-दूने व्यासवाले, पूर्व-पूर्व द्वीप और समुद्र को वेष्टित करनेवाले और चूड़ी के आकारवाले हैं।

प्र. 1. *'द्वीप' और 'समुद्र' का आकार और विस्तार कितना-कितना है?*

उत्तर— वे सभी-द्वीप और समुद्र-उत्तरोत्तर दूने-दूने व्यासवाले, पूर्व-पूर्व द्वीप, और समुद्र को वेष्टित करनेवाले और चूड़ी के आकारवाले हैं।

प्र. 2. *'द्विर्द्वि' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'द्विर्द्वि' का अर्थ दूने-दूने है।

प्र. 3. *'विष्कम्भाः' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'विष्कम्भाः' का अर्थ 'विस्तार' है।

प्र. 4. *'परिक्षेपिणो' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'परिक्षेपिणो' का अर्थ 'घेरे हुए' है।

प्र. 5. *'वलयाकृतयः' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'वलयाकृतयः' का अर्थ 'चूड़ी के आकार' के। ✿✿

तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजन-शत-सहस्त्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः ।।9।।

अर्थ — उन सबके बीच में गोल और एक-लाख योजन विस्तारवाला 'जम्बूद्वीप' है, जिसके मध्य में 'नाभि' के समान 'मेरु पर्वत' है।

प्र. 1. *सब-द्वीपों के मध्य 'कौन-सा' द्वीप है?*

उत्तर— सब-द्वीपों के मध्य 'जम्बूद्वीप' है।

प्र. 2. *'नाभिवृत्त' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— जैसे शरीर के मध्य में 'नाभि' होती है, वैसे ही 'द्वीप-समुद्रों' के मध्य 'जम्बूद्वीप' है।

प्र. 3. *'जम्बूद्वीप' के मध्य क्या है?*

उत्तर— 'जम्बूद्वीप' के मध्य सुमेरु-पर्वत है।

प्र. 4. *'जम्बूद्वीप' का विस्तार कितना है?*

उत्तर— 'जम्बूद्वीप' का विस्तार एक-लाख-योजन है।

प्र. 5. *'सुमेरु-पर्वत' की ऊँचाई कितनी है?*

उत्तर— 'सुमेरु-पर्वत' की ऊँचाई एक-लाख चालीस-योजन है।

प्र. 6. *'सुमेरु-पर्वत' के कितने खण्ड है?*

उत्तर— 'सुमेरु-पर्वत' के तीन खण्ड है।

प्र. 7. *'सुमेरु-पर्वत' के तीनों खण्ड कितने ऊँचे-ऊँचे है?*

उत्तर— पहला-खण्ड जमीन से 'पाँच-सौ-योजन' तक ऊँचा है। दूसरा 'साढ़े-बासठ-योजन' ऊँचा है। तीसरा छत्तीस-हजार-योजन ऊँचा है।

प्र. 8. *'सुमेरु-पर्वत' के कितने वन हैं, और कहाँ-कहाँ हैं? उनके नाम क्या-क्या हैं?*

उत्तर— 'सुमेरु-पर्वत' के ऊपर चार-वन हैं। एक-जमीन पर बाकी तीनों-कटनियों पर हैं। इनके नाम 'भद्रशाल-वन', 'नन्दन-वन', 'सौमनस-वन', तथा 'पाण्डुक-वन' हैं।

प्र. 9. *चारों-वनों के चारों-दिशाओं में कितने-कितने चैत्यालय हैं?*

उत्तर— चारों-वनों के चारों-दिशाओं में चार-चार चैत्यालय हैं, कुल मिलाकर सौलह-चैत्यालय हैं।

प्र. 10. *'सुमेरु-पर्वत' पर 'पाण्डुक-शिला' कहाँ पर है, और कितनी हैं?*

उत्तर— 'पाण्डुक-वन' में चारों-दिशाओं में चार-पाण्डुक-शिलायें होती हैं।

प्र. 11. *'पाण्डुक-शिलाओं' का क्या महत्त्व है?*

उत्तर— उन चारों-पाण्डुक-शिलाओं पर चारों-दिशाओं से सम्बन्धित-तीर्थंकरों का अभिषेक करते है।

प्र. 12. *उन चारों-पाण्डुक-शिलाओं का 'नाम' और 'वर्ण' क्या है?*

उत्तर— प्रथम का नाम 'पाण्डुक-शिला' है, यह स्वर्णमयी है। दूसरी का नाम 'पाण्डुकंबला-शिला' है, यह रजतमयी है। तीसरी का नाम 'रक्तशिला' है, यह 'स्वर्णमयी' है। चौथी का नाम 'रक्त-कम्बला-शिला' है, यह लालमणिमयी है।

प्र. 13. *ये चारों-पाण्डुक-शिलायें कौन-कौन सी दिशाओं में हैं?*

उत्तर— पहली 'ईशान-दिशा' में, दूसरी 'आग्नेय-दिशा' में, तीसरी नैऋत्य-दिशा मे, चौथी 'वायव्य-दिशा' में है।

प्र. 14. *पाँचों-मेरु में अलग-अलग व कुल कितनी प्रतिमायें विराजमान हैं?*

उत्तर— एक मेरु-सम्बन्धी 16 जिनालयों में 1728 है। अत: पाँच मेरु-सम्बन्धी कुल जिनालयों में 1728×5=8640 प्रतिमायें विराजमान हैं। ✿✿

भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि ॥10॥

अर्थ — भरतवर्ष, हैमवतवर्ष, हरिवर्ष, विदेहवर्ष, रम्यकवर्ष, हैरण्यवतवर्ष, और ऐरावतवर्ष — ये सात-क्षेत्र हैं।

प्र. 1. *'जम्बूद्वीप' में कितने क्षेत्र हैं?*

उत्तर— 'जम्बूद्वीप' में छह-कुलाचलों से विभाजित होकर सात-क्षेत्र हैं।

प्र. 2. *'सातों-क्षेत्रों' के नाम क्या हैं?*

उत्तर— भारतवर्ष, हैमवतवर्ष, हरिवर्ष, विदेहवर्ष, रम्यकवर्ष, हैरण्यवतवर्ष और ऐरावतवर्ष — ये सात-क्षेत्र हैं।

प्र. 3. *'भरत-क्षेत्र' का नाम 'भरत' क्यों पड़ा?*

उत्तर— 'भरत-चक्रवर्ती' के नाम से इस क्षेत्र का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा।

प्र. 4. *यह 'भरत-क्षेत्र' कहाँ है?*

उत्तर— उत्तर में 'हिमवान-पर्वत' एवं पूर्व, दक्षिण तथा पश्चिम में समुद्र है, इनके बीचों-बीच 'भरत-क्षेत्र' है।

प्र. 5. *इसके कितने खण्ड हैं, और कैसे हैं?*

उत्तर— इसके छह-खण्ड हैं — गंगा, सिन्धु-नदी और बीच में एक विजयार्द्ध पर्वत इसप्रकार के छह-खण्ड हैं।

प्र. 6. *विजयार्द्ध-पर्वत का नाम 'विजयार्द्ध' क्यों पड़ा? इसका दूसरा नाम क्या है?*

उत्तर— चक्रवर्ती के विजय-क्षेत्र की आधी-सीमा इसी पर्वत से निर्धारित होती है, अतः इसका नाम 'विजयार्द्ध' सार्थक है। इसका दूसरा नाम 'रजताचल' है।

प्र. 7. *'विजयार्द्ध-पर्वत' का वर्ण कैसा है, और ये किससे निर्मित है?*

उत्तर— 'विजयार्द्ध-पर्वत' चाँदी से निर्मित है एवं शुभ (सफेद) वर्ण का है।

प्र. 8. *'चक्रवर्ती' अपनी प्रशस्ति कहाँ लिखते हैं?*

उत्तर— 'चक्रवर्ती' अपनी प्रशस्ति 'वृषभगिरि-नामक' पर्वत पर लिखते हैं।

प्र. 9. *'भरत-क्षेत्र' के 'विजयार्द्ध' व 'म्लेच्छखण्डों' में कौन-सा काल रहता है?*

उत्तर— 'भरत-क्षेत्र' के 'विजयार्द्ध' व 'म्लेच्छखण्डों' में 'चतुर्थकाल' के आदि और अन्त के सदृशकाल रहता है।

प्र. 10. *'विजयार्द्ध' पर उत्पन्न मानव क्या कहलाते हैं?*

उत्तर— 'विजयार्द्ध' पर उत्पन्न मानव 'विद्याधर' कहलाते हैं।

प्र. 11. *'विद्याधरों' की आजीविका क्या है?*

उत्तर— 'विद्याधरों' की आजीविका मानवों के समान षट्कर्मों से ही होती है।

प्र. 12. *'हैमवत' और 'हरि'-क्षेत्र — ये दोनों नाम किस कारण हैं?*

उत्तर— 'हिमवान-क्षेत्र' के समीप होने से 'हैमवत-क्षेत्र' कहलाता है। 'हरित-वर्ण' वाले मनुष्यों के कारण से 'हरिक्षेत्र' कहलाता है।

प्र. 13. *'विदेह-क्षेत्र' नाम किस कारण है?*

उत्तर— जहाँ से मनुष्य देहरहित 'सिद्ध-अवस्था' को प्राप्त करते हैं, उस क्षेत्र को 'विदेह-क्षेत्र' कहते हैं। यहाँ सदा चतुर्थकाल रहने से इसकी यह संज्ञा सार्थक है।

प्र. 14. *'रम्यक-क्षेत्र' का नाम 'रम्यक' क्यों पड़ा?*

उत्तर— रमणीय देश, नदी, वन, उपवन आदि से युक्त होने से इसका नाम 'रम्यक-क्षेत्र' है।

प्र. 15. *'हैरण्यवत-क्षेत्र' का नाम 'हैरण्यवत' क्यों है?*

उत्तर— 'हिरण्य' अर्थात् 'सुवर्ण' के वर्णवाले 'रुक्मी-पर्वत' के समीप होने से इसका नाम 'हैरण्यवत-क्षेत्र' पड़ा है।

प्र. 16. *'ऐरावत-क्षेत्र' का नाम 'ऐरावत' क्यों पड़ा है?*

उत्तर— क्षत्रिय-राजा 'ऐरावत' के नाम के योग से यह 'ऐरावत-क्षेत्र' कहलाता है।

प्र. 17. *'जघन्य-भोगभूमि' तथा 'मध्यम-भोगभूमि' कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— 'हैमवत' और 'हैरण्यवत' — ये दोनों 'जघन्य-भोगभूमि' हैं, तथा 'हरिवर्षक' तथा 'रम्यकवर्ष' — ये दोनों 'मध्यम-भूमि' हैं।

प्र. 18. *'उत्तम-भोगभूमि' कौन-सी है?*

उत्तर— 'उत्तर-कुरु' और 'देव-कुरु' 'उत्तम-भोगभूमि हैं।

प्र. 19. *'भोगभूमि' के जीव क्या कहलाते हैं?*

उत्तर— 'भोगभूमि' के जीव 'आर्य' कहलाते हैं।

प्र. 20. *'भोगभूमि' के जीव खाने-पीने-पहनने के लिए क्या प्रयोग करते हैं?*

उत्तर— 'भोगभूमि' के जीव खाने-पहनने आदि के लिए 'कल्पवृक्षों' से उत्पन्न सामग्री का प्रयोग करते हैं।

प्र. 21. *'कल्पवृक्ष' कितने-प्रकार के हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'कल्पवृक्ष' दस-प्रकार के हैं — मद्यांग, वादित्रांग, भूषणांग, माल्यांग, ज्योतिरांग, दीपांग, गृहांग, भोजनांग, भाजनांग, वस्त्रांग।

प्र. 22. *'भोगभूमि' के जीवों की ऊँचाई कैसी होती है?*

उत्तर— 'भोगभूमि' के जीवों की 'उत्तम' — तीन-कोश, 'मध्यम' — दो-कोश और 'जघन्य-भोगभूमियों' के शरीर की ऊँचाई एक-कोश होती है।

प्र. 23. *'भोगभूमि' की जीवों आयु कितनी है?*

उत्तर— 'भोगभूमि' के जीवों की 'उत्तम-आयु' तीन-पल्य, 'मध्यम' दो-पल्य, तथा

'जघन्य-आयु' एक-पल्य की होती है।

प्र. 24. *'भोगभूमि' के जीवों का वर्ण कैसा होता है?*

उत्तर— 'भोगभूमि' के जीवों का 'उत्तम' में वर्ण-'बालसूर्यसम', 'मध्यम' में चन्द्रमा के समान 'श्वेतवर्ण', तथा 'जघन्य-भोगभूमि' में शरीर का वर्ण 'प्रियंगुसम-श्याम' होता है।

प्र. 25. *'भोगभूमि' के जीव कितने दिनों में आहार लेते हैं?*

उत्तर— 'उत्तम-भोगभूमि' में तीन-दिन के बाद बेर-बराबर, 'मध्यम-भोगभूमि' में दो-दिन के बाद बहेड़ा के बराबर, 'जघन्य-भोगभूमि' में एक-दिन के बाद आँवला-प्रमाण भोजन करते हैं।

प्र. 26. *'भोग-भूमियों' का 'गर्भ' कैसे होता है?*

उत्तर— 'उत्तम', 'मध्यम' और 'जघन्य-भोगभूमि' में माता-पिता की आयु के नौ मास शेष रहने पर गर्भ होता है।

प्र. 27. *'भोगभूमियों' का मरण कैसे होता है?*

उत्तर— 'उत्तम', 'मध्यम' और 'जघन्य-भोगभूमि' में छींक-जंभाई से मरण होता है।

प्र. 28. *'भोग-भूमियों' को 'सम्यक्त्व' की प्राप्ति कितने-दिन में होती है?*

उत्तर— 'उत्तम-भोगभूमियों' को 'सम्यक्त्व' की प्राप्ति 21-दिन में, 'मध्यम-भोगभूमि' में 35-दिन में, 'जघन्य' में 49-दिन में होती है। ✿✿

तद्विभाजिनः पूर्वपरायता हिमवन्महाहिमवन्निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः ॥11॥

अर्थ — उन क्षेत्रों को विभाजित करनेवाले और पूर्व से पश्चिम तक फैले ऐसे हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी और शिखरी — ये छह 'वर्षधर-पर्वत' हैं।

प्र. 1. *क्षेत्रों का विभाजन करनेवाले 'कुलाचल-पर्वत' कितने हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— क्षेत्रों का विभाजन करनेवाले 'कुलाचल-पर्वत' छह हैं — हिमवान्, महाहिमवान्, निषध, नील, रुक्मी, और शिखरी।

प्र. 2. *'भरत' और 'हैमवत-क्षेत्र' को कौन-सा पर्वत विभाजित करता है?*

उत्तर— 'भरत' और 'हैमवत-क्षेत्र' को 'हिमवान-पर्वत' विभाजित करता है।

प्र. 3. *'हैमवत' और 'हरिवर्ष' — इन दोनों क्षेत्रों को विभाजित करनेवाला पर्वत कौन-सा है?*

उत्तर— 'हैमवत' और 'हरिवर्ष' को 'महाहिमवान्-पर्वत' विभाजित करता है।

प्र. 4. *'हरिवर्ष' और 'विदेह-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाला पर्वत कौन-सा है?*

उत्तर— 'हरिवर्ष' और 'विदेह-क्षेत्र' को 'निषध-पर्वत' विभाजित करता है।

प्र. 5. *'विदेह' और 'रम्यक' को विभाजित करनेवाला पर्वत कौन-सा है?*

उत्तर— 'विदेह' और 'रम्यक-क्षेत्र' को 'नील-पर्वत' विभाजित करता है।

प्र. 6. *'रम्यक' और 'हैरण्यवत' को विभाजित करनेवाला पर्वत कौन-सा है?*

उत्तर— 'रम्यक' और 'हैरण्यवत' को 'रुक्मी-पर्वत' विभाजित करता है।

प्र. 7. *'हैरण्यवत' और 'ऐरावत' को विभाजित करनेवाला पर्वत कौन-सा है?*

उत्तर— 'हैरण्यवत' और 'ऐरावत' को 'शिखरी-पर्वत' विभाजित करता है। ✿✿

हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममया: ॥12॥

अर्थ — ये 'छहों-पर्वत' क्रम से सोना, चाँदी, तपाया हुआ सोना, वैडूर्यमणि, चाँदी और सोने के समान रंगवाले हैं।

प्र. 1. *'छहों-पर्वतों' के रंग कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'छहों-पर्वत' क्रम से सोना, चाँदी, तपाया हुआ सोना, वैडूर्यमणि, चाँदी, और सोने के समान रंगवाले हैं।

प्र. 2. *'हिमवान्' और 'महाहिमवान-पर्वत' का रंग ऐसा क्यों है?*

उत्तर— 'हिमवान्-पर्वत' का मिट्टी और पत्थर 'सोने' की तरह हैं, तथा 'महाहिमवान-पर्वत' पर मिट्टी और पत्थर 'चाँदी' की तरह हैं।

प्र. 3. *'निषध' और 'नील-पर्वत' का रंग ऐसा क्यों है?*

उत्तर— 'निषध-पर्वत' पर मिट्टी-पत्थर 'तपाये हुए सोने' की तरह हैं, तथा 'नील-पर्वत' पर मिट्टी और पत्थर 'वैडूर्यमणि' के समान चमकते रहते हैं।

प्र. 4. *'रुक्मी' और 'शिखरी-पर्वत' का रंग ऐसा क्यों है?*

उत्तर— 'रुक्मी-पर्वत' के मिट्टी और पत्थर 'चाँदी' की तरह हैं, तथा 'शिखरी-पर्वत' पर मिट्टी और पत्थर 'सोने' के समान हैं। ✿✿

मणिविचित्र-पार्श्वा उपरि-मूले च तुल्य-विस्तारा ॥13॥

अर्थ — इनके 'पार्श्व' मणियों से चित्र-विचित्र हैं, तथा वे ऊपर, मध्य और मूल में समान-विस्तारवाले हैं।

प्र. 1. *ये पर्वत किससे निर्मित है?*

उत्तर— इन पर्वतों के पार्श्वभाग 'विचित्र' (रंग-बिरंगी) मणियों से निर्मित हैं।

प्र. 2. *इन पर्वतों का विस्तार कितना है?*

उत्तर— ये पर्वत ऊपर से नीचे तक समान विस्तारवाले हैं।

प्र. 3. *'कुलाचल-पर्वतों' के मध्य में क्या है?*

उत्तर— 'कुलाचल-पर्वतों' के मध्य में 'तालाब' हैं। ✿✿

पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका ह्रदा-स्तेषामुपरि ।।14।।

अर्थ — इन पर्वतों के ऊपर क्रम से पद्म, महापद्म, तिगिञ्छ, केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक — ये छह-तालाब हैं।

प्र. 1. *इन पर्वतों पर कितने 'तालाब' हैं, और उनके क्या-क्या नाम हैं?*

उत्तर— इन पर्वतों पर छह 'तालाब' हैं — पद्म, महापद्म, तिगिच्छ, केसरी, महापुण्डरीक और पुण्डरीक।

प्र. 2. *'हिमवान', 'महाहिमवान्' और 'निषध-पर्वतों' के बीच में कौन-कौन-से तालाब हैं?*

उत्तर— 'हिमवान-पर्वत' के बीच 'पद्म', 'महाहिमवान-पर्वत' के बीच 'महापद्म', 'निषध-पर्वत' के बीच 'तिगिच्छ'-तालाब' हैं।

प्र. 3. *'नील', रुक्मी और 'शिखरी'-पर्वतों के बीच कौन-कौन-से तालाब हैं?*

उत्तर— 'नील-पर्वत' के बीच में 'केसरी', 'रुक्मी-पर्वत' के बीच 'महापुण्डरीक' और 'शिखरी' के बीच 'पुण्डरीक' तालाब हैं। ✿✿

प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्ध-विष्कम्भो ह्रदः ।।15।।

अर्थ — 'पहला-तालाब' एक-हजार योजन लम्बा और इससे आधा चौड़ा है।

प्र. 1. *'पहला-तालाब' कितने योजन लम्बा, चौड़ा और कैसा है?*

उत्तर— 'पहला-तालाब' एक-हजार योजन लम्बा है, 500-योजन चौड़ा है। उसका तलभाग 'वज्र' के समान, और तटभाग नानाप्रकार की 'मणियों' और 'सोने' के समान है।

प्र. 2. *योजन किसे कहते हैं?*

उत्तर— 68000 अंगुल प्रमाण को एक योजन कहते हैं।

प्र. 3. *'ह्रद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'ह्रद' तालाब को कहते हैं। ✿✿

दशयोजनावगाहः ॥16॥

अर्थ — तथा उक्त प्रथम तालाब दस-योजन गहरा है।

प्र. 1. *'पद्म-तालाब' की गहराई कितनी है?*

उत्तर— 'पद्म-तालाब' की गहराई दस-योजन है।

प्र. 2. *'अवगाह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'गहराई' को 'अवगाह' कहते हैं।

प्र. 3. *'पद्म' शब्द कहाँ से लिया है?*

उत्तर— सूत्र-संख्या 14 से 'पद्म' शब्द लिया है। ✿✿

तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ॥17॥

अर्थ — इसके बीच में एक योजन का कमल है।

प्र. 1. *'पद्म-तालाब' के बीच में क्या है?*

उत्तर— 'पद्म-तालाब' के बीच में 'कमल' है।

प्र. 2. *'कमल' का विस्तार कितना है?*

उत्तर— 'कमल' का विस्तार एक-योजन है।

प्र. 3. *'कमल' के 'पत्ते' और 'डंठल' का विस्तार कितना है?*

उत्तर— 'कमल' के 'पत्ते' का विस्तार एक-कोश, 'डंठल' का विस्तार दो-कोश है।

प्र. 4. *सूत्र में 'तन्मध्ये' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— सूत्र में 'तन्मध्ये' का अर्थ 'पद्म-तालाब के बीच में' है।

प्र. 5. *सूत्र में 'पुष्कर' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— सूत्र में 'पुष्कर' का अर्थ 'कमल' है। ✿✿

तद्द्विगुणद्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च ॥18॥

अर्थ — आगे के 'तालाब' और 'कमल' दूने-दूने आकार के हैं।

प्र. 1. *आगे-आगे के 'तालाब' और 'कमल' कैसे हैं?*

उत्तर— आगे-आगे के 'तालाब' और 'कमल' दूने-दूने आकार के हैं।

प्र. 2. *सूत्र में 'च' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— सूत्र में 'च' शब्द 'तालाब' और 'कमल' को बताने के लिए दिया है।

प्र. 3. *आगे के 'तालाब' और 'कमल' दूने-दूने किस अपेक्षा से हैं?*

उत्तर— आगे के 'तालाब' और 'कमल' लम्बाई, गहराई और विस्तार की अपेक्षा पिछले तालाबों एवं कमलों से दूने-दूने हैं। ✿✿

तन्निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्योपम-स्थितयः ससामनिक-पारिषत्काः ।।19।।

अर्थ — इनमें श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी · ये देवियाँ 'सामानिक' और 'पारिषद्' देवों के साथ निवास करती हैं, तथा इनकी आयु एक 'पल्योपम' है।

प्र. 1. *'कमलों' पर रहनेवाली 'देवियों' के नाम क्या हैं, और वे कितनी हैं?*

उत्तर— श्री, ह्री, धृति, कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी — ये 'छह-देवियाँ' हैं।

प्र. 2. *इन 'देवियों' की आयु कितनी है?*

उत्तर— इन 'देवियों' की आयु एक 'पल्योपम' है।

प्र. 3. *ये 'देवियाँ' कौन-से देवों के साथ निवास करती हैं?*

उत्तर— ये 'देवियाँ' 'सामानिक' और 'पारिषद्' जातियों के देवों के साथ निवास करती हैं।

प्र. 4. *'सामानिक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— समान-स्थान में रहनेवाले देव 'सामानिक' कहलाते हैं। ये पिता-दादा, उपाध्याय आदि के सदृश होते हैं।

प्र. 5. *'पारिषद्' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सभा और परिषद् में रहनेवालों को 'पारिषद्' कहते हैं। 'पारिषद्' मित्र के समान होते हैं।

प्र. 6. *'केसरी-महापुण्डरीक' और 'पुण्डरीक-तालाब' पर कौन-सी देवियाँ रहती हैं?*

उत्तर— 'केसरी-तालाब' के कमल पर 'कीर्ति', तथा 'महापुण्डरीक-तालाब' के कमल पर 'बुद्धि-देवी'। 'पुण्डरीक-तालाब' के कमल पर स्थित महल में 'लक्ष्मी-देवी' का निवास है।

प्र. 7. *ये देवियाँ किनकी सेवा में तत्पर रहती हैं?*

उत्तर— श्री, ह्री और धृति 'सौधर्म-इन्द्र' की तथा बुद्धि, कीर्ति और लक्ष्मी — ये तीनों-देवियाँ सपरिवार 'ईशान-इन्द्र' की सेवा में तत्पर रहती हैं। ✿✿

गंगा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्ण-रूप्य-कूला-रक्ता-रक्तोदाः सरितस्तन्मध्यगाः ।।20।।

अर्थ — इन भरत-आदि क्षेत्रों में से गंगा-सिन्धु, रोहित-रोहितास्या, हरित हरिकान्ता, सीता-सीतोदा, नारी-नरकान्ता, सुवर्णकूला-रूप्यकूला, रक्ता-रक्तोदा नदियाँ बहती हैं।

प्र. 1. *'भरत-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— 'भरत-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ 'गंगा' और 'सिन्धु' हैं।

प्र. 2. *'हेमवत-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— 'रोहित' और 'रोहितास्या' नदियाँ 'हेमवत-क्षेत्र' को विभाजित करती हैं।

प्र. 3. 'हरिवर्ष-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ कौन-कौन सी हैं?

उत्तर— 'हरिवर्ष-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ 'हरित' और 'हरिकांता' हैं।

प्र. 4. *'विदेह-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— 'विदेह-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ 'सीता' और 'सीतोदा' हैं।

प्र. 5. *'रम्यक-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ कौन-कौब-सी हैं?*

उत्तर— 'रम्यक-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ 'नारी' और 'नरकान्ता' हैं।

प्र. 6. *'हैरण्यवत-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— 'हैरण्यवत-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ 'सुवर्णकूला' और 'रूप्यकूला' हैं।

प्र. 7. *'ऐरावत-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— 'ऐरावत-क्षेत्र' को विभाजित करनेवाली नदियाँ 'रक्ता' और 'रक्तोदा' हैं। ✿✿

द्वयोर्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः ॥21॥

अर्थ — दो-दो नदियों में से पहली-पहली नदी 'पूर्व-समुद्र' को जाती हैं।

प्र. 1. *कितनी नदियाँ 'पूर्व' की ओर जाती हैं?*

उत्तर— सात-नदियाँ 'पूर्व' की ओर जाती हैं।

प्र. 2. *उनके नाम क्या हैं?*

उत्तर— उनके नाम हैं — गंगा, रोहित, हरित, सीता, नारी, सुर्वणकूला, और रक्ता।

प्र. 3. *'पूर्वाः पूर्वगाः' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'पूर्वाः पूर्वगाः' का अर्थ 'पहली-पूर्व-समुद्र की ओर जानेवाली' है। ✿✿

शेषास्त्वपरगाः ॥22॥

अर्थ — तथा शेष-नदियाँ 'पश्चिम-समुद्र' को जाती हैं।

प्र. 1. *'पश्चिम' की तरफ कितनी नदियाँ जाती हैं?*

उत्तर— 'पश्चिम' की तरफ सात-नदियाँ जाती हैं।

प्र. 2. *'पश्चिम' की ओर बहनेवाली-नदियाँ कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— 'पश्चिम' की ओर बहनेवाली-नदियाँ हैं — सिन्धु, रोहितास्या, हरिकांता,

सीतोदा, नरकान्ता, रूप्यकूला और रक्तोदा।

प्र. 3. 'अपरगाः' का क्या अर्थ है?

उत्तर— 'अपरगाः' का अर्थ है 'पश्चिम-दिशा की ओर जानेवाली'। ✿✿

चतुर्दश-नदी-सहस्त्र-परिवृता गंगा-सिन्ध्वादयो नद्यः ॥23॥

अर्थ — 'गंगा' और 'सिन्धु'-आदि नदियों की चौदह-चौदह हजार नदियाँ हैं।

प्र. 1. 'गंगा' और 'सिन्धु' नदियों की सहायक-नदियाँ कितनी हैं?

उत्तर— 'गंगा' और 'सिन्धु' नदियों की सहायक-नदियाँ 14-हजार हैं।

प्र. 2. 'रोहित' और 'रोहितास्या' नदियों की सहायक-नदियाँ कितनी हैं?

उत्तर— 'रोहित' और 'रोहतास्या' नदियों की सहायक-नदियाँ 28-हजार हैं।

प्र. 3. 'हरित' और 'हरिकान्ता' नदियों की सहायक-नदियाँ कितनी हैं?

उत्तर— 'हरित' और 'हरिकान्ता' नदियों की सहायक-नदियाँ 56-हजार हैं।

प्र. 4. 'सीता' और 'सीतोदा' नदियों की सहायक-नदियाँ कितनी हैं?

उत्तर— 'सीता' और 'सीतोदा' नदियों की सहायक-नदियाँ एक-लाख बारह-हजार हैं।

प्र. 5. 'नारी' और 'नरकान्ता' नदियों की सहायक-नदियाँ कितनी हैं?

उत्तर— 'नारी' और 'नरकान्ता' नदियों की सहायक-नदियाँ 56-हजार हैं।

प्र. 6. 'सुवर्णकूला' और 'रुप्यकूला' की सहायक-नदियाँ कितनी हैं?

उत्तर— 'सुवर्णकूला' और 'रुप्यकूला' की सहायक-नदियाँ 28-हजार हैं।

प्र. 7. 'रक्त' और 'रक्तोदा' की सहायक-नदियाँ कितनी हैं?

उत्तर— 'रक्त' और 'रक्तोदा' की सहायक-नदियाँ 14-हजार हैं। ✿✿

भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजन-शतविस्तारः षट् चैकोनविंशति-भागः योजनस्य ॥24॥

अर्थ — 'भरत-क्षेत्र' का विस्तार पाँच-सौ छब्बीस-सही छह-बटे-उन्नीस ($526^6/_{19}$) योजन है।

प्र. 1. 'भरत-क्षेत्र' का विस्तार कितना है?

उत्तर— 'भरत-क्षेत्र' का विस्तार पाँच-सौ छब्बीस-सही छह-बटे उन्नीस ($526^6/_{19}$) योजन है।

प्र. 2. 'षड्विंशति' का क्या अर्थ है?

उत्तर— 'षड्विंशति' का अर्थ 'छब्बीस' है।

प्र. 3. 'पञ्चयोजन-शत' का क्या अर्थ है?

उत्तर— 'पञ्चयोजन-शत' अर्थ पाँच-सौ योजन है।

प्र. 4. *'चैकोनविंशतिभागा:' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'च' का अर्थ है 'और' ओर 'एकोनविंशति' का अर्थ है 'उन्नीस'।

प्र. 5. *सूत्र में 'सही-बटा' अर्थ कैसे निकला?*

उत्तर— सूत्र में जो 'भागा:' शब्द आया है, उससे 'सही-बटा' अर्थ निकला है। ✿✿

तद्-द्विगुण-द्विगुणविस्तारा वर्षधर वर्षा विदेहान्ता: ॥25॥

अर्थ — 'विदेह-पर्यन्त' पर्वत और क्षेत्रों का 'विस्तार भरत-क्षेत्र' के विस्तार से दूना-दूना है।

प्र. 1. *'आगे-आगे' के पर्वत और क्षेत्रों का विस्तार कितना है?*

उत्तर— 'आगे-आगे' के पर्वत और क्षेत्रों का विस्तार 'भरत-क्षेत्र' के विस्तार से 'दूना-दूना' है।

प्र. 2. *'वर्ष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'वर्ष' का अर्थ है 'क्षेत्र'।

प्र. 3. *'वर्षधर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'वर्षधर' पर्वत को कहते हैं।

प्र. 4. *क्या सभी पर्वतों और क्षेत्रों का विस्तार दूना-दूना है?*

उत्तर— नहीं, मात्र 'विदेह-क्षेत्रपर्यन्त' क्षेत्रों का विस्तार दूना-दूना है।

प्र. 5. *'विदेहान्ता' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'विदेहान्ता' का अर्थ है 'विदेह-क्षेत्रपर्यन्त'। ✿✿

उत्तरा दक्षिणतुल्या: ॥26॥

अर्थ — 'विदेह' के 'उत्तर' के क्षेत्रों और पर्वतों का विस्तार 'दक्षिण' के क्षेत्रों और पर्वतों के समान है।

प्र. 1. *'विदेह' के 'उत्तर-दिशा' के पर्वत और क्षेत्रों का विस्तार कितना है?*

उत्तर— 'विदेह' के 'उत्तर-दिशा' के पर्वतों और क्षेत्रों का विस्तार 'दक्षिण' के क्षेत्रों और पर्वतों के समान है।

प्र. 2. *'भरत-क्षेत्र' के विस्तार के समान कौन-से क्षेत्र का विस्तार है?*

उत्तर— 'भरत-क्षेत्र' का विस्तार 'ऐरावत-क्षेत्र' के समान है।

प्र. 3. *'हिमवान-पर्वत' का विस्तार किसके समान है?*

उत्तर— 'हिमवान-पर्वत' का विस्तार 'शिखरी-पर्वत' के समान है।

प्र. 4. *'हैमवत-क्षेत्र' का विस्तार किसके समान है?*

उत्तर— 'हैमवत-क्षेत्र' का विस्तार 'हैरण्य-क्षेत्र' के समान है।

प्र. 5. *'महाहिमवान-पर्वत' का विस्तार किसके समान है?*

उत्तर— 'महाहिमवान-पर्वत' का विस्तार 'रुक्मि-पर्वत' के समान है।

प्र. 6. *'हरिक्षेत्र' का विस्तार किसके समान है?*

उत्तर— 'हरिक्षेत्र' का विस्तार 'रम्यक-क्षेत्र' के समान है।

प्र. 7. *'निषध-पर्वत' का विस्तार किसके समान है?*

उत्तर— 'निषध-पर्वत' का विस्तार 'नील-पर्वत' के समान है।

प्र. 8. *'दक्षिणतुल्याः' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'दक्षिणतुल्याः' का अर्थ 'दक्षिण के समान' है।

प्र. 9. *'ऐरावत' आदि क्षेत्रों और पर्वतों में स्थित कमलों का विस्तार क्या है?*

उत्तर— 'ऐरावत' आदि क्षेत्रों और पर्वतों में स्थित कमलों का विस्तार 'भरत' आदि क्षेत्रों और पर्वतों में स्थिति कमलों के विस्तार के समान है। ✿✿

भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ॥27॥

अर्थ — 'भरत' और 'ऐरावत-क्षेत्रों' में 'उत्सर्पिणी' और 'अवसर्पिणी' के छह-समयों की अपेक्षा 'वृद्धि' और 'ह्रास' होता है।

प्र. 1. *क्या 'भरत' और 'ऐरावत-क्षेत्रों' में मनुष्य का अनुभव और आयु एकसमान रहते हैं?*

उत्तर— 'भरत' और 'ऐरावत' क्षेत्रों में 'उत्सर्पिणी' और 'अवसर्पिणी' के छह-समयों की अपेक्षा बढ़ता और घटता रहता है।

प्र. 2. *'भरत' और 'ऐरावत' क्षेत्रों में वृद्धि और ह्रास किनका होता है?*

उत्तर— 'भरत' और 'ऐरावत' क्षेत्रों में रहनेवाले सभी-जीवों के आयु, अनुभव, शरीर के प्रमाण आदि में वृद्धि और ह्रास होता रहता है।

प्र. 3. *'अनुभव', 'आयु' और 'प्रमाण' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— सुख-दुःख के उपयोग को 'अनुभव' कहते हैं, जीवितकाल के प्रमाण को 'आयु' कहते हैं, और शरीर की ऊँचाई को 'प्रमाण' कहते हैं।

प्र. 4. *'वृद्धि-ह्रास' किस निमित्त से होता है?*

उत्तर— 'उत्सर्पिणी' और 'अवसर्पिणी' — इन दो-कालों के निमित्त से 'वृद्धिह्रास' होता है।

प्र. 5. *'उत्सर्पिणी' और 'अवसर्पिणी-काल' किन्हें कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें अनुभव आयु आदि की वृद्धि हो, वह 'उत्सर्पिणी-काल' है, तथा जिसमें इनका ह्रास हो, वह 'अवसर्पिणी-काल' है।

प्र. 6. *'अवसर्पिणी-काल' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अवसर्पिणी-काल' के छह-भेद हैं — सुषमा-सुषमा, सुषमा, सुषमा-दुषमा, दुषमा-सुषमा, दुषमा, दुषमा-दुषमा।

प्र. 7. *'उत्सर्पिणी-काल' के कितने भेद हैं, और कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— दुषमा-दुषमा, दुषमा, दुषमा-सुषमा, सुषमा-दुषमा, सुषमा, और सुषमा- सुषमा — ये छह भेद होते हैं।

प्र. 8. *'उत्सर्पिणी' और 'अवसर्पिणी-काल' कितने वर्षों के होते हैं?*

उत्तर– 'उत्सर्पिणी' और 'अवसर्पिणी' – दोनों का काल दस दस कोडाकोडी-सागर के समान होता है।

प्र. 9. *'कल्पकाल' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'एक-उत्सर्पिणी' और 'एक-अवसर्पिणी-काल' को मिलाकर एक 'कल्पकाल' बनता है। ऐसे बीस कोडाकोडी-सागर का एक 'कल्पकाल' होता है।

प्र. 10. *'उत्सर्पिणी' और 'अवसर्पिणी-काल' का समय कितना-कितना है?*

उत्तर—

सुषमा-सुषमा	—	4 कोडाकोडी अर्द्धसागर
सुषमा-काल	—	3 कोडाकोडी अर्द्धसागर
सुषमा-दुषमा	—	2 कोडाकोडी अर्द्धसागर
दुषमा-सुषमा	—	1 कोडाकोडी अर्द्धसागर कम 42,000 वर्ष
दुषमा-काल	—	21,000-वर्ष
दुषमा-दुषमा	—	21,000-वर्ष

प्र. 11. *'कुलकरों' की उत्पत्ति कौन-से काल में होती है?*

उत्तर— तृतीय-काल में पल्य का आठवाँ-भाग शेष रहने पर 'कुलकरों' की उत्पत्ति होती है।

प्र. 12. *'त्रेसठ-शलाका' के पुरुषों की उत्पत्ति कब होती है?*

उत्तर— 'त्रेसठ-शलाका' के पुरुषों की उत्पत्ति चौथे-काल में होती है।

प्र. 13. *'त्रेसठ-शलाका' के पुरुष कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 24-तीर्थंकर, 9-नारायण, 9-प्रतिनारायण, 9-बलभद्र और 12-चक्रवर्ती 'त्रैसठ-शलाका' के पुरुष हैं।

प्र. 14. *इनकी उत्पत्ति चौथे-काल में ही क्यों होती है?*

उत्तर— इनकी उत्पत्ति चौथे-काल में होती है, क्योंकि इस काल में मुक्ति का द्वार

खुला रहता है। पंचम-काल में मुक्ति नहीं है।

प्र. 15. *वर्तमान में 'भरत-ऐरावत' में कौन-सा काल चल रहा है?*

उत्तर— वर्तमान में 'भरत-ऐरावत' में 'हुण्डावसर्पिणी-काल' चल रहा है।

प्र. 16. *'हुण्डावसर्पिणी-काल' कितने 'कल्पकाल' बीतने पर आता है?*

उत्तर— असंख्यात 'अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी-काल' की शलाकाओं के बीत जाने पर एक 'हुण्डावसर्पिणी-काल' आता है।

प्र. 17. *इस काल की विशेषता क्या है?*

उत्तर— इस काल में अनहोनी बातें होती हैं, जैसे तीसरे-काल में कुलकर व तीर्थंकरों की उत्पत्ति, तीर्थंकरों पर उपसर्ग, चक्रवर्ती का मानभंग, ब्राह्मण-वर्ण की स्थापना आदि।

प्र. 18. *'प्रलयकाल' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'प्रलयकाल' में पृथ्वी पर चारों-तरफ हाहाकर मच जाता है, और घोर विप्लव हो जाता है।

प्र. 19. *'प्रलयकाल' कब होता है?*

उत्तर— 'अवसर्पिणी-काल' में दु:षमा-दु:षमाकाल के अंत में 49 दिन शेष रहने पर भयानक घोर-प्रलय होती है।

प्र. 20. *'पुन:सृष्टि' का प्रारंभ कैसे होता है?*

उत्तर— प्रारंभ में उन्चास-दिनपर्यन्त रात-दिन क्षीर-मेघ बरसते हैं, और पुनः उतने ही दिन अमृत-मेघ बरसते हैं। उन मेघों से वर्ण-आदि गुण उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे 'पुन:सृष्टि' होती है।

प्र. 21. *'भोग-भूमियों' में पशुओं की आयु व भोजन क्या हैं?*

उत्तर— सभी पशु विशिष्ट-तृण खाते हैं, और मनुष्यों के समान ही आयुवाले होते हैं।

प्र. 22. *'भोगभूमि' में जीवों का स्वभाव कैसा होता है?*

उत्तर— 'भोगभूमि' में मनुष्य स्वभाव से मृदुभाषी होते हैं, तथा वे सर्वगुण-सम्पन्न होते हैं।

प्र. 23. *'भोगभूमि' में कौन-से जीव नहीं होते हैं?*

उत्तर— 'भोगभूमि' में 'नपुंसक-मनुष्य' और 'विकलत्रय' नहीं होते हैं। ✿✿

ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः ।।28।।

अर्थ — 'भरत' और 'ऐरावत' के सिवा शेष-भूमियाँ 'अवस्थित' हैं।

प्र. 1. *'भरत' और 'ऐरावत' के सिवा शेष-भूमियाँ कैसी हैं?*

उत्तर- 'भरत' और 'ऐरावत' के सिवा शेष-भूमियाँ 'अवस्थित' (एक जैसे कालवाली) हैं।

प्र. 2. क्या इनमें काल-परिवर्तन होता है?

उत्तर- नहीं, इनमें काल-परिवर्तन नहीं होता है।

प्र. 3. 'अवस्थित-भूमियाँ' कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर- 'हैमवत', 'हरिवर्ष', और 'देवकुरू'-ये 'अवस्थित-भूमियाँ' हैं। ✿✿

एक-द्वि-त्रि-पल्योपमस्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैवकुरवकाः ॥ 29 ॥

अर्थ - हैमवत हरिवर्ष और देवकुरू के मनुष्यों की स्थिति क्रम से एक, दो और तीन 'पल्योपम-प्रमाण' है।

प्र. 1. *'अवस्थित-भूमियों' में मनुष्य की आयु की स्थिति किस प्रकार है?*

उत्तर- हैमवत, हरिवर्ष और देवकुरू के मनुष्यों की स्थिति क्रम से एक, दो, और तीन 'पल्योपम-प्रमाण' है।

प्र. 2. *'दक्षिण' के क्षेत्र कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर- 'हैमवत', हरिवर्ष' और 'देवकुरू'-ये दक्षिण के क्षेत्र हैं।

प्र. 3. *'हैमवत' के मनुष्यों में क्या-क्या विशेषतायें हैं?*

उत्तर- ढाई-द्वीप में 'हैमवत-क्षेत्रों' में सदा 'सुषमा-दुःषमाकाल' रहता है। इसमें मनुष्यों की आयु एक-पल्य, ऊँचाई दो-हजार धनुष, आहार एक-दिनके अंतराल से और शरीर का रंग 'नील-कमल' के समान होता है।

प्र. 4. *'हरिवर्ष' के मनुष्यों में क्या-क्या विशेषतायें हैं?*

उत्तर- 'पाँच-हरिक्षेत्रों' में सदा 'सुषमाकाल' रहता है। इसमें मनुष्यों की आयु दो-पल्य, ऊँचाई चार-हजार धनुष, आहार दो-दिन के अन्तराल से और शरीर का रंग 'शंख' के समान 'सफेद' है।

प्र. 5. *देवकुरू' के मनुष्यों में क्या-क्या विशेषतायें हैं?*

उत्तर- 'पाँच-देवकुरू-क्षेत्रों' में सदा सुषमा-सुषमाकाल रहता है। इसमें मनुष्यों की आयु तीन-पल्य की, ऊँचाई छह-हजार धनुष, भोजन तीन-दिनों के अंतराल से तथा शरीर का रंग 'सोने' के समान 'पीला' होता है। ✿✿

तथोत्तराः ॥ 30 ॥

अर्थ - 'दक्षिण' के 'समान' उत्तर में हैं।

प्र. 1. *'उत्तरवर्ती-क्षेत्रों' की स्थिति कैसी होती है?*

उत्तर– 'उत्तरवर्ती–क्षेत्रों' की स्थिति 'दक्षिणवर्त्ती–क्षेत्रों' के समान होती है।

प्र. 2. 'दक्षिण' के क्षेत्र कौन–कौन से हैं?

उत्तर– हैरण्यवत 'रम्यक–क्षेत्र' और 'उत्तरकुरू' दक्षिण के क्षेत्र हैं।

प्र. 3. 'हैरण्यवत–क्षेत्र' के मनुष्यों में क्या–क्या विशेषतायें हैं?

उत्तर– हैरण्यवत क्षेत्र में 'हैमवत' के समान मनुष्यों की आयु एक–पल्य, ऊँचाई दो हजार धनुष, आहार एक दिन के बाद तथा उनके शरीर का रंग 'नीलकमल' के समान है।

प्र. 4. 'रम्यक–क्षेत्र' के मनुष्यों में क्या–क्या विशेषतायें हैं?

उत्तर– 'हरिवर्ष' के समान रम्यक क्षेत्र में मनुष्यों की आयु दो–पल्य, ऊँचाई चार हजार धनुष, आहार दो दिन बाद और शरीर का रंग 'शंख' के समान 'श्वेत' होता है।

प्र. 5. 'उत्तरकुरू' के मनुष्यों में क्या–क्या विशेषतायें हैं?

उत्तर– 'उत्तरकुरू' में मनुष्यों की आयु तीन पल्य और उंचाई छह हजार धनुष होती है, वे तीन दिन में एक बार आहार ग्रहण करते है तथा उनके शरीर का रंग सोने के समान पीला होता है। ✿✿

विदेहेषु संख्येयकाला: ॥31॥

अर्थ – 'विदेह–क्षेत्र' के भागों में संख्यातवर्ष की आयुवाले मनुष्य हैं।

प्र. 1. विदेह–क्षेत्र' में मनुष्य कितनी आयु वाले होते हैं?

उत्तर– विदेह क्षेत्र में मनुष्य संख्यातवर्ष की आयु वाले होते हैं।

प्र. 2. 'विदेह–क्षेत्र' के मनुष्यों की उंचाई और आहार कैसा होता है?

उत्तर– विदेह क्षेत्र के मनुष्यों की उंचाई पांच सौ धनुष और प्रतिदिन भोजन करने वाले होते हैं।

प्र. 3. 'विदेह क्षेत्र' के मनुष्यों की उत्कृष्ट और जघन्य आयु कितनी होती है?

उत्तर– उत्कृष्ट–आयु एक पूर्व कोटी अर्थात् सत्तर लाख करोड़ वर्ष और जघन्य आयु छप्पन हजार करोड़ वर्ष है। ✿✿

भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशत भाग:॥32॥

अर्थ –'भरत–क्षेत्र' का विस्तार जम्बूद्वीप का एक सौ नब्बेवाँ भाग है।

प्र. 1. 'भरत–क्षेत्र' का विस्तार कितना है?

उत्तर– 'भरत–क्षेत्र' का विस्तार जम्बद्वीप का एक–सौ नब्बेवाँ भाग है।

प्र. 2. 'भरत-क्षेत्र' का विस्तार जम्बूद्वीप का एक-सौ नब्बेवाँ भाग कैसे है?

उत्तर- 'जम्बूद्वीप' का विस्तार एक-लाख योजन है, उसमें एक-सौ नब्बे का भाग देने पर प्रमाण आता है $526^{6/19}$।—यह भरत-क्षेत्र का विस्तार है।

प्र. 3. कौन-सा समुद्र 'जम्बूद्वीप' को घेरे हुए है? उसका विस्तार कितना है?

उत्तर- लवण-समुद्र 'जम्बूद्वीप' को घेरे हुए है जिसका विस्तार दो-लाख योजन है।

प्र. 4. लवण, वारूणी, क्षीर और घृतोद-समुद्रों के जल का स्वाद कैसा है?

उत्तर- लवण-समुद्र का 'नमक' के समान, वारूणी का 'मदिरा' के समान, क्षीर का 'दूध' के समान तथा घृतोद-समुद्र का स्वाद 'घृत' के समान है।

प्र. 5. कालोदधि, पुष्कर, स्वयंभूरमण और अन्य समुद्रों के जल का स्वाद कैसा है?

उत्तर- कालोदधि, पुष्कर, स्वयंभूरमण समुद्र के जल का स्वाद 'जल' के समान है। अन्य समुद्रों के जल का स्वाद 'इक्षुरस' के समान है।

प्र. 6. 'जलचर-जीव' कौन-कौन-से समुद्रों में होते हैं?

उत्तर- लवणोदधि, कालोदधि और स्वयंभूरमण-समुद्रों में ही 'जलचर-जीव' होते हैं।

प्र. 7. सबसे उन्नत-जल कौन-से समुद्र का है?

उत्तर- 'लवण-समुद्र' का जल सबसे उन्नत है।

प्र. 8. 'लवण-समुद्र' को कौन-सा द्वीप घेरे हुए है? इसका विस्तार कितना है?

उत्तर- 'लवण-समुद्र' को 'धातकीखण्ड-द्वीप' घेरे हुए है। इसका विस्तार चार-लाख योजन है।

✿✿

द्विर्धातकीखण्डे ॥ 33 ॥

अर्थ – 'धातकीखण्ड' में क्षेत्र तथा पर्वत आदि 'जम्बूद्वीप' से दूने है।

प्र. 1. 'धातकीखण्ड-द्वीप' में क्षेत्र, पर्वत-आदि की संख्या कितनी है?

उत्तर- 'धातकीखण्ड-द्वीप' में क्षेत्र, पर्वत-आदि की संख्या 'जम्बूद्वीप' से दूनी है।

प्र. 2. 'धातकीखण्ड' में दूने-दूने क्या-क्या है?

उत्तर- 'धातकीखण्ड' में 'मेरू' दो हैं, पूर्व में 'विजय' और पश्चिम में 'अचल' दो-दो भरतादि-क्षेत्र, दो-दो हिमवनादि तथा 6-पर्वत है।

प्र. 3. 'धातकीखण्ड' में कमल-आदि का विस्तार कितना है?

उत्तर- 'धातकीखण्ड' में कमलादि का विस्तार दूना-दूना है।

प्र. 4. 'धातकीखण्ड' को पूर्व-पश्चिम विभाजित करने वाला पर्वत कौन-सा है?

उत्तर- 'धातकीखण्ड' को 'इष्वाकार-पर्वत' विभाजित करता है।

प्र. 5. 'धातकीखण्ड-द्वीप. का यह नाम कैसे है?

उत्तर- धातकीखण्ड-द्वीप' में 'धातकी-वृक्ष' स्थित है, इसलिए इसका नाम सार्थक है।

प्र. 6. 'धातकीखण्ड' को कौन-सा समुद्र घेरे हुए है? उसका विस्तार कितना है?

उत्तर- 'धातकीखण्ड' को 'कालोदधि-समुद्र' घेरे हुए है। इसका विस्तार आठ-लाख योजन है।

प्र. 7. 'कालोदधि' को घेरे हुए कौन-सा द्वीप है? इसका विस्तार कितना है?

उत्तर- 'कालोदधि' को घेरे हुए 'पुष्करद्वीप' है, इसका विस्तार सोलह-लाख योजन है। ✿✿

पुष्करार्द्धे च ॥ 34 ॥

अर्थ - 'पुष्करार्ध' में उतने ही क्षेत्र और पर्वत है।

प्र. 1. 'पुष्करार्द्ध-द्वीप' में कितने क्षेत्र व द्वीप हैं?

उत्तर- 'पुष्करार्द्ध-द्वीप' में उतने ही क्षेत्र व पर्वत हैं, जितने की 'धातकीखण्ड' में हैं।

प्र. 2. 'पुष्करार्द्ध' में पर्वत-मेरू व क्षेत्रों की संख्या कितनी है?

उत्तर- 'पुष्करार्द्ध-द्वीप' में दो 'इष्वाकार-पर्वत'-'मन्दर' व 'विद्युन्माली', दो मेरू, तथा भरतादि-क्षेत्र दो-दो हैं। तथा हिमवान आदि पर्वत भी दो-दो हैं।

प्र. 3. इस पर्वत का नाम 'पुष्कर' क्यों पड़ा?

उत्तर- 'पुष्कर-द्वीप' में 'पुष्कर-वृक्ष' है, इसलिए इस द्वीप का नाम 'पुष्कर-द्वीप' है।

प्र. 4. 'पुष्कर-द्वीप' का नाम 'पुष्करार्द्ध' क्यों पड़ा?

उत्तर- 'मानुषोत्तर-पर्वत' के द्वारा 'पुष्कर-द्वीप' के दो-भाग हो जाते हैं, ऐसे आधे पुष्कर-द्वीप को 'पुष्करार्द्ध' कहते हैं।

प्र. 5. सूत्र में 'च' शब्द क्यों ग्रहण किया?

उत्तर- 'धातकीखण्ड' के समान 'पुष्करार्द्ध-द्वीप' है, इस बात को कहने के लिए 'च' शब्द ग्रहण किया है। ✿✿

प्राङ् मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥ 35 ॥

अर्थ - 'मानुषोत्तर पर्वत' के पहले तक ही मनुष्य पाये जाते है।

प्र. 1. मनुष्य कहाँ तक पाये जाते है?

उत्तर- 'मानुषोत्तर-पर्वत' के पहले तक ही मनुष्य पाए जाते हैं।

प्र. 2. 'मानुषोत्तर-पर्वत' कहाँ पर है?

उत्तर- 'पुष्कर-द्वीप' के मध्य में 'चूड़ी' के समान 'गोल' 'मानुषोत्तर-पर्वत' है।

प्र. 3. *मनुष्य कितने क्षेत्र में पाए जाते है?*

उत्तर— अढाई-द्वीप और इनके मध्य में आनेवाले दो-समुद्रों तक 'मनुष्यलोक' है, जिसमें मनुष्य पाए जाते हैं।

प्र. 4. *'अढाई-द्वीप' और 'दो-समुद्र' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड-द्वीप और आधा पुष्कर-द्वीप — ये अढाई-द्वीप हैं। 'लवणोदधि' व 'कालोदधि' — ये दो-समुद्र हैं।

प्र. 5. *'मानुषोत्तर-पर्वत का नाम मानुषोत्तर क्यों हैं?*

उत्तर— 'मनुष्यलोक' की सीमा पर स्थित होने के कारण इसका नाम 'मानुषोत्तर-पर्वत' है।

प्र. 6. *'मानुषोत्तर-पर्वत' का विस्तार कितना है?*

उत्तर— 'मानुषोत्तर-पर्वत' सत्रह-सौ इक्कीस-योजन ऊँचा, और चार-सौ तीस-योजन भूमि के अन्दर है। मूल में एक-सौ बाईस-योजन, मध्य में सात-सौ तैंतीस-योजन, तथा ऊपर चार-सौ चौबीस-योजन है।

प्र. 7. *'मानुषोत्तर-पर्वत' पर कितने 'चैत्यालय' हैं?*

उत्तर— 'मानुषोत्तर पर्वत' के चारों-दिशाओं में चार 'चैत्यालय' है।

प्र. 8. *क्या 'मनुष्य-क्षेत्र' के बाहर दूसरे 'विद्याधर' या 'ऋद्धिधारी-मुनि' जा सकते हैं?*

उत्तर— नहीं, 'मनुष्य-क्षेत्र' के बाहर दोनों ही नहीं जा सकते हैं।

प्र. 9. *'मनुष्य-जन्म' आवश्यक क्यों है?*

उत्तर— 'मनुष्य-जन्म' इसलिये आवश्यक है, क्योंकि संयम की आराधना और रत्नत्रय की प्राप्ति मानव-पर्याय में ही है। ✿✿

आर्या म्लेच्छाश्च ।।36।।

अर्थ — 'मनुष्य' दो-प्रकार के हैं — 'आर्य' और 'म्लेच्छ'।

प्र. 1. *'मनुष्य' कितने प्रकार के हैं?*

उत्तर— 'मनुष्य' दो-प्रकार के है — 'आर्य' और 'म्लेच्छ'।

प्र. 2. *'आर्य' किन्हें कहते हैं?*

उत्तर— जो गुणों से सहित हों, और गुणवान्-लोगों के बीच रहते हैं, उन्हें 'आर्य' कहते हैं।

प्र. 3. *'म्लेच्छ' किन्हें कहते हैं?*

उत्तर— जो निर्लज्जतापूर्वक कुछ भी बोलते एवं व्यवहार करते हैं, उन्हे 'म्लेच्छ' कहते हैं।

प्र. 4. *'आर्य-मनुष्यों' के कितने भेद हैं?*

उत्तर— 'आर्य-मनुष्यों' के दो-भेद हैं — 'ऋद्धिप्राप्त-आर्य' और 'ऋद्धिरहित-आर्य'।

प्र. 5. *'ऋद्धि' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'ऋद्धि' के आठ-भेद हैं — बुद्धि, क्रिया, विक्रिया, तप, बल, औषध, रस और क्षेत्र।

प्र. 6. *'बुद्धि-ऋद्धि' के कितने भेद हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'बुद्धि-ऋद्धि' के अठारह-भेद हैं — अवधिज्ञानी, मन:पर्ययज्ञानी, केवलज्ञानी, बीजबुद्धिधारी, कोष्ठबुद्धिधारी, संभिन्नश्रोत्री, पदानुसारी, दूरस्पर्शी, दूरास्वादी, दूरघ्राणसमर्थ, दूरश्रवणसमर्थ, दूरावलोकनसमर्थ, दसपूर्वी, चौदहपूर्वी, अष्टांगमहानिमित्तज्ञ, प्रत्येकबुद्ध, वादी, और प्रज्ञाश्रमण।

प्र. 7. *'अवधिज्ञानी-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— यह ऋद्धि देशावधि, सर्वावधि, और परमावधि — तीन प्रकार की है। त्रिकालगोचर रूपी-पदार्थों को देश-काल की मर्यादा से जान लेना 'अवधिऋद्धि' है।

प्र. 8. *'मन:पर्यय-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरे के मन की स्थिति को इन्द्रियों की सहायता के बिना जान लेना 'मन:पर्यय-ऋद्धि' है। यह दो-प्रकार की है — 'ऋजुमति' और 'विपुलमति'

प्र. 9. *'केवल-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— केवलज्ञान व केवलदर्शन होना, जिसमें रूपी-अरूपी द्रव्यों के समस्त-गुणों का जानना व देखना 'केवल-ऋद्धि' है।

प्र. 10. *'बीजबुद्धिधारी-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी-ग्रन्थ के एक-श्लोक को पढ़कर पूरे-ग्रन्थ का ज्ञान होना 'बीज-बुद्धिधारी-ऋद्धि' है।

प्र. 11. *'कोष्ठबुद्धि-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसप्रकार कोठे में अनेक प्रकार की वस्तुयें रखी रहती हैं, और जरूरत पड़ने पर कोई भी वस्तु निकाल लेते है। उसीप्रकार कुछ भी पढ़े या सुने वह भिन्न-भिन्न याद रहे, एक-वार्ता का अक्षर दूसरी-वार्ता में न मिले उसे 'कोष्ठबुद्धि-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 12. *'संभिन्नश्रोत्री-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बारह-योजन लम्बे, नौ-योजन चौड़े क्षेत्र के मनुष्य, पशुओं की आवाज एकसाथ एककाल में अलग-अलग सुनना 'संभिन्नश्रोत्री-ऋद्धि' है।

प्र. 13. *'पदानुसारी-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आदि-मध्यान्त के एक-एक पद से ही समस्त-ग्रंथ का कंठाग्र हो याद हो

जाना 'पदानुसारी-ऋद्धि' है।

प्र. 14. *'दूरस्पर्शी-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आठ-प्रकार के स्पर्श का ज्ञानवायु के स्पर्श होने से हो जाना 'दूरस्पर्शी-ऋद्धि' है।

प्र. 15. *'दूरास्वादी-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'मनुष्य-क्षेत्र' के रसों का दूर से स्वाद जान लेना 'दूरास्वादी-ऋद्धि' है।

प्र. 16. *'दूरघ्राण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बहुत-दूर से सुगन्ध, दुर्गन्ध को सूंघना 'दूरघ्राण-ऋद्धि' है।

प्र. 17. *'दूरश्रवण-ऋद्धि' किसे कहते हैं।*

उत्तर— सात-प्रकार के स्वरों को दूर से सुनना और जानना 'दूरश्रवण-ऋद्धि' है।

प्र. 18. *'दूरावलोकन-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'प्रत्येक-पदार्थ' को दूर से देखना और जानना 'दूरावलोकन-ऋद्धि' है।

प्र. 19. *'दसपूर्वी-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे दसपूर्व का ज्ञान हो, उसे 'दसपूर्वी-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 20. *'चौदहपूर्वी-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे चौदह-पूर्व का ज्ञान हो, उसे 'चौदहपूर्वी-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 21. *'अष्टांगमहानिमित्तज्ञ-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पशु-पक्षियों की भाषा सुनकर, ग्रह-नक्षत्रादिक को देखकर पृथ्वी के कम्पनादि लक्षणों को जानकर, वैद्यक, सामुद्रिक आदि से मनुष्य तथा चौपायों का, वस्त्र-शस्त्र पशु-पक्षी आदि से, तिल-मस्सा, लहसन आदि अंग के चिह्नों से, श्रीवत्स, शंख-चक्रादि चिह्नों को देखकर, स्वप्न आदि के निमित्त से शुभ-अशुभ को जानना 'अष्टांगमहानिमित्तज्ञ-ऋद्धि' है।

प्र. 22. *'प्रत्येकबुद्धि-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्रियों को दमनकर तपश्चरण करना 'प्रत्येकबुद्धि-ऋद्धि' है।

प्र. 23. *'वादी-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरे को वाद-विवाद से जीतना 'वादी-ऋद्धि' है।

प्र 24. *'प्रज्ञाश्रमण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पदार्थों के भेद को बिना शास्त्र पढे स्वयं जान लेना 'प्रज्ञाश्रमण-ऋद्धि' है।

प्र. 25. *'क्रियाऋद्धि' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'क्रियाऋद्धि' के दो-मूलभेद और दस-उत्तरभेद हैं। दो-मूलभेद 'चारणऋद्धि' और 'आकाशगामिनी-ऋद्धि' हैं, तथा दस-उत्तरभेद हैं।

प्र. 26. *'चारण-ऋद्धि' के भेद कौन-कौन से हैं?* 9 भेद कहे हैं।

उत्तर— 'चारण-ऋद्धि' के भेद — जलचारण, जंघाचारण, पुष्पचारण, फलचारण, नभचारण, श्रेणी, तन्तुचारण और अग्निशिखाचारण हैं एवं बीजांकुरचारण।

प्र. 27. *'आकाशगामिनी-ऋद्धि' के भेद कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'पद्मासन' और 'कायोत्सर्ग-ऋद्धि' — ये 'आकाशगामिनी-ऋद्धि' के दो-भेद हैं।

प्र. 28. *'जलचारण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे भूमि, वायु और जल पर समानरूप से गमन कर सकते हैं, उसे 'जलचारण-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 29. *'जंघाचारण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे पृथ्वी से चार-अंगुल ऊपर चल सकते हैं, उसे 'जंघाचारण-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 30. *'पुष्पचारण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे पुष्पों पर पाँव रखते हुए गमन करें, परन्तु फिर भी फूल न टूटें, उसे 'पुष्पचारण-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 31. *'फलचारण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे फलों पर पैर रखकर चलने पर भी फल न टूटें, उसे 'फलचारण-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 32. *'पत्रचारण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे पत्तों पर पैर रखकर चलने पर भी पत्ते न टूटें, उसे 'पत्रचारण-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 33. *'शयनचारण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे कोमल-तन्तुवाली-बेल पर पैर रखकर चलने पर भी बेल न टूटे, उसे 'शयनचारण-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 34. *'तन्तुचारण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे मकड़ी के तन्तु पर पैर रखकर चलने पर भी तन्तु न टूटे, उसे 'तन्तुचारण-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 35. *'अग्निशिखाचारण-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे अग्निशिखा पर पैर रखकर चलने पर भी पैर न जले, उसे 'अग्निशिखाचारण-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 36. *'पद्मासन-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर- जिससे पद्मासन बैठे हुए आकाश में गमन कर सकते है, उसे 'पद्मासन-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 37. 'कायोत्सर्ग-ऋद्धि' किसे कहते हैं?

उत्तर- जिससे खड़े हुए आकाश में जा सकते हैं, उसे 'कायोत्सर्गचारण-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 38. 'विक्रिया-के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर- 'विक्रिया-ऋद्धि' के ग्यारह-भेद हैं-अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशवरत्व, वशित्व, अप्रतिघात, अन्तर्ध्यान और कामरूपित्व।

प्र. 39. 'अणिमा 'ऋद्धि' किसे कहते हैं?

उत्तर- जिसके बल से अपना शरीर छोटा कर सकते है, उसे 'अणिमा-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 40. 'महिमा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?

उत्तर- जिससे पर्वत के समान दीर्घ-शरीर धारण कर सकते है, उसे 'महिमा-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 41. 'लघिमा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?

उत्तर- जिसके बल से आक-वृक्ष के तूल-समान हल्का-शरीर धारण कर सकते हैं, उसे 'लघिमा-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 42. 'गरिमा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?

उत्तर- जिसके बल से पर्वत के समान भारी-शरीर धारण कर सकते है, उसे 'गरिमा-ऋद्धि' कहते है।

प्र. 43. 'प्राप्ति-ऋद्धि' किसे कहते है?

उत्तर- जिससे पृथ्वी पर बैठे हुए मेरू-आदि को पैर के अंगूठे से स्पर्श कर सकते हैं, वह 'प्राप्ति-ऋद्धि' है।

प्र. 44. 'प्राकाम्य-ऋद्धि' किसे कहते हैं?

उत्तर- जिससे समुद्र, सरोवर आदि के जल पर पृथ्वी पर गमन के समान गमन करते है, उसे 'प्राकाम्य-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 45. 'ईशवरत्व-ऋद्धि' किसे कहते है?

उत्तर- जिससे अपनी इच्छानुसार वैभव-धारण कर सकते हैं, उसे 'ईशवरत्व-ऋद्धि' कहते है।

प्र. 46. 'वशित्व-ऋद्धि' किसे कहते है?

उत्तर- जिससे मनुष्य, पशु-पक्षी आदि को इच्छानुसार वश में कर सकते है, उसे 'वशित्व-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 47. *'अप्रतिघात-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे पर्वत, कोट-आदि को भेदकर अनिरुद्ध-आकाशवत् अर्थात् बिना-रुकावट चले जायें, उसे 'अप्रतिघात-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 48. *'अन्तर्ध्यान-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे अन्य-मनुष्यों को दिखाई नहीं देते, और स्वयं सब-मनुष्यों को देख सकते हैं, उसे 'अन्तर्ध्यान-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 49. *'कामरूपित्व-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे पशु, पक्षियों आदि का रूप इच्छानुसार बना सकते हैं, उसे 'कामरूपित्व-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 50. *'तप-ऋद्धि' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— तप-ऋद्धि के सात-भेद हैं — घोर-ऋद्धि, महत्-ऋद्धि, उग्रतप-ऋद्धि, दीप्ति-ऋद्धि, तप-ऋद्धि, घोरगुण-ऋद्धि, घोरब्रह्मचर्य-ऋद्धि।

प्र. 51. *'घोर-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— श्मशान आदि भयानक-स्थानों में निःशंक-ध्यान लगाकर परिषह सह लेने को 'घोर-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 52. *'महत्-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिना किसी-बाधा के 108-व्रत का क्रमपूर्वक पालन करना और उपवास करना 'महत्-ऋद्धि' है।

प्र. 53. *'उग्रतप-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक, दो अथवा तीन-दिन, पक्ष-मासादिक का उपवास प्रारम्भ कर मरणासन्न होने पर भी विचलित न होना 'उग्रतप-ऋद्धि' है।

प्र. 54. *'दीप्ति-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'घोर-तप' करने से भी देह की कान्ति-चमक न घटना 'दीप्ति-ऋद्धि' है।

प्र. 55. *'तप-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसप्रकार अग्नि में गिरने से सब-पदार्थ भस्म हो जाते हैं, उसीप्रकार जो वस्तु, अर्थात भोजन-ग्रहण किया जाए, उसका मल, मूत्र कुछ भी न बने उसे 'तप-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 56. *घोर (पराक्रम) गुणऋद्धि किसे कहते हैं?*

उत्तर— रोग-आदि के होने पर भी अनशन-आदि व्रत का अतिचार-रहित पालन करना 'घोरगुण-ऋद्धि' हैं।

प्र. 57. *'घोरब्रह्मचर्य-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ऐसा 'ब्रह्मचर्य धारण करना कि जिससे स्वप्न में भी चित्त चलायमान न हो, वह

'घोरब्रह्मचर्य-ऋद्धि' है।

प्र. 58. *'बलऋद्धि' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'बल-ऋद्धि' के तीन-भेद हैं — मनोबल, वचनबल और कायबल।

प्र. 59. *'मनोबल-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके बल से द्वादशांग-वाणी अंतर्मुहूर्त में पढ़ लिया जाये उसे 'मनोबल-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 60. *'वचनबल-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके बल से 'द्वादशांग-वाणी' का अंतर्मुहूर्त में वचन द्वारा पाठ कर लिया जाये, उसे 'वचनबल-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 61. *'कायबल-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'द्वादशांग-वाणी' का पाठ काय द्वारा अंतर्मूहुर्त में कर लेना 'कायबल-ऋद्धि' कहलाता है।

प्र. 62. *'औषध-ऋद्धि' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'औषध-ऋद्धि' के आठ-भेद हैं — विष्टा, मल, आम्र, उज्जवल, क्ष्वेल, सर्वौषधि, दृष्टिविष, और विषनाशन-ऋद्धि।

प्र. 63. *'विष्टा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि की विष्ठा रोगी के शरीर पर लग जाए तो सर्वरोगों का नाश होना 'विष्टा-ऋद्धि' है।

प्र. 64. *'मल-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि के कान, नाक-आदि के लगने से मलरोगी के सर्वरोगों का नाश होना 'मल-ऋद्धि' है।

प्र. 65. *'आम्र-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रोगी या दरिद्र का मुनि के शरीर से स्पर्श होने पर रोग व दरिद्रता का दूर हो जाना 'आम्र-ऋद्धि' कहलाता है।

प्र. 66. *'उज्जवल-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि के शरीर का पसीना दरिद्र या रोगी के लग जाए, तो दरिद्रता और रोग ठीक हो जाते हैं, उसे 'उज्जवल-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 67. *'क्ष्वेल-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि का मूत्र, कफ, थूक दरिद्री और रोगी के शरीर पर लग जाए, तो दरिद्रता व रोग ठीक हो जाता है, उसे 'क्ष्वेल-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 68. *'सर्वोषधि-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि के शरीर का स्पर्श कर जो हवा आती है, उसके लगते ही रोगी के सारे

रोग खत्म हो जाते हैं, उसे सर्वोषधि-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 69. *'दृष्टिविष-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी को साँप ने काटा हो या किसी न विष खा लिया हो, तो मुनि के देखते ही जहर खत्म हो जाता है, उसे 'दृष्टिविष-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 70. *'विषनाशन-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि को भोजन में कोई विष दे, तो उसका असर न हो, उसे 'विषनाशन-ऋद्धि' कहते हैं?

प्र. 71. *'रस-ऋद्धि' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'रस-ऋद्धि' के छह-भेद हैं — पयस्रवा, घृस्रवा, मिष्टास्रवा, अमृतस्रवा, आस्यविष, और दृष्टिविष।

प्र. 72. *'पयस्रवा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि जिस गृहस्थ के घर भोजन करे, तो उनके पाणिपात्र में रूक्षभोजन भी क्षीर-रसरूप में परिणमन हो जाए, और उस दिन समस्त रसोई दुग्धमय हो जाए, उसे 'पयःस्रवा-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 73. *'घृतस्रवा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि जिस गृहस्थ के घर भोजन करे, तो उस दिन समस्त-रक्ष (सूखा) भोजन भी घी-सहित हो जाता है, उसे 'घृतस्रवा-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 74. *'मिष्टस्रवा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि जिस गृहस्थ के घर भोजन करे, तो उस दिन रसोई मिष्टरस हो जाती है, उसे 'मिष्टस्रवा-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 75. *अमृतस्रवा-ऋद्धि किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि जिस गृहस्थ के घर भोजन करे, उस दिन रसोई अमृतमय हो जाती है, उसे 'अमृतस्रवा-ऋद्धि' कहते हैं?

प्र. 76. *'आस्यविष-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— विषहारी-जन्तु के मुख के काटने से जो विष चढ़ता है, उसे जो दूर करे, उसे 'आस्यविष-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 77. *'क्षेत्र-ऋद्धि' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— क्षेत्र-ऋद्धि के दो भेद हैं — 'अछिन्न-ऋद्धि', 'अवच्छिन्न-ऋद्धि'।

प्र. 78. *'अछिन्न-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि जिसके घर में आहार लेते हैं, उसे घर में उस दिन भोजन अटूट हो जाता है, उसे 'अछिन्न-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 79. *'अवच्छिन्न-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मुनि जिस चौके में आहार ले, उसमें चक्रवर्ती की सेना अलग बैठकर भोजन करे, तो भी कम नहीं पड़ता, उसे 'अविच्छिन्न-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 80. 'ऋद्धिरहित-आर्यों' के कितने भेद हैं, और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'ऋद्धिरहित-आर्यों' के पाँच-भेद हैं — सम्यक्त्व-आर्य, चारित्र-आर्य, कर्म-आर्य, जाति-आर्य और क्षेत्र-आर्य।

प्र. 81. 'सम्यक्त्वआर्य' और 'चारित्र-आर्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— व्रतरहित-सम्यग्दृष्टि 'सम्यक्त्व-आर्य' है, और चारित्र को पालनेवाले 'चारित्र-आर्य' हैं।

प्र. 82. 'दर्शन-आर्य' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'दर्शन-आर्य' के दस-भेद हैं — आज्ञा, मार्ग, उपदेश, सूत्र, बीज, संक्षेप, विस्तार, अर्थ, अवगाढ़ और परमावगाढ़।

प्र. 83. 'कर्म-आर्य' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'कर्म-आर्य' के तीन-भेद हैं — सावद्यकर्म-आर्य, अल्पसावद्यकर्म-आर्य, और असावद्यकर्म-आर्य।

प्र. 84. 'सावद्यकर्म-आर्य' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन से हैं?

उत्तर— 'सावद्यकर्म-आर्य' के छह-भेद हैं — असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प और वाणिज्य।

प्र. 85. 'असिकर्म-आर्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— तलवार, धनुष आदि शस्त्रविद्या में निपुण 'असिकर्म-आर्य' है।

प्र. 86. 'मसिकर्म-आर्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— द्रव्य के आय-व्यय आदि के लेखन में कुशल, मनुष्य 'मसिकर्म-आर्य' हैं।

प्र. 87. 'कृषि-कर्मआर्य किसे कहते हैं?

उत्तर— हल, कुलिश, दन्ताल आदि कृषि के उपकरणों को जानकर उनसे कृषिवाला 'कृषिकर्म-आर्य' है।

प्र. 88. 'विद्याकर्म-आर्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— लेखन, गणि, चित्र आदि बहत्तर-कलाओं में निपुण मानव, चौसठ-कलाओं में निपुण-स्त्री को 'विद्याकर्म-आर्य' कहते हैं।

प्र. 89. 'शिल्पकर्म-आर्य किसे कहते हैं?

उत्तर— धोबी, नाई, लुहार, कुंभकर, स्वर्णकार आदि का कार्य करनेवाले 'शिल्पकर्म-आर्य' हैं।

प्र. 90. 'वाणिज्यकर्म-आर्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— चन्दन, घृत, चावल, कपास, मोती, माणिक्य, सुवर्ण आदि द्रव्यों का संग्रह कर व्यापार करनेवाले 'वाणिज्यकर्म-आर्य' हैं।

प्र. 91. *'सावद्यकर्म-आर्य' कौन हैं?*

उत्तर— असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प और वाणिज्य को करनेवाले मनुष्य व्रतरहित होने से और अविरति में प्रवीण होने से 'सावद्यकर्म-आर्य' हैं।

प्र. 92. *'अल्पसावद्यकर्म-आर्य' कौन हैं।*

उत्तर— विरति-अवरति युक्त होने से पाँचवे-गुण स्थानवर्ती श्रावक-श्राविकायें 'अल्पसावद्यकर्म-आर्य' हैं?

प्र. 93. *'असावद्यकर्म-आर्य' कौन हैं?*

उत्तर— कर्म-क्षय करने में उद्यत, विरति में रत-मुनि 'असावद्यकर्म-आर्य' हैं।

प्र. 94. *'जाति-आर्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इक्ष्वाकुवंश, सूर्यवंश, सोमवंश, कुरुवंश, हरिवंश, नाथवंश तथा उग्रवंश आदि वंशों में उत्पन्न होनेवाले 'जाति-आर्य' कहलाते हैं।

प्र. 95. *'क्षेत्र-आर्य' किन्हें कहते हैं?*

उत्तर— काशी, कोशल-आदि उत्तम-देशों में उत्पन्न हुए मनुष्यों को 'क्षेत्र-आर्य' कहते हैं।

प्र. 96. *'म्लेच्छ' कितने प्रकार के हैं?*

उत्तर— 'म्लेच्छ' दो-प्रकार के हैं — 'अन्तर्द्वीपज' और 'कर्मभूमिज'।

प्र. 97. *'कर्मभूमिज-म्लेच्छ' कौम हैं?*

उत्तर— पुलिन्द, शबर, यवन, शक, खस, बर्बर-आदि कर्मभूमि के 'म्लेच्छ' हैं।

प्र. 98. *'अन्तर्द्वीपज' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लवण-समुद्र, हिमवान-पर्वत और विजयार्द्ध-पर्वत के मध्य में एवं पार्श्व-भाग में स्थित-द्वीप को 'अन्तर्द्वीप' कहते हैं, और उसमें रहनेवालों को 'अन्तर्द्वीपज' कहते हैं।

प्र. 99. *'अन्तर्द्वीपज-मनुष्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'कुभोग-भूमि' में उत्पन्न-मनुष्यों को 'अन्तर्द्वीपज-मनुष्य' कहते हैं। ✿✿

भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्यः ॥37॥

अर्थ — 'देवकुरु' और 'उत्तरकुरु' के सिवा, भरत, ऐरावत और विदेह — ये सब 'कर्मभूमियाँ' हैं।

प्र. 1. *'कर्मभूमियाँ' कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— 'देवकुरु' और 'उत्तरकुरु' के सिवा भरत, ऐरावत और विदेह 'कर्मभूमियाँ' हैं।

प्र. 2. *'कर्मभूमि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जहाँ के निवासी स्वयं खेती आदि षट्कर्म करके अपनी आवश्यकतायें पूरी करते हैं, उसे 'कर्मभूमि' कहते हैं।

प्र. 3. *'कर्मभूमि' को यह संज्ञा कैसे प्राप्त होती है?*

उत्तर— जहाँ पर तप के द्वारा कर्मों की निर्जरा और कर्मक्षय कर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, तथा जहाँ पर असि, मसि, कृषि-आदि षट्कर्म किये जाते हैं, इसलिए इन्हें 'कर्मभूमि' की संज्ञा प्राप्त है।

प्र. 4. *'कर्मभूमियाँ' कितनी हैं, और वे कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— कर्मभूमियाँ अढाई-द्वीप में पन्द्रह हैं — पाँच 'भरत', पाँच 'ऐरावत' और पाँच 'विदेह' में है।

प्र. 5. *'भोगभूमि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जहाँ दस-प्रकार के कल्पवृक्ष होते हैं, और इसीसे मनुष्यों की उपजीविका चलती है, ऐसे स्थान को 'भोगभूमि' कहते हैं।

प्र. 6. *'भोगभूमिज' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'भोगभूमि' में रहनेवाले मनुष्यों को 'भोगभूमिज' कहते हैं।

प्र. 7. *'भोगभूमियाँ' कितनी हैं? भोगभूमियाँ 30 कैसे हैं?*

उत्तर— 'भोगभूमियाँ' 30 हैं — एक मेरु-सम्बन्धी देवकुरु, उत्तरकुरु, हैमवत, हरि, रम्यक और हैरण्यवत, 6 भोगभूमियों को पाँच मेरु-सम्बन्धी, 5 देवकुरु आदि की अपेक्षा 6×5=30 भोगभूमियाँ हैं।

प्र. 8. *'भोगभूमि' को यह संज्ञा कैसे प्राप्त होती है?*

उत्तर— 'भोगभूमि' के मनुष्य भोगों में लिप्त रहते हैं, भोगभूमि में जीवों के सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान संभव है, परन्तु सम्यक्चारित्र नहीं है, इसलिए वहाँ से मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए 'भोगभूमि' को यह संज्ञा प्राप्त है।

प्र. 9. *'भरतादि-क्षेत्रों' को छोड़कर और कौन-सी 'कर्मभूमियाँ' हैं?*

उत्तर— आधा स्वयंभूरमण-द्वीप, पूरा स्वयंभूरमण-समुद्र और समुद्र के बाहर चार-कोने 'कर्मभूमि' कहलाते हैं।

✿✿

नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ॥38॥

अर्थ — मनुष्यों की 'उत्कृष्ट-स्थिति' तीन-पल्योपम और 'जघन्य' अन्तर्मुहूर्त हैं।

प्र. 1. *'कर्म' व 'भोगभूमियों' में मनुष्यों की 'उत्कृष्ट' व 'जघन्य-आयु' कितनी हैं?*

उत्तर— मनुष्यों की 'उत्कृष्ट-आयु' तीन-पल्य और 'जघन्य' अन्तर्मुहूर्त हैं।

प्र. 2. *मनुष्यों की मध्यम-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— मनुष्यों की मध्यम-स्थिति 'दो-पल्य' है। 'जघन्य' और 'उत्कृष्ट' के बीच की स्थिति अनेक-प्रकार की है।

प्र. 3. *'पल्य' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'पल्य' के तीन-भेद हैं — व्यवहारपल्य, उद्धारपल्य और अद्धापल्य।

प्र. 4. *'व्यवहार-पल्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आदि के पल्य को 'व्यवहार-पल्य' कहते हैं, क्योंकि यह आगे के दो-पल्यों का मूल है। इसके द्वारा और किसी वस्तु का प्रमाण नहीं किया जाता।

प्र. 5. *'उद्धार-पल्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'उद्धार-पल्य' में निकाले गए रोम के छेदों द्वारा द्वीप और समुद्रों की गिनती की जाती है?

प्र. 6. *'अद्धापल्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अद्धापल्य के द्वारा नारकी-तिर्यंच, देव और मनुष्यों की कर्मस्थिति भवस्थिति और कायस्थिति की गणना की जाती है, उसे 'अद्धापल्य' कहते हैं।

प्र. 7. *'व्यवहार-पल्योपम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक योजन प्रमाण गोल व गहरे गड्ढे में एक से सात दिन तक के 'उत्तम भोगभूमि' के भेड़ के बच्चे के बालों से जिसका कोई दूसरा टुकड़ा न हो सके, ऐसे बालों से भर दें; इस गड्ढे को 'व्यवहार-पल्य' कहते हैं। सौ-सौ वर्षों के बाद एक-एक टुकड़ा निकालने पर उस गड्ढे के खाली होने में जो समय लगे, उसे 'व्यवहार-पल्योपम' कहते हैं।

प्र. 8. *'उद्धारपल्य' व 'उद्धार-पल्योपम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— असंख्यात करोड़ वर्षों का जितना समय है, उतने समयों से प्रत्येक रोम खण्ड को गुणा करें, और इसप्रकार के रोमखंडों से फिर उस गड्ढे को भर दें; इस गड्ढे का नाम 'उद्धार-पल्य' है। फिर दुबारा एक-एक समय के बाद एक-एक रोमखण्ड निकाला जाए। जितना समय उस गड्ढे को खाली होने में लगे, उसे 'उद्धार-पल्योपम' कहते हैं।

प्र. 9. *'उद्धार-सागर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दस-कोडाकोडी-उद्धारपल्यों का एक 'उद्धार-सागर' होता है

प्र. 10. *'द्वीप-समुद्र' कितने हैं?*

उत्तर— पच्चीस-कोडाकोडी-उद्धारपल्यों के जितने रोमखण्ड होते हैं, उतने ही 'द्वीप-समुद्र' हैं।

प्र. 11. *'अद्धापल्य' और 'अद्धापल्योपम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक-सौ वर्ष के जितने समय होते हैं, उनसे उद्धारपल्य के प्रत्येक रोग को गुणा करे और ऐसे रोमखण्डों से फिर गड्ढा भर दें, उसे गड्ढे का नाम 'अद्धापल्य' है। फिर एक-एक समय के बाद एक-एक रोमखण्ड को निकाले। जितने समय में वह गड्ढा खाली हो जाए। उस समय को 'अद्धापल्योपम' कहते हैं।

प्र. 12. *'अद्धासागर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दस-कोडाकोडी-अद्धापल्यों का एक 'अद्धासागर' होता है।

प्र. 13. *'अवसर्पिणी' का प्रमाण कितना है?*

उत्तर— दस-कोडाकोडी-अद्धासागरों का एक 'अवसर्पिणी' काल है।

प्र. 14. *'कल्पकाल' का प्रमाण कितना है।*

उत्तर— बीस-कोडाकोडी-अद्धासागरों का एक 'कल्पकाल' होता है।

प्र. 15. *'कोडाकोडी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक-करोड़ को एक-करोड़ से गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल को 'कोडाकोडी' कहते हैं।

प्र. 16. *'सागर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दस-कोडाकोडी-अद्धापल्यों का एक 'सागर' होता है।

प्र. 17. *चारों-गति के जीवों की स्थिति की गणना किससे की जाती है?*

उत्तर— नारकी, तिर्यंच, देव और मनुष्यों के कर्मों की, आयु की, भव की, काय की स्थिति की गणना 'अद्धापल्य' से की जाती है। ✿✿

तिर्यग्योनिजानाञ्च ।।39।।

अर्थ — 'तिर्यंचों' की स्थिति भी उतनी ही (मनुष्यों की स्थिति के समान) है।

प्र. 1. *'तिर्यंचों' की 'उत्कृष्ट' व 'जघन्य-स्थिति' कितनी है?*

उत्तर— तिर्यंचों की 'उत्कृष्ट-स्थिति' मनुष्यों के समान ही तीन-पल्य, और 'जघन्य-स्थिति' अन्तर्मुहूर्त की है।

प्र. 2. *'तिर्यग्योनिज' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'तिर्यंचों' की 'योनि' को 'तिर्यग्योनि' कहते हैं, जो तिर्यंच-योनि में पैदा होते हैं, उन्हें 'तिर्यग्योनिज' कहते हैं।

प्र. 3. *स्थिति कितने प्रकार की होती है?*

उत्तर— स्थिति दो-प्रकार की होती है — भवस्थिति, और कायस्थिति।

प्र. 4. *'भवस्थिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक-पर्याय में रहने में जितना काल लगे, वह 'भव-स्थिति' है।

प्र. 5. *'काय-स्थिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक-पर्याय की अपेक्षा से अन्य-पर्याय में उत्पन्न न होकर पुनः-पुनः उसी पर्याय में निरन्तर-उत्पन्न होने से जो स्थिति प्राप्त होती है, वह 'काय-स्थिति' है।

प्र. 6. *'मनुष्यों' व 'तिर्यंचों' की 'जघन्यकाय-स्थिति' कितनी है?*

उत्तर— 'मनुष्यों' व 'तिर्यंचों' की 'जघन्यकाय-स्थिति' जघन्य-भवस्थिति-प्रमाण है, क्योंकि एकबार जघन्य-आयु के साथ भव पाकर उसका अन्य-पर्याय में जाना सम्भव है।

प्र. 7. *'मनुष्य' की 'उत्कृष्ट-कायस्थिति' कितनी है?*

उत्तर— 'मनुष्य' की 'उत्कृष्ट-कायस्थिति' पूर्वकोटि-पृथक्त्व अधिक तीन-पल्य है।

प्र. 8. *'तिर्यंचों' की 'उत्कृष्ट-कायस्थिति' कितनी है?*

उत्तर— 'तिर्यंचों' की 'उत्कृष्ट-कायस्थिति अनन्तकाल है, जो 'असंख्यात पुद्गल-परावर्तन' के बराबर है।

प्र. 9. *सूत्र में 'च' शब्द को ग्रहण क्यों किया है?*

उत्तर— सूत्र में 'च' शब्द को आयु और भव को बताने के लिए ग्रहण किया गया है।

✿✿

देवाश्चतुर्णिकायाः ॥1॥

अर्थ — 'देवों' के चार-निकाय होते हैं।

प्र. 1. *'देव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'देवगति-नामकर्म' के उदय होने पर जो नानाप्रकार की दिव्य-क्रीड़ा करते हैं, वे 'देव' कहलाते हैं।

प्र. 2. *'देव' कितने निकायवाले होते हैं?*

उत्तर— 'देव' चार-निकायवाले होते हैं।

प्र. 3. *चार-निकायों के नाम क्या हैं?*

उत्तर— भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक — ये चार-निकाय हैं।

प्र. 4. *'देवों' का स्वरूप क्या है?*

उत्तर— जो दिव्यभाव-युक्त अणिमादि आठ-गुणों से नित्य-क्रीड़ा करते रहते हैं, और जिनका प्रकाशमान दिव्य-शरीर है, वे ही देव हैं।

प्र. 5. *'अणिमा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शरीर को अणु के बराबर छोटा करना 'अणिमा-ऋद्धि' है।

प्र. 6. *'महिमा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मेरु के बराबर बड़ा शरीर के करने को 'महिमा-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 7. *'लघिमा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वायु से भी हल्का शरीर करने को 'लघिमा-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 8. *'गरिमा-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वज्र से भी अधिक भारी-शरीर के करने को 'गरिमा-ऋद्धि' कहते हैं।

प्र. 9. *'प्राप्ति-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भूमि पर स्थित रहकर अंगुली के अग्रभाग से सूर्य-चन्द्रादिक, मेरु-शिखरों तथा अन्य-वस्तुओं को प्राप्त करना 'प्राप्ति-ऋद्धि' है।

प्र. 10. *'प्राकाम्य-ऋद्धि' किसे कहते हैं।*

उत्तर— जिस ऋद्धि के प्रभाव से जल के समान पृथिवी पर और पृथ्वी के समान जल पर गमन करता है, वह 'प्राकाम्य-ऋद्धि' है।

प्र. 11. *'ईशित्व-ऋद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे तीनों लोकों में प्रभुत्व होता है, वह 'ईशित्व-ऋद्धि' है।

प्र. 12. 'वशित्व-ऋद्धि' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिससे तपोबल द्वारा जीव-समूह वश में होते हैं, वह 'वशित्व-ऋद्धि' है।

प्र. 13. 'देव' शब्द कैसे बना है?

उत्तर— 'देव' शब्द 'दिव्'-धातु से बना है, और 'दिव्'-धातु के 'क्रीड़ा करना', तथा 'जय की इच्छा' आदि अनेक-अर्थ हैं।

प्र. 14. 'देवों' का शरीर कैसा होता है?

उत्तर— देवों के शरीर में हड्डी, नस, रुधिर, चर्बी, मूत्र, मल, केश, रोग, चमड़ा, और माँस नहीं होता। वे वैक्रियिक-शरीरवाले होते हैं।

प्र. 15. 'निकाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— अपने अवान्तर-कर्मों से भेद को प्राप्त होनेवाले 'देवगति नामकर्म' के उदय की सामर्थ्य से जो संग्रह किये जाते हैं, वे 'निकाय' कहलाते हैं।

प्र. 16. 'निकाय' शब्द का अर्थ क्या है?

उत्तर— 'निकाय' शब्द का अर्थ 'संघात' है।

प्र. 17. 'संघात' का क्या अर्थ है?

उत्तर— 'समागम' होना 'संघात' है। ✿✿

आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्या ।।2।।

अर्थ — आदि के तीन-निकायों में पीत-पर्यन्त लेश्यायें होती हैं।

प्र. 1. भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क-देवों में कौन सी लेश्यायें होती हैं।

उत्तर— आदि के तीनों-निकायों में पीत-पर्यन्त चार-लेश्यायें होती हैं।

प्र. 2. 'लेश्या' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके द्वारा जीव पुण्य-पाप से अपने को लिप्त करता है, उनके आधीन रहता है, उसको 'लेश्या' कहते हैं।

प्र. 3. 'लेश्या' कितने प्रकार की होती है, और कौन-कौन सी?

उत्तर— 'लेश्या' दो प्रकार की होती है — 'भाव-लेश्या', और 'द्रव्य-लेश्या'।

प्र. 4. 'भाव-लेश्या' किसे कहते हैं?

उत्तर— कषाय से युक्त-जीव की मन, वचन, और काय की प्रवृत्ति 'भाव-लेश्या' है।

प्र. 5. 'द्रव्य-लेश्या' किसे कहते हैं?

उत्तर— शरीर के रंग को 'द्रव्य-लेश्या' कहते हैं।

प्र. 6. 'लेश्या' कितनी हैं, और कौन-कौन-सी?

उत्तर— 'लेश्या' छह हैं — कृष्ण, नील, कपोत, पीत, पद्म, और शुक्ल।

प्र. 7. 'अशुभ-लेश्या' कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर- कृष्ण, नील और कपोत 'अशुभ-लेश्या' हैं।

प्र. 8. 'शुभ-लेश्या' कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर- पीत, पद्म और शुक्ल 'शुभ-लेश्या' हैं।

प्र. 9. 'कृष्ण-लेश्या' का स्वरूप क्या है?

उत्तर- दयाधर्म से रहित, बैर को न छोड़ने वाला, प्रचण्ड-कलह करनेवाला और क्रोधी जीव के 'कृष्ण-लेश्या' होती है।

प्र. 10. कृष्ण लेश्या वाला जीव मर कर कहां जन्म लेता है?

उत्तर- कृष्ण लेश्यावाला जीव मरकर 'धूमप्रभा-पृथिवी' से 'अंतिम-पृथिवी तक जन्म लेता है।

प्र. 11. 'नील- लेश्या' का स्वरूप क्या है?

उत्तर- विषयों में आसक्त, मतिहीन, विवेकबुद्धि से रहित, आलसी, कायर, मायाचारी, निद्रालु, दूसरों को ठगने में तत्पर, लोभी, धन-धान्य-जनित सुख का इच्छुक, आहार-आदि संज्ञाओं में आसक्त-जीव के 'नील-लेश्या' होती है।

प्र. 12. नील-लेश्यावाला जीव मरकर कहाँ जाता है?

उत्तर- नील-लेश्यावाला जीव मरकर 'धूमप्रभा' तक जाता है।

प्र. 13. 'कापोत-लेश्या' का स्वरूप क्या है?

उत्तर- जो दूसरों के ऊपर क्रोध करता हो, दूसरों को दु:ख देने वाला, सदा अपनी प्रशंसा करने वाला, दूसरों से बैर करने वाला, दूसरे का तिरस्कार और अपकीर्ति चाहनेवाला हो, उस जीव के 'कपोत-लेश्या' होती है।

प्र. 14. 'पीत-लेश्या' का स्वरूप क्या है?

उत्तर- जो अपने कर्तव्य-अकर्तव्य, सेव्य-असेव्य को जानता हो, सब में समदर्शी हो, दया और दान में रत हो, मृदु-स्वभावी और ज्ञानी हो, उस जीव के 'पीत-लेश्या' होती है।

प्र. 15. 'पद्म-लेश्या' का स्वरूप क्या है?

उत्तर- जो त्यागी हो, भद्र हो, सच्चा हो, उत्तम-काम करने वाला हो, हानि होने पर क्षमा कर दे, उस जीव के 'पद्म-लेश्या' होती है।

प्र. 16. 'शुक्ल-लेश्या' का स्वरूप क्या है?

उत्तर- जो पक्षपात न करता हो, निदान न करता हो, सबसे समान-व्यवहार करता हो, जिसे पर में राग-द्वेष न हो, स्नेह न हो। उस जीव के 'शुक्ल-लेश्या' होती है।

प्र. 17. सूत्र में 'पीतान्त' शब्द लिखा है, वह किस अपेक्षा से लिखा है?

उत्तर- अपर्याप्त-अवस्था की अपेक्षा से 'पीतान्त' शब्द लिखा है।

प्र. 18. *'पर्याप्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिन जीवों की शरीर-पर्याप्ति पूर्ण हो गयी हो, उन्हें 'पर्याप्त' कहते हैं।

प्र. 19. *'अपर्याप्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिन जीवों की शरीर-पर्याप्ति पूर्ण न हुई हो, उन्हें 'अपर्याप्त' कहते हैं।

प्र. 20. *'पर्याप्त-अवस्था' में कौन-सी लेश्या होती है?*

उत्तर— 'पर्याप्त-अवस्था' में 'पीत-लेश्या' होती है।

प्र. 21. *'भवनत्रिकों' में किस अपेक्षा से 'अशुभ-लेश्या' है?*

उत्तर— कर्मभूमि के मिथ्यादृष्टि-मनुष्य एवं तिर्यंच, भोगभूमि के मिथ्यादृष्टि एवं तिर्यंच 'कपोत-लेश्या' के साथ मरकर जब 'भवनत्रिक' में जन्म लेते हैं, तब 'अपर्याप्तक-अवस्था' में ये तीन 'अशुभ-लेश्यायें' हैं। ✿✿

दशाष्ट-पंच-द्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ।।3।।

अर्थ — वे कल्पोपपन्न-देव तक के चार-निकाय के देवक्रम से दस, आठ, पाँच और बारह-भेदवाले हैं।

प्र. 1. *चार-निकायों के कितने भेद हैं?*

उत्तर— वे 'कल्पोपपन्न-देव' तक के चार-निकाय के देवक्रम से दस, आठ, पाँच और बारह-भेदवाले हैं।

प्र. 2. *'भवनवासी-देवों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'भवनवासी-देव' दस-प्रकार के हैं — असुरकुमार, नागकुमार, विद्युत्कुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार।

प्र. 3. *'भवनवासी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसका स्वभाव भवनों में निवास करना है, उन्हें 'भवनवासी' कहते हैं।

प्र. 4. *'व्यन्तर-देवों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'व्यन्तर-देवों' के आठ-भेद हैं — किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच।

प्र. 5. *'ज्योतिष-देवों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'ज्योतिष-देवों' के पाँच-भेद हैं — सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्णक (तारे)।

प्र. 6. *'वैमानिक-देवों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'वैमानिक-देवों के सोलह-भेद हैं — सौधर्म-ईशान, सनत्कुमार-माहेन्द्र,

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, लान्तव-कापिष्ठ, शुक्र-महाशुक्र, शतार-सहस्रार, आनत-प्राणत, आरण और अच्युत।

प्र. 7. *सूत्र में 'कल्पोपपन्न-पर्यन्त' शब्द का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'कल्पोपपन्न-पर्यन्त' का अर्थ है 'सोलहवें स्वर्ग-पर्यन्त', क्योंकि सोलहवें-स्वर्ग-पर्यन्त ही इन्द्र-आदि की कल्पना होती है।

प्र. 8. *'कल्पोपपन्न' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो कल्पों में उत्पन्न होते हैं, उन्हें 'कल्पोपपन्न' कहते हैं।

प्र. 9. *'कल्प' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्रादि की कल्पना को 'कल्प' कहते हैं।

प्र. 10. *ग्रैवेयक, अनुदिश, और अनुत्तरवासियों को यहाँ ग्रहण क्यों नहीं किया?*

उत्तर— ग्रैवेयक, अनुदिश, और अनुत्तरवासियों को यहाँ इसलिये ग्रहण नहीं किया, क्योंकि ग्रैवेयक-आदि में 'अहमिन्द्रत्व' के सिवाय दूसरा कोई भेद नहीं होता।

✿✿

इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषदात्मरक्ष-लोकपालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्य-किल्विषिकाश्चैकशः ।।4।।

अर्थ — उक्त दस-आदि भेदों में से प्रत्येक — इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पारिषद, आत्मरक्ष, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य और किल्विषिक-रूप हैं।

प्र. 1. *'प्रत्येक-निकाय' के देवों में कितने भेद होते हैं?*

उत्तर— 'प्रत्येक-निकाय' के देवों में इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पारिषद्, आत्मरक्ष, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य और किल्विषिक — ये दस-भेद होते हैं।

प्र. 2. *'इन्द्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'इन्द्र' देवों में राजा के समान होता है। जो असाधारण अणिमादि-गुणों से युक्त होता है, वह 'इन्द्र' कहलाता है।

प्र. 3. *'सामानिक-देव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो 'इन्द्र' के समान होते हैं, तथा आज्ञा और ऐश्वर्य के अतिरिक्त जो आयु, वीर्य, परिवार, भोग और उपभोग में एकसमान होते हैं, वे 'सामानिक' कहलाते हैं।

प्र. 4. *'त्रायस्त्रिंश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो पिता, गुरु और उपाध्याय के समान सबसे बड़े हैं, जो मंत्री व पुरोहित हैं, वे 'त्रायस्त्रिंश' कहलाते हैं।

प्र. 5. 'पारिषद्-देव' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो सभा में मित्र व प्रेमीजनों के समान होते हैं, वे 'पारिषद्' कहलाते हैं।

प्र. 6. 'आत्मरक्षक-देव' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो अंगरक्षक के समान हैं, उन्हें 'आत्मरक्षक-देव' कहते हैं।

प्र. 7. 'लोकपाल' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो लोक का पालन करते हैं, वे 'लोकपाल' कहलाते हैं।

प्र. 8. 'अनीक-देव' किसे कहते हैं?

उत्तर— सेना की तरह सात-प्रकार के पदातिवाले-देव 'अनीक' कहलाते हैं।

प्र. 9. 'प्रकीर्णक-देव' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो गाँव और शहर में रहनेवालों के समान हैं, उन्हें 'प्रकीर्णक' कहते हैं।

प्र. 10. 'आभियोग्य-देव' कैसे होते हैं?

उत्तर— जो दास के समान वाहन-आदि कर्म में प्रवृत्त होते हैं, वे 'आभियोग्य' कहलाते हैं।

प्र. 11. 'किल्विषिक-देव' कौन-से हैं?

उत्तर— जो सीमा के पास रहनेवालों के समान हैं, उन्हें 'किल्विषिक' कहते हैं।

प्र. 12. 'किल्विष' किसे कहते हैं?

उत्तर— किल्विष 'पाप' को कहते हैं।

प्र. 13. तीर्थंकर-भगवान् के जन्म-कल्याणक के समय ऐरावत-हाथी कौन-सी जाति के देव बनते हैं?

उत्तर— 'आभियोग्य-जाति' का देव ऐरावत-हाथी बनता है। ✿✿

त्रायस्त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः ॥5॥

अर्थ — किन्तु 'व्यन्तर' और 'ज्योतिष्क' देव 'त्रायस्त्रिंश' और 'लोकपाल' — इन दो-भेदों से रहित हैं।

प्र. 1. 'व्यन्तर' और 'ज्योतिषी'-देवों में कौन-कौन-से भेद नहीं होते?

उत्तर— 'व्यन्तर' और 'ज्योतिष'-देवों में त्रायस्त्रिंश और लोकपाल — ये दो-भेद नहीं पाये जाते हैं।

प्र. 2. सूत्र में 'वर्ज्या' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर— सूत्र में 'वर्ज्या' शब्द का अर्थ 'छोड़कर' लिया है।

प्र. 3. 'व्यन्तर' और 'ज्योतिष' में कितने और कौन-कौन-से भेद हैं?

उत्तर— 'व्यन्तर' और 'ज्योतिष-देवों' के आठ-भेद हैं — इन्द्र, सामानिक, पारिषद, आत्मरक्ष, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य और किल्विषिक-देव हैं। ✿✿

पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ॥6॥

अर्थ — प्रथम दो-निकायों में दो-दो इन्द्र हैं।

प्र. 1. *चारों-निकायों में इन्द्र एक-एक ही होता है या नहीं?*

उत्तर— नहीं, प्रथम दो-निकायों में दो-दो इन्द्र हैं।

प्र. 2. *पूर्व के दो-निकायों में कौन-कौन-से इन्द्र आते हैं?*

उत्तर— पूर्व के दो-निकायों में 'भवनवासी' और 'व्यन्तरवासी-इन्द्र' आते हैं।

प्र. 3. *'भवनवासी-असुरकुमार' देव में कितने-कितने इन्द्र हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'असुरकुमार-देव' में दो-इन्द्र हैं — 'चमर' और 'वैरोचन'।

प्र. 4. *'नागकुमारों' में कितने इन्द्र हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'नागकुमारों' में दो-इन्द्र हैं — 'धरण' और 'भूतानन्द'।

प्र. 5. *'विद्युत्कुमारों' में कितने इन्द्र हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'विद्युत्कुमारों' में दो-इन्द्र हैं — 'हरिसिंह' व 'हरिकान्त'।

प्र. 6. *'सुपर्णकुमारों' में कितने इन्द्र हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'सुपर्णकुमारों' में दो-इन्द्र हैं — 'वेणुदेव' और 'वेणुधारी'।

प्र. 7. *'अग्निकुमारों' में कितने इन्द्र हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— अग्निकुमारों में दो-इन्द्र हैं — 'अग्निशिख' और 'अग्निमाणव'।

प्र. 8. *'वातकुमारों' में कितने इन्द्र हैं, और वे कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'वातकुमारों' में दो-इन्द्र हैं — 'वैलम्ब' और 'प्रभंजन'।

प्र. 9. *'स्तनितकुमारों' में कितने इन्द्र हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'स्तनितकुमारों' में दो-इन्द्र हैं — 'सुघोष' और 'प्रभंजन'।

प्र. 10. *'उदधिकुमारों' में कितने इन्द्र हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'उदधिकुमारों' में दो इन्द्र हैं — 'जलकान्त' और 'जलप्रभ'।

प्र. 11. *'द्वीपकुमारों' में कितने इन्द्र हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'द्वीपकुमारों' में दो-इन्द्र हैं — 'पूर्ण' और 'विशिष्ट'।

प्र. 12. *'दिक्कुमारों' में कितने इन्द्र हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'दिक्कुमारों' में दो-इन्द्र हैं — 'अमित' और 'अमितवाहन'।

प्र. 13. *'व्यन्तरवासी-किन्नर' नाम के देवों के कितने भेद हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'किन्नर-देवों' के दो भेद हैं — 'किन्नर' और 'किंपुरुष'।

प्र. 14. *'किंपुरुष-देवों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'किंपुरुष-देवों' के दो-भेद हैं — 'सत्पुरुष' और 'महापुरुष'।

प्र. 15. *'महोरगों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'महोरगों' के दो-भेद हैं — 'अतिकाय' और 'महाकाय'।

प्र. 16. *'गन्धर्वों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'गन्धर्वों' के दो-भेद हैं — 'गीतरति' व 'गीतयश'।

प्र. 17. *'यक्षों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'यक्षों' के दो-भेद हैं — 'पूर्णभद्र' और 'मणिभद्र'।

प्र. 18. *'राक्षसों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'राक्षसों' के दो-भेद हैं — 'भीम' व 'महाभीम'।

प्र. 19. *'भूतों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'भूतों' के दो-भेद हैं — 'प्रतिरूप' व 'अप्रतिरूप'।

प्र. 20. *'पिशाचों' के कितने भेद हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'पिशाचों' के दो-भेद हैं — 'काल' और 'महाकाल'।

प्र. 21. *'भवनवासी' व 'व्यन्तरों' में कुल कितने-कितने इन्द्र हैं?*

उत्तर— 'भवनवासियों' में 40-इन्द्र हैं, और व्यन्तरों में 32-इन्द्र हैं। ✿✿

कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ।।7।।

अर्थ — 'ऐशान' स्वर्ग तक के देव 'काय-प्रवीचार' अर्थात् शरीर से विषय-सुख भोगनेवाले होते हैं।

प्र. 1. *'काय' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'काय' का अर्थ 'शरीर' है।

प्र. 2. *'प्रवीचार' किसे कहते हैं*

उत्तर— 'मैथुन' के उपसेवन को 'प्रवीचार' कहते हैं।

प्र. 3. *'देवों' के कैसा सुख है?*

उत्तर— 'देवों' के शरीर से विषय-भोगने का सुख होता है।

प्र. 4. *'काय' से प्रवीचार कौन-कौन-से देव करते हैं?*

उत्तर— 'भवनत्रिक-देव' तथा 'सौधर्म-ऐशान-स्वर्ग' के देव 'काय' से 'प्रवीचार' करते हैं।

प्र. 5. *'काय-प्रवीचार' से यहाँ क्या तात्पर्य है?*

उत्तर— ऐशान स्वर्ग-पर्यन्त ये भवनवासी-आदि देव संक्लिष्ट-कर्मवाले होने के कारण मनुष्यों के समान स्त्री-विषयक-सुखों का सेवन करते हैं। ✿✿

शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः-प्रवीचाराः ।।8।।

अर्थ — शेष-देव क्रमशः स्पर्श, रूप, शब्द और मन से सुख भोगनेवाले होते हैं।

प्र. 1. *'सानत्कुमार-स्वर्ग' से अच्युतपर्यन्त-देवों का सुख कैसा है?*

उत्तर— शेष-देव देवियों के स्पर्श, रूप, शब्द और मन में स्मरण-मात्र से काम-सुख का अनुभव करते है।

प्र. 2. *शेष-देव कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— शेष-देवों में 'सनत्कुमार' से लेकर 'अच्युत-स्वर्ग' तक के देवों का ग्रहण होता है।

प्र. 3. *'सानत्कुमार' और 'माहेन्द्र-स्वर्ग' के देवों में कौन-सा 'प्रवीचार' होता है?*

उत्तर— ये देव देवांगनाओं के स्पर्शमात्र से परम-प्रीति को प्राप्त होते हैं।

प्र. 4. *ब्रह्म, ब्रह्मोतर, लान्तव, कापिष्ठ-स्वर्गों के देवों में कौन-सा 'प्रवीचार' होता है?*

उत्तर— इन देव-देवांगनाओं के श्रृंगार, आकृति, विलास, चतुर, और मनोज्ञ-वेष तथा मनोज्ञ-रूप के देखनेमात्र से ही परमसुख प्राप्त करते हैं।

प्र. 5. *शुक्र, महाशुक्र शतार और सहस्रार-स्वर्ग के देवों में कौन-सा 'प्रवीचार' होता है?*

उत्तर— ये देव देवांगनाओं के मधुर-संगीत, कोमल-हास्य, ललित-कथा तथा आभूषणों के कोमल-शब्द को सुनने मात्र से ही परम-प्रीति को प्राप्त होते हैं।

प्र. 6. *आनत, प्राणत, आरण और अच्युत-कल्पों के देवों के कौन-सा 'प्रवीचार' होता है?*

उत्तर— ये देव अपनी देवांगना के विषय में मन में संकल्प-मात्र करके परमसुख को प्राप्त होते हैं।

✿✿

परेऽप्रवीचाराः ॥9॥

अर्थ — बाकी के सब देव विषय-सुख से रहित होते हैं।

प्र. 1. *अच्युत-स्वर्ग के आगे देवों को सुख कैसा है?*

उत्तर— अच्युत-स्वर्ग से आगे के देव प्रवीचार-रहित हैं।

प्र. 2. *अच्युत-स्वर्ग के आगे कौन-कौन से देव प्रवीचार-रहित हैं?*

उत्तर— नव-ग्रैवेयक, नव-अनुदिश और पाँच-अनुत्तरवासी देव प्रवीचार-रहित होते हैं।

प्र. 3. *शेष देव मन से प्रवीचार करते हैं या नहीं?*

उत्तर— नहीं, वे अच्युत-स्वर्ग से आगे के देव मन से भी मैथुन-भाव से रहित होते हैं।

प्र. 4. *प्रवीचार के अभाव में नवग्रैवेयकादि के देवों के दुःख ही दुःख होता होगा?*

उत्तर— अच्युत-स्वर्ग से आगे से अहमिन्द्रों के कल्पवासी-देवो से भी अधिक उत्कृष्ट-सुख होता है; क्योंकि प्रवीचार केवल कामजन्य-वेदना है, कल्पातीत-देवों के कामजन्य-वेदना कभी नहीं होती।

प्र. 5. *प्रथम-निकाय के देवों का नाम क्या है?*

उत्तर— भवनवासी-देव। ✿✿

भवनवासिनो असुर-नाग-विद्युत्सुपर्णाग्नि-वात-स्तनितोदधि-द्वीप-दिक्कुमाराः ॥10॥

अर्थ — भवनवासी-देव दस प्रकार के हैं — असुरकुमार, नागकुमार, विद्युत्कुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार।

प्र. 1. *भवनवासी-देव कितने हैं, और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— भवनवासी-देव दस प्रकार के हैं — असुरकुमार, नागकुमार, विद्युत्कुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार।

प्र. 2. *'असुरकुमार' यह संज्ञा क्यों है?*

उत्तर— असुर-जाति के देव तीसरी पृथिवी तक जाकर नारकियों को आपस में लड़ा-लड़ाकर दुःख उत्पन्न कराते हैं। इनकी हिंसा के कार्य में रति है, इसलिए इनकी 'असुर कुमार' संज्ञा सार्थक है।

प्र. 3. *'नागकुमार' देव किसे कहते हैं?*

उत्तर— पर्वत और चन्दन आदि के वृक्षों पर रहनेवाले देव नागकुमार कहलाते हैं।

प्र. 4. *'विद्युत्कुमार' देव किसे कहते हैं।*

उत्तर— जो विद्युत् के समान चमकते हैं, वे 'विद्युत्कुमार' कहलाते हैं।

प्र. 5. *'सुपर्णकुमार' देव किसे कहते हैं?*

उत्तर— शुभ-पक्षों (पंखों) के आकाररूप विक्रिया करने में अनुराग रखनेवाले देव 'सुपर्णकुमार' कहलाते हैं।

प्र. 6. *'अग्निकुमार' देव किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो पाताल-लोक को छोड़कर क्रीड़ा करने के लिए ऊपर आते हैं, वे 'अग्निकुमार' देव कहलाते हैं।

प्र. 7. *'वातकुमार' देवों का कार्य क्या है?*

उत्तर— जो तीर्थंकर के विहारमार्ग को शुद्ध करते हैं, वे 'वातकुमार' देव हैं।

प्र. 8. *'स्तनितकुमार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिनके शब्द उत्पन्न होता है, वे 'स्तनितकुमार' कहलाते हैं।

प्र. 9. *'उदधिकुमार' देव क्या कार्य करते है?*

उत्तर— जो समुद्र को धारण करते हैं, समुद्रों में क्रीड़ा करते हैं, वे 'उदधिकुमार' कहलाते हैं।

प्र. 10. *'द्वीपकुमार' देवों की क्या विशेषता है?*

उत्तर— द्वीपों में क्रीड़ा करनेवाले देव 'द्वीपकुमार' कहलाते हैं।

प्र. 11. *भवनवासी-देवों के साथ 'कुमार' शब्दों का प्रयोग क्यों होता है?*

उत्तर— इनकी वेश-भूषा, शस्त्र, यान, वाहन और क्रीड़ा आदि कुमारों के समान होती है, इसलिए सब भवनवासी देवों के साथ 'कुमार' शब्द का प्रयोग होता है।

प्र. 12. *असुरकुमारादि देवों के भवन कहाँ है?*

उत्तर— रत्नप्रभा-भूमि के पंकबहुल-भाग में असुर-कुमारों के भवन हैं, और खर-भाग में नौ प्रकार के कुमारों के भवन हैं।

प्र. 13. *अधोलोक में कुल कितने जिनालय है?*

उत्तर— अधोलोक में कुल 7 करोड़ 72 लाख जिनालय है।

प्र. 14. *भवनवासी देवों के चैत्यालयों की संख्या कितनी है?*

उत्तर— असुर-कुमारों के 64 लाख, नाग-कुमारों के 84 लाख, सुपर्ण-कुमारों के 72 लाख, द्वीप-कुमारों के 76 लाख, उदधि-कुमारों के 76 लाख, स्तनित-कुमारों के 76 लाख, विद्युत्-कुमारों के 76 लाख, दिक्-कुमारों के 76 लाख, अग्नि-कुमारों के 76 लाख और वायु-कुमारों में 96 लाख जिनालय हैं।

प्र. 15. *दूसरे निकाय का नाम क्या है?*

उत्तर— दूसरे निकाय का नाम 'व्यन्तर-देव' है। ✿✿

व्यन्तराः किन्नर-किंपुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः ॥11॥

अर्थ — व्यन्तर-देव आठ प्रकार के हैं — किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच।

प्र. 1. *व्यन्तर-देवों के कितने भेद हैं और कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— व्यन्तर-देवों के आठ भेद हैं — किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच।

प्र. 2. *'व्यन्तर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ये देव वैक्रियक-शरीर के धारी होते हैं, अधिकतर मध्य-लोक के सूने-स्थानों में रहते हैं। मनुष्य व तिर्यंचों के शरीर में प्रवेश करके उन्हें लाभ-हानि पहुँचाते है। इनका काफी वैभव व परिवार होता है।

प्र. 3. *व्यन्तर-देवों का निवास कहाँ-कहाँ है?*

उत्तर— ये देव 'जम्बूद्वीप' के असंख्यात-द्वीपों और समुद्रों के लांघकर ऊपर के

खर-पृथ्वीभाग में सात-प्रकार के व्यन्तर रहते हैं। राक्षसों का निवास पंकबहुल-भाग में है। ✿✿

ज्योतिष्काः सूर्य-चन्द्रमसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णक-तारकाश्च ॥12॥

अर्थ **— ज्योतिष्क देव पाँच प्रकार के हैं — सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्णक तारे।**

प्र. 1. *ज्योतिषी-देवों के कितने भेद हैं?*

उत्तर— ज्योतिषी-देवों के पाँच भेद हैं — सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्णक तारे।

प्र. 2. *ज्योतिषी-देवों की 'ज्योतिषी' यह संज्ञा किस कारण है?*

उत्तर— पाँचों प्रकार के देव ज्योतिर्मय हैं, इसलिए इनकी 'ज्योतिषि' संज्ञा सार्थक है।

प्र. 3. *चन्द्रमा, सूर्य में 'इन्द्र' व 'प्रतीन्द्र' कौन है?*

उत्तर— चन्द्रमा 'इन्द्र' है, सूर्य 'प्रतीन्द्र' है।

प्र. 4. *सूर्य, चन्द्र आदि देवों की सूर्यादि संज्ञा किस कर्मोदय से है?*

उत्तर— सूर्य, चन्द्र आदि विशेष-संज्ञायें विशेष-नामकर्म के उदय से उत्पन्न होती हैं।

प्र. 5. *सूर्य और चन्द्रबिम्ब में लगी मणियों के किस कर्म का उदय है?*

उत्तर— सूर्य-विमान में लगी मणि में 'आतप'-नामकर्म का उदय है। और चन्द्र विमान में लगी मणि के 'उद्योत'-नामकर्म का उदय है।

प्र. 6. *'आतप'-नामकर्म किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिनका मूल शीत और आभा उष्ण है, उसे 'आतप'-नामकर्म कहते हैं।

प्र. 7. *'उद्योत'-नामकर्म किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिनका मूल भी शीतल हो, आभा भी शीतल हो, उसे 'उद्योत' कहते हैं।

प्र. 8. *ज्योतिषी-देवों का निवास कहाँ है?*

उत्तर— समान भूमि-भाग से सात सौ नब्बे योजन ऊपर जाकर 110 योजन पर्यन्त ज्योतिषी-देवों का निवास है।

प्र. 9. *तारों का निवास-स्थान कहाँ है?*

उत्तर— तारों का निवास-स्थान 790 योजन ऊपर है।

प्र. 10. *सूर्य का निवास-स्थान कहाँ है?*

उत्तर— तारों के बाद 10 योजन ऊपर सूर्य का निवास-स्थान है।

प्र. 11. *चन्द्र का निवास-स्थान कहाँ है?*

उत्तर— *चन्द्र का निवास-स्थान चित्रा-पृथ्वी के ऊपर 880 योजन की ऊँचाई पर है।*

प्र. 12. *नक्षत्र का निवास-स्थान कहाँ है?*

उत्तर— चन्द्र के बाद 4 योजन ऊपर नक्षत्र का निवास-स्थान है।

प्र. 13. *बुध का निवास-स्थान कहाँ है?*

उत्तर— बुध का निवास-स्थान चित्रा-पृथ्वी के ऊपर 888 योजन की ऊँचाई पर है।

प्र. 14. *शुक्र का निवास-स्थान कहाँ है?*

उत्तर— बुध के बाद 3 योजन ऊपर शुक्र का निवास-स्थान है।

प्र. 15. *गुरु का निवास-स्थान कहाँ है?*

उत्तर— शुक्र के बाद 3 योजन ऊपर गुरु का निवास-स्थान है।

प्र. 16. *मंगल का निवास-स्थान कहाँ है?*

उत्तर— गुरु के बाद 3 योजन ऊपर मंगल का निवास-स्थान है।

प्र. 17. *शनि का निवास-स्थान कहाँ है?*

उत्तर— मंगल के बाद 3 योजन ऊपर शनि का निवास-स्थान है।

प्र. 18. *ज्योतिषी-देवों के विमान का आकार कैसा है?*

उत्तर— सर्व ज्योतिषी-देवों के विमान ऊपर मुख करके रखे हुए अर्ध-गोलक के आकारवाले हैं।

प्र. 19. *ज्योतिषी-देवों का गमन होता है क्या?*

उत्तर— मात्र मनुष्य-लोक में ज्योतिषी-देव गमन करते हैं, आगे नहीं। ✿✿

मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।।13।।

अर्थ — ज्योतिष्क-देव मनुष्य-लोक में मेरु की प्रदक्षिणा करनेवाले और निरन्तर गतिशील हैं।

प्र. 1. *ज्योतिषी-देव किसकी प्रदक्षिणा देते हैं?*

उत्तर— ज्योतिषी-देव निरन्तर मेरु की प्रदक्षिणा देते रहते हैं।

प्र. 2. *सूत्र में 'नित्यगत्य:' शब्द क्यों दिया है? इसका अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'नित्यगत्य:' का अर्थ है कि नृलोक में ज्योतिषी-देवों के गमन को कोई एक क्षण भी रोकने में समर्थ नहीं है।

प्र. 3. *'नृलोक' कितना बड़ा है?*

उत्तर— मनुष्य-लोक को 'नृलोक' कहते हैं, यह 45 लाख योजन विस्तारवाला है और ढाई द्वीप और दो समुद्र को मनुष्य-लोक कहते हैं।

प्र. 4. *ज्योतिषी-देवों के विमानों के गमन का कारण क्या है?*

उत्तर— गमन में रत जो 'आभियोग्य'-जाति के देव हैं, उनसे प्रेरित होकर ज्योतिषी-देवों के विमानों का गमन होता रहता है।

प्र. 5. 'आभियोग्य'-जाति के देव निरन्तर गमन क्यों करते रहते हैं?

उत्तर— यह कर्म के परिपाक की विचित्रता है। उनका कर्म गतिरूप से ही फलता है।

प्र. 6. ज्योतिषी-देव मेरु-पर्वत की प्रदक्षिणा कितना दूर रहकर करते हैं?

उत्तर— ज्योतिषी-देव मेरु-पर्वत से ग्यारहं सौ इक्कीस योजन दूर रहकर ही मेरु की प्रदक्षिणा करते हैं।

प्र. 7. जम्बूद्वीप में सूर्य, चन्द्रमा व ग्रहों की संख्या कितनी है?

उत्तर— जम्बूद्वीप में 2 सूर्य, 2 चन्द्रमा, 176 ग्रह और 56 नक्षत्र हैं।

प्र. 8. लवण-समुद्र में सूर्य चन्द्रमा व ग्रहों की संख्या कितनी है?

उत्तर— लवण-समुद्र में 4 सूर्य, 4 चन्द्रमा, 352 ग्रह, 112 नक्षत्र हैं।

प्र. 9. घातकी-खण्ड में सूर्य, चन्द्रमा और ग्रहों की संख्या कितनी है?

उत्तर— घातकी-खण्ड में 12 सूर्य, 12 चन्द्रमा, 1056 ग्रह, 336 नक्षत्र हैं।

प्र. 10. कालोदधि-समुद्र में सूर्य, चन्द्रमा और ग्रहों की संख्या कितनी है।

उत्तर— कालोदधि-समुद्र में सूर्य 42, चन्द्रमा 42, ग्रह 3696, नक्षत्र 1176 हैं।

प्र. 11. पुष्करार्द्ध-द्वीप में कितने सूर्य, चन्द्रमा, और ग्रहों की संख्या कितनी है?

उत्तर— पुष्करार्द्ध-द्वीप में 72 सूर्य, 72 चन्द्रमा, 6336 ग्रह, 2016 नक्षत्र हैं।

प्र. 12. एक चन्द्रमा का परिवार कितना है?

उत्तर— एक चन्द्रमा के परिवार में एक सूर्य, अट्ठाईस नक्षत्र, अठासी ग्रह और छयासठ हजार नौ सौ कोडा-कोडी तारे हैं।

प्र. 13. निरन्तर गमन करने पर ज्योतिषी-विमानों को कौन उठाकर गमन करता है?

उत्तर— ज्योतिष्क-देवों का गमन करना स्वभाव है, तो भी आभियोग्य-जाति के देव सूर्य आदि के विमानों को निरन्तर उठाकर गमन करते हैं।

प्र. 14. एक सूर्य जम्बूद्वीप की पूरी परिक्रमा कितने दिनों में करता है?

उत्तर— एक सूर्य जम्बूद्वीप की परिक्रमा दो दिन-रात में पूरी करता है।

प्र. 15. सूर्य के घूमने की गलियाँ कितनी है?

उत्तर— 184 सूर्य की गलियाँ हैं।

प्र. 16. चन्द्रमा पूरी प्रदक्षिणा में कितने दिन-रात लगते हैं और चन्द्रोदय में हीनाधिकता क्यों आती है?

उत्तर— चन्द्रमा की पूरी प्रदक्षिणा में दो दिन-रात से कुछ अधिक समय लगता है। चन्द्रोदय में हीनाधिकता इसी से आती है।

प्र. 17. ज्योतिषी-देवों के गमन से हमें क्या पता चलता है?

उत्तर— ज्योतिषी-देवों के गमन से हमें व्यवहार-काल का पता चलता है। ✿✿

तत्कृत: कालविभाग: ॥ 14 ॥

अर्थ - उन गमन करनेवाले ज्योतिष्कों के द्वारा किया हुआ काल-विभाग है।

प्र. 1. *काल-विभाग में यहाँ कौन-कौन-से काल हैं?*

उत्तर- समय, आवलि, आदि व्यवहार-काल का विभाग यहाँ काल-विभाग है।

प्र. 2. *काल के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर- काल के दो भेद हैं- मुख्य-काल और व्यवहार-काल।

प्र. 3. *व्यवहार-काल किसे कहते हैं?*

उत्तर- मुख्य-काल से समुत्पन्न समय, आवलि, नाडी, घटिका आदि लक्षणवाला व्यवहार-काल है।

प्र. 4. *मुख्य-काल किसे कहते हैं?*

उत्तर- प्रत्येक आकाश-प्रदेश पर एक-एक कालाणुरूप मुख्य-काल अवस्थित है।

प्र. 5. *ज्योतिषी-देवों के द्वारा कौन-से काल का विभाग होता है?*

उत्तर- समय, आवलि, नाडी, घटिकारूप व्यवहार-काल का विभाग गमन करनेवाले ज्योतिषी-देवों के द्वारा होता है। ✿✿

बहिरवस्थिता: ॥ 15 ॥

अर्थ - मनुष्य-लोक के बाहर ज्योतिष्क-देव स्थिर रहते हैं।

प्र. 1. *मनुष्य-लोक के बाहर कौन-से देव स्थिर रहते हैं?*

उत्तर- मनुष्य-लोक के बाहर ज्योतिषी-देव स्थिर रहते हैं।

प्र. 2. *मनुष्य-लोक के बाहर काल-विभाग कैसे होता है?*

उत्तर- मनुष्य-लोक के बाहर काल-विभाग नहीं होता है। हमेशा एक-सा ही काल रहता है। क्योंकि वहाँ के ज्योतिष-देव स्थिर रहते हैं।

प्र. 3. *इस विश्व में मनुष्य-लोक के बाहर कितने ज्योतिषी-देवों के विमान रहते हैं?*

उत्तर- मनुष्य-लोक के बाहर असंख्यात ज्योतिषी-देवों के विमान रहते हैं। ✿✿

वैमानिका: ॥ 16 ॥

अर्थ - चौथे-निकाय के देव 'वैमानिक' हैं।

प्र. 1. *वैमानिक-देव कौन होते हैं?*

उत्तर- विमानों में रहनेवाले देव 'वैमानिक' कहलाते हैं।

प्र. 2. वैमानिक-देवों में क्या विशेषता होती है?

उत्तर- विमानवासी देव द्विचरम-देही होते हैं अर्थात् एक मनुष्य और एक देव ऐसे

दो भव बीच में लेकर तीसरे-भव में मोक्ष चले जाते हैं।

प्र. 3. *विमान कितने प्रकार के हैं? और कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— विमान तीन प्रकार हैं — इन्द्र, श्रेणीबद्ध, प्रकीर्णक।

प्र. 4. *इन्द्र-विमान किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो विमान इन्द्र के समान मध्य में स्थित हैं, वे इन्द्र विमान हैं।

प्र. 5. *श्रेणीबद्ध-विमान किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्र-विमानों के चारों ओर आकाश के प्रदेशों की पंक्ति के समान स्थित हैं, वे श्रेणीबद्ध-विमान हैं।

प्र. 6. *प्रकीर्णक-विमान किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिखरे हुए फूलों के समान विदिशाओं में जो विमान अवस्थित हैं, वे प्रकीर्णक-विमान हैं।

प्र. 7. *देवों के विमानों में जिनमंदिर कितने हैं, वे कृत्रिम हैं या अकृत्रिम हैं?*

उत्तर— देवों के विमानों में सभी जिनमंदिर अकृत्रिम हैं। इनकी संख्या 84 लाख 97 हजार 23 है। ✿✿

कल्पोपपन्ना: कल्पातीताश्च ।।17।।

अर्थ — वे दो प्रकार के है कल्पोपपन्न और कल्पातीत।

प्र. 1. *वैमानिक-देवों के कितने भेद हैं और कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— वैमानिक-देवों के दो भेद हैं — कल्पोपपन्न, कल्पातीत।

प्र. 2. *'कल्पोपपन्न-देव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो देव कल्पों में उत्पन्न होते हैं, वे 'कल्पोपपन्न-देव' कहलाते हैं।

प्र. 3. *'कल्पातीत-देव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो देव कल्पों के परे हैं, वे 'कल्पातीत-देव' कहलाते हैं।

प्र. 4. *कल्पातीत-देव कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— नव ग्रैवयेक, नव अनुदिश और पाँच अनुत्तरवासी 'अहमिन्द्र-देव' कल्पातीत हैं।

प्र. 5. *भवनत्रिक-देवों में भी इन्द्र आदि की कल्पना है, फिर उन्हें भी 'कल्पोपपन्न' क्यों नहीं कहते हैं?*

उत्तर— रूढिवश वैमानिक-देवों को ही 'कल्पोपपन्न' कहा जाता है। ✿✿

उपर्युपरि ।।18।।

अर्थ — वे ऊपर-ऊपर रहते हैं।

प्र. 1. ऊपर-ऊपर कौन रहते हैं?

उत्तर— ऊपर-ऊपर वैमानिक-देव रहते हैं।

प्र. 2. ऊपर-ऊपर ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर— वैमानिक-देव ज्योतिषी-देवों के समान तिरछे व व्यन्तरों के समान विषमरूप से नहीं रहते; यह बताने के लिए 'ऊपर-ऊपर' शब्द का प्रयोग किया है।

प्र. 3. 'ऊपर-ऊपर' शब्द का अर्थ और क्या हो सकता है?

उत्तर— 'उपरि' शब्द का अर्थ समीपवाची भी हो सकता है; क्योंकि प्रत्येक पटल में दो-दो स्वर्ग समीपवर्ती हैं। ✿✿

सौधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोतर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्त्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ॥19॥

अर्थ — सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोतर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार और सहस्त्रार तथा आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, नौ ग्रैवेयक और विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि में वे निवास करते हैं।

प्र. 1. प्रथम स्वर्ग के 'सौधर्म' नाम किस कारण से हैं?

उत्तर— वहाँ 'सुधर्मा' नाम की सभा है, अत: उस कल्प का नाम 'सौधर्म' है।

प्र. 2. प्रथम इन्द्र का 'सौधर्म' नाम किस कारण से है?

उत्तर— 'सौधर्म'-कल्प के सम्बन्ध से वहाँ का इन्द्र भी 'सौधर्म' कहलाता है।

प्र. 3. दूसरे स्वर्ग का नाम 'ऐशान'-स्वर्ग किस कारण है?

उत्तर— जहाँ 'ईशान' नाम की देव-सभा है, उस स्वर्ग का नाम 'ऐशान' स्वर्ग है।

प्र. 4. ऐशान-स्वर्ग के इन्द्र का नाम 'ऐशान' इन्द्र क्यों है?

उत्तर— ऐशान-स्वर्ग के सम्बन्ध से वहाँ के इन्द्र का नाम 'ऐशान'-इन्द्र है।

प्र. 5. सौधर्मादि-स्वर्ग ऊपर-ऊपर किस-प्रकार हैं?

उत्तर— सर्वप्रथम सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोतर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र महाशुक्र, शतार, सहस्त्रार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत नामक ये 16 स्वर्ग हैं।

प्र. 6. मध्यलोक और स्वर्ग के बीच में कितना अन्तर है?

उत्तर— सुमेरु-पर्वत की चूलिका से ऊपर एक बाल के अन्तर से 'ऋजु' विमान है जो 'सौधर्म'-कल्प का इन्द्रक विमान है।

प्र. 7. कल्पवासी-देवों के बारह-इन्द्र कौन-कौन से हैं?

उत्तर— सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तव, शुक्र, शतार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत — ये बारह-इन्द्र हैं।

प्र. 8. सौधर्म-ऐशान स्वर्ग के पटलों की संख्या कितनी है?

उत्तर— सौधर्म-ऐशान स्वर्ग के 31 पटल हैं।

प्र. 9. सानत्कुमार-माहेन्द्र-स्वर्ग के कितने पटल हैं?

उत्तर— सानत्कुमार-माहेन्द्र-स्वर्ग के 7 पटल हैं।

प्र. 10. ब्रह्म-ब्रह्मोतर-स्वर्ग के कितने पटल हैं।

उत्तर— ब्रह्म-ब्रह्मोतर-स्वर्ग के 4 पटल हैं।

प्र. 11. लान्तव-कापिष्ठ-स्वर्ग के कितने पटल हैं?

उत्तर— लान्तव-कापिष्ठ-स्वर्ग के 2 पटल हैं।

प्र. 12. शुक्र और महाशुक्र-स्वर्ग के कितने पटल हैं?

उत्तर— शुक्र और महाशुक्र-स्वर्ग का एक पटल है।

प्र. 13. शतार और सहस्रार-स्वर्ग के कितने पटल हैं?

उत्तर— शतार और सहस्रार-स्वर्ग का एक पटल है।

प्र. 14. आनत-प्राणत-स्वर्ग के कितने पटल हैं?

उत्तर— आनत-प्राणत-स्वर्ग के 3 पटल हैं।

प्र. 15. आरण-अच्युत-स्वर्ग के कितने पटल हैं?

उत्तर— आरण-अच्युत-स्वर्ग के 3 पटल हैं।

प्र. 16. नव-ग्रैवेयक के कितने पटल है?

उत्तर— नव-ग्रैवेयक के 3 पटल हैं, अधो-ग्रैवेयक, मध्यम-ग्रैवेयक, ऊर्ध्व-ग्रैवेयक।

प्र. 17. नव-ग्रैवेयक कितने हैं? उनके नाम क्या हैं?

उत्तर— नव-ग्रैवेयक नौ हैं — सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुभद्र, सुविशाल, सुमनस्, सौमनस और प्रीतिंकर।

प्र. 18. नव-अनुदिशों के नाम क्या हैं?

उत्तर— आदित्य, अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूपक, अंक, और स्फटित प्रभास — ये नव-अनुदिश हैं।

प्र. 19. नव-अनुदिशों की 'अनुदिश' संज्ञा किस कारण है?

उत्तर— प्रत्येक दिशा में इनका विमान होने से ये 'अनुदिश' कहलाते हैं।

प्र. 20. पाँच 'अनुत्तर' कौन-से हैं?

उत्तर— विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि — ये पाँच-अनुत्तर हैं।

प्र. 21. सर्वार्थसिद्धि के देवों की विशेषता क्या है?

उत्तर- सर्वार्थसिद्धि के देव एक-भवावतारी होते हैं।

प्र. 22. 'सर्वार्थसिद्धि' का यह नाम क्यों है?

उत्तर- सर्व-प्रयोजनों की सिद्धि हो जाने से उनकी 'सर्वार्थसिद्धि' यह संज्ञा है।

प्र. 23. सर्वार्थसिद्धि के देवों की जघन्य-आयु कितनी है?

उत्तर- इनकी जघन्य और उत्कृष्ट- दोनों ही आयु 33 सागर की होती है।

प्र. 24. विजयादि चार-विमानों की जघन्य और उत्कृष्ट-आयु कितनी है?

उत्तर- विजयादि चार-विमानों की आयु बत्तीस-सागर से कुछ अधिक है, **उत्कृष्ट** तैंतीस-सागरोपम है।

प्र. 25. विजयादि चारों विमानों के देव कितने भवावतारी होते हैं?

उत्तर- विजयादि चारों विमानों के देव दो-तीन भव से अधिक संसार में परिभ्रमण नहीं करते। ये सम्यग्दृष्टि होते हैं। ✿✿

स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि-विषयतो अधिकाः ॥ 20 ॥

अर्थ - स्थिति, प्रभाव, सुख, द्युति, लेश्या, विशुद्धि, इन्द्रिय-विषय और अवधि-विषय की अपेक्षा ऊपर-ऊपर के देव में अधिक है।

प्र. 1. नीचे-नीचे के वैमानिक देवों की अपेक्षा ऊपर-ऊपर के देवों में क्या विशेषतायें हैं?

उत्तर- स्थिति, प्रभाव, सुख, द्युति, लेश्या, विशुद्धि, इन्द्रियविषय और अवधि-विषय की अपेक्षा ऊपर-ऊपर के देव श्रेष्ठ हैं।

प्र. 2. 'स्थिति' किसे कहते हैं?

उत्तर- अपने द्वारा प्राप्त हुई आयु के उदय से किसी एक भव में शरीर के साथ रहना 'स्थिति' कहलाती है।

प्र. 3. 'प्रभाव' किसे कहते हैं?

उत्तर- शाप और अनुग्रहरूप शक्ति को 'प्रभाव' कहते हैं।

प्र. 4. 'सुख' किसे कहते हैं?

उत्तर- इन्द्रियों के विषयों के अनुभव करने को 'सुख' कहते हैं।

प्र. 5. 'द्युति' किसे कहते हैं?

उत्तर- शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि की कान्ति को 'द्युति' कहते हैं।

प्र. 6. 'लेश्या-विशुद्धि' किसे कहते हैं?

उत्तर- लेश्या की विशुद्धि 'लेश्या-विशुद्धि' कहलाती है।

प्र. 7. *'इन्द्रिय-विषय' और 'अवधि-विषय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्रिय और अवधिज्ञान का विषय क्रमशः 'इन्द्रिय-विषय' और 'अवधि-विषय' कहलाते हैं।

प्र. 8. *नीचे-नीचे के देवों से ऊपर के देवों में परस्पर क्या विशेषता है?*

उत्तर— नीचे-नीचे वैमानिक देवों में ऊपर के देवों में आयु, प्रभाव, सुख, कान्ति, लेश्या की विशुद्धि, इन्द्रिय-विषय और अवधिज्ञान का विषय अधिक-अधिक है।

✿✿

गति-शरीर-परिग्रहाभिमानतो हीनाः ॥21॥

अर्थ — गति, शरीर, परिग्रह और अभिमान की अपेक्षा ऊपर-ऊपर के देव हीन हैं।

प्र. 1. *वैमानिक-देवों में आगे-आगे हीनता किस अपेक्षा से हैं?*

उत्तर— वैमानिक-देवों में गति शरीर, परिग्रह और अभिमान की अपेक्षा ऊपर-ऊपर के देव 'हीन' हैं।

प्र. 2. *'गति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक देश से दूसरे देश के प्राप्त करने का जो साधन है, उसे 'गति' कहते हैं। अर्थात् जिससे प्राणी एक-स्थान से दूसरे-स्थान को प्राप्त करता है, वह गति है।

प्र. 3. *इस सूत्र में 'शरीर' शब्द से क्या तात्पर्य है?*

उत्तर— इस सूत्र में 'शरीर' शब्द से वैक्रियिक-शरीर लिया है।

प्र. 4. *वैक्रियिक-शरीर कैसा होता है?*

उत्तर— देवों का शरीर वैक्रियिक होता है, इसलिए वे अपनी इच्छानुसार उसे छोटा-बड़ा जैसा चाहे कर सकते हैं।

प्र. 5. *'परिग्रह' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— लोभ-कषाय के उदय से विषयों के संग को 'परिग्रह' कहते हैं।

प्र. 6. *'अभिमान' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— लोभ-कषाय के उदय से उत्पन्न हुए अहंकार को 'अभिमान' कहते हैं।

प्र. 7. *आगे देवों में गति की हीनता का क्या कारण है?*

उत्तर— नीचे के देवों से ऊपर-ऊपर के देव गमन करने की सामर्थ्य अधिक अधिक रखते हैं, जैसे सर्वार्थसिद्धि के देवों में सातवें नरक तक जाने की सामर्थ्य हैं, परन्तु वे उसका उपयोग करने की इच्छा भी नहीं करते।

प्र. 8. *आगे के देवों में शरीर की हीनता कैसे है? ऊँचाई कितनी-कितनी है?*

उत्तर— नीचे-नीचे के देवों के शरीर की ऊँचाई से ऊपर-ऊपर के देवों की ऊँचाई

घटती गई है, जैसे शरीर की ऊँचाई पहले-दूसरे-स्वर्ग में सात-हाथ की, तीसरे-चौथे में छह-हाथ की पाँचवे में आठवें तक पाँच-हाथ की, नौंवे से बारहवें तक चार-हाथ की, आनत-प्राणत में साढ़े तीन-हाथ की, आरण-अच्युत में तीन-हाथ की, अधो-ग्रैवेयक में ढाई-हाथ, मध्य-ग्रैवेयक में दो-हाथ, उपरिम-ग्रैवेयक में डेढ़-हाथ और अनुदिशों तथा अनुत्तर-विमानों में एक-हाथ की है।

प्र. 9. *आगे के देवों में परिग्रह की हीनता क्यों है?*

उत्तर— ऊपर-ऊपर के स्वर्गों में विमानों की संख्या, विमानों की लम्बाई चौड़ाई व ऊँचाई कम होती गई है। इसीप्रकार ऊपर के देवों में परिग्रह की हीनता है।

प्र. 10. *ऊपर-ऊपर के देवों में अभिमान की हीनता कैसे हैं?*

उत्तर— स्थिति, प्रभाव, शक्ति आदि के निमित्त से अभिमान पैदा होता है; परन्तु ऊपर-ऊपर के देवों में कषाय घटती हुई होने के कारण अभिमान भी घटता हुआ है। ✿✿

पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि-शेषेषु ॥22॥

अर्थ — दो, तीन, कल्प-युगलों में और शेष में क्रम से पीत, पद्म और शुक्ल-लेश्यावाले देव हैं।

प्र. 1. *वैमानिक देवों में कौन-कौन सी लेश्या होती है?*

उत्तर— दो, तीन कल्प-युगलों में और शेष में क्रम से पीत, पद्म और शुक्ल-लेश्यावाले देव हैं।

प्र. 2. *सौधर्म-ऐशान-कल्पों में कौन-सी लेश्या है?*

उत्तर— सौधर्म-ऐशान-कल्पों में पीत-लेश्या है।

प्र. 3. *सानत्कुमार-माहेन्द्र-कल्पों में कौन-सी लेश्या है।*

उत्तर— सानत्कुमार-माहेन्द्र-कल्प में पीत, पद्म दोनों लेश्यायें हैं।

प्र. 4. *ब्रह्म, ब्रह्मोतर, लान्तव, कापिष्ठ-कल्पों में कौन-सी लेश्या है?*

उत्तर— ब्रह्म, ब्रह्मोतर, लान्तव, कापिष्ठ-कल्पों में पद्म-लेश्या है।

प्र. 5. *शुक्र, महाशुक्र, शतार और सहस्रार-कल्पों में कौन-सी लेश्या है?*

उत्तर— शुक्र, महाशुक्र, शतार और सहस्रार-कल्पों में पद्म और शुक्ल लेश्यायें हैं।

प्र. 6. *आनत, प्राणत, आरण, अच्युत में कौन-सी लेश्या है?*

उत्तर— आनत, प्राणत, आरण, अच्युत में शुक्ल-लेश्या है।

प्र. 7. *अनुदिश और अनुत्तर-विमानों में कौन-सी लेश्या है?*

उत्तर— अनुदिश और अनुत्तर-विमानों में परमशुक्ल-लेश्या है। ✿✿

प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ॥23॥

अर्थ — ग्रैवेयकों से पहले तक 'कल्प' हैं।

प्र. 1. *ग्रैवेयकों से पूर्व तक क्या है?*

उत्तर— ग्रैवेयकों से पूर्व तक 'कल्प' हैं।

प्र. 2. *'कल्प' कितने हैं?*

उत्तर— सौधर्म-स्वर्ग से लेकर अच्युत-स्वर्ग-पर्यन्त 16 स्वर्गों की अथवा 12 स्वर्गों की 'कल्प' संज्ञा है।

प्र. 3. *'कल्प' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिनमें इन्द्र, सामानिक और त्रायस्त्रिंश आदि रूप से देवों के विभाग की कल्पना है, वे 'कल्प' कहलाते हैं।

प्र. 4. *कल्पातीत कौन है?*

उत्तर— नव-ग्रैवेयक, नव अनुदिश और पाँच-अनुत्तर-विमान 'कल्पातीत' कहलाते हैं।

प्र. 5. *'कल्प' और 'कल्पातीत' में क्या अंतर है?*

उत्तर— जहाँ इन्द्र-प्रतीन्द्र की कल्पना है, वे स्वर्ग 'कल्प' कहलाते हैं; जहाँ इन्द्र-प्रतीन्द्र की कल्पना नहीं है, और जहाँ सभी अहमिन्द्र हैं, वे सब 'कल्पातीत-विमान' कहलाते हैं। ✿✿

ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥24॥

अर्थ — 'लौकान्तिक' देवों का 'ब्रह्मलोक' निवास-स्थान है।

प्र. 1. *लौकान्तिक-देव कहाँ रहते हैं?*

उत्तर— 'ब्रह्मलोक' लौकान्तिक-देवों का निवास-स्थान है।

प्र. 2. *मुख्यरूप से लौकान्तिक देवों के नाम क्या हैं?*

उत्तर— मुख्यरूप से सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध और अरिष्ट — ये मुख्यरूप से लौकान्तिक-देव हैं।

प्र. 3. *लौकान्तिक-देवों की विशेषता क्या है?*

उत्तर— लौकान्तिक-देव एक-भवावतारी होते हैं। लोक (जन्म-मरण रूप संसार) का अंत करनेवाले होते हैं, इसलिए 'लौकान्तिक' कहलाते हैं। ये द्वादशांग के पाठी होते हैं, ब्रह्मचारी होते हैं, और तीर्थकरों के सिर्फ तप-कल्याणक में आते हैं।

प्र. 4. *लौकान्तिक-देवों को 'देवर्षि' क्यों कहते हैं?*

उत्तर — लौकान्तिक-देव विषयों से विरत रहते हैं, इसलिए 'देवर्षि' कहलाते हैं।

प्र. 5. *सूत्र में 'लोक' का क्या अर्थ है?*

उत्तर- सूत्र में 'लोक' का अर्थ 'संसार' है। ✿✿

सारस्वतादित्य-वह्न्यरूण-गर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥ 25 ॥

अर्थ – सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरूण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध और अरिष्ट-ये लौकान्तिक-देव है।

प्र. 1. लौकान्तिक-देव कौन-कौन-से हैं?

उत्तर- सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरूण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध और अरिष्ट-ये लौकान्तिक-देव हैं।

प्र. 2. सारस्वत-देव का लक्षण क्या है?

उत्तर- जो चौदह पूर्व के ज्ञाता होते हैं, वे 'सारस्वत' कहलाते हैं।

प्र. 3. आदित्य-देव का लक्षण क्या है?

उत्तर- जो आदित्य अर्थात् सूर्य के समान द्वेदीप्यमान हैं वह आदित्य देव हैं।

प्र. 4. वह्नि-देव का क्या लक्षण है?

उत्तर- जो वह्नि के समान द्वेदीप्यमान हो, वे वह्नि देव हैं।

प्र. 5. ये लौकान्तिक-देव कौन-कौन सी दिशाओं में रहते हैं?

उत्तर- सारस्वत पूर्वोत्तर-कोण में, आदित्य पूर्व-दिशा में, वह्नि पूर्व-दक्षिण में, अरूण दक्षिण दिशा में, गर्दतोय दक्षिण-पश्चिम, तुषित पश्चिम दिशा में, अव्याबाध पश्चिमोत्तर में और अरिष्ट उत्तर-दिशा में रहते हैं।

प्र. 6. अरूण-देव का लक्षण क्या है?

उत्तर- उदीयमान-सूर्य के समान जिनकी कान्ति हो, वे अरूण-देव कहलाते हैं।

प्र. 7. गर्दतोय-देव का लक्षण क्या है?

उत्तर- शब्द को 'गर्द' और जल को 'तोय' कहते हैं। जिनके मुख से शब्द जल के प्रवाह की तरह निकलें, वे 'गर्दतोय-देव' हैं।

प्र. 8. तुषित-देव' का लक्षण क्या है?

उत्तर- जो सन्तुष्ट और विषयमुख से पराङ्मुख रहते हैं, वे तुषित-देव हैं।

प्र. 9. अव्याबाध-देव का लक्षण क्या है?

उत्तर- जिनके कामादि-जनित बाधा नहीं है, वे अव्याबाध-देव हैं।

प्र. 10. अरिष्ट-देव का लक्षण क्या है?

उत्तर- जो अकल्याण करनेवाला कार्य नहीं करते हैं, उनको अरिष्ट-देव कहते हैं।

प्र. 11. सब मिलकर लौकान्तिक-देवों की संख्या कितनी है?

उत्तर- लौकान्तिक-देव चार लाख सात हजार आठ सौ बीस होते हैं। ✿✿

विजयादिषु द्विचरमाः ॥26॥

अर्थ **— विजयादि में दो चरमवाले देव हैं।**

प्र. 1. अन्य देवों के भी निर्वाण-प्राप्ति की योग्यता है. वे कौन-से देव हैं?

उत्तर— विजयादिक में दो चरमवाले देव होते हैं। एवं जो सम्यग्दृष्टि देव हैं उनमें—निर्वाण प्राप्ति की योग्यता होती है।

प्र. 2. द्विचरमवाले देव कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— विजय, वैजयन्त, जयंत और अपराजित विमानवासी तथा नव अनुदिशों में रहनेवाले जो अहमिन्द्र-देव हैं, वे 'द्विचरमा' होते हैं।

प्र. 3. 'द्विचरम' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो दो भव मनुष्य के धारणकर मोक्ष चले जाते हैं, वे 'द्विचरम' कहलाते हैं।

प्र. 4. सर्वार्थसिद्धि के अहमिन्द्र-देव कितने भव लेकर मोक्ष जाते है?

उत्तर— सर्वार्थसिद्धि के अहमिन्द्र-देव परमोत्कृष्ट-देव होने से एक-भवावतारी हैं। ✿✿

औपपादिक-मनुष्येभ्य शेषास्तिर्यग्योनयः ॥27॥

अर्थ **— उपपाद-जन्मवाले व मनुष्यों के सिवा शेष सब जीव तिर्यंचयोनिवाले हैं।**

प्र. 1. 'मनुष्य' किन्हें कहते हैं?

उत्तर— मनु की सन्तान 'मनुष्य' हैं और जो उत्कृष्ट-मन के धारक हैं, वे मनुष्य कहलाते हैं।

प्र. 2. 'तिर्यंच' किसे कहते हैं।

उत्तर— जो मन-वचन-काय से कुटिलता को प्राप्त हैं, जिनकी आहारादि संज्ञायें सुव्यक्त हैं, जो निकृष्ट अज्ञानी हैं, जिनके अत्यधिक-पाप की बहुलता पायी जाती है, उन्हें 'तिर्यंच' कहते हैं।

प्र. 3. तिर्यंच-जीवों के रहने का स्थान कौन-सा है?

उत्तर— तिर्यंच सर्व-लोक में रहते हैं। इनका अलग से कोई स्थान नहीं है।

प्र. 4. तिर्यंच कितने प्रकार के होते हैं और कौन-कौन से हैं?

उत्तर— तिर्यंच दो प्रकार के होते हैं — बादर और सूक्ष्म।

प्र. 5. तिर्यच कौन-कौन होते हैं?

उत्तर— उपपाद-जन्म लेनेवाले देव-नारकी तथा मनुष्यों के अलावा सभी जीव तिर्यंच जीव कहलाते हैं। ✿✿

स्थितिरसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योपमार्द्ध-हीनमिताः ॥28॥

अर्थ — असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, द्वीपकुमार और, शेष

भवनवासियों की उत्कृष्ट-स्थिति क्रम से एक-सागरोपम, तीन-पल्योपम ढाई-पल्योपम, दो-पल्योपम और डेढ़-पल्योपम होती है।

प्र. 1. *भवनवासी-देवों में असुरकुमार-देवों की उत्कृष्ट-आयु कितनी है?*

उत्तर— भवनवासी-देवों में असुरकुमार देव की उत्कृष्ट-आयु एक-सागरोपम है।

प्र. 2. *सूत्र में अधिक-स्थिति किस अपेक्षा है? यह अधिकता कितनी है?*

उत्तर— यह अधिकता घातायुष्क-जीवों की अपेक्षा है। घातायुष्क-देवों की आयु अन्य-देवों की अपेक्षा आधा-सागर अधिक होती है।

प्र. 3. *'घातायुष्क-सम्यग्दृष्टि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस सम्यग्दृष्टि ने विशुद्ध-परिणामों के निमित्त से देवायु का अधिक-स्थिति-बन्ध किया, किन्तु बाद में परिणामों में संक्लेश बढ़ जाने से उसे बाँधी हुई स्थिति का घात भी किया, उसे 'घातायुष्क-सम्यग्दृष्टि' कहते हैं।

प्र. 4. *'अधिक' शब्द का अधिकार कौन-से स्वर्ग तक होगा?*

उत्तर— 'सहस्रार-कल्प' तक। ✿✿

सौधर्मैशानयोः सागरोपमे अधिके ॥29॥

अर्थ — सौधर्म और ऐशान कल्प में दो-भाग सागरोपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट-स्थिति है।

प्र. 1. *इस सूत्र में 'सागरोपमे' पद में द्विवचन का प्रयोग क्यों किया गया है?*

उत्तर— दो सागरोपम का ज्ञान कराने के लिये यहाँ द्विवचन का प्रयोग किया गया है।

प्र. 1. *सूत्र में प्रयुक्त 'अधिके' पद की क्या विशेषता है?*

उत्तर— यह 'अधिके' पद सहस्रार-कल्प तक का बोध कराता है।

प्र. 1. *इस सूत्र से क्या सिद्ध होता है?*

उत्तर— इस सूत्र से सिद्ध होता है कि सौधर्म और ऐशान-कल्प की उत्कृष्ट-स्थिति दो-सागरोपम से कुछ अधिक है। ✿✿

सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः-सप्त ॥30॥

अर्थ — 'सानत्कुमार' और 'माहेन्द्र' कल्पों में सात-सागरोपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट-स्थिति है।

प्र. 1. *सानत्कुमार और माहेन्द्र-कल्पों में देवों उत्कृष्ट-आयु कितनी है?*

उत्तर— सानत्कुमार और माहेन्द्र-कल्पों में देवों की उत्कृष्ट-आयु सात-सागरोपम से कुछ अधिक है। ✿✿

त्रि-सप्त-नवैकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभिरधिकानि तु ॥31॥

अर्थ — ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-युगल से लेकर प्रत्येक युगल में आरण-अच्युत तक क्रम से तीन सागरोपम, सात सागरोपम, नौ सागरोपम, ग्यारह-सागरोपम, तेरह-सागरोपम और पन्द्रह-सागरोपम उत्कृष्ट-स्थिति है।

प्र. 1. *ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-कल्प में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर में उत्कृष्ट-स्थिति दस-सागर से कुछ अधिक है।

प्र. 2. *लान्तव-कापिष्ठ-युगल में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— लान्तव-कापिष्ठ-युगल में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति चौदह-सागर से कुछ अधिक है।

प्र. 3. *शुक्र-महाशुक्र में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है।*

उत्तर— शुक्र-महाशुक्र में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति सोलह-सागर से कुछ अधिक है।

प्र. 4. *शतार-सहस्रार में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— शतार-सहस्रार में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति अठारह-सागर से कुछ अधिक है।

प्र. 5. *आनत-प्राणत में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— आनत-प्राणत में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति बीस-सागर है।

प्र. 6. *आरण-अच्युत-कल्प में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— आरण-अच्युत-कल्प में देवों की उत्कृष्ट-स्थिति बाईस-सागर है।

प्र. 7. *सूत्र में आया 'तु' शब्द का अर्थ क्या है?*

उत्तर— सूत्र में 'तु' शब्द होने के कारण 'अधिक' शब्द का सम्बन्ध बारहवें-स्वर्ग तक ही होता है। क्योंकि घातायुष्क-जीवों की उत्पत्ति बारहवें-स्वर्ग तक ही होती है।

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु-सर्वार्थसिद्धौ च ॥32॥

अर्थ — आरण-अच्युत के ऊपर नौ-ग्रैवेयकों में से एक-सागरोपम अधिक उत्कृष्ट-स्थिति है तथा सर्वार्थसिद्धि में पूरी तैतीस-सागरोपम स्थिति है।

प्र. 1. *नव-ग्रैवेयकों में देवों की उत्कृष्ट-आयु कितनी है?*

उत्तर— नव-ग्रैवेयकों में प्रथम-ग्रैवयेक में 23 सागर, फिर एक एक सागर बढ़ते-बढ़ते अंतिम ग्रैवेयक में देवों की 31 सागर की उत्कृष्ट-आयु है।

प्र. 2. *नव-अनुदिशों में देवों की उत्कृष्ट-आयु कितनी है?*

उत्तर— नव-अनुदिशों में देवों की उत्कृष्ट-आयु 32 सागर की है।

प्र. 3. पाँच-अनुत्तरों में देवों की उत्कृष्ट-आयु कितनी है?

उत्तर— पाँच-अनुत्तरों में देवों की उत्कृष्ट-आयु 33 सागर की है।

प्र. 4. एक 'पल्य' में कितने वर्ष होते हैं?

उत्तर— असंख्यात-वर्षों का एक पल्य होता है। ✿✿

अपरा-पल्योपममधिकम् ॥33॥

अर्थ — सौधर्म और ऐशान-कल्पों में जघन्य-स्थिति अधिक एक-पल्योपम से कुछ अधिक है।

प्र. 1. सौधर्म और ऐशान-कल्पों में देवों की जघन्य-आयु कितनी है?

उत्तर— सौधर्म और ऐशान-कल्पों में देवों की जघन्य-आयु एक-पल्य से कुछ अधिक है।

प्र. 2. सूत्र में 'अपरा' शब्द का अर्थ क्या है?

उत्तर— यहाँ 'अपरा' शब्द से जघन्य स्थिति ली गयी है, जो साधिक एक-पल्योपम है।

प्र. 3. यहाँ जघन्य-स्थिति किनकी है?

उत्तर— यहाँ जघन्य-स्थिति सौधर्म और ऐशान-कल्पों के देवों की है। ✿✿

परतः परतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ॥34॥

अर्थ — आगे-आगे पूर्व-पूर्व की उत्कृष्ट-स्थिति बाद वाले की जघन्य-स्थिति है।

प्र. 1. आगे के स्वर्गों की जघन्य-आयु कितनी है?

उत्तर— पहले-पहले स्वर्गों की उत्कृष्ट-आयु आगे के स्वर्गों की जघन्य-आयु है।

प्र. 2. सर्वार्थसिद्धि के देवों की जघन्य-आयु कितनी है?

उत्तर— सर्वार्थसिद्धि के देवों में जघन्य और उत्कृष्ट का भेद नहीं है, वहाँ सिर्फ 33 सागर की आयु है।

प्र. 3. पूर्व-पूर्व की उत्कृष्ट-स्थिति ही आगे-आगे की जघन्य-स्थिति कैसे होती है?

उत्तर— पूर्व-पूर्व की उत्कृष्ट-स्थिति में एक-समय मिलाने पर आगे-आगे की जघन्य-स्थिति होती है, जैसे तेरहवें और चौदहवें-कल्प की उत्कृष्ट-स्थिति बीस-सागरोपम है। इसमें एक-समय मिला देने पर पन्द्रहवें और सोलहवें-कल्प की जघन्य-स्थिति होती है। ✿✿

नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥35॥

अर्थ — पहिले-पहिले के नरकों की उत्कृष्ट-आयु दूसरे-दूसरे नरकों के

नारकियों की जघन्य-आयु होती है।

प्र. 1. *नारकियों की जघन्य-आयु कितनी है?*

उत्तर— पहले-पहले नरकों के नारकियों की उत्कृष्ट-आयु आगे-आगे के नरकों के नारकियों की जघन्य-आयु है। ✿✿

दश-वर्ष-सहस्राणि प्रथमायाम् ।।36।।

अर्थ — प्रथम-पटल के नारकी-जीवों की जघन्य-आयु दस हजार वर्ष की है।

प्र. 1. *प्रथम-नरक के नारकियों की जघन्य-आयु कितनी है?*

उत्तर— प्रथम-नरक के नारकियों की जघन्य-आयु दस हजार वर्ष है। ✿✿

भवनेषु च ।।37।।

अर्थ — भवनवासियों में भी दस-हजार वर्ष जघन्य-स्थिति है।

प्र. 1. *भवनवासी-देवों की जघन्य-आयु कितनी है?*

उत्तर— भवनवासी-देवों की जघन्य-आयु 10 हजार वर्ष-प्रमाण है। ✿✿

व्यन्तराणां च ।।38।।

अर्थ — व्यंतरों की भी 10 हजार वर्ष जघन्य-स्थिति है।

प्र. 1. *व्यंतर-देवों की जघन्य-आयु कितनी है?*

उत्तर— व्यंतर-देवों की जघन्य-आयु भी 10 हजार वर्ष है। ✿✿

परा पल्योपमधिकम् ।।39।।

अर्थ — और उत्कृष्ट-स्थिति एक-पल्योपम से कुछ अधिक है।

प्र. 1. *व्यंतर-देवों की उत्कृष्ट-आयु कितनी है?*

उत्तर— व्यंतर-देवों की उत्कृष्ट-आयु एक-पल्योपम से कुछ अधिक है। ✿✿

ज्योतिष्काणां च ।।40।।

अर्थ — ज्योतिषियों की उत्कृष्ट-स्थिति एक पल्योपम से कुछ अधिक है।

प्र. 1. *ज्योतिषी-देवों की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— ज्योतिषी-देवों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम से कुछ अधिक है।

प्र. 2. *ज्योतिषी-देव कितने हैं, और कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— ज्योतिषी-देव पाँच हैं — चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्णक तारक।

प्र. 3. *चन्द्र की स्थिति कितनी है?*

उत्तर— चन्द्र की स्थिति एक लाख वर्ष अधिक एक-पल्योपम-प्रमाण है।

प्र. 4. *सूर्य की स्थिति कितनी है?*

उत्तर— सूर्य की स्थिति एक हजार वर्ष अधिक एक-पल्योपम-प्रमाण है।

प्र. 5. *गुरु की स्थिति कितनी है?*

उत्तर— गुरु की स्थिति पल्योपम-प्रमाण है।

प्र. 6. *बुध, मंगल और शनि आदि शेष-ग्रहों की स्थिति कितनी है?*

उत्तर— बुध, मंगल और शनि आदि शेष ग्रहों की स्थिति आधा-पल्योपम-प्रमाण है।

प्र. 7. *तारकों और नक्षत्रों की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— तारकों और नक्षत्रों की उत्कृष्ट-स्थिति पल्योपम का चौथा-भाग-प्रमाण है।

तदष्टभागोऽपरा ॥41॥

अर्थ — ज्योतिषियों की जघन्य-स्थिति उनकी उत्कृष्ट-स्थिति का आठवाँ-भाग है।

प्र. 1. *ज्योतिषियों की जघन्य-स्थिति कितनी है।*

उत्तर— ज्योतिषियों की जघन्य-स्थिति उनकी उत्कृष्ट-स्थिति का आठवाँ-भाग प्रमाण है। ✿✿

लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥42॥

अर्थ — सब लौकान्तिक-देवों की स्थिति आठ-सागरोपम है।

प्र. 1. *लौकान्तिक-देवों की स्थिति कितनी है?*

उत्तर— सब लौकान्तिक-देवों की जघन्य और उत्कृष्ट-आयु आठ-सागरोपम है।

प्र. 2. *लौकान्तिक-देवों की लेश्या कौन-सी होती है?*

उत्तर— सब लौकान्तिक-देवों की शुक्ल-लेश्या होती है।

प्र. 3. *लौकान्तिक-देवों के शरीर की ऊँचाई कितनी है?*

उत्तर— सब लौकान्तिक-देवों के शरीर की ऊँचाई पाँच-हाथ होती है। ✿✿

अजीवकाया धर्माधर्माकाश-पुद्गलाः ।।1।।

अर्थ — धर्म, अधर्म, आकाश, और पुद्गल — ये 'अजीव' और 'काय' रूप द्रव्य हैं।

प्र. 1. *'काय' शब्द का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'काय' शब्द का अर्थ 'शरीर' है।

प्र. 2. *'अजीव-काय' कौन-से हैं?*

उत्तर— धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल ये 'अजीव-काय' हैं।

प्र. 3. *'अजीव-काय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिनके जीव आत्मा नहीं है, वे 'अजीव' कहलाते हैं। जो अजीव भी है, और बहुप्रदेशी होने से कायरूप भी है, वह 'अजीवकाय' है।

प्र. 4. *'अजीव' और 'काय' का संबंध क्या है?*

उत्तर— 'अजीव' विशेषण है और 'काय' विशेष्य है। 'अजीव' और 'काय' में विशेषण-विशेष्य का सम्बन्ध है।

प्र. 5. *सूत्र में 'काय' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल — ये चार द्रव्य बहुप्रदेशी हैं और इन धर्मादिक-द्रव्यों के प्रदेश असंख्यात हैं।

प्र. 6. *सूत्र में 'अजीव' होने से काल-द्रव्य का ग्रहण होना था; परन्तु उसे ग्रहण क्यों नहीं किया?*

उत्तर— सूत्र में अजीव का अभिप्राय बहुप्रदेशी अजीव-द्रव्य से हैं, इसलिए यहाँ काल का ग्रहण नहीं किया।

प्र. 7. *'अस्तिकाय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो द्रव्य सत्तारूप होकर बहुप्रदेशी हो, उन्हें 'अस्तिकाय' कहते हैं।

प्र. 8. *'अस्तिकाय' कितने हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अस्तिकाय' पाँच हैं — जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म और आकाश।

प्र. 9. *परमाणु एकप्रदेशी होते हुए भी काल की तरह 'काय' संज्ञा से रहित क्यों नहीं है?*

उत्तर— क्योंकि पुद्गल-परमाणु में चिकना और रूखा-गुण है; जिससे वह बहुप्रदेशी हो सकता है। काल के परमाणु में ये गुण नहीं हैं; इसलिए वह बहुप्रदेशी नहीं है।

प्र. 10. बहुप्रदेशी कितने द्रव्य नहीं है?

उत्तर— कालद्रव्य बहुप्रदेशी नहीं है।

प्र. 11. अजीवद्रव्यों की धर्मादि संज्ञा किस अपेक्षा से हैं?

उत्तर— धर्मादि द्रव्यों में जीव का लक्षण नहीं पाया जाता; इसलिए उनकी 'अजीव' यह सामान्य-संज्ञा है, तथा धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल — ये उनकी विशेष-संज्ञायें हैं। ✿✿

द्रव्याणि ।।2।।

अर्थ — ये धर्म, अधर्म, आकाश और पुद्गल 'द्रव्य' हैं।

प्र. 1. 'द्रव्य' शब्द कौन-सी धातु से बना है और इसका अर्थ क्या है?

उत्तर— 'द्रव्य' शब्द 'द्रु'-धातु से बना है, जिसका अर्थ 'प्राप्त करना' होता है।

प्र. 2. 'द्रव्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो यथायोग्य अपनी अपनी पर्यायों को और गुणों को प्राप्त होते हैं, वे 'द्रव्य' कहलाते हैं।

प्र. 3. 'गुण' और 'द्रव्य' भिन्न हैं या अभिन्न?

उत्तर— 'गुण' और 'द्रव्य' ये एक-दूसरे को छोड़कर नहीं पाये जाते, ये अभिन्न हैं। ✿✿

जीवाश्च ।।3।।

अर्थ — जीव भी द्रव्य है।

प्र. 1. 'जीवाश्च' सूत्र का अर्थ क्या है?

उत्तर— 'जीवाश्च' सूत्र का अर्थ है कि जीव भी द्रव्य है।

प्र. 2. सूत्र में 'जीवा:' यह बहुवचन क्यों दिया है?

उत्तर— जीव-द्रव्य के अनेक-भेदों को बताने के लिए सूत्र में 'जीवा:' यह बहुवचन प्रयोग किया है।

प्र. 3. द्रव्य कितने है? और कौन-कौन से हैं?

उत्तर— द्रव्य छह होते हैं — जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल।

प्र. 4. संसार में जितने पदार्थ हैं, वे सब क्या कहलाते हैं?

उत्तर— संसार में जितने पदार्थ हैं, वे सब 'द्रव्य' कहलाते हैं।

प्र. 5. जब संसार का प्रत्येक पदार्थ 'द्रव्य' है, तो फिर द्रव्यों की संख्या छह ही कैसे हैं?

उत्तर— संख्या की अपेक्षा द्रव्य अनन्तानन्त हैं, फिर भी 'जाति' की अपेक्षा से पुद्गल,

आकाश, काल, जीव, धर्म और अधर्म — ये छह ही द्रव्य सिद्ध हैं।

प्र. 6. *मन के कितने भेद हैं और कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— मन के दो भेद हैं — द्रव्यमन और भावमन।

प्र. 7. *पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु का अन्तर्भाव पुद्गल में क्यों हो जाता है?*

उत्तर— क्योंकि उन सब में स्पर्श, रस, गंध, आदि गुण पाये जाते हैं। ✿✿

नित्यावस्थितान्यरूपाणि ।।4।।

अर्थ — उक्त द्रव्य नित्य हैं, अवस्थित हैं, और अरूपी हैं।

प्र. 1. *द्रव्यों की विशेषता क्या है?*

उत्तर— सभी द्रव्य नित्य, अवस्थित, अरूपी हैं।

प्र. 2. *क्या पुद्गल-द्रव्य भी अरूपी हैं।*

उत्तर— नहीं, पुद्गल-द्रव्य रूपी हैं, क्योंकि उसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण पाये जाते हैं।

प्र. 3. *'नित्य' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'नित्य' का अर्थ है 'कभी नष्ट नहीं होना'।

प्र. 4. *'अवस्थित' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'अवस्थित' का अर्थ है 'अपनी संख्या का उल्लंघन नहीं करना'।

प्र. 5. *द्रव्य नित्य किस कारण से हैं?*

उत्तर— 'द्रव्यार्थिक नय' की अपेक्षा ये छहों द्रव्य कभी भी विनाश को प्राप्त नहीं होते हैं, इसलिए नित्य हैं।

प्र. 6. *छहों द्रव्य अवस्थित क्यों है?*

उत्तर— चेतन-अचेतन द्रव्य अपने-अपने स्वरूप को कभी नहीं छोड़ते हैं; धर्मादिक द्रव्य कभी भी छह संख्या का उल्लघंन नहीं करते हैं और अपने-अपने प्रदेशों की संख्या का त्याग भी नहीं करते इसलिए छहों-द्रव्य अवस्थित हैं।

प्र. 7. *द्रव्य अरूपी क्यों होते है?*

उत्तर— रूप, रस, गंध वर्ण से रहित होने से द्रव्य अरूपी होते हैं। ✿✿

रूपिणः पुद्गलाः ।।5।।

अर्थ — पुद्गल-द्रव्य 'रूपी' हैं।

प्र. 1. *पुद्गल को 'पुद्गल' क्यों कहते हैं?*

उत्तर— पूरण-गलन-स्वभाव होने से पुद्गल को 'पुद्गल' कहते हैं।

प्र. 2. *'रूपी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिनके रूप पाया जाता है, वे 'रूपी' कहलाते हैं।

प्र. 3. पुद्गल मूर्तिक 'रूपी' है, यह कैसे पता चलता है?

उत्तर— पुद्गल के विश्वरूप कार्य दिखाई देते हैं, इससे पता चलता है कि पुद्गल मूर्तिक, रूपी है।

प्र. 4. 'मूर्तिक' किसे कहते हैं?

उत्तर— रूपादि-संस्थान के परिणाम को 'मूर्तिक' कहते हैं।

प्र. 5. क्या पुद्गल को रूपी कहने पर रसादिक का ग्रहण नहीं होता?

उत्तर— ऐसा नहीं जहाँ रूप है, वहाँ रस, गंध, वर्ण तीनों हैं; और जहाँ वर्ण है, वहाँ भी रूप, रस, गंध तीनों हैं अर्थात् जहाँ एक है. वहाँ तीनों भी हैं। ✿✿

आ आकाशादेकद्रव्याणि ।।6।।

अर्थ — आकाशद्रव्य तक एक-एक-द्रव्य हैं।

प्र. 1. धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और आकाशद्रव्य एक-एक ही किस तरह हैं?

उत्तर— क्षेत्र-भेद और भाव-भेद आदि की अपेक्षा ये असंख्यात और अनन्त हैं; परन्तु द्रव्य की अपेक्षा एक-एक ही हैं, जीवों और पुद्गलों की तरह अनेक नहीं।

प्र. 2. धर्म, अधर्म और आकाश की संख्या कितनी है?

उत्तर— धर्म, अधर्म और आकाशद्रव्य एक-एक हैं।

प्र. 3. काल एक प्रदेशी होने पर भी 'अप्रदेशी' क्यों कहलाता है।

उत्तर— काल में अपना एक प्रदेश तो है, परन्तु 'बहुप्रदेशी' या 'काय' होने के लिए दूसरा प्रदेश नहीं है; इसलिए वह 'अप्रदेशी' कहलाता है।

प्र. 4. जीवद्रव्य की संख्या कितनी है?

उत्तर— जीवद्रव्य अनन्त हैं।

प्र. 5. पुद्गलद्रव्य की संख्या कितनी है?

उत्तर— पुद्गलद्रव्य अनंतानंत हैं।

प्र. 6. कालद्रव्य की संख्या कितनी है?

उत्तर— कालद्रव्य असंख्यात हैं। ✿✿

निष्क्रियाणि च ।।7।।

अर्थ — तथा निष्क्रिय हैं।

प्र. 1. कितने द्रव्य निष्क्रिय हैं?

उत्तर— धर्म, अधर्म एवं आकाश-द्रव्य निष्क्रिय हैं।

प्र. 2. ***'निष्क्रिय' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **एक-स्थान से दूसरे-स्थान में प्राप्त न होने को 'निष्क्रिय' कहते हैं।**

प्र. 3. ***'क्रिया' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **अन्तरंग और बहिरंग निमित्त से उत्पन्न होनेवाले जा पर्याय द्रव्य के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्राप्त कराने का कारण है, वह 'क्रिया' कहलाती है।**

प्र. 4. ***'निष्क्रिय' का अर्थ क्या है?***

उत्तर— 'निष्क्रिय' का अर्थ केवल गतिरहित है, न कि परिणमनरहितपना।

प्र. 5. *'पर्याय' और 'क्रिया' में क्या अन्तर है?*

उत्तर— उत्पाद और व्यय 'पर्याय' हैं, और एक-देश से दूसरे देश को प्राप्त होने में जो हलन-चलन होता है, वह 'क्रिया' है।

प्र. 6. *उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यरूप अवस्थायें किन-किन द्रव्यों में होती है?*

उत्तर— उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यरूप अवस्थायें छहों द्रव्यों में होती है।

प्र. 7. *'क्रिया' किन-किन में होती है?*

उत्तर— 'क्रिया' संसारी-जीव और पुद्गल — इन दोनों में होती है।

प्र. 8. *यदि धर्मास्तिकाय आदि द्रव्य स्वयं निष्क्रिय हैं, तो वे अन्य क्रियावान् जीवादि-द्रव्यों के गमनादि में कारण कैसे हो सकते हैं?*

उत्तर— गमनादि में ये उदासीन-निमित्त मात्र हैं, प्रेरक नहीं; जैसे चक्षुरूप देखने में सहायक हैं, परन्तु यदि मनुष्य का मन दूसरी ओर लगा हो, तो चक्षुरूप देखने का आग्रह नहीं करती।

प्र. 9. *'उत्पाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चेतन व अचेतन, दोनों ही द्रव्य अपनी जाति को कभी नहीं छोड़ते; फिर भी अंतरंग और बहिरंग-निमित्त के वश से प्रतिसमय जो नवीन-अवस्था प्राप्त होती है, उसे 'उत्पाद' कहते हैं।

प्र. 10. *'व्यय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पूर्व-अवस्था के त्याग को 'व्यय' कहते हैं।

प्र. 11. *'ध्रौव्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो अनादिकालीन पारिणामिक-स्वभाव है, उसका 'व्यय' और 'उदय' नहीं होता; किन्तु वह स्थिर रहता है; इसलिए उसे 'ध्रुव' कहते हैं और इस ध्रुव का भाव 'ध्रौव्य' कहलाता है।

प्र. 12. *'उत्पाद' कितने प्रकार का होता है?*

उत्तर— 'उत्पाद' दो प्रकार का होता है — स्वनिमित्त-उत्पाद, परप्रत्यय-उत्पाद। ✿✿

असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ।।8।।

अर्थ — धर्म, अधर्म और एक जीव के असंख्यात-प्रदेश होते हैं।

प्र. 1. *जीव-द्रव्य के कितने प्रदेश होते हैं?*

उत्तर— जीव-द्रव्य असंख्यात-प्रदेशी होते हैं।

प्र. 2. *धर्म-द्रव्य के कितने प्रदेश होते हैं?*

उत्तर— धर्म-द्रव्य असंख्यात-प्रदेशी होते हैं।

प्र. 3. *अधर्म-द्रव्य के कितने प्रदेश होते हैं?*

उत्तर— अधर्म-द्रव्य असंख्यात-प्रदेशी होते हैं।

प्र. 4. *'असंख्यात' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो संख्या से परे हैं, वे 'असंख्यात' कहलाते हैं।

प्र. 5. *असंख्यात किसका विषय है?*

उत्तर— असंख्यात अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान का विषय है।

प्र. 6. *असंख्यात कितने प्रकार का है? और कौन-कौन-सा है।*

उत्तर— असंख्यात तीन प्रकार का है — जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्योत्कृष्ट।

प्र. 7. *'प्रदेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जितने आकाश को पुद्गल का एक अविभागी परमाणु रोकता है, उतने क्षेत्र को 'प्रदेश' कहते हैं।

प्र. 8. *यहाँ द्रव्यों में प्रदेशों की संख्या कौन-से असंख्यात-प्रमाण हैं?*

उत्तर— न जघन्य, न उत्कृष्ट, ऐसे अजघन्योत्कृष्ट प्रदेश-प्रमाण है।

प्र. 9. *धर्म, अधर्म और एक जीव द्रव्य के असंख्यात प्रदेश हैं, तो जीव-द्रव्य धर्म, अधर्म-द्रव्य की तरह समस्त-लोक में व्याप्त क्यों नहीं रहता?*

उत्तर— जीव के प्रदेश धर्म अधर्म द्रव्य के बराबर ही है; परन्तु संकोच और विस्तार स्वभाववाला होने के कारण कर्म के निमित्त से छोटा-बड़ा जैसा शरीर मिलता है; उतनी ही अवगाहना का होकर रहता है।

प्र. 10. *लोकपूरण-समुद्घात के समय जीव के मध्य के आठ प्रदेश कहाँ स्थित रहते हैं?*

उत्तर— केवली-समुद्घात में लोकपूरण-समुद्घात करता है, तब जीव के मध्य के आंठ प्रदेश मेरु-पर्वत के नीचे चित्रा-पृथ्वी के वज्रमय-पटल के मध्य में स्थित हो जाते हैं। और बाकी सभी प्रदेश ऊपर, नीचे और तिरछे सारे लोक में फैल जाते हैं।

प्र. 11. *सूत्र में 'एक जीव' का ग्रहण क्यों किया है?*

उत्तर— सब जीव द्रव्यों के अनंतानंत-प्रदेश होते हैं, इसलिए सूत्र में 'एक जीव' का ग्रहण किया है। ✿✿

आकाशस्यानन्ताः ॥9॥

अर्थ — आकाश के अनन्त-प्रदेश होते हैं।

प्र. 1. आकाश-द्रव्य के कितने प्रदेश होते हैं?

उत्तर— आकाश-द्रव्य के अनन्त-प्रदेश होते हैं।

प्र. 2. 'आकाश' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो अन्य सर्व द्रव्यों को अवकाश दे, वह 'आकाश' है।

प्र. 3. 'आकाश' के कितने भेद हैं? और कौन-कौन से हैं।

उत्तर— आकाश-द्रव्य के दो भेद हैं — लोकाकाश और अलोकाकाश।

प्र. 4. 'लोकाकाश' किसे कहते हैं?

उत्तर— जहाँ पर छहों द्रव्य हों, वह 'लोकाकाश' है।

प्र. 5. अलोकाकाश में कालद्रव्य नहीं है, तो उत्पाद, व्यय, ध्रौव्यरूप परिवर्तन कैसे होता है? अगर नहीं होता है, तो वह द्रव्य कैसे रहता है?

उत्तर— आकाशद्रव्य एक ओर अखण्ड है, तब लोकाकाश में कालद्रव्य के निमित्त से जो परिवर्तन होता है, तब वही परिवर्तन अलोकाकाश में भी समझना चाहिए।

प्र. 6. 'अलोकाकाश' किसे कहते हैं?

उत्तर— जहाँ केवल एक आकाश ही आकाश द्रव्य हो, उसे 'अलोकाकाश' कहते हैं।

प्र. 7. 'अनन्त' किसे कहते हैं? और यह किसका विषय है?

उत्तर— जिनका अन्त नहीं, वह 'अनन्त' है। यह केवलज्ञान का विषय है। ✿✿

संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥10॥

अर्थ — पुद्गलों के संख्यात, असख्यात और अनन्त-प्रदेश हैं।

प्र. 1. पुद्गल-द्रव्य के कितने प्रदेश होते हैं?

उत्तर— पुद्गल-द्रव्य के संख्यात, असंख्यात और अनन्त-प्रदेश होते हैं।

प्र. 2. 'पुद्गल' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो एक दूसरे के साथ मिलकर बिछुड़ता रहे, ऐसे पूरण-गलन-स्वभावी मूर्तिक जड़-पदार्थ को 'पुद्गल' कहते हैं।

प्र. 3. पुद्गल के प्रसिद्ध-गुण कौन-से हैं?

उत्तर— स्पर्श, रस, गंध और वर्ण — ये पुद्गल के प्रसिद्ध-गुण हैं।

प्र. 4. *द्रव्य किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो यथायोग्य अपनी-अपनी पर्यायों के द्वारा प्राप्त होते हैं,वे द्रव्य कहलाते हैं।

प्र. 5. *एकप्रदेशी होते हुये भी पुद्गल-द्रव्य संख्यात-असंख्यात व अनन्त-प्रदेशी कैसे हैं?*

उत्तर— स्कन्धावस्थारूप किसी पुद्गलद्रव्य के संख्यात-प्रदेश होते हैं, किसी के असंख्यात व किसी के अनन्त-प्रदेश होते हैं, इसलिए एकप्रदेशी होते हुये भी पुद्गल-द्रव्य संख्यात, असंख्यात और अनन्त-प्रदेशी हैं।

प्र. 6. *अनन्त-संख्या किस ज्ञान का विषय है?*

उत्तर— अनन्त-संख्या 'केवलज्ञान' का विषय है।

प्र. 7. *परमाणुओं में कौन-सी शक्ति होती है?*

उत्तर— परमाणुओं में बंधने और बिछुड़ने की शक्ति होती है।

प्र. 8. *परमाणु के मेल से क्या बनता है?*

उत्तर— परमाणु के मेल से 'स्कंध' बनता है।

प्र. 9. *स्कन्ध कितने प्रदेशी होते हैं?*

उत्तर— कोई स्कन्ध दो, तीन, चार परमाणु के मेल से, कोई संख्यातप्रदेशी, असंख्यात और अनन्त-परमाणुओं के मेल से बनता है; इसलिए स्कन्ध संख्यात, असंख्यात और अनंत-प्रदेशी भी होते हैं।

प्र. 10. *स्कन्ध किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिन परमाणुओं ने परस्पर बन्ध कर लिया है, उसे 'स्कन्ध' कहते हैं।

प्र. 11. *लोकाकाश तो असंख्यातप्रदेशी है, उसमें अनंतप्रदेशी पुद्गल तथा अनंतानंत जीव कैसे समाये हुए हैं?*

उत्तर— लोकाकाश के प्रदेशों में अवगाहना-गुण है और पुद्गल 'सूक्ष्म' और 'स्थूल' दो प्रकार का है। 'सूक्ष्म'-पुद्गल के अनन्त-परमाणु एक ही प्रदेश में भी आ सकते हैं; इसीप्रकार अनन्तान्त-जीव भी एक प्रदेश में रह सकते हैं। ✿✿

नाणोः ॥11॥

अर्थ — पुद्गल-परमाणु के बहुप्रदेश नहीं होते हैं।

प्र. 1. *परमाणु और प्रदेश में क्या अंतर है?*

उत्तर— परमाणु अपने स्कंध से अलग हो सकता है, किन्तु प्रदेश अलग नहीं हो सकते, उनमें केवल बुद्धि से प्रदेश-विभाग की कल्पना की जाती है।

प्र. 2. *परमाणु के प्रदेश क्यों नहीं होते?*

उत्तर— क्योंकि वह स्वयं एकप्रदेशी मात्र है।

प्र. 3. संसार में सबसे बड़ा और सबसे छोटा क्या है?

उत्तर— आकाश से कोई बड़ा नहीं है और परमाणु से छोटा कोई नहीं है।

प्र. 4. प्रदेश किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसका दूसरा हिस्सा नहीं हो सकता, ऐसा पुद्गल-परमाणु जितने आकाश के क्षेत्र को घेरता है, उस क्षेत्र को 'प्रदेश' कहते हैं। ✿✿

लोकाकाशेऽवगाहः ॥12॥

अर्थ — इन धर्मादिक द्रव्यों का लोकाकाश में अवगाह (निवास) है।

प्र. 1. समस्त द्रव्य कहाँ रहते हैं?

उत्तर— सभी द्रव्य लोकाकाश में रहते हैं।

प्र. 2. 'अवगाह' का क्या अर्थ है?

उत्तर— अवगाह का अर्थ है 'रहने का स्थान'।

प्र. 3. धर्मादि द्रव्यों का आधार आकाश है, तो आकाश-द्रव्य का आधार क्या है?

उत्तर— आकाश-द्रव्य का कोई आधार नहीं है; क्योंकि वह स्वप्रतिष्ठ है।

प्र. 4. धर्मादिक द्रव्यों का आधार आकाश किस नय से है?

उत्तर— व्यवहार-नय से।

प्र. 5. निश्चय-नय से सभी द्रव्यों का आधार क्या है?

उत्तर— निश्चय-नय से सभी द्रव्य के अपने आधार हैं, कोई द्रव्य किसी दूसरे द्रव्य का आधार नहीं है।

प्र. 6. 'लोक' किसे कहते हैं?

उत्तर— आकाश के जितने भाग में जीव, पुद्गल आदि षट्-द्रव्य पाये जाते हैं, उर 'लोक' कहते हैं।

प्र. 7. लोक-अलोक का विभाग करनेवाले द्रव्य कौन-से हैं?

उत्तर— धर्म और अधर्म द्रव्य जितने आकाश-प्रदेश में फैले हुए हैं, वह 'लोकाकाश' है; शेष उससे आगे 'अलोकाकाश' है। लोक और अलोक के विभाग में धर्म और अधर्म-द्रव्य कारण हैं।

प्र. 8. धर्म और अधर्म-द्रव्य 'लोकाकाश' में किसप्रकार व्याप्त हैं?

उत्तर— धर्म और अधर्म द्रव्य 'लोकाकाश' में तिल में तैल की तरह व्याप्त हैं। ✿✿

धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ॥13॥

अर्थ — धर्म और अधर्म-द्रव्य का अवगाह समग्र-लोकाकाश में है।

प्र. 1. धर्म, अधर्म-द्रव्य लोकाकाश में किस तरह रहते हैं?

उत्तर— धर्म, अधर्म-द्रव्य लोकाकाश में तिल में तैल की तरह रहते हैं।

प्र. 2. सूत्र में 'कृत्स्ने' शब्द क्यों दिया है?

उत्तर— लोकाकाश में धर्म, अधर्म-द्रव्य व्याप्त हैं — यह बताने के लिए 'कृत्स्ने' शब्द रखा गया है।

प्र. 3. छहों द्रव्य एक जगह रहते हुए व्याघात को प्राप्त होते हैं या नहीं?

उत्तर— सभी द्रव्य एक जगह रहते हैं, तो भी अवगाहन-शक्ति के निमित्त से इनके प्रदेश परस्पर प्रविष्ट होकर भी व्याघात को प्राप्त नहीं होते हैं। ✿✿

एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ।।14।।

अर्थ — पुद्गलों का अवगाह लोकाकाश के एक-प्रदेश आदि में विकल्प से होता है।

प्र. 1. परमाणु का अवगाह कितने आकाश-प्रदेश में होता है?

उत्तर— आकाश के एक-प्रदेश में एक परमाणु का अवगाह होता है।

प्र. 2. लोकाकाश में पुद्गल-द्रव्य कितने प्रदेश से कितने प्रदेश तक रहता है?

उत्तर— लोकाकाश में पुद्गल-द्रव्य एक प्रदेश से लेकर संख्यात असंख्यात, प्रदेश तक में रहता है।

प्र. 3. बन्ध को प्राप्त हुए या खुले हुए दो-तीन परमाणुओं का अवगाह कितने प्रदेशों में होता है?

उत्तर— बन्ध को प्राप्त हुए या खुले हुए दो-तीन परमाणुओं का आकाश के एक, दो या तीन प्रदेशों में अवगाह होता है।

प्र. 4. संख्यात, असंख्यात और अनन्त-परमाणुओं का अवगाह कितने प्रदेशों में होता है?

उत्तर— संख्यात, असंख्यात और अनन्त-प्रदेशोंवाले स्कन्धों का लोक के एक-संख्यात, असंख्यात-प्रदेशों में अवगाह होता है।

प्र. 5. धर्म, अधर्म-द्रव्य तो अमूर्त्तिक है, अतः वे एक जगह बिना किसी बाधा के रह सकते हैं; किन्तु पुद्गल-द्रव्य तो मूर्त्तिक है, अतः एक प्रदेश मे अनेक मूर्त्तिक पुद्गल कैसे रह सकते हैं?

उत्तर— जैसे प्रकाश मूर्त्तिक होने पर भी एक घर में अनेक दीपकों का प्रकाश रह जाता है, वैसे ही सूक्ष्म-परिणमन होने से लोकाकाश के एक प्रदेश में बहुत से पुद्गल-परमाणु रह सकते हैं।

प्र. 6. लोकाकाश का ऐसा प्रदेश जहाँ पुद्गल नहीं है?

उत्तर— लोक सूक्ष्म और स्थूल अनन्तानन्त नानाप्रकार के पुद्गल-कायों से चारों और खचाखच्च भरा है। ✿✿

असंख्येय-भागादिषु जीवानाम् ॥15॥

अर्थ **— लोकाकाश के अंसख्यातवें-भाग आदि में जीवों का अवगाह है।**

प्र. 1. *लोकाकाश में जीव द्रव्य कितने प्रदेश से कितने प्रदेश तक व्याप्त रहता है?*

उत्तर— लोकाकाश में जीव द्रव्य लोकाकाश के अंसख्यातवे-भाग से लेकर सम्पूर्ण-लोक तक रहता है।

प्र. 2. *सम्पूर्ण-लोकाकाश में जीव-द्रव्य कब व्याप्त होता है?*

उत्तर— जीव-द्रव्य केवली-समुद्घात के समय सम्पूर्ण-लोकाकाश में व्याप्त रहता है।

प्र. 3. *यदि लोक के एक असंख्यातवें-भाग में जीव रहता है, तो अनंतानंत जीव-राशि लोकाकाश में कैसे रह सकती है?*

उत्तर— जीव दो प्रकार के हैं — सूक्ष्म और बादर। स्थूल-बादर जीव एक जगह बहुत से नहीं रह सकते, किन्तु सूक्ष्म-शरीरवाले जीव जितनी जगह में एक निगोदिया जीव रहता है, उतनी जगह में साधारण-काय के रूप अनन्त जीव रह सकते हैं।

प्र. 4. *बादर-जीवों का शरीर कैसा होता है?*

उत्तर— बादर-जीवों का शरीर प्रतिघात-सहित होता है।

प्र. 5. *सूक्ष्म-जीवों का शरीर की विशेषता क्या है?*

उत्तर— जो सूक्ष्म-जीव हैं, वे यद्यपि सशरीर हैं; तो भी एक निगोद-जीव जितने आकाश-प्रदेश में रहता है, उतने आकाश-प्रदेश में अनन्तानन्त-जीव रह सकते है। वे परस्पर तथा अन्य बादरों के साथ बाधा को प्राप्त नहीं होते।

प्र. 6. *एक जीव का अवगाह-क्षेत्र कम से कम और अधिक से अधिक कितना है?*

उत्तर— एक जीव का अवगाह-क्षेत्र कम से कम लोक के असंख्यातवे-भाग प्रमाण है और अधिक से अधिक समग्र-लोक है।

प्र. 7. ***परस्पर जीवों की आकृति में अन्तर क्यों पड़ता है?***

उत्तर— प्रत्येक संसारी-जीव के कर्म लगे हुए हैं, जिनके कारण उसे जब जैसा शरीर मिलता है, तब उसका वैसा आकार होता है। ✿✿

प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥16॥

अर्थ — क्योंकि प्रदीप के समान जीव के प्रदेशों का संकोच और विस्तार

होने के कारण लोकाकाश के असंख्येय-भागादिक प्रदेश जीवों का अवगाह बन जाता है।

प्र. 1. *असंख्यात-प्रदेशी जीव लोक के असंख्यातवे-भाग में किस प्रकार रहता है?*

उत्तर— असंख्यात-प्रदेशी जीव संकोच और विस्तार-शक्ति होने के कारण लोक के असंख्यातवे-भाग में रहता है।

प्र. 2. *संकोच-विस्तार शक्ति के कारण जीव किस प्रमाणवाला होता है?*

उत्तर— संकोच-विस्तार के कारण जीव प्राप्त शरीर के प्रमाणवाला होता है।

प्र. 3. *'संहार' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'संहार' का अर्थ संकुचित होना है।

प्र. 4. *'विसर्प' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'विसर्प' का अर्थ 'फैलना' होता है।

प्र. 5. *संकोच-विस्तार किन में होता है?*

उत्तर— संकोच-विस्तार प्रदेशों में होता है।

प्र. 6. *जीव-प्रदेश किस कहते हैं?*

उत्तर— जो संकुचित है, और फैलता है, उसे जीव-प्रदेश कहते हैं।

प्र. 7. *धर्मादिक-द्रव्यों के प्रदेशों का परस्पर प्रवेश होने के कारण एकमेक होने से अभेद प्राप्त होता है?*

उत्तर— नहीं, क्योंकि परस्पर अत्यन्त संश्लेष-सम्बन्ध हो जाने पर भी वे अपने-अपने स्वभाव को नहीं छोड़ते, इसलिए उनमें अभेद नहीं होता।

प्र. 8. *संकोच-विस्तार जीव का स्वभाव है या कर्मकृत-गुण है?*

उत्तर— संकोच-विस्तार जीव का स्वभाव नहीं है, यह नामकर्मकृत कार्य है।

प्र. 9. *सिद्ध-परमेष्ठी में संकोच-विस्तार है या नहीं? यदि नहीं तो क्यों?*

उत्तर— सिद्ध-भगवान् में संकोच-विस्तार नहीं है; क्योंकि यह शरीर-नामकर्म का कार्य है और शरीर-नामकर्म का सिद्ध-भगवानों में अभाव है। ✿✿

गति-स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयोरुपकारः ॥17॥

अर्थ — गति और स्थिति में निमित्त होना यह क्रमशः धर्म और अधर्म-द्रव्य का उपकार है।

प्र. 1. *धर्म-द्रव्य का उपकार क्या है?*

उत्तर— गमन करनेवाले जीव और पुद्गलों के गमन करने में सहायक होना धर्मद्रव्य का उपकार है।

प्र. 2. *अधर्म-द्रव्य का उपकार क्या है?*

उत्तर— गतिपूर्वक स्वयमेव ठहरनेवाले जीव और पुद्गलों को ठहरने में सहायक होना अधर्म-द्रव्य का उपकार है।

प्र. 3. *'गति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक-स्थान से दूसरे-स्थान के प्राप्त कराने में जो कारण है, उसे 'गति' कहते हैं।

प्र. 4. *'उपग्रह' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— उपग्रह का अर्थ 'उपकार' है।

प्र. 5. *सूत्र में 'उपग्रह' और 'उपकार' अलग-अलग क्यों दिया है, जबकि उपकार इतना कहने मात्र से काम चल सकता है?*

उत्तर— यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि यथाक्रम के निराकरण करने के लिए 'उपग्रह' पद रखा है।

प्र. 6. *आकाश-द्रव्य सर्वत्र है, इसलिए गति और स्थिति इन दोनों का निमित्त कारण आकाश को मानना चाहिए?*

उत्तर— आकाश का कार्य अवकाश देना है, इसलिए उसे गति और स्थिति में निमित्त नहीं माना जा सकता।

प्र. 7. *क्या धर्म और अधर्म इनमें से किसी एक को ही गति और स्थिति का निमित्त मानना चाहिए?*

उत्तर— गति और स्थिति ये परस्पर विरोधी कार्य हैं, इनके निमित्त-कारण भी अलग अलग हैं, इसलिए धर्म और अधर्म ये स्वतंत्र दो द्रव्य माने गए हैं।

प्र. 8. *धर्म और अधर्म ये दोनों द्रव्य तुल्य-बलवाले हैं; इसलिए गति से स्थिति का स्थिति से गति का प्रतिबंध होना चाहिए?*

उत्तर— नहीं, क्योंकि ये प्रेरक नहीं है।

प्र. 9. *भूमि, जल आदि ही गति आदि में सहायक देखे जाते हैं फिर धर्म और अधर्म-द्रव्य को मानने की क्या आवश्यकता है?*

उत्तर— भूमि, जल, वगैरह तो किसी किसी के ही चलने या ठहरने में सहायक है; किन्तु धर्म और अधर्म-द्रव्य सभी जीव और पुद्गलों की गति और स्थिति में सहायक हैं।

प्र. 10. *धर्म, अधर्म-द्रव्य के अस्तित्व का ज्ञान कैसे होता है?*

उत्तर— धर्म अधर्म-द्रव्य अमूर्त्तिक होने से दिखाई नहीं देते; किन्तु सम्यग्ज्ञानी छद्मस्थ अनुमान-प्रमाण से उनका निश्चय कर सकता है।

आकाशस्यावगाहः ॥18॥

अर्थ — अवकाश (रहने के लिए जगह) देना आकाश का उपकार है।

प्र. 1. *आकाश-द्रव्य का उपकार क्या है?*

उत्तर— समस्त द्रव्यों को अवगाह देना आकाश-द्रव्य क़ा उपकार है।

प्र. 2. *'आकाश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो समस्त द्रव्यों को रहने को स्थान देता है, उसे 'आकाश' कहते हैं।

प्र. 3. *'अवगाह' किसे कहते हैं?.*

उत्तर— अवगाह करनेवाले जीव और पुद्गलों को अवकाश देने को 'अवगाह' कहते हैं।

प्र. 4. *अवगाह-गुण समस्त-द्रव्यों में है, फिर भी आकाश में यह गुण सबसे बड़ा क्यों है?*

उत्तर— क्योंकि यह समस्त पदार्थों को साधारण एकसाथ आकाश देता है।

प्र. 5. *क्या अलोकाकाश में अवगाह-गुण है?*

उत्तर— अलोकाकाश में भी अवगाह-गुण है; किन्तु वहाँ अवगाह लेनेवाला कोई द्रव्य नहीं है।

प्र. 6. *अलोकाकाश में अवकाश-दान रूप स्वभाव नहीं पाया जाता, इससे ज्ञात होता है कि यह आकाश का स्वभाव नहीं है?*

उत्तर— लोकाकाश का जो स्वरूप है, वही अलोकाकाश का भी है। अन्य द्रव्यों के अभाव में द्रव्य का लक्षण या स्वरूप बदल नहीं सकता; इसलिए कोई भी द्रव्य अपने स्वभाव को कभी नहीं छोड़ता है। ✿✿

शरीर-वाङ्-मनः-प्राणापानाः पुद्गलानाम् ॥19॥

अर्थ — शरीर, वचन, मन और प्राणापान — यह पुद्गलों का उपकार है।

प्र. 1. *पुद्गल द्रव्य का उपकार क्या है?*

उत्तर— शरीर, वचन, मन और श्वासोच्छ्वास पुद्गल-द्रव्य का उपकार है। इनकी रचना पुद्गल से होती है।

प्र. 2. *पुद्गल-द्रव्य का और उपकार क्या है?*

उत्तर— इन्द्रियजन्य सुख-दुःख, जीवन-मरण — ये पुद्गल-द्रव्य के उपकार हैं।

प्र. 3. *'शरीर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो विशिष्ट नामकर्म के उदय से प्राप्त होकर जीर्ण-शीर्ण होते हैं वे शरीर हैं।

प्र. 4. *'मन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो मनन करता है, वह 'मन' कहलाता है।

प्र. 5. *'वचन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भाषावर्गणा के रूप में जो बोला जाता है, उसे 'वचन' कहते हैं।

प्र. 6. *'प्राण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे जीव जीता है, उस प्राणवायु (श्वास) को 'प्राण' कहते हैं।

प्र. 7. *'अपान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मा जिस भीतरी वायु का बाहर करता है, उस वायु को 'अपान' कहते हैं, यह निःश्वास का लक्षण है।

प्र. 8. *'प्राणापान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'प्राण' और 'अपान' को ही 'प्राणापान' कहते हैं।

प्र. 9. *'पुद्‌गल' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो पहिले पूरते हैं, पश्चात् में गलते हैं, वे 'पुद्‌गल' कहलाते हैं। जो पूर्ण होता एवं गलता है, वह 'पुद्‌गल' है।

प्र. 10. *वचन के कितने प्रकार हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— वचन दो प्रकार का है — भाववचन, द्रव्यवचन।

प्र. 11. *'भाववचन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वीर्यान्तराय-कर्म और मति-श्रुत-ज्ञानावरण-कर्म के क्षायोपशम से तथा आंगोपांग-नामकर्म के उदय से जो बोलने की शक्ति है, उसे 'भाववचन' कहते हैं।

प्र. 12. *'द्रव्यवचन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भाववचन के सामर्थ्य से युक्त क्रियावाले आत्मा के द्वारा प्रेरित होकर पुद्‌गल वचनरूप से विविध प्रकार परिणमन करते हैं, वे 'द्रव्यवचन' हैं।

प्र. 13. *क्या भाववचन पौद्‌गलिक हैं?*

उत्तर— भाववचन जीव की अवस्था है, पर पुद्‌गल का निमित्त होने के कारण तथा जीव का त्रिकाली-स्वभाव न होने से भाववचनरूप अवस्था अलग हो जाती है, इसलिए निश्चयनय में भाववचन जीव न होकर पौद्‌गलिक हैं।

प्र. 14. *वचन मूर्तिक है या अमूर्तिक है?*

उत्तर— वचन मूर्तिक है, क्योंकि मूर्त का ही इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण होता है।

प्र. 15. *मन कितने प्रकार का है और कौन-कौन-सा है?*

उत्तर— मन दो प्रकार का है, भाव-मन और द्रव्य-मन।

प्र. 16. *'भाव-मन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गुण-दोष के विचार की शक्ति को या लब्धि और उपयोग-रूप को 'भाव-मन' कहते हैं।

प्र. 17. द्रव्य-मन किसे कहते हैं?

उत्तर— ज्ञानावरण और वीर्यान्तराय-कर्म के क्षयोपशम से और आगोपांग-नामकर्म के उदय से हृदय-स्थान में जो पुद्गल मनरूप से परिणमन करते हैं, उसे द्रव्य-मन कहते हैं।

प्र. 18. मन, प्राण और अपान 'मूर्त' हैं या 'अमूर्त'?

उत्तर— मन, प्राण और अपान मूर्त हैं, क्योंकि दूसरे मूर्त-पदार्थों के द्वारा इनका प्रतिघात देखा जाता है।

प्र. 19. मन, प्राण और अपान मूर्त हैं — यह कैसे पता चलता है?

उत्तर— भय-उत्पादक बिजली आदि के द्वारा मन का प्रतिघात होता है, हथेली के द्वारा और वस्त्र आदि के द्वारा मुख के ढँक लेने से प्राण और अपान का प्रतिघात होता है; इससे सिद्ध होता है कि ये मूर्त हैं।

प्र. 20. शरीर कितने प्रकार के होते हैं? वे कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— शरीर-पाँच प्रकार के होते हैं — औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस् और कार्मण।

प्र. 21. आत्मा के अस्तित्व की सिद्धि किससे होती है?

उत्तर— प्राण-अपान से आत्मा के अस्तित्व की सिद्धि होती है। ❖❖

सुख-दुःख-जीवित-मरणोपग्रहाश्च ॥20॥

अर्थ — सुख, दुःख, जीवन और मरण — ये भी पुद्गलों के उपकार हैं।

प्र. 1. 'सुख' किसे कहते हैं?

उत्तर— साता-वेदनीयकर्म के उदय से बाह्य द्रव्य-क्षेत्र-काल और भाव के निमित्त से आत्मा में जो प्रसन्नता होती है, वह 'सुख' है।

प्र. 2. 'दुःख' किसे कहते हैं?

उत्तर— असाता-वेदनीयकर्म के उदय से जो संक्लेशरूप-भाव होता है, वह 'दुःख' है।

प्र. 3. 'जीवन' किसे कहते हैं।

उत्तर— आयुष्य-कर्म के उदय से एक भव में स्थित जीव के श्वासोच्छ्वास का जारी रहना 'जीवन' है।

प्र. 4. 'मरण' किसे कहते हैं?

उत्तर— आयुकर्म के क्षीण होने पर देहवियोग एवं प्राप्त प्राणों का वियोग होना 'मरण' है।

प्र. 5. *जीव के पुद्गलकृत-उपकार कितने हैं?*

उत्तर— शरीर, वचन, मन, श्वासोच्छ्वास, सुख, दु:ख, जीवन, मरण — ये जीव के प्रति पुद्गलों के उपकार हैं।

प्र. 6. *सूत्र में आये 'उपग्रह' शब्द का अर्थ यहाँ क्या है?*

उत्तर— 'उपग्रह' शब्द का अर्थ यहाँ पुद्गलों के पुद्गलकृत-उपकार हैं।

प्र. 7. *पुद्गलों का पुद्गलकृत-उपकार क्या है?*

उत्तर— पुद्गल परस्पर में एक दूसरे पर उपकार करते हैं, जैसे राख बर्तन का और साबुन कपड़े का उपकार करते हैं, आदि।

प्र. 8. *'उपकार' शब्द का अर्थ यहाँ क्या है?*

उत्तर— 'उपकार' शब्द का अर्थ यहाँ केवल भलाई नहीं, अपितु किसी भी कार्य में निमित्त होना या कार्य में सहायक होना है। ✿✿

परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।।21।।

अर्थ — परस्पर निमित्त होना -- यह जीवों का उपकार है।

प्र. 1. *जीव-द्रव्य का परस्पर में उपकार क्या है?*

उत्तर— जीवों का परस्पर में उपकार है, जैसे गुरु और शिष्य का, स्वामी और सेवक का। अर्थात् स्वामी सेवक को धन देकर उपकार करता है। शिष्य भी आचार्य के अनुकूल प्रवृत्ति करके आचार्य का उपकार करते हैं।

प्र. 2. *उपकार का प्रकरण होने पर भी सूत्र में 'उपग्रह' पद क्यों दिया है?*

उत्तर— सुख-दु:ख आदि भी जीवकृत उपकार है, अर्थात् एक जीव दूसरे जीव को सुख-दु:ख भी देता है और जीवन-मरण में भी सहायक होता है।

प्र. 3. *क्या अन्य-द्रव्य अपने से भिन्न दूसरे-द्रव्य का भला बुरा कुछ कर सकता है?*

उत्तर— एक-द्रव्य के जो गुण और पर्याय होते हैं, वे उसे छोड़कर अन्य द्रव्य में प्रविष्ट नहीं होते; इसलिए एक द्रव्य अपने से भिन्न दूसरे का उपकार करता है। ✿✿

वर्तना-परिणाम-क्रिया-परत्वापरत्वे च कालस्य ।।22।।

अर्थ — वर्तना, परिणाम, क्रिया, परत्व और अपरत्व — ये काल के उपकार हैं।

प्र. 1. *काल-द्रव्य का उपकार क्या है?*

उत्तर— वर्तना, परिणाम, क्रिया, परत्व, अपरत्व — ये काल-द्रव्य के उपकार हैं।

प्र. 2. *'वर्तना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो द्रव्यों को वरतावे, उसे 'वर्तना' कहते हैं। सभी द्रव्य अपने में वर्तते हैं, उनके वर्तने में जो बाह्य सहकारी-कारण हो, उसे 'वर्तना' कहते हैं।

प्र. 3. *'परिणाम' किसे कहते हैं।*

उत्तर— अपने स्वभाव को न छोड़कर द्रव्यों की पर्यायों के बदलने को परिणाम कहते हैं, जैसे — जीव के परिणाम क्रोधादि हैं और पुद्गल के परिणाम रूप-रसादि हैं।

प्र. 4. *'क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक-स्थान से दूसरे स्थान में गमन करने का नाम 'क्रिया' है, यह क्रिया जीव और पुद्गलों में पाई जाती है।

प्र. 5. *'परत्व' और 'अपरत्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— काल की अपेक्षा 'परत्व' का अर्थ उम्र की अपेक्षा बड़ा और 'अपरत्व' का अर्थ उम्र की अपेक्षा छोटा है।

प्र. 6. *काल के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— काल के दो भेद हैं — निश्चयकाल और व्यवहारकाल।

प्र. 7. *निश्चयकाल और व्यवहारकाल के लक्षण क्या हैं?*

उत्तर— निश्चयकाल का लक्षण वर्तना है और व्यवहारकाल का लक्षण परिणाम, क्रिया आदि है।

प्र. 8. *व्यवहारकाल के कितने भेद हैं? कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— व्यवहारकाल के तीन भेद हैं — भूत, वर्तमान, भविष्यत्। ✿✿

स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः ।।23।।

अर्थ — स्पर्श, रस, गन्ध, और वर्णवाले पुद्गल होते हैं।

प्र. 1. *'पुद्गल-द्रव्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें स्पर्श, रस, गंध और वर्णगुण हों, उसे 'पुद्गल-द्रव्य' कहते हैं।

प्र. 2. *'स्पर्श' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो स्पर्श किया जाता है, उसे या स्पर्शनमात्र को 'स्पर्श' कहते हैं।

प्र. 3. *'स्पर्श' के कितने प्रकार हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'स्पर्श' आठ प्रकार का है — हल्का-भारी, रूखा-चिकना, कड़ा-नरम, और ठण्डा-गरम।

प्र. 4. *'रस' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो स्वादरूप होता है, उसे या स्वादमात्र को 'रस' कहते हैं।

प्र. 5. 'रस' के कितने प्रकार हैं, और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'रस' पाँच प्रकार के हैं — खट्टा, मीठा, कड़ुवा, कसैला, और चरपरा।

प्र. 6. 'गन्ध' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो सूँघा जाता है या सूँघने-मात्र को 'गन्ध' कहते हैं।

प्र. 7. 'गन्ध' कितने प्रकार की है, और कौन-कौन-सी है?

उत्तर— 'गन्ध' दो प्रकार की है — सुगन्ध और दुर्गन्ध।

प्र. 8. 'वर्ण' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो आँखों से अलग-अलग दिखता है, उसे 'वर्ण' कहते हैं।

प्र. 9. 'वर्ण' कितने हैं, और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'वर्ण' पाँच प्रकार के हैं — नीला, काला, पीला, लाल और सफेद।

प्र. 10. 'रूपिणः पुद्गलाः' सूत्र में पुद्गल को मात्र 'रूपी' कहा है, अतः क्या पुद्गल रस, गन्ध वर्णवाला नहीं है?

उत्तर— पुद्गल में जहाँ रूप रहता है, रसादिक भी वहीं रहते हैं। क्योंकि रस, गंध, वर्ण इनका परस्पर में सम्बन्ध है, इसलिए रस के ग्रहण से रसादि का ग्रहण भी हो जाता है। ✿✿

शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छायाऽऽतपोद्योत-वन्तश्च ॥24॥

अर्थ — तथा वे शब्द बन्ध, सूक्ष्मपना स्थूलत्व, संस्थान, भेद, अन्धकार, छाया आतप और उद्योतवाले होते हैं।

प्र. 1. पुद्गल की पर्यायें कौन-सी हैं?

उत्तर— शब्द, बन्ध, सूक्ष्मपना, स्थूलत्व, संस्थान, भेद, अन्धकार, छाया, आतप और उद्योत – ये सब पुद्गल की पर्यायें हैं।

प्र. 2. 'शब्द' किसे कहते हैं।

उत्तर— भाषावर्गणा रूप जो पुद्गल के टकराव से शब्दरूप परिणमन करते हैं, उन्हें 'शब्द' कहते हैं।

प्र. 3. शब्द के कितने भेद हैं?

उत्तर— शब्द दो प्रकार के हैं — भाषात्मक और अभाषात्मक।

प्र. 4. भाषात्मक-शब्द कितने प्रकार के है और कौन-कौन से हैं?

उत्तर— भाषात्मक-शब्द दो प्रकार के हैं — साक्षर और अनक्षर।

प्र. 5. 'साक्षर-शब्द' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिस भाषा में शास्त्र रचे जाते हैं और जिससे आर्य और म्लेच्छों का व्यवहार चलता है, ऐसे संस्कृत-प्राकृत के आदि शब्द 'साक्षर-शब्द' हैं।

प्र. 6. *'अनक्षर-शब्द' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दो-इन्द्रिय आदि प्राणियों के जो ध्वनिरूप उच्चरित होते हैं, वे अनक्षर-शब्द हैं।

प्र. 7. *'अभाषात्मक-शब्द' के कितने भेद हैं? वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अभाषात्मक-शब्द' के दो भेद हैं — प्रायोगिक और वैस्रसिक।

प्र. 8. *'वैस्रसिक-शब्द' किसे कहते हैं, और 'वैस्रसिक' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— मेघ आदि के निमित्त से जो शब्द उत्पन्न होते हैं, वे 'वैस्रसिक-शब्द' कहलाते हैं। 'वैस्रसिक' का अर्थ 'स्वाभाविक' है।

प्र. 9. *'प्रायोगिक-शब्द' कितने प्रकार के हैं?*

उत्तर— तत, वितत, घन और सुषिर के भेद से 'प्रायोगिक-शब्द' चार प्रकार के हैं।

प्र. 10. *'तत-शब्द' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चमड़े से मढे हुए मृदंग, भेरी और ढोल आदि के शब्द 'तत' हैं।

प्र. 11. *'वितत-शब्द' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तंतुवाले वीणा, सारंगी आदि वाद्यों के शब्द 'वितत' हैं।

प्र. 12. *'घन' शब्द किसे कहते हैं?*

उत्तर— झालर, घण्टा, आदि के शब्द 'घन' हैं।

प्र. 13. *'सुषिर-शब्द' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शंख, बाँसुरी आदि के शब्द सुषिर हैं।

प्र. 14. *बन्ध के कितने प्रकार हैं? और वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— बन्ध दो प्रकार का है — वैस्रसिक और प्रायोगिक।

प्र. 15. *'वैस्रसिक-बन्ध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पुरुष की अपेक्षा से रहित जो बंध होता है वह 'वैस्रसिक-बन्ध' है।

प्र. 16. *'वैस्रसिक-बन्ध' के कितने भेद हैं, और कौन-कौन से हैं?*

उत्तर— 'वैस्रसिक-बन्ध' दो प्रकार का है — आदिमान और अनादिमान।

प्र. 17. *'आदिमान-बन्ध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्निग्ध, रूक्षादि के कारण जो बिजली, उल्कापात, बादल,-आग, इन्द्रधनुष आदि होते हैं, उसे 'आदिमान-बंध' कहते हैं।

प्र. 18. *'अनादिमान-बंध' क्या है?*

उत्तर— 'अनादिमान-बंध' पुद्गल का महास्कंध आदि है।

प्र. 19. *'प्रायोगिक-बंध' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— जो पुरुष की अपेक्षासहित हो, वह 'प्रायोगिक-बंध' है।

प्र. 20. *प्रायोगिक-बंध के कितने भेद हैं? वे कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— प्रायोगिक-बंध के दो भेद हैं — अजीव-विषयक और जीवाजीव-विषयक।

प्र. 21. *'अजीव-विषयक-बंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लाख का और लकड़ी का जो बंध है, वह 'अजीव-विषयक-बन्ध' है।

प्र. 22. *'जीवाजीव-विषयक-प्रायोगिक-बन्ध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जीव के साथ कर्म और नोकर्म का बंध है, वह 'जीवाजीव-विषयक-प्रायोगिक-बंध' है।

प्र. 23. *सूक्ष्मता के कितने भेद हैं?*

उत्तर— सूक्ष्मता के दो भेद हैं — अन्त्य और आपेक्षिक।

प्र. 24. *'अन्त्य-सूक्ष्मता' किसे कहते हैं?*

उत्तर— परमाणु 'अन्त्य-सूक्ष्म' है।

प्र. 25. *'आपेक्षिक-सूक्ष्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आँवले से बेर सूक्ष्म है — यह 'आपेक्षिक-सूक्ष्म' है।

प्र. 26. *स्थूल कितने प्रकार है, और कौन-कौन-सा है?*

उत्तर— स्थूल दो प्रकार का है — अन्त्य-स्थूल और आपेक्षिक-स्थूल।

प्र. 27. *'अन्त्य-स्थूल' क्या है?*

उत्तर— अन्त्य जो जगद्व्यापी महास्कंध है, वह 'अन्त्य-स्थूल' है, उससे बड़ा दूसरा कोई स्कंध नहीं है।

प्र. 28. *आपेक्षिक-स्थूल क्या है?*

उत्तर— आपेक्षिक स्थूल, जैसे — बेर से स्थूल आँवला और आँवले से स्थूल बेल है।

प्र. 29. *'संस्थान' किसे कहते हैं।*

उत्तर— आकृति को 'संस्थान' कहते हैं।

प्र. 30. *संस्थान के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— संस्थान के दो भेद हैं — इत्थंलक्षण-संस्थान, अनित्थंलक्षण-संस्थान।

प्र. 31. *'इत्थंलक्षण-संस्थान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गोल, त्रिकोण, चौरस, लम्बा, चौड़ा आदि आकारों को 'इत्थंलक्षण-संस्थान' कहते हैं।

प्र. 32. *'अनित्थंलक्षण-संस्थान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस आकार को कह सकना शक्य न हो, जैसे बादलों में अनेकप्रकार के

आकार बनते-बिगड़ते रहते हैं, उन्हें 'अनित्थंलक्षण कहते हैं।

प्र. 33. *'भेद' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— भेद के छह भेद हैं — उत्कर, चूर्ण, खण्ड, चूर्णिका, प्रतर और अणुचटन।

प्र. 34. *'उत्कर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आरे से लकड़ी चीरने पर जो बुरादा निकलता है, वह 'उत्कर' है।

प्र. 35. *'चूर्ण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गेहूँ आदि के आटे को 'चूर्ण' कहते हैं।

प्र. 36. *'खण्ड' किसे कहते हैं?*

उत्तर— घड़े आदि के टुकड़ों को 'खण्ड' कहते हैं।

प्र. 37. *'चूर्णिका' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उड़द-मूंग आदि दाल के छिलकों को 'चूर्णिका' कहते हैं।

प्र. 38. *'प्रतर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मेघ, भोजपत्र, अभ्रक, मिट्टी आदि की तहें निकलना 'प्रतर' है।

प्र. 39. *'अणुचटन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लोहे को गर्म करके पीटने पर जो फुलिंगे निकलते हैं, उन्हें 'अणुचटन' कहते हैं।

प्र. 40. *'तम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो प्रकाश का विरोधी है, उसे 'अन्धकार' या 'तम' कहते हैं।

प्र. 41. *'छाया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रकाश को रोकनेवाले पदार्थों के निमित्त से जो पैदा होती है, वह छाया कहलाती है।

प्र. 42. *छाया कितने प्रकार की होती है?*

उत्तर— छाया दो प्रकार की होती है, एक तो जिस वस्तु की छाया हो, उसका रूप रंग ज्यों-का-त्यों उसमें आ जाए जैसे — दर्पण में मुख का रूप रंग वगैरह ज्यों का त्यों आ जाता है। दूसरी प्रतिबिम्ब-मात्र, जैसे धूप में खड़े होने से छाया मात्र पड़ जाती है।

प्र. 43. *'आतप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सूर्य के प्रकाश को 'आतप' कहते हैं।

प्र. 44. *'उद्योत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चन्द्रमा, चन्द्रकान्त मणि, आदि के प्रकाश को 'उद्योत' कहते हैं। ✿✿

अणव: स्कन्धाश्च ॥25॥

अर्थ — पुद्‌गल के दो भेद हैं — अणु और स्कन्ध।

प्र. 1. *पुद्‌गल-द्रव्य के कितने भेद हैं? कौन कौन-से हैं?*

उत्तर— पुद्‌गल-द्रव्य के दो भेद हैं — अणु और स्कन्ध।

प्र. 2. *'अणु' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अविभागी एकप्रदेशी पुद्‌गल-द्रव्य को 'अणु' कहते हैं।

प्र. 3. *'स्कंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दो, तीन, संख्यात, असंख्यात तथा अनंत परमाणुओं के पिंड को 'स्कंध' कहते हैं।

प्र. 4. *अणु का आदि-मध्य व अन्त क्या है?*

उत्तर— अणु इतना सूक्ष्म होता है, जिसका आदि, मध्य, अन्त वह स्वयं ही होता है।

प्र. 5. *अणु-स्कन्धरूप पुद्‌गल के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— अणु-स्कन्धरूप पुद्‌गल के छह भेद हैं -- स्थूलस्थूल, स्थूल, स्थूलसूक्ष्म, सूक्ष्मस्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्मसूक्ष्म।

प्र. 6. *'स्थूलस्थूल' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ठोस-पदार्थ, जिनका आकार, प्रमाण और घनफल नहीं बदलता, उसे 'स्थूल-स्थूल' कहते हैं, जैसे — लकड़ी, पत्थर आदि।

प्र. 7. *'स्थूल' किसे कहते हैं?*

उत्तर— द्रव-पदार्थ, जिनका केवल आकार बदलता है, घनफल नहीं; उसे 'स्थूल' कहते हैं, जैसे — जल, तेल आदि।

प्र. 8. *'स्थूलसूक्ष्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो केवल नेत्र-इन्द्रिय से गृहीत हो सके और जिनका आकार भी बने; किन्तु पकड़ में न आवे, वे 'स्थूलसूक्ष्म' पुद्‌गल हैं; जैसे छाया, प्रकाश, अन्धकार आदि।

प्र. 9. *'सूक्ष्मस्थूल' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो दिखाई तो न दें; किन्तु स्पर्शन, रसना, घ्राण और श्रोत्र-इन्द्रियों के द्वारा जिन्हें ग्रहण किया जा सके, वे 'सूक्ष्मस्थूल' पुद्‌गल हैं, जैसे ताप, ध्वनि आदि।

प्र. 10. *'सूक्ष्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्कन्ध होने पर भी जिनका किसी भी इन्द्रिय द्वारा ग्रहण करना शक्य नहीं है, वे 'सूक्ष्म'-पुद्‌गल हैं, जैसे कर्मवर्गणा आदि।

प्र. 11. *'सूक्ष्मसूक्ष्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पुद्‌गल होकर भी जो स्कन्ध-अवस्था से रहित हैं वे 'सूक्ष्मसूक्ष्म' पुद्‌गल हैं, जैसे पुद्‌गल-परमाणु।

प्र. 12. *'अणु' की पहचान क्या है?*

उत्तर— जो किसी दो स्पर्श, एक रस, एक गन्ध, एक वर्ण, गोलाकार और कार्य के द्वारा जाना जाता है।

प्र. 13. *अणु नित्य है या अनित्य।*

उत्तर— द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा अणु नित्य है, पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा परमाणु अनित्य है।

प्र. 14. *'अणु' और 'स्कन्ध' में क्या अंतर है?*

उत्तर— अणु स्पर्श, रस, गन्ध और वर्णवाले होते हैं; परन्तु स्कन्ध शब्द, बन्ध, सूक्ष्म, स्थूल, संस्थान, भेद, तम, छाया आतप और उद्योतवाले हैं और स्पर्श, रस, गंध, वर्गवाले भी हैं। अणु और स्कन्ध — दोनों ही पुद्‌गल हैं। ✿✿

भेद-संघातेभ्य उत्पद्यन्ते ॥26॥

अर्थ — भेद से, संघात से तथा भेद और संघात — दोनों से स्कन्ध की उत्पत्ति होती है।

प्र. 1. *'भेद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्कंधों के टूटने को 'भेद' कहते हैं।

प्र. 2. *'संघात' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भिन्न-भिन्न परमाणुओं या स्कंधों के मिलकर एक हो जाने को 'संघात' कहते हैं।

प्र. 3. *'स्कंध' की उत्पत्ति किससे होती है?*

उत्तर— 'स्कंध' की उत्पत्ति भेद से, संघात से और भेद-संघात — दोनों से होती है।

प्र. 4. *कितने परमाणुओं के संघात से स्कंध की उत्पत्ति होती है?*

उत्तर— दो या दो से अधिक परमाणु मिलकर स्कन्ध बनता है, तब उन परमाणुओं के संघात से स्कन्ध की उत्पत्ति होती है।

प्र. 5. *एक साथ भेद और संघात — इन दोनों से स्कन्ध की उत्पत्ति कैसे होती है?*

उत्तर— जब अन्य स्कन्ध से भेद होता है और अन्य का संघात होता है, तब एक साथ भेद और संघात — दोनों से स्कन्ध की उत्पत्ति होती है। ✿✿

भेदादणुः ॥27॥

अर्थ — भेद से अणु उत्पन्न होता है

प्र. 1. *अणु की उत्पत्ति किससे होती है?*

उत्तर— अणु की उत्पत्ति 'भेद' से होती है।

प्र. 2. *भेद, संघात और भेद-संघात से भी अणु की उत्पत्ति हो सकती है क्या?*

उत्तर— नहीं, अणु की उत्पत्ति भेद से ही होती है।

प्र. 3. *जैनदर्शन में अणु एवं परमाणु में क्या अन्तर है?*

उत्तर— अणु एवं परमाणु को एक ही माना है। ✿✿

भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः ।।28।।

अर्थ — भेद और संघात से स्कन्ध चाक्षुष (चक्षुइन्द्रिय का विषय या दृष्टिगोचर) बनता है।

प्र. 1. *जो स्कंध अदृश्य है, वह दृश्य कैसे हो सकता है?*

उत्तर— केवल भेद से ही कोई स्कंध चक्षु-इन्द्रिय से देखने योग्य नहीं हो जाता; किन्तु भेद और संघात दोनों से होता है।

प्र. 2. *चक्षु से देखने योग्य स्कंध की उत्पत्ति किससे होती है?*

उत्तर— चक्षु से देखने योग्य स्कंध 'भेद' और 'संघात' से उत्पन्न होते हैं, अकेले 'भेद' से नहीं।

प्र. 3. *अचाक्षुष से चाक्षुष-रूप में परिणमन कैसे होता है?*

उत्तर— एक सूक्ष्म स्कंध के टूटने से उसके दो टुकड़े हो जाने पर भी वह सूक्ष्म ही बना रहता है, इन्द्रियों से देखा नहीं जाता; किन्तु जब सूक्ष्म-स्कंध दूसरे-स्कंध में मिलकर अपने सूक्ष्मपने को छोड़कर स्थूलरूप धारण कर लेता है,तो चाक्षुष रूप में परिणमित हो जाता है। ✿✿

सद् द्रव्यलक्षणम् ।।29।।

अर्थ — द्रव्य का लक्षण 'सत्' है।

प्र. 1. *द्रव्य का लक्षण क्या है?*

उत्तर— द्रव्य का लक्षण'सत्'है।

प्र. 2. *प्रत्येक द्रव्य में कितने गुण होते हैं?*

उत्तर— प्रत्येक द्रव्य में छह सामान्य-गुण होते हैं।

प्र. 3. *'सत्' यह लक्षण सब द्रव्यों में कैसे घटता है?*

उत्तर— यद्यपि द्रव्य अनेक हैं और उनकी विविधता भी सकारण है, तथापि सद्-रूप से सब एक हैं; इसलिए सत्-लक्षण सब द्रव्यों में घटता है। ✿✿

उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य-युक्तं सत् ।।30।।

अर्थ — जो उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य — इन तीनों से युक्त अर्थात् इन तीनों रूप है, वह सत् है।

प्र. 1. *'सत्' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य-सहित हो, उसे 'सत्' कहते हैं।

प्र. 2. *'उत्पाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चेतन-अचेतन द्रव्यों में अपनी जाति का त्याग किये बिना नवीन-पर्याय की प्राप्ति को 'उत्पाद' कहते हैं।

प्र. 3. *'व्यय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पूर्व-पर्याय का त्याग 'व्यय' है।

प्र. 4. *'ध्रौव्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पूर्व पर्याय का नाश और नई-पर्याय का उत्पाद होने पर भी अपने अनादि-स्वभाव को न छोड़ना 'ध्रौव्य' है।

प्र. 5. *चेतन-द्रव्य अचेतनरूप होता है या नहीं?*

उत्तर— एक-द्रव्य दूसरे द्रव्यरूप नहीं होता। चेतन-द्रव्य कभी अचेतन और अचेतन-द्रव्य कभी चेतन नहीं होता।

प्र. 6. *उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य में अवस्था-भेद है या काल-भेद भी है?*

उत्तर— प्रत्येक-पदार्थ परिवर्तनशील है, इसमें हर समय परिवर्तन होता रहता है, जैसे दूध से दही, दही से मट्ठा — इन तीनों अवस्थाओं में अवस्था-भेद है, कालभेद नहीं।

प्र. 7. *तीनों अवस्थाओं का त्रैकालिक अन्वयरूप कैसे होता है?*

उत्तर— जिस समय द्रव्य की पूर्व-अवस्था का नाश होता है, उसी समय उसकी नयी अवस्था उत्पन्न होती है; फिर भी उसका त्रैकालिक अन्वय-स्वभाव बना रहता है।

प्र. 8. *उत्पाद आदि तीनों भिन्न हैं या अभिन्न?*

उत्तर— पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा पदार्थ नियम से उपजते, विनशते हैं, किन्तु द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा सदा अनुत्पन्न और अविनष्ट ध्रौव्यरूप रहते हैं। ✿✿

तद्भावाव्ययं नित्यम् ।।31।।

अर्थ — उसके भाव से (अपनी जाति से) च्युत या नष्ट न होना नित्य है।

प्र. 1. *'तद्भावाव्ययं नित्यम्' सूत्र का क्या अर्थ है?*

उत्तर— जो द्रव्य तदभावरूप से अव्यय है, वह नित्य है।

प्र. 2. *'नित्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपनी जातिरूप भाव से च्युत न होना 'नित्य' है।

प्र. 3. *नित्य से तात्पर्य क्या है?*

उत्तर— नित्य का तात्पर्य यह नहीं कि जो वस्तु जिसरूप में है, वह सदा उसी रूप में बनी रहे, उसमें कुछ भी परिणमन न हो; किन्तु परिणमन के होते हुए भी उसमें उसका मूल-स्वभाव अविच्छिन्न बना रहना है, यही नित्यता है।

प्र. 4. *पदार्थ को सर्वथा-नित्य मानने पर क्या दोषापत्ति है?*

उत्तर— यदि पदार्थ को सर्वथा-नित्य माना जाए, तो परिणमन का सर्वथा अभाव होता है, ऐसा होने पर संसार और मुक्ति के कारणरूप प्रक्रिया का विरोध होता है।

प्र. 5. *पदार्थ नित्य है या अनित्य?*

उत्तर— पदार्थ सामान्य-अपेक्षा नित्य है और विशेष अर्थात् पर्याय-अपेक्षा अनित्य है; अतः संसार के सब पदार्थ नित्यानित्य-रूप हैं। ✿✿

अर्पितानर्पितसिद्धेः ॥32॥

अर्थ — मुख्यता और गौणता की अपेक्षा एक वस्तु में परस्पर-विरोधी मालूम पड़नेवाले दो धर्मों की सिद्धि होती है।

प्र. 1. *'अर्पित' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वक्ता जिस बात को कहने की इच्छा रखता है, उसे 'अर्पित' कहते हैं।

प्र. 2. *'अर्पित' शब्द के पर्यायवाची शब्द कितने है और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अर्पित' शब्द के पर्यायवाची शब्द तीन हैं — विवक्षित, मुख्य, अपेक्षित।

प्र. 3. *'अनर्पित' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वक्ता कथन करते समय जिस बात को कहना नहीं चाहता, उसे 'अनर्पित' कहते हैं।

प्र. 4. *एक ही समय वक्ता के 'अर्पित' और 'अनर्तित' कैसे घटित होता है?*

उत्तर— जैसे कि जिस समय किसी पदार्थ को द्रव्य की अपेक्षा नित्य कहते हैं, उसी समय पर्याय की अपेक्षा अनित्य भी है।

प्र. 5. *एक वस्तु के कितने धर्म हैं?*

उत्तर— एक वस्तु के अनेक धर्म होते हैं, जैसे — नित्य-अनित्य, भेद-अभेद आदि अनेक धर्म हैं। ✿✿

स्निग्ध-रूक्षत्वाद् बन्धः ।।33।।

अर्थ — स्निग्धत्व और रूक्षत्व से बन्ध होता है।

प्र. 1. *किससे बन्ध होता है?*

उत्तर— स्निग्धत्व और रूक्षत्व से बन्ध होता है।

प्र. 2. *'स्निग्ध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बाह्य एवं अभ्यन्तर-कारणों से जो स्नेह अर्थात् चिकनी-पर्याय की उत्पत्ति होती है, उसे 'स्निग्ध' कहते हैं।

प्र. 3. *'रूक्ष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रूखेपने के कारण होनेवाली पुद्गल की पर्याय को 'रूक्ष' कहते हैं।

प्र. 4. *'बंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चिकने और रूखे गुणवाले दो परमाणुओं के आपस में मिलने को 'बंध' कहते हैं।

प्र. 5. *स्निग्ध और रूक्ष-गुणों के कितने भेद हैं?*

उत्तर— स्निग्ध और रूक्ष-गुणों के संख्यात, असंख्यात और अनंत-भेद हैं।

प्र. 6. *परमाणुओं में चिकने और रूखे-गुण समान रहते हैं या विषम रहते हैं?*

उत्तर— परमाणुओं में स्निग्ध-रूक्ष-गुण हीनाधिक रहते हैं। ✿✿

न जघन्यगुणानाम् ।।34।।

अर्थ — जघन्य-गुणवाले पुद्गलों का बन्ध नहीं होता।

प्र. 1. *किन परमाणुओं का बंध नहीं होता है?*

उत्तर— जघन्य-गुणवाले पुद्गलों का बन्ध नहीं होता।

प्र. 2. *'गुण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्निग्ध और रूक्षता के अविभागी अर्थात् जिसका और टुकड़ा न हो सके, ऐसे अंशों को गुण कहते हैं।

प्र. 3. *जघन्य गुण सहित परमाणु कौन सा है?*

उत्तर— जिस परमाणु में एक अविभागी-अंश है, वह जघन्य-गुण-परमाणु है।

प्र. 4. *'गुण' शब्द के क्या-क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'गुण' शब्द के अर्थ — उपकार, द्रव्य, अवयव, गौण, व्यापक अंश हिस्सा आदि हैं।

प्र. 5. *सूत्र में आए 'गुण' शब्द का अर्थ क्या है?*

उत्तर— सूत्र में आए 'गुण' शब्द का अर्थ 'अंश' (भाग) है।

प्र. 6. *जघन्य-गुणवाले परमाणु के साथ किसका बन्ध नहीं होता है*

उत्तर— जघन्य-गुण वाले परमाणु के साथ जघन्य-गुण वाले परमाणु या स्कन्ध का बन्ध नहीं होता है। ✿✿

गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥35॥

अर्थ — गुणों की समानता होने पर तुल्यजातिवालों का बन्ध नहीं होता।

प्र. 1. *गुणों की समानता होने पर किसका बन्ध नहीं होता है?*

उत्तर— गुणों की समानता होने पर तुल्यजातिवालों का बन्ध नहीं होता।

प्र. 2. *'गुण-साम्य' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'गुण-साम्य' का अर्थ समान शक्त्यंश है।

प्र. 3. *'सदृश' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— समान-जाति को 'सदृश' कहते हैं।

प्र. 4. *समान-गुणवालों के साथ किस-किस का बन्ध नहीं होता है?*

उत्तर— समान गुणवालों के साथ समान-गुणवालों का समान-जातिवालों के समान-जाति का बन्ध नहीं होता है। ✿✿

द्व्यधिकादि-गुणानां तु ॥36॥

अर्थ — दो अधिक आदि शक्त्यंशवालों का तो बन्ध होता है।

प्र. 1. *किन पुदगलों का बन्ध होता है?*

उत्तर— दो अधिक आदि शक्त्यंशवालों का तो बन्ध होता है।

प्र. 2. *द्व्यधिक का अर्थ क्या है?*

उत्तर— द्व्यधिक का अर्थ है दो अधिक।

प्र. 3. *द्व्यधिक किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें दो शक्त्यंश अधिक हों, उसे द्व्यधिक कहते हैं।

प्र. 4. *परमाणुओं में बंध कितने प्रकार के होते हैं, और कौन-कौन से?*

उत्तर— बंध चार प्रकार के होते हैं — स्निग्ध-रूक्ष, स्निग्ध-स्निग्ध, रूक्ष-स्निग्ध, रूक्ष-रूक्ष।

प्र. 5. *एक स्निग्ध के साथ कौन-कौन-से स्निग्ध-परमाणु का बंध नहीं होता है?*

उत्तर— एक स्निग्ध का संख्यात, असंख्यात और अनन्त-परमाणुओं के साथ स्निग्ध का बंध नहीं होता है।

प्र. 6. *दो स्निग्ध के साथ किसका बंध होता है?*

उत्तर— दो स्निग्ध के साथ चार स्निग्ध-परमाणुओं का बंध होता है।

प्र. 7. *तीन स्निग्ध-परमाणुओं के साथ किसका बंध होता है?*

उत्तर— तीन स्निग्ध-परमाणुओं के साथ पाँच स्निग्ध-परमाणुओं का बंध होता है।

प्र. 8. *एक रूक्ष का किसके साथ बंध नहीं होता?*

उत्तर— एक रूक्ष का तीन पाँच सात के साथ बंध नहीं होता।

प्र. 9. *दो रूक्ष का किसके साथ बंध नहीं है?*

उत्तर— दो रूक्ष का पाँच, छह, सात, आठ के साथ बंध नहीं होता।

प्र. 10. *चार रूक्ष का किसके साथ बंध नहीं होता?*

उत्तर— चार रूक्ष का आठ रूक्ष के साथ बंध नहीं होता।

प्र. 11. *एक जघन्य का किसके साथ बंध नहीं होता?*

उत्तर— एक जघन्य के साथ एक जघन्य का बंध नहीं होता।

प्र. 12. *दो स्निग्ध के साथ किसका बंध होता है?*

उत्तर— दो स्निग्ध के साथ चार स्निग्ध का बंध होता है। ✿✿

बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ॥37॥

अर्थ — बन्ध होते समय दो-अधिक-गुणवाला (पुद्गल दूसरे को अपने रूप) परिणमन करानेवाला होता है।

प्र. 1. *क्या समान गुणवालों के साथ बंध होता है?*

उत्तर— बंध होते समय दो अधिक गुणवाला परिणमन करानेवाला होता है, समान-गुणवालों के साथ बंध नहीं होता है।

प्र. 2. *'पारिणामिक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो परिणमन कराता है, वह 'पारिणामिक' है।

प्र. 3. *पारिणामिक-परमाणु कौन-से हैं?*

उत्तर— दो-गुणवाले स्निग्ध के साथ चार गुणवाले-स्निग्ध-परमाणु पारिणामिक है। शेष परमाणुओं को जानने के लिए सूत्र 36 को देखें।

प्र. 4. *यदि दो अधिक गुणवाला पारिणमिक नहीं हो, तो क्या होगा?*

उत्तर— वहाँ बंध नहीं होकर कपड़े के धागों की तरह अलग-अलग ही रहते हैं। ✿✿

गुण-पर्ययवद् द्रव्यम् ॥38॥

अर्थ — गुण और पर्यायवाला 'द्रव्य' है।

प्र. 1. *'द्रव्य' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— गुण और पर्यायवाला द्रव्य है।

प्र. 2. *'गुण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— द्रव्य में भेद करनेवाले धर्म को 'गुण' कहते हैं।

प्र. 3. *द्रव्य के कितने गुण होते हैं और कितनी पर्यायें होती है?*

उत्तर— द्रव्य में अनन्तगुण और अनंत-पर्यायें होती है।

प्र. 4. *गुण द्रव्यों को कैसे अलग-अलग करता है?*

उत्तर— जो एक द्रव्य के मुख्य-गुण है, वह दूसरे द्रव्य से अलग होता है, जैसे जीव-द्रव्य के चेतना-गुण है, अजीव द्रव्य में अचेतन-गुण है, — इसप्रकार सभी द्रव्यों के मुख्य-गुण अलग-अलग हैं।

प्र. 5. *गुण का दूसरा-लक्षण क्या है?*

उत्तर— जिनके कारण द्रव्य में एकरूपता बनी रहती है, वह गुण कहलाते हैं, जैसे जीव के ज्ञान गुण, पुद्गल में रूप रस आदि गुण द्रव्य में एकरूपता बनाये रखते हैं।

एक अन्य-परिभाषा के अनुसार जो द्रव्य के प्रत्येक भाग में और उसकी प्रत्येक अवस्था में पाया जाता है, उसे 'गुण' कहते हैं। गुण 'अन्वयी' होते हैं।

प्र. 6. *'पर्याय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— द्रव्य एवं गुणों के विकार या कार्य-विशेष को 'पर्याय' कहते हैं। पर्यायें 'व्यतिरेकी' होती हैं।

प्र. 7. *पर्याय का दूसरा-लक्षण क्या है?*

उत्तर— जिनसे द्रव्य में एकरूपता बनी रहती है, वे गुण कहलाते हैं एवं जिनसे उनमें भेद प्रतीत होता है वह पर्याय है; जैसे जीव के मनुष्य देव, नारकी आदि पर्याय।

प्र. 8. *द्रव्य को गुणों से रहित माना जाए, तो क्या होगा?*

उत्तर— यदि 'द्रव्य में गुण नहीं रहते' — ऐसा मानें, तो द्रव्य में संकर-व्यतिकर हो जाता है।

प्र. 9. *'संकर-व्यतिकर' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— परस्पर मिल जाने को संकर कहते हैं, और एकमेक हो जाने को 'व्यतिकर' कहते हैं।

प्र. 10. *द्रव्य को गुण-पर्यायवान् क्यों कहा गया है?*

उत्तर— गुण तथा पर्यायें जिसके हैं, वह द्रव्य गुणपर्यायवान् कहलाता है।

प्र. 11. *जीव-द्रव्य एवं पुद्गल-द्रव्य में कौन-कौन-से गुणों की मुख्य-धारा होती है?*

उत्तर— जीव में 'चेतना', पुद्गल में 'रूप-रस' आदि का मुख्य-धारा होती है।

प्र. 12. धर्म और अधर्म-द्रव्य में कौन-कौन-से गुणों की मुख्य-धारा होती है?

उत्तर— धर्म में 'गति-हेतुत्व', अधर्म में 'स्थिति-हेतुत्व' गुण की मुख्य-धारा होती है।

प्र. 13. आकाश और काल-द्रव्य में कौन-कौन-से गुणों की मुख्य-धारा होती है?

उत्तर— आकाश में 'अवगाहना' और काल में 'वर्तना-गुण' की मुख्य-धारा होती है।

प्र. 14. जीव में मति-श्रुत आदि ज्ञान, पुद्गल के घट-पट-स्पर्श-रसादि की भिन्नता — ये गुण हैं या पर्यायें?

उत्तर— मति-श्रुत आदि जीव की पर्यायें हैं और घट-पट आदि पुद्गल की पर्यायें हैं।

प्र. 15. द्रव्य गुण व पर्यायों से सर्वथा भिन्न है या अभिन्न?

उत्तर— द्रव्य गुण और पर्यायों से कंथचित्-भिन्न है और कथंचित्-अभिन्न। द्रव्य,गुण और पर्याय से सर्वथा-भिन्न नहीं है। ✿✿

कालश्च ।।39।।

अर्थ — काल भी द्रव्य है।

प्र. 1. काल-द्रव्य कितने समयवाला है?

उत्तर— काल-द्रव्य अंनत-समयवाला है।

प्र. 2. काल को 'द्रव्य' क्यों कहते हैं?

उत्तर— क्योंकि इसमें द्रव्य का लक्षण पाया जाता है।

प्र. 3. 'द्रव्य' एवं 'सत्' का लक्षण क्या है?

उत्तर— जो उत्पाद, व्यय और धौव्य से युक्त है, वह 'सत्' है तथा जो गुण और पर्यायवाला है, द्रव्य है।

प्र. 4. काल का लक्षण क्या है?

उत्तर— व्यवहार-काल का लक्षण घड़ी घंटा आदि परिवर्तन एवं निश्चय-लक्षण वर्तना है।

प्र. 5. काल का सामान्य और विशेष-गुण क्या है?

उत्तर— वर्तना विशेष-गुण है तथा अचेतनपना, अमूर्तिकपना, सूक्ष्मपना आदि सामान्य-गुण हैं।

प्र. 6. काल-द्रव्य अमूर्त्तिक कैसे हैं?

उत्तर— क्योंकि असमें रूप-रस आदि गुण नहीं पाए जाते हैं।

प्र. 7. यह बहुप्रदेशी क्यों नहीं है? और यह 'काय' क्यों नहीं माना गया है?

उत्तर— क्योंकि लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश पर एक-एक कालाणु रत्नों की राशि की तरह अलग-अलग स्थित है; वे आपस में नहीं मिलते, इसलिए काल द्रव्य 'काय' नहीं है. प्रत्येक कालाणु एक-एक काल-द्रव्य है।

प्र. 9. *जब काल भी द्रव्य है, तो इसका कथन अलग क्यों किया गया है?*

उत्तर— यदि प्रथम-सूत्र में ही काल-द्रव्य का भी कथन कर दिया जाता, तो काल को भी कायपना प्राप्त होता; परन्तु काल-द्रव्य उपचार से भी कायवान् नहीं है।

प्र. 10. *काल एक द्रव्य है, या अनेक?*

उत्तर— काल एक नहीं, अनेक हैं।

प्र. 11. *काल-द्रव्य निष्क्रिय है, या सक्रिय?*

उत्तर— वह निष्क्रिय है, एक-प्रदेश से दूसरे प्रदेश पर नहीं जाता है, वहीं रहता है।

✿✿

सोऽनन्तसमयः ॥40॥

अर्थ — वह अनन्त-समयवाला है।

प्र. 1. *'समय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— काल-द्रव्य की सबसे छोटी-पर्याय को 'समय' कहते हैं।

प्र. 2. *व्यवहार-काल अनन्त-समयवाला किसप्रकार है?*

उत्तर— काल-द्रव्य अनन्त-समयवाला है, यद्यपि वर्तमान-काल एक-समय मात्र ही है, तथापि भूत-भविष्यत की अपेक्षा अनन्त-समयवाला है।

प्र. 3. *'एक-समय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मंदगति से चलनेवाला पुद्गल-परमाणु आकाश में एक-प्रदेश से दूसरे प्रदेश पर जितने काल में पहुँचता है, उतना काल एक-समय है।

प्र. 4. *क्या केवलज्ञान में समय के भी अविभागी-प्रतिच्छेद दृष्टिगत होते हैं?*

उत्तर— समय के अविभाग-प्रतिच्छेद असंख्यात बनते हैं, जो छद्मस्थ के बुद्धिगम्य नहीं है, केवलज्ञान के द्वारा ही जाने जाते हैं।

प्र. 5. *एक 'आवली' कितने समयों की होती है?*

उत्तर— असंख्यात-समयों की एक आवली होती है।

प्र. 6. *एक 'उच्छ्वास' का परिमाण कितना होता है?*

उत्तर— संख्यात आवलियों का एक उच्छ्वास होता है।

प्र. 7. *एक 'स्तोक' कितना होता है?*

उत्तर— सात उच्छ्वासों का एक 'स्तोक' होता है।

प्र. 8. *एक 'लव' कितना होता है?*

उत्तर— सात स्तोकों का एक 'लव' होता है।

प्र. 9. *एक 'नाडी' कितनी होती है?*

उत्तर— साढ़े अड़तीस लवों की एक 'नाडी' होती है।

प्र. 10. *एक 'मुहूर्त' कितना होता है?*

उत्तर— दो नाडियों का एक 'मुहूर्त' होता है।

प्र. 11. *'भिन्न-अन्तर्मुहूर्त' कितना होता है?*

उत्तर— एक मुहूर्त में एक-समय कम करने पर 'भिन्न-अन्तर्मुहूर्त' होता है।

प्र. 12. *भिन्न-मुहूर्त कितना होता है?*

उत्तर— दो समय कम एक-मुहूर्त 'भिन्न-मुहूर्त' होता है।

प्र. 13. *काल या समय से क्या-क्या जाना जाता है?*

उत्तर— रात, दिन, पक्ष, माह, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग, पल्योपम, सागरोपम, आदि काल या समय से जाना जाता है।

✿✿

द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः ॥41॥

अर्थ — जो निरन्तर द्रव्य में रहते हैं और गुणरहित हैं, वे गुण हैं।

प्र. 1. *'गुण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो द्रव्य के आश्रय रहते हैं, तथा जिनमें अन्य-गुण न हों, उन्हें 'गुण' कहते हैं।

प्र. 2. *'द्रव्य' और 'गुण' में क्या भेद हैं?*

उत्तर— गुणद्रव्य के आश्रय में रहते हैं। अर्थात् द्रव्य 'आधार' है और गुण 'आधेय' हैं।

प्र. 3. *क्या 'गुण' का यह लक्षण 'पर्याय' में भी पाया जाता है?*

उत्तर— गुण तो हर समय ही द्रव्य के आश्रय से रहता है, कभी भी द्रव्य को नहीं छोड़ता; किन्तु पर्याय अनित्य होती है, एक जाती है, दूसरी आती है; अतः गुण का लक्षण पर्याय में नहीं रहता है।

प्र. 4. *द्रव्य और गुण भिन्न हैं या अभिन्न?*

उत्तर— द्रव्य और गुण आधार-आधेय की अपेक्षा भिन्न होते हुए भी इनमें आधार-आधेय दूध और घी के समान सर्वथा भिन्न नहीं है, क्योंकि गुण द्रव्य के साथ रहते हुए भी उससे कथंचित्-भिन्न हैं।

प्र. 5. *द्रव्यों में गुण कितने होते हैं?*

उत्तर— प्रत्येक द्रव्य में गुण अनन्त होते हैं।

प्र. 6. *गुणों के कितने भेद होते हैं*

उत्तर— गुणों के दो भेद हैं सामान्य गुण, विशेष गुण।

प्र. 7. ***'सामान्य-गुण' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **जो सामान्य से सभी द्रव्यों में पाये जाते है वे 'सामान्य-गुण' है, जैसे — अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, प्रदेशत्व व अगुरुलघुत्व आदि।**

प्र. 8. ***'विशेष-गुण' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **जो प्रत्येक द्रव्य की विशेषता को व्यक्त करते है वे 'विशेष-गुण' कहलाते हैं, जैसे — चेतनत्व, मूर्तत्व, गति हेतुत्व आदि।**

प्र. 9. *सूत्र में 'निर्गुणा-गुणाः' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— गुण शक्ति-विशेष का नाम है, उसमें अन्य शक्ति का वास नहीं, इसलिए उसे 'निर्गुण' कहा है, ऐसे गुण प्रत्येक द्रव्य में अनन्त होते हैं। ✿✿

तद्भावः परिणामः ।।42।।

अर्थ — उसका होना अर्थात् प्रति समय बदलते रहना 'परिणाम' है।

प्र. 1. *'पर्याय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रतिसमय बदलते रहना परिणाम है। परिणाम का दूसरा नाम 'पर्याय' है।

प्र. 2. *'तद्भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— धर्मादिक-द्रव्यों का अपने-अपने स्वभाव से होना 'तद्भाव' है।

प्र. 3. *'परिणाम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— धर्मादिक द्रव्य जिस रूप में होते हैं, वह तद्भाव या तत्त्व है, और इसे ही 'परिणाम' कहते हैं।

प्र. 4. *परिणाम के भेद कितने हैं?*

उत्तर— 'सादि' और 'अनादि' के भेद से परिणाम दो भेदरूप है। परिणाम सामान्य-अपेक्षा अनादि है और विशेष की अपेक्षा सादि है; गुण और पर्याय दोनों ही द्रव्यों के परिणाम हैं। ✿✿

काय-वाङ्-मनःकर्म योगः ॥1॥

अर्थ — काय, वचन और मन की क्रिया 'योग' है।

प्र. 1. *'योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— काय, वचन और मन के निमित्त से आत्मा के प्रदेशों में जो हलन-चलन होता है, उसे 'योग' कहते हैं।

प्र. 2. *योग के कितने भेद हैं? और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— योग के तीन भेद हैं — मन, वचन और काय।

प्र. 3. *आत्मप्रदेशों में परिस्पन्द किस निमित्त से होता है?*

उत्तर— आत्म-प्रदेशों में परिस्पन्द निमित्तों के भेद से तीन प्रकार का है — काय—योग, वचनयोग, और मनोयोग।

प्र. 4. *'काययोग' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— शरीर के निमित्त से जो आत्म-प्रदेशों में हलन-चलन होता है, वह 'काययोग' है।

प्र. 5. *'वचनयोग' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— वचन-वर्गणाओं के द्वारा जो आत्म-प्रदेशों में हलन-चलन होता है, वह 'वचनयोग' है।

प्र. 6. *'मनोयोग' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— मन के निमित्त से आत्मा के प्रदेशों में जो हलन-चलन होता है, वह 'मनोयोग' है।

प्र. 7. *मनोयोग के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— मनोयोग के चार भेद हैं — सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग।

प्र. 8. *'सत्यमनोयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— समीचीन-पदार्थ को विषय करनेवाले मन को 'सत्यमन' कहते हैं और उसके द्वारा जो योग होता है, उसको 'सत्य-मनोयोग' कहते हैं।

प्र. 9. *'असत्यमनोयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— असमीचीन-पदार्थ को विषय करनेवाले मन 'असत्यमन' कहते हैं, उसके द्वारा जो योग होता है, उसे 'असत्य-मनोयोग' कहते हैं।

प्र. 10. *'उभयमनोयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सत्य और मिथ्या दोनों ही प्रकार के मन को 'उभयमन' कहते हैं और उनके द्वारा जो योग होता है, उसको 'उभय-मनोयोग' कहते हैं।

प्र. 11. *'अनुभय-मनोयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो न तो सत्य हो और न झूठ हो, उसको 'अनुभय-मन' कहते हैं और उसके द्वारा जो योग होता है, उसको 'अनुभय-मनोयोग' कहते हैं।

प्र. 12. *वचनयोग के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— वचनयोग के चार भेद हैं — सत्यवचन-योग, असत्य-वचन-योग, उभयवचन-योग, और अनुभयवचन-योग।

प्र. 13. *'सत्यवचन-योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सत्य-पदार्थ को कहने के लिए वचन की प्रवृत्ति हुई, तो उसके वचन को सत्यवचन और उसके द्वारा होनेवाले योग को 'सत्यवचन-योग' कहते हैं।

प्र. 14. *'असत्यवचन-योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— असत्य-वचन के द्वारा जो योग होता है, उसको 'असत्यवचन-योग' कहते हैं।

प्र. 15. *'उभयवचन-योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो कुछ सत्य और कुछ झूठ वचन है, उसको उभयवचन कहते हैं, उससे होनेवाला योग 'उभयवचन' योग कहलाता है।

प्र. 16. *'अनुभयवचन-योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो न सत्यरूप हो और न मृषारूप ही हो, उसे अनुभयवचन कहते हैं; उनके लिए जो प्रयत्न होता है उसको, 'अनुभयवचन-योग' कहते हैं।

प्र. 17. *काययोग के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— काययोग के सात भेद हैं — औदारिक-काययोग, औदारिक-मिश्र-काययोग, वैक्रियिक-काययोग, वैक्रियिक-मिश्र-काययोग, आहारक-काययोग, आहारक-मिश्र-काययोग और कार्माण-काययोग।

प्र. 18. *'औदारिक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो उदार अर्थात् विशाल होता है, उसे 'औदारिक' कहते हैं।

प्र. 19. *'औदारिक-काययोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— औदारिक-शरीर के अवलम्बन से होनेवाले आत्मप्रदेशों के परिस्पन्दन को 'औदारिक-काययोग' कहते हैं।

प्र. 20. *'औदारिक-मिश्र-काययोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— औदारिक-शरीर की पर्याप्ति पूर्ण होने के पूर्व कार्मण-शरीर की सहायता से

होनेवाले औदारिक-काययोग को 'औदारिक-मिश्रकाय-योग' कहते हैं।

प्र. 21. *'वैक्रियिक-काययोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— नानाप्रकार के गुण और ऋद्धियों से युक्त देवों तथा नारकियों के शरीर को 'वैक्रियिक' कहते हैं और इसके द्वारा होनेवाले योग को 'वैक्रियिक-काययोग' कहते हैं।

प्र. 22. *'वैक्रियिक-मिश्र-काययोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जब तक वैक्रियिक-शरीर पूर्ण नहीं होता, तब तक उसको वैक्रियिक- मिश्र कहते हैं और उसके द्वारा होनेवाले आत्म-प्रदेश-परिस्पंदन को 'वैक्रियिक-मिश्र-काययोग' कहते हैं।

प्र. 23. *'आहारक-काययोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'आहारक-शरीर' के द्वारा होनेवाले योग को 'आहारक-काययोग' कहते हैं।

प्र. 24. *'आहारक-मिश्र-काययोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आहारक-शरीर जब तक पूर्ण नहीं होता, तब तक उसको आहारक-मिश्र कहते हैं और उसके द्वारा जो संप्रयोग होता है, उसे 'आहारक-मिश्र-काययोग' कहते हैं।

प्र. 25. *'कार्मण-काययोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कार्मण-शरीर नामकर्म के उदय से उत्पन्न होनेवाले काय को 'कार्मण-काय' कहते हैं और उसके द्वारा होनेवाले योग को 'कार्मण-काययोग' कहते हैं।

प्र. 26. *कार्मण-काययोग का काल कितना है?*

उत्तर— कार्मण-काययोग एक, दो अथवा तीन समय तक होता है।

प्र. 27. *कार्मण-काययोग किस समय होता है?*

उत्तर— विग्रहगति में और केवलि-समुद्घात में तीन-समय-पर्यन्त ही कार्माण-काययोग होता है।

प्र. 28. *एक काल में कितने योग होते हैं?*

उत्तर— एक समय में एक ही योग होता है।

प्र. 29. *योगरहित जीव कौन-से हैं?*

उत्तर— चौदहवें गुणस्थानवर्ती परमात्मा व सिद्ध-भगवन्त योग-रहित जीव हैं।

प्र. 30. *'काययोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— काय अर्थात् शरीर के निमित्त से होनेवाले आत्म-प्रदेशों के परिस्पन्दन को 'काययोग' कहते हैं।

प्र. 31. *औदारिक-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— औदारिक-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति तीन-पल्य है।

प्र. 32. *वैक्रियिक-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— वैक्रियिक-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति तैंतीस सागर है।

प्र. 33. *आहारक-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— आहारक-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति अन्तर्मुहूर्त है।

प्र. 34. *तैजस्-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— तैजस्-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति छियासठ-सागर है।

प्र. 35. *कार्मण-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— कार्मण-शरीर की उत्कृष्ट-स्थिति सामान्यतः सत्तर-कोडाकोडी-सागर है, विशेषरूप से कर्मों की स्थिति के अनुसार है। ✿✿

स आस्रवः ॥2॥

अर्थ — वही (मन-वचन-काय के निमित्त से होनेवाले आत्मप्रदेशों का परिस्पन्दन) आस्रव है।

प्र. 1. *'आस्रव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों के आने के द्वार को 'आस्रव' कहते हैं।

प्र. 2. *योग को आस्रव क्यों कहते हैं?*

उत्तर— योग द्वारा ही कर्म और नोकर्म-वर्गणाओं का ग्रहण होकर उनका आत्मा से सम्बन्ध होता है, इसलिए योग को 'आस्रव' कहा है।

प्र. 3. *संसारी-आत्मा कर्मवर्गणाओं को किसप्रकार ग्रहण करती है?*

उत्तर— जैसे पानी में तपा हुआ लोहे का गोला फेंकने से चारों तरफ से पानी को ग्रहण करता है, वैसे ही कषायों से सन्तप्त हुआ आत्मा त्रिविधयोगों के द्वारा कर्म-वर्गणाओं को ग्रहण करता है।

प्र. 4. *जैनाचार्यों ने मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग को बन्ध का कारण कहा है, फिर यहाँ मात्र योग को ही आस्रव क्यों कहा है?*

उत्तर— तीन योग में सभी आस्रव गर्भित हो जाते हैं, अतः यहाँ आचार्यश्री ने योग को ही आस्रव कहा है।

प्र. 5. *कर्म कितने प्रकार के हैं?*

उत्तर— कर्म दो प्रकार के हैं — पुण्यकर्म और पापकर्म।

प्र. 6. *पुण्यकर्म कैसे आते हैं?*

उत्तर— जब चैतन्य शुभयोग से जुड़ता है, तो उससे शुभकर्म आते हैं।

प्र. 7. *पापकर्म कैसे आते हैं?*

उत्तर— जब हमारा चैतन्य अशुभोपयोग से जुड़ता है, तब उससे पापकर्म आते हैं।

✿✿

शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥3॥

अर्थ — शुभयोग से पुण्य का और अशुभयोग से पाप का आस्रव होता है।

प्र. 1. *आस्रव के कितने भेद हैं?*

उत्तर— आस्रव के दो भेद हैं — शुभ-आस्रव, अशुभ-आस्रव।

प्र. 2. *'अशुभ-आस्रव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पाप कर्मों के आने को 'अशुभ-आस्रव' कहते हैं।

प्र. 3. *'शुभ-आस्रव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पुण्य-कर्म के आने को 'शुभ-आस्रव' कहते हैं।

प्र. 4. *'अशुभ मन-वचन-काय-योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हिंसा, चोरी आदि 'अशुभ-काययोग' है; असत्य, अप्रिय, कटुक-वचन 'अशुभ-वचनयोग' है। ईर्ष्या, वध-चिंतन आदि 'अशुभ-मनोयोग' है।

प्र. 5. *'पुण्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आत्मा को पवित्र करे, उसे 'पुण्य' कहते हैं।

प्र. 6. *'पाप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आत्मा को अच्छे कार्यों से दूर करे, उसे 'पाप' कहते हैं।

प्र. 7. *योग शुभ-अशुभ कैसे होता है?*

उत्तर— शुभ-परिणाम से होनेवाला योग शुभ है और अशुभ-परिणाम से होनेवाला योग अशुभ है।

प्र. 8. *जो शुभ-कर्मों का कारण है, वह शुभ-योग है और जो पाप कर्मों के आगमन में कारण है, वह अशुभ-योग है — यदि ऐसा हो, तो क्या हानि है?*

उत्तर— यदि ऐसा किया जाए, तो शुभ-योग का अभाव हो जाएगा। आगम-अनुसार जीव के आयु-कर्म के सिवा शेष सात-कर्मों का आस्रव सदा होता रहता है। शुभ-योग से भी ज्ञानावरण आदि पाप कर्मों का बंध होता है, इसलिए ऊपर का लक्षण सही है।

प्र. 9. *जब शुभ-योग से भी घातिया-कर्मों का बंध होता है, तो ऐसा क्यों कहा कि शुभ-योग से पुण्य-कर्म का बंध होता है?*

उत्तर— यह कथन अघातिया-कर्मों की अपेक्षा से है। अघातिया-कर्म के दो-भेद हैं

— पुण्य और पाप। उनमें से शुभ-योग से पुण्य-कर्म और अशुभ-योग से पाप-कर्म का आस्रव होता है। शुभ-योग के होते हुए भी घातिया-कर्मों का अस्तित्व रहता है, उनका उदय भी होता है; इसी से घातिया-कर्म का बंध होता है। ✿✿

सकषायाकषाययोः सांपरायिकेर्यापथयोः ॥4॥

अर्थ — कषायसहित और कषायरहित आत्मा को योग के निमित्त से क्रम से साम्परायिक और ईर्यापथ-आस्रव होता है।

प्र. 1. *अन्य-प्रकार से आस्रव के भेद क्या हैं?*

उत्तर— अन्य-प्रकार से साम्परायिक-आस्रव, ईर्यापथ-आस्रव दो प्रकार का है।

प्र. 2. *'साम्परायिक-आस्रव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस आस्रव का संसार ही प्रयोजन है, उसे 'साम्परायिक-आस्रव' कहते हैं।

प्र. 3. *साम्परायिक-आस्रव किन जीवों के होता है?*

उत्तर— कषाय-सहित योगवाले जीवों के साम्परायिक-आस्रव होता है।

प्र. 4. *साम्परायिक-आस्रव किस-गुणस्थान से किस-गुणस्थान तक होता है?*

उत्तर— साम्परायिक-आस्रव पहले-गुणस्थान से दसवें-गुणस्थान तक होता है।

प्र. 5. *'ईर्यापथ-आस्रव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्थिति और अनुभागरहित कर्मों के आस्रव को 'ईर्यापथ-आस्रव' कहते हैं।

प्र. 6. *ईर्यापथ-आस्रव किन जीवों के होता है?*

उत्तर— कषाय-रहितवाले जीवों के ईर्यापथ-आस्रव होता है।

प्र. 7. *ईर्यापथ-आस्रव किस-गुणस्थान से किस-गुणस्थान तक होता है?*

उत्तर— ईर्यापथ-आस्रव ग्यारहवें से तेरहवें-गुणस्थान तक होता है।

प्र. 8. *'कषाय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आत्मा को कसती है, आत्मा की हिंसा करती है, आत्मा को दुर्गति की तरफ ले जाती है, वह 'कषाय' है।

प्र. 9. *'सकषाय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कषायसहित जो मिथ्यादृष्टि आदि आत्मा है, वह 'सकषाय' कहलाती है।

प्र. 10. *'अकषाय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उपशान्त-कषाय आदि गुणस्थानवर्ती-आत्मा 'अकषाय' है।

प्र. 11. *'कषाय' का कार्य क्या है?*

उत्तर— कषायों का कार्य आत्मा का कर्मों के साथ संबंध में कारण होना है।

प्र. 12. *'योग' व 'कषाय' का कार्य क्या है?*

उत्तर— योग का कार्य आस्रव को निमन्त्रण देना मात्र है, और कषाय का कार्य आये हुए आस्रव को अच्छी तरह रोकना (बंध कराना) है।

प्र. 13. *'पाप-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पंचेन्द्रिय-विषयों को भोगने की तीव्र-लालसा को 'पाप-क्रिया' कहते हैं।

प्र. 14. *'पापानुबंधी-पुण्य-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— विषय-भोगों की स्वर्गों की चाह करते हुए पुण्य करना 'पापानुंबधी-पुण्य-क्रिया' है।

प्र. 15. *'पुण्यानुंबधी-पुण्य-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भोगादि की चाह न रहना तथा स्वर्गादि की भी चाह न होना, सिर्फ मोक्ष पाने की इच्छा रहना 'पुण्यानुबंधी-पुण्य-क्रिया' है।

प्र. 16. *'शुद्ध-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इसमे मोक्ष की भी इच्छा नहीं, संकल्प-विकल्प-रहित भाव 'शुद्ध-क्रिया' है।

✿✿

इन्द्रिय-कषायाव्रत-क्रियाः पञ्च-चतुः-पञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥5॥

अर्थ — पूर्व के अर्थात् साम्परायिक-कर्मास्रव के क्रम से पाँच-इन्द्रिय, चार-कषाय, पाँच-अव्रत और पच्चीस-क्रियारूप भेद हैं।

प्र. 1. *साम्परायिक-आस्रव के कितने भेद हैं?*

उत्तर— 5 इन्द्रियाँ, 4 कषाय, 5 पाप, 25 क्रियायें साम्परायिक-आस्रव के भेद हैं।

प्र. 2. *पाँच-इन्द्रियाँ कौन-सी हैं?*

उत्तर— स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण — ये पाँच-इन्द्रियाँ हैं।

प्र. 3. *चार-कषाय कौन-सी हैं?*

उत्तर— क्रोध मान, माया और लोभ — ये चार-कषाय हैं।

प्र. 4. *पाँच-पाप कौन-से हैं?*

उत्तर— हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह — ये पाँच-पाप हैं।

प्र. 5. *पच्चीस-क्रियायें कौन-सी हैं?*

उत्तर— सम्यक्त्व-क्रिया, मिथ्यात्व-क्रिया, प्रयोग-क्रिया, समादान-क्रिया, ईर्यापथ-क्रिया, प्रादोषिकी-क्रिया, कायिकी-क्रिया, आधिकरणिकी-क्रिया, पारितापिकी-क्रिया, प्राणातिपातिकी-क्रिया, दर्शन-क्रिया, स्पर्शन-क्रिया, प्रात्ययिकी-क्रिया, समन्तानुपात-क्रिया, अनाभोग-क्रिया, स्वहस्त-क्रिया, निसर्ग-क्रिया, विदारण-क्रिया, आज्ञाव्यापादिकी-क्रिया, अनाकांक्ष-क्रिया,

प्रारंभ-क्रिया, पारिग्राहिकी-क्रिया, माया-क्रिया, मिथ्यादर्शन-क्रिया, अप्रत्याख्यान-क्रिया — ये पच्चीस-क्रियायें हैं।

प्र. 6. *'सम्यक्त्व-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— देव, शास्त्र, गुरु की पूजा आदि करने रूप जिन क्रियाओं से सम्यक्त्व की पुष्टि होती है, वह 'सम्यक्त्व-क्रिया' है।

प्र. 7. *'मिथ्यात्व-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कुदेव आदि की पूजा करने रूप जिन क्रियाओं से मिथ्यात्व की वृद्धि होती है, वह 'मिथ्यात्व-क्रिया' है।

प्र. 8. *'प्रयोग-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शरीरादि से गमनागमनरूप प्रवृत्ति करना 'प्रयोग-क्रिया' है।

प्र. 9. *'समादान-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संयमी होते हुए असंयम की ओर अभिमुख होना 'समादान-क्रिया' है।

प्र. 10. *'ईर्यापथ-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ईर्यापथ से गमन के लिए होनेवाली क्रिया 'ईर्यापथ-क्रिया' है।

प्र. 11. *'प्रादोषिकी-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— क्रोध के आवेश में द्वेष आदिक रूप प्रवृत्ति 'प्रादोषिकी-क्रिया' है। ✿✿

तीव्र-मन्द-ज्ञाताज्ञात-भावाधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः ॥6॥

अर्थ — तीव्रभाव, मन्दभाव, ज्ञातभाव, अज्ञातभाव, अधिकरण और वीर्य-विशेष के भेद से उसकी आस्रव की विशेषता होती है।

प्र. 1. *आस्रव में वृद्धि-हानि किस कारण होती है?*

उत्तर— तीव्रभाव, मन्दभाव, ज्ञातभाव, अज्ञातभाव, अधिकरण और वीर्य-विशेष से आस्रव में विशेषता (हीनाधिकता) होती है।

प्र. 2. *'तीव्र-भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अत्यन्त बढ़े हुए क्रोधादि के द्वारा होनेवाले 'तीव्र-भाव' हैं।

प्र. 3. *'मंद-भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— क्रोधादि-कषायों की मन्दता को 'मंद-भाव' कहते हैं।

प्र. 4. *'ज्ञात-भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इस प्राणी को मारना चाहिए — ऐसा संकल्प कर उसे मारना 'ज्ञात-भाव' है।

प्र. 5. *'अज्ञात-भाव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अंहकार या प्रमादवश बिना जाने प्रवृत्ति करना 'अज्ञात-भाव' है।

प्र. 6. ***'अधिकरण-भाव' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **जिसके आश्रय अर्थ रहे, वह 'अधिकरण-भाव' है।**

प्र. 7. ***'वीर्य-भाव' किसे कहते हैं***

उत्तर— **शक्ति-विशेष को 'वीर्य' कहा है। वज्रवृषभनाराच-संहननवाले पुरुष को अधिक आस्रव होता है, शेष हीन-संहननवाले जीवों के क्रमशः कम-कम आस्रव होता है।**

प्र. 8. *तीव्रभाव कौन-से हैं, जिनसे आस्रव में तीव्रतारूप विशेषता होती है?*

उत्तर— क्रोध, राग, द्वेष, सभ्य-असभ्य प्राणियों का संयोग, देश-काल आदि बाह्य-कारणवश इन्द्रियविषय, कषाय, अव्रत और क्रियाओं से किसी आत्मा में तीव्र-भाव होते हैं।

प्र. 9. *मन्द-भाव कौन-से हैं, जिनसे आस्रव में मंदतारूप विशेषता होती है?*

उत्तर— किसी आत्मा में इन्द्रिय, कषाय, अव्रत और क्रियाओं में मन्दभाव होता है, तब निर्मल-परिणाम होने पर मन्द आस्रव होता है।

प्र. 10. *वे ज्ञात और अज्ञात-भाव कौन-से हैं, जिनसे आस्रव में मंदता या तीव्रता आती है?*

उत्तर— किसी जीव की इन्द्रियादि-विषयों में जानकर प्रवृत्ति होती है, तो तीव्र-आस्रव होता है। अज्ञात-भाव से इन्द्रियादि में प्रवृत्ति होने पर अल्प-आस्रव होता है।

✿✿

अधिकरणं जीवाजीवाः ॥7॥

अर्थ — अधिकरण जीव और अजीवरूप है।

प्र. 1. *'अधिकरण' किसे कहते हैं, उसके कितने भेद हैं?*

उत्तर— जिसके आश्रित द्रव्य रहे, उसे 'अधिकरण' कहते हैं; इसके जीवाधिकरण और अजीवाधिकरण — ये दो भेद हैं।

प्र. 2. *'जीवाधिकरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आस्रव मुख्यतः जीव के द्वारा उत्पन्न होता है अर्थात् जिसमें जीव की मुख्यता रहती है, उस आस्रव को 'जीवाधिकरण' कहते हैं।

प्र. 3. *'अजीवाधिकरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अजीव-द्रव्य जिसका निमित्त है, आश्रय है, उसे 'अजीव-अधिकरण' कहते हैं।

प्र. 4. *जीव-अजीव दोनों आस्रव के अधिकरण कैसे होते हैं?*

उत्तर— संसार-चक्र जीव-अजीव के सम्बन्ध का फल है। शुभ-अशुभ कर्मों का बंध भी इन्हीं के निमित्त से होता है; इसलिए जीव-अजीव दोनों आस्रव के

अधिकरण होते हैं।

प्र. 5. *जीव-अजीव-अधिकरण के भेद कितने हैं? कौन-से हैं?*

उत्तर— जीव-अजीव-अधिकरण के दस भेद हैं — विष, लवण, क्षार, कटुक, अम्ल, स्नेह, अग्नि और खोटे रूप से प्रयुक्त मन, वचन और काय।

प्र. 6. *जीव-अजीव-अधिकरण कितने प्रकार का है, और कौन-कौन-सा है?*

उत्तर— जीव-अजीव-अधिकरण दो प्रकार का है — द्रव्याधिकरण और भावाधिकरण।

प्र. 7. *'भावाधिकरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जीव के कषाय आदि भाव और अजीव की शक्ति, जैसे तलवार की तीक्ष्णता आदि 'भावाधिकरण' हैं। ✿✿

आद्यं संरम्भ-समारम्भारम्भ-योग-कृत-कारितानुमत-कषाय-विशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥8॥

अर्थ — पहला जीवाधिकरण संरम्भ, समारम्भ और आरम्भ के भेद से तीन प्रकार का, योगों के भेद तीन प्रकार का, कृत-कारित और अनुमत के भेद से तीन प्रकार का, तथा कषायों के भेद से चार प्रकार का होता हुआ परस्पर मिलाने से (3×3×3×4=108) एक सौ आठ प्रकार का है।

प्र. 1. *जीवाधिकरण के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— जीवाधिकरण के 108 भेद हैं — संरम्भ, समारम्भ, आरंभ (3) × कृत, कारित, अनुमोदन (3) × मन, वचन, काय (3) × क्रोध, मान, माया, लोभ (4)=108।

प्र. 2. *अजीवाधिकरण के कितने भेद हैं? कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— अजीवाधिकरण के 11 भेद हैं — दो-निर्वतना, चार प्रकार का निक्षेप, दो प्रकार का संयोग, तीन प्रकार का निसर्ग है।

प्र. 3. *'संरम्भ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी कार्य को करने का इरादा करना 'संरम्भ' है।

प्र. 4. *'समारम्भ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इरादानुसार साधनों को एकत्र करना 'समारम्भ' है?

प्र. 5. *'आरम्भ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कार्य को प्रारम्भ करना 'आरम्भ' है।

प्र. 6. *'कृत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्वयं करना 'कृत' है।

प्र. 7. *'कारित' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरों से कराना 'कारित' है।

प्र. 8. *'अनुमोदना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरों के द्वारा किये हुए कार्यों की प्रशंसा करना 'अनुमोदना' है।

प्र. 9. *'योग' किसे कहते हैं और इसके कितने भेद हैं?*

उत्तर— आत्मा के प्रदेशों का परिस्पन्द या हलन-चलन 'योग' है। वह निमित्तों के भेद से तीन प्रकार का है — मनोयोग, वचनयोग और काययोग।

प्र. 10. *'कषाय' किसे कहते हैं, वह कितने प्रकार की है?*

उत्तर— जो कसती है, आत्मा को दुःख देती है और आत्मा के सम्यग्दर्शनादि-गुणों का घात करती है, वह 'कषाय' है। कषाय के चार भेद हैं — क्रोध, मान, माया और लोभ।

प्र. 11. *'विशेष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे एक अर्थ दूसरे अर्थ से विशेषता को प्राप्त हो, वह 'विशेष' है। सूत्र में 'विशेष' शब्द सबके साथ है, जैसे — संरम्भ-विशेष, समारम्भ-विशेष आदि।

प्र. 12. *जप की माला में 108 दाने क्यों होते हैं?*

उत्तर— चार-कषाय के भेदों को परस्पर गुणा करने से जीवाधिकरण के 108 भेद हो जाते हैं। शुभ और अशुभ-प्रवृत्ति करते समय संसारी-जीवों के साथ इन 108 अवस्थाओं में से किसी न किसी रूप रहते हैं। इन भावों की शुद्धि के लिए माला में 108 दाने रखे जाते हैं। ✿✿

निर्वर्तना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा द्वि-चतु-र्द्वि-त्रिभेदाः परम्॥9॥

अर्थ — पर अर्थात् अजीवाधिकरण क्रम-से दो, चार, दो और तीन भेदवाले निर्वर्तना, निक्षेप, संयोग और निसर्गरूप है।

प्र. 1. *'निर्वर्तना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उत्पन्न करने, रचना करने अथवा बनाने का नाम 'निर्वर्तना' है।

प्र. 2. *निर्वर्तना के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— निर्वर्तना के दो भेद हैं — मूलगुण-निर्वर्तना और उत्तरगुण-निर्वर्तना।

प्र. 3. *'मूलगुण-निर्वर्तना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शरीर, मन तथा श्वासोच्छ्वास आदि की रचना करना 'मूलगुण-निर्वर्तना' है।

प्र. 4. *'उत्तरगुण-निर्वर्तना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— काष्ठ, मिट्टी आदि से चित्रादि की रचना करना 'उत्तरगुण-निर्वर्तना' है।

प्र. 5. *'निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वस्तु के रखने को 'निक्षेप' कहते हैं।

प्र. 6. *निक्षेप के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— निक्षेप के चार भेद हैं — सहसा-निक्षेप, अनाभोग-निक्षेप, अप्रत्यवेक्षित-निक्षेप, और दु:प्रमृष्ट-निक्षेप।

प्र. 7. *'सहसा-निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी भय या अन्य कार्य की शीघ्रता से वस्तु को जमीन पर जल्दी से पटक देना 'सहसा-निक्षेप' है।

प्र. 8. *'अनाभोग-निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी वस्तु को योग्य-स्थान में न रखकर बिना-शोधे-स्थान में उपयोग के बिना ही रख देना 'अनाभोग-निक्षेप' है।

प्र. 9. *'अप्रत्यवेक्षित-निक्षेप' किसे कहते हैं।*

उत्तर— बिना देखे वस्तु को रखना 'अप्रत्यवेक्षित-निक्षेप' है।

प्र. 10. *'दु:प्रमृष्ट-निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— देखकर भी ठीक तरह प्रमार्जित किये बिना वस्तु को रखना 'दु:प्रमृष्ट-निक्षेप' है।

प्र. 11. *'अनाभोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बार-बार न देखकर उपकरण आदि को भूमि आदि पर रखना 'अनाभोग' कहलाता है।

प्र. 12. *'संयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनेक-वस्तुओं को मिलाने का नाम 'संयोग' है।

प्र. 13. *संयोग के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— संयोग के दो भेद हैं — भक्तपान-संयोग, और उपकरण-संयोग।

प्र. 14. *'भक्तपान-संयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सचित्त-अचित्त खान-पान मिला देना 'भक्तपान-संयोग' है।

प्र. 15. *'उपकरण-संयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ठण्डी पुस्तक, कमण्डलु, शरीरादिक को धूप से गरम हुई पीछी आदि से पोंछना तथा शीत और उष्ण उपकरणों को मिला देना 'उपकरण-संयोग' है।

प्र. 16. *'निसर्ग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रवृत्ति का नाम 'निसर्ग' है।

प्र. 17. *निसर्ग के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— निसर्ग के तीन भेद हैं — मनो-निसर्ग, वचन-निसर्ग तथा काय-निसर्ग।

प्र. 18. *'मनो-निसर्ग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दुष्टतापूर्वक मन की प्रवृत्ति करना 'मनो-निसर्ग' है।

प्र. 19. *'वचन-निसर्ग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दुष्टतापूर्वक वचन की प्रवृत्ति करना 'वचन-निसर्ग' है।

प्र. 20. *'काय-निसर्ग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दुष्टतापूर्वक काय की प्रवृत्ति करना 'काय-निसर्ग' है।

प्र. 21. *निर्वर्तना आदि को 'अजीवाधिकरण' क्यों कहते हैं?*

उत्तर— निर्वर्तना, निक्षेप, संयोग और निसर्ग — ये चार आस्रव अजीव-द्रव्य का आश्रय करके उत्पन्न होते हैं; इसलिए इन्हें 'अजीवाधिकरण' कहते हैं। ✿✿

तत्प्रदोष-निह्नव-मात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः ॥10॥

अर्थ — ज्ञान और दर्शन के विषय में प्रदोष, निह्नव, मात्सर्य, अन्तराय, आसादन और उपघात — ये ज्ञानावरण और दर्शनावरण के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 1. *ज्ञानावरणी और दर्शनावरणी-कर्म के आस्रव के कारण क्या हैं?*

उत्तर— ज्ञान और दर्शन के विषय में प्रदोष, निह्नव, मात्सर्य, अन्तराय, आसादन और उपघात करना ज्ञानावरण और दर्शनावरण-कर्म के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 2. *'प्रदोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कोई पुरुष मोक्ष के साधन तत्त्वज्ञान का उपदेश करता हो, तो मुख से कुछ न कहकर हृदय में उससे ईर्ष्या रखना 'प्रदोष' है।

प्र. 3. *निह्नव किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने को शास्त्र का ज्ञान होते हुए भी किसी के पूछने पर यह कह देना कि "मैं नहीं जानता" 'निह्नव' है।

प्र. 4. *'मात्सर्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने को शास्त्र का ज्ञान होते हुए भी दूसरों को इसलिए नहीं देना कि 'वे जान जायेंगे, तो मेरे बराबर हो जायेंगे 'मात्सर्य' है।

प्र. 5. *'अन्तराय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी के ज्ञानाभ्यास में विघ्न डालना 'अन्तराय' है।

प्र. 6. *'आसादना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्यग्ज्ञान का आदर न करते हुए उसके उपदेश देनेवाले को रोक देना 'आसादना' है।

प्र. 7. *'उपघात' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सच्चे-ज्ञान को दोष लगाना 'उपघात' है।

प्र. 8. *सूत्र में 'तत्' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— सूत्र में 'तत्' शब्द ज्ञान-दर्शन का निर्देश करने के लिए दिया है।

प्र. 9. *ज्ञानावरण-कर्म के आस्रव के और कारण क्या हैं?*

उत्तर— तत्त्वों का सूत्र-विरुद्ध कथन करना, तत्त्वों का उपदेश सुनने में अनादर करना, तत्त्वों का उपदेश समझने में आलस्य करना, लोभ-बुद्धि से शास्त्रों को बेचना, अपने को बहुश्रुति मान मिथ्या-उपदेश देना, अकाल में शास्त्र पढना, सच्चे आचार्य-उपाध्याय-साधु से विरुद्ध रहना, तत्त्वों में श्रद्धा न रखना, तत्त्वों का अनुचिन्तन न करना, सर्वज्ञ-भगवान् के धर्मशास्त्र के प्रचार में बाधा डालना, बहुश्रुत-ज्ञानियों का अपमान करना, तत्त्वज्ञान के अभ्यास में बदलाव करना।

प्र. 10. *दर्शनावरणी-कर्मास्रव के और कारण क्या हैं?*

उत्तर— किसी की आँख निकाल देना, बहुत सोना, दिन में सोना, नास्तिकपने की भावना रखना, (सम्यग्दृष्टि-जीव पर) दोष लगाना, कुधर्मी की प्रशंसा करना, तपस्वी दिगम्बर-मुनियों को देखकर ग्लानि करना। ✿✿

दु:ख-शोक-तापाक्रन्दन-वध-परिदेवनान्यात्मपरोभय-स्थानान्यसद्वेद्यस्य ।।11।।

अर्थ — अपने में दूसरों में या दोनों में विद्यमान दु:ख, शोक, ताप, आक्रन्दन, वध, और परिदेवन — ये असातावेदनीय-कर्म के आस्रव हैं।

प्र. 1. *'असाता-वेदनीय-कर्म के आस्रव के कारण क्या हैं?*

उत्तर— निज तथा पर के विषय में दु:ख, शोक, ताप, आक्रन्दन, वध और परिदेवन करना असाता वेदनीय के आस्रव के कारण हैं। स्थूलरूप से ये सब दु:ख के ही भेद कहे जा सकते हैं।

प्र. 2. *दु:ख किसे कहते हैं?*

उत्तर— पीड़ारूप परिणाम-विशेष को 'दु:ख' कहते हैं।

प्र. 3. *'शोक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने उपकारी का वियोग होने पर मन में विकलता होना 'शोक' है।

प्र. 4. *'ताप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लोक में निन्दा वगैरह के होने से तीव्र पश्चात्ताप का होना 'ताप' है।

प्र. 5. *'आक्रन्दन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पश्चात्ताप से अश्रुपात करते हुए रोना 'आक्रन्दन' है।

प्र. 6. *'वध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी के प्राणों का घात करना 'वध' है।

प्र. 7. *'परिदेवन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अत्यन्त-दुःखी होकर ऐसा रुदन करना जिसे सुनकर सुननेवालों के हृदय में दया उत्पन्न हो जाए 'परिदेवन' है।

प्र. 8. *असाता-वेदनीय-कर्म का आस्रव किसके होता है?*

उत्तर— जो स्वयं दुःखी होता है व दूसरों को दुःखी करता है, उसके असाता-वेदनीय-कर्म का आस्रव होता है।

प्र. 9. *जैन-साधुओं की केशलोंच करना, आतापन-योगादि करना तथा दूसरों को भी वैसा उपदेश देना आदि क्रियायें उचित कैसे हैं?*

उत्तर— जैन-साधुओं की केशलोंच, उपवास आदि क्रियायें क्रोधादिक के आवेश से रहित हैं, इसलिए ये असातावेदनीय के आस्रव का कारण नहीं हैं। जैन-साधु संसार के दुःखों से त्रस्त जीवों के कल्याण की भावना से ही उन्हें उपदेश देते हैं। ✿✿

भूत-व्रत्यनुकम्पा-दान-सरागसंयमादि-योगःक्षान्तिः-शौचमिति-सद्वेद्यस्य ।।12।।

अर्थ — भूत-अनुकम्पा, व्रती-अनुकम्पा, दान, सरागसंयम आदि का योग तथा क्षान्ति और शौच — ये 'सातावेदनीय-कर्म' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 1. *सातावेदनीय-कर्म के आस्रव के कारण क्या हैं?*

उत्तर— भूत-व्रती-अनुकम्पा-दान, सारागसंयम, योग, क्षान्ति और शौच — सातावेदनीय-कर्म के आस्रव हैं।

प्र. 2. *'भूत-अनुकम्पा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्राणीमात्र पर दया करना, उनके दुःखों को अपना ही दुःख मानना — ऐसा दयाभाव रखना 'भूत-अनुकम्पा' है।

प्र. 3. *'व्रती-अनुकम्पा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एकदेश-व्रतधारी 'गृहस्थ' और सकलव्रतधारी 'संयत' — इन दोनों पर विशेषरूप से अनुकम्पा रखना 'व्रती-अनुकम्पा' है।

प्र. 4. *'दान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनुग्रह-बुद्धि से जिसमें अपनी ममता अर्थात स्वामित्व है, ऐसी वस्तु दूसरों

को अर्पण करना 'दान' है।

प्र. 5. *'सरागसंयम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पाँच-इन्द्रिय व मन के विषयों से विरक्त होने तथा षट्काय-जीवों की हिंसा न करना, रागसहित संयम पालना 'सरागसंयम' है।

प्र. 6. *'योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उक्त सभी को मनोयोगपूर्वक अच्छी तरह धारण करना 'योग' है। शुभ-परिणामपूर्वक निर्दोष क्रिया, ध्यान, समाधि आदि करना 'योग' है।

प्र. 7. *'संयमासंयम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्यग्दृष्टि-श्रावक के व्रतों को 'संयमासंयम' कहते हैं। एकदेश व्रत-पालन करना।

प्र. 8. *'अकाम-निर्जरा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपनी इच्छा न होते हुए भी परवश होकर जो कष्ट उठाना पड़े, उसे मंद कषायपूर्वक शान्ति के साथ समतापूर्वक सहन करना 'अकाम-निर्जरा' है।

प्र. 9. *'बालतप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मज्ञान-रहित तपस्या करने को 'बालतप' कहते हैं।

प्र. 10. *'क्षान्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— क्रोधादि-दोषों का निवारण करते हुये क्षमाभाव रखना 'क्षान्ति' है।

प्र. 11. *'शौच' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लोभ का त्याग करना 'शौच' है।

प्र. 12. *सूत्र में 'आदि' शब्द से किस-किसका ग्रहण होता है?*

उत्तर— सूत्र में 'आदि' शब्द से संयमासंयम, अकाम-निर्जरा और बालतप का ग्रहण होता है।

प्र. 13. *सूत्र में 'इति' शब्द से किस-किसका ग्रहण होता है?*

उत्तर— सूत्र में 'इति' शब्द से अर्हद्-भक्ति और 'मुनिवैयावृत्ति' का ग्रहण होता है।

प्र. 14. *'अनुकम्पा' और 'दया' में क्या अंतर है?*

उत्तर— 'अनुकम्पा' दूसरों के हित की दृष्टि से की जाती है, जबकि 'दया' स्वयं के हित की दृष्टि से की जाती है। ✿✿

केवलि-श्रुत-संघ-धर्म-देवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ।।13।।

अर्थ — केवली, श्रुत, संघ, धर्म और देव — इनका अवर्णवाद दर्शनमोहनीय-कर्म के आस्रव का कारण है।

प्र. 1. *'दर्शनमोहनीय-कर्म' के आस्रव के कारण क्या हैं?*

उत्तर— केवली, श्रुत, संघ, धर्म और देवों को झूठा दोष लगाने से 'दर्शनमोहनीय-कर्म' का आस्रव होता है।

प्र. 2. *'केवली' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिन्हें केवलज्ञान और केवलदर्शन की प्राप्ति हो गई है, वे 'केवली' कहलाते हैं।

प्र. 3. *'श्रुत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— केवली द्वारा कथित और अतिशय ऋद्धिवाले गणधरों द्वारा स्मरण करके रचे गए ग्रन्थ 'श्रुत' कहलाते हैं।

प्र. 4. *'संघ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रत्नत्रय से युक्त श्रमणों का समुदाय 'संघ' कहलाता है।

प्र. 5. *'धर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अहिंसा, मार्दव आदि को 'धर्म' कहते हैं।

प्र. 6. *'अवर्णवाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें जो दोष नहीं होता, उसे वह दोष लगाना 'अवर्णवाद' है।

प्र. 7. *'केवली-अवर्णवाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— केवलियों को कवलाहार-जीवी कहना 'केवली-अवर्णवाद' है, क्योंकि केवलियों के तो नोकर्माहार ही शरीर-स्थिति रखने में समर्थ होने से उन्हें कवलाहार होता ही नहीं है।

प्र. 8. *'श्रुत-अवर्णवाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शास्त्र में मद्य-मांस, काम-सेवन, रात्रि-भोजन आदि का उपदेश बतलाना 'शास्त्र का अवर्णवाद' है।

प्र. 9. *'संघ-अवर्णवाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— यति, मुनि, ऋषि, अनगार अथवा मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध-संघ में देह से उदासीन निर्ग्रन्थ-मुनियों को अपवित्र-निर्लज्ज आदि कहना अथवा आर्यिकाओं और व्रती-श्रावक-श्राविकाओं में झूठे-दोष लगाना 'संघ का अवर्णवाद' है।

प्र. 10. *'धर्म-अवर्णवाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहा हुआ जो अहिंसामयी-धर्म है, उसकी निंदा करना, धर्म में झूठा दोष लगाना, उसे मनुष्य-देश-राष्ट्र के पतन का कारण बताना 'धर्म का अवर्णवाद' है।

प्र. 11. *'देवों का अवर्णवाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— देवों को माँसभक्षी, मदिराप्रेमी, परस्त्रीगामी आदि कहना 'देवों का अवर्णवाद' है।

प्र. 12. अपवाद, निन्दा और अवर्णवाद में क्या अंतर है?

उत्तर— अपवाद, निन्दा और अवर्णवाद पर्यायवाची शब्द हैं।

प्र. 13. किसी भी व्यक्ति पर झूठा-दोषारोपण करने से क्या होता है?

उत्तर— दर्शनमोहनीय-कर्म का आस्रव होता है।

प्र. 14. निन्दक और निंदा सुननेवाले में अधिक दोषी कौन है?

उत्तर— निन्दक से निन्दा-सुननेवाला अधिक दोषी है, इसीलिए निन्दक के समान निन्दा-सुननेवाले को भी दर्शनमोहनीय-कर्म का आस्रव होता है। ✿✿

कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ।।14।।

अर्थ — कषाय के उदय से होनेवाला तीव्र आत्म-परिणाम चारित्रमोहनीय-कर्म के आस्रव का कारण है।

प्र. 1. चारित्रमोहनीय-कर्म के आस्रव का कारण क्या है?

उत्तर— कषाय के उदय से होनेवाले जीव के तीव्र-परिणाम चारित्रमोहनीय-कर्म के आस्रव हैं।

प्र. 2. 'कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो कसती है, आत्मा के सम्यग्दर्शनादि-गुणों का घात करती है, वह 'कषाय' है।

प्र. 3. चारित्र-मोहनीय-कर्म के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— चारित्र-मोहनीय-कर्म के दो भेद हैं — कषायवेदनीय, अकषायवेदनीय

प्र. 4. 'कषायवेदनीय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो जीव को क्रोध, मान, माया, लोभ कषायों की वेदना का अनुभव कराये वह 'कषाय-वेदनीय' है।

प्र. 5. अकषाय या नोकषायवेदनीय किसे कहते हैं?

उत्तर— जो जीव को हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्री-पुरुष-नपुंसकवेद का वेदन करावे, उसे 'अकषाय' या 'नोकषाय' कहते हैं। यह किंचित् हल्की कषाय है। इसकी वेदना का अनुभव करना 'नोकषायवेदनीय' कहलाता है।

प्र. 6. 'हास्य' किसे कहते हैं

उत्तर— सत्यधर्म का उपहास करना, गरीब-मनुष्यों की हंसी उड़ाना, मजाक करना इत्यादि 'हास्य' कहलाता है।

प्र. 7. 'रति' किसे कहते हैं?

उत्तर— नानाप्रकार की क्रीड़ाओं में संलग्न रहना, व्रत और शीलों के पालने में अरुचि रखना 'रति' है।

प्र. 8. *'अरति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरों में बेचैनी उत्पन्न कराना, आराम का नाश करना, पापी-मनुष्यों की संगति करना 'अरति' है।

प्र. 9. *'रति' और 'अरति' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— रति अर्थात् आराम, अरति अर्थात् बेचैनी।

प्र. 10. *'शोक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरे को शोक उत्पन्न कराना, दूसरों के शोक में हर्ष मनाना 'शोक' है।

प्र. 11. *'भय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्वयं भयभीत रहना और अन्य को भयभीत करना ही 'भय' कहलाता है।

प्र. 12. *'जुगुप्सा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भली क्रिया, आचार के प्रति ग्लानि के परिणाम होना 'जुगुप्सा' है।

प्र. 13. *'स्त्री-वेद-कर्म' का आस्रव किस कारण से होता है?*

उत्तर— असत्य बोलने की आदत, परदोष-दर्शन, मायाचार की प्रवृत्ति, राग की तीव्रता होना आदि परिणाम से 'स्त्रीवेद-कर्म' का आस्रव होता है।

प्र. 14. *'पुरुषवेद-कर्म' का आस्रव किस कारण से होता है?*

उत्तर— थोड़ा क्रोध करना, इष्ट-पदार्थों में आसक्ति का कम होना, अपनी स्त्री में सन्तोष होना आदि से 'पुरुषवेद-कर्म' का आस्रव होता है।

प्र. 15. *'नपुसंकवेद-कर्म' का आस्रव किस कारण से होता है?*

उत्तर— कषाय की प्रबलता होना, गुह्य-इन्द्रियों का छेदन करना, परस्त्री-गमन करना — इत्यादि 'नपुसंकवेद-कर्म' का आस्रव होता है।

प्र. 16. *मोहनीय-कर्म के इन आस्रवों से बचने का उपाय क्या है?*

उत्तर— जिन अशुभ-परिणामों से कर्म का आस्रव होता है, उन परिणामों से हमेशा दूर रहना।

✿✿

बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ।।15।।

अर्थ — बहुत-आरम्भ और बहुत-परिग्रह का भाव 'नरकायुकर्म' के आस्रव का कारण है।

प्र. 1. *नरकायु के आस्रव का कारण क्या है?*

उत्तर— बहुत-आरम्भ करना, बहुत-परिग्रह रखना 'नरकायु' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 2. 'आरम्भ' किसे कहते हैं?

उत्तर— प्राणियों को दुःख पहुँचानेवाला व्यापार करना 'आरम्भ' है।

प्र. 3. 'परिग्रह' किसे कहते हैं?

उत्तर— "यह वस्तु मेरी है, मैं इसका मालिक हूँ" — इसप्रकार का संकल्प 'परिग्रह' है।

प्र. 4. 'नरकायु' के आस्रव के और क्या कारण हैं?

उत्तर— हिंसादि क्रूर-कर्मों में निरन्तर-प्रवृत्ति रखना, परधन-अपहरण की भावना रखना, विषयों में आसक्ति, मान की तीव्रता, पत्थर की रेखा के समान रोष, कृष्ण-लेश्या व रौद्र-परिणामों से जीव नरकायु का आस्रव कर लेता है। ✿✿

माया तैर्यग्योनस्य ॥16॥

अर्थ — मायाचार तिर्यंचायु के आस्रव का कारण है।

प्र. 1. तिर्यंच-आयु के आस्रव का कारण क्या है?

उत्तर— छल-कपट तिर्यंचायु के आस्रव का कारण है।

प्र. 2. 'माया' किसे कहते हैं?

उत्तर— निमित्त मिलने पर माया कषाय के उदय से जो छल-प्रपंच करने का कुटिल-भाव पैदा होता है, वह 'माया' है।

प्र. 3. तिर्यंच-आयु के आस्रव के और क्या कारण हैं?

उत्तर— मिथ्याधर्म का उपदेश देना, शीलरहितपना होना, दूसरों के अवगुण देखने में प्रवृति होना, मरणसमय अशुभ-लेश्या, आर्त्तध्यान से मरना, कुटिल-कार्यों में रुचि रखना तिर्यंचायु आस्रव के अन्य-कारण हैं। ✿✿

अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं मानुष्यस्य ॥17॥

अर्थ — अल्प-आरम्भ और अल्प-परिग्रहसंचय का भाव मनुष्यायु के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 1. मनुष्यायु के आस्रव के कारण क्या हैं?

उत्तर— थोड़ा-आरम्भ करना, थोड़ा-परिग्रह रखना मनुष्यायु के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 2. मनुष्यायु के आस्रव के और क्या कारण हैं?

उत्तर— भद्र-परिणाम, विनय-गुण, धर्मध्यान में मरण, मन-वचन-काय में सरल प्रवृत्ति, दान देने का स्वभाव — ये मनुष्यायु के आस्रव के कारण हैं। ✿✿

स्वभावमार्दवं च ॥18॥

अर्थ — स्वभाव की मृदुता भी मनुष्यायु के आस्रव के कारण है।

प्र. 1. *मनुष्यायु के आस्रव का दूसरा-कारण क्या है?*

उत्तर— स्वभाव से सरल-परिणामी होना भी मनुष्य-आयु के आस्रव का कारण है।

प्र. 2. *स्वभाव की मृदुता का अर्थ क्या है?*

उत्तर— बिना किसी के समझाये-बुझाये मृदुता जिसके जीवन में उत्तरी हुई हो, जिसमें किसी के उपदेश की आवश्यकता न पड़े, उसे स्वभाव की मृदुता कहते हैं।

प्र. 3. *इस सूत्र को अलग बनाने का कारण क्या है?*

उत्तर— स्वभाव की मृदुता से देवायु का भी आस्रव होता है — इस बात को बताने के लिए इस सूत्र को अलग से बनाया है।

प्र. 4. *सूत्र में 'च' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— सूत्र में 'च' शब्द 'समुच्चय अर्थ' के लिए है अर्थात् मनुष्य-आयु का आस्रव अल्प-परिग्रह से ही नहीं स्वभाव की मृदुता से भी होता है। ✿✿

निश्शील-व्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥19॥

अर्थ — शीलरहित और व्रतरहित होना सभी प्रकार के आयु के आस्रव का कारण है।

प्र. 1. *'निःशील-व्रतत्वं च सर्वेषाम्' सूत्र का अभिप्राय क्या है?*

उत्तर— दिग्व्रतादि सात शील, अहिंसादि पाँच-व्रतों का अभाव समस्त-आयुओं के आस्रव का कारण है।

प्र. 2. *'शील' किसे कहते हैं?*

उत्तर— क्रोध और लोभ आदि का त्यागपूर्वक तीन-गुणव्रत और चार-शिक्षाव्रत का पालन करना 'शील' कहलाता है।

प्र. 3. *'व्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह — ये पाँच-'व्रत' है।

प्र. 4. *'निःशीलव्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शील और व्रत से जो रहित है, उन्हें 'निःशीलव्रत' कहते हैं।

प्र. 5. *सूत्र में 'च' शब्द का अर्थ क्या है?*

उत्तर— सूत्र में 'च' शब्द का अर्थ है कि अल्प-आरंभ, अल्प-परिग्रहरूप भाव तथा व्रत और शीलरहित होना — ये सभी गतियों की आयु के आस्रव कारण हैं।

प्र. 6. *वे कौन-से जीव हैं, जो व्रत और शीलरहित होकर भी देवायु का आस्रव करते हैं?*

उत्तर— भोगभूमिया-जीव व्रत और शीलरहित होकर भी देवायु का आस्रव करते हैं।

प्र. 7. *भोगभूमिया-मनुष्य और तिर्यंच कौन-से स्वर्ग तक जा सकते हैं?*

उत्तर— वे ईशान स्वर्ग तक जा सकते हैं। ✿✿

सरागसंयम-संयमासंयमाकामनिर्जरा-बालतपांसि देवस्य ॥20॥

अर्थ — सरागसंयम, संयमासंयम, अकामनिर्जरा और बालतप — ये देवायु के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 1. *देवायु के आस्रव के कारण क्या हैं?*

उत्तर— सरागसंयम, संयमासंयम, अकामनिर्जरा और बालतप — ये देव-आयु के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 2. *'सरागसंयम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रागसहित संयम को 'सरागसंयम' कहते हैं।

प्र. 3. *'संयमासंयम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— त्रस-हिंसा का त्यागरूप संयम और स्थावर-हिंसा का त्याग न होने रूप असंयम को 'संयमासंयम' कहते हैं।

प्र. 4. *'सराग' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— जो संसार के कारणों के त्याग के प्रति उत्सुक है, परन्तु जिसके मन से राग के संस्कार नहीं हुए हैं, वह 'सराग' है।

प्र. 5. *'संयम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्राणियों और इन्द्रियों में अशुभ-प्रवृत्ति के त्याग को 'संयम' कहते हैं।

प्र. 6. *'अकाम-निर्जरा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिना इच्छा से जो निर्जरा होती है, वह 'अकाम-निर्जरा' है।

प्र. 7. *'बालतप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जीव-अजीव के स्वरूप को जिन्होंने नहीं जाना है, ऐसे तत्त्वज्ञान-शून्य जीवों का तप 'बालतप' कहलाता है।

प्र. 8. *'बाल' और 'तप' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'बाल' का अर्थ 'मिथ्यात्व' है, और 'तप' कहते हैं 'पतन से जो बचाये', उसे मिथ्यात्व-सहित तप 'बालतप' है।

प्र. 9. *तप तो कर्म के संवर, निर्जरा का कारण होता है, फिर बालतप संसार का*

कारण क्यों है?

उत्तर— सम्यग्दृष्टि का तप कर्म के संवर और निर्जरा का कारण है और मिथ्यादृष्टि का बालतप संसार का कारण है। ✿✿

सम्यक्त्वं च ॥21॥

अर्थ — सम्यक्त्व भी देवायु के आस्रव का कारण है।

प्र. 1. *'सम्यक्त्वं च' यह सूत्र अलग क्यों दिया है, जबकि सरागसंयम, संयमासंगम भी देवायु के आस्रव के कारण है?*

उत्तर— सम्यक्त्व-अवस्था में वैमानिक-देवों की ही आयु का आस्रव होता है — यह बताने के लिए इस सूत्र को अलग लिया है।

प्र. 2. *यदि सम्यक्त्व वैमानिक-देवों की आयु का कारण है, तो क्या सरागसंयम और संयमासंयम-सहित जीव भवनत्रिक में भी जा सकता है?*

उत्तर— सरागसंयम और संयमासंयम सम्यक्त्व के बिना नहीं होते हैं, अतः दोनों का सम्यक्त्व में अन्तर्भाव होता है अर्थात् सरागसंयम और संयमासंयम भी सौधर्मादि देवायु के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 3. *सम्यक्त्व, सरागसंयम, संयमासंयम ये कर्म-निर्जरा के कारण हैं — इन्हें कर्मबन्ध के कारण क्यों माना है?*

उत्तर— सम्यग्दर्शन, सरागसंयम, संयमासंयम किसी भी कर्म के बन्ध में कारण नहीं हैं; किन्तु उसके सद्भाव में जो रागांश पाया जाता है, उसी से बन्ध होता है।

प्र. 4. *क्या आयुकर्म का आस्रव सब कर्मों की तरह होता है?*

उत्तर— आयुकर्म का आस्रव सामान्यरूप से जीवन के त्रिभाग में अर्थात् आयु के दो भाग निकल जाने पर तृतीय भाग से प्रारम्भ होता है। ✿✿

योगवक्रता-विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥22॥

अर्थ – योगवक्रता और विसंवादन – ये 'अशुभ-नामकर्म' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 1. *'अशुभ-नामकर्म' के आस्रव का कारण क्या है?*

उत्तर— मन, वचन, काय की कुटिलता और विसंवादन (अन्यथा-प्रवर्तन) अशुभ-नामकर्म के आस्रव का कारण हैं।

प्र. 2. *'योगवक्रता' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कांय से अन्य क्रिया करना, वचन से अन्य बोलना और मन से अन्य ही चिन्तन

करना 'योगवक्रता' है।

प्र. 3. *'विसंवादन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कोई जीव शुभकार्य करता हो, उसे अशुभ करने को कहना 'विसंवादन' है।

प्र. 4. *विसंवादन का समावेश वक्रता में हो जाता है, फिर विसंवादन अलग किस लिए कहा?*

उत्तर— जीव की स्व की अपेक्षा 'योगवक्रता' कही जाती है, और पर की अपेक्षा से 'विसंवादन' कहा जाता है।

प्र. 5. *'योगवक्रता' और 'विसंवादन' में क्या भेद है?*

उत्तर— योगवक्रता और विसंवादन में महान् भेद है, 'योगवक्रता' स्वगत है और 'विसंवादन' परगत है।

प्र. 6. *सूत्र में 'च' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— 'च' शब्द से मिथ्यादर्शन, किसी की बुराई करना, चित्त की चंचलता, छल-कपट, स्व-प्रशंसा आदि भी 'अशुभ-नामकर्म' के आस्रव के कारण समझना चाहिए — इस बात को बताने के लिए 'च' शब्द दिया है। ✿✿

तद्विपरीतं शुभस्य ।।23।।

अर्थ — उससे विपरीत अर्थात् योग की सरलता और अविसंवाद — ये 'शुभ-नामकर्म' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 1. *'शुभ-नामकर्म' के आस्रव का कारण क्या हैं?*

उत्तर— योगवक्रता और विसंवादन से विपरीत अर्थात् योगों की सरलता और अविसंवादन (अन्यथा-प्रवृत्ति का अभाव) 'शुभ-नामकर्म' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 2. *यहाँ 'सरलता' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'सरलता' से तात्पर्य यहाँ आत्मा की शुद्ध-स्वभावरूप सरलता नहीं, किन्तु 'शुभभावरूप सरलता' है।

प्र. 3. *'शुभ-नामकर्म' के आस्रव के और क्या कारण हैं?*

उत्तर— शत्रुओं में मित्रता करा देना, किसी को बुरे मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर लगाना, सम्यग्दर्शन, चित्त की स्थिरता आदि 'शुभ-नामकर्म' आस्रव के कारण हैं। ✿✿

दर्शनविशुद्धिर्विनयसम्पन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्याग-तपसी साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरण-

मर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्गप्रभावना-प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थंकरत्वस्य ॥24॥

अर्थ — दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शील और व्रतों का अतिचाररहित पालन करना, ज्ञान में सतत उपयोग, सतत संवेग, शक्ति के अनुसार त्याग, शक्ति के अनुसार तप, साधु-समाधि, वैयावृत्ति करना, अरिहंतभक्ति, आवश्यक-क्रियायों को न छोड़ना, मोक्षमार्ग की प्रभावना और प्रवचनवात्सल्य — ये 'तीर्थंकर-नामकर्म' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 1. *'तीर्थंकर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो तीर्थ चलाते हैं, तीर्थ का उपदेश देते हैं, वे 'तीर्थंकर' कहलाते हैं।

प्र. 2. *तीर्थंकरों के कितने कल्याणक होते हैं?*

उत्तर— तीर्थंकर पाँच, तीन और दो कल्याणकवाले होते हैं।

प्र. 3. *पाँच-कल्याणकवाले तीर्थंकर कौन-से होते हैं?*

उत्तर— जिनके पूर्वभव में 'तीर्थंकर-प्रकृति' का बंध हो गया हो, उनके गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष — पाँच-कल्याणक होते हैं।

प्र. 4. *तीन-कल्याणकवाले तीर्थंकर कौन-से होते हैं?*

उत्तर— जिनके वर्तमान-मनुष्यपर्याय में गृहस्थावस्था में तीर्थंकर-प्रकृति का बंध हो जाता है, उनके तप, ज्ञान व मोक्ष कल्याणक होते हैं।

प्र. 5. *दो कल्याणकवाले तीर्थंकर कौन-से होते हैं?*

उत्तर— जिनके वर्तमान-मनुष्य-पर्याय के भव में ही दीक्षा लेने के बाद तीर्थंकर-प्रकृति का बंध होता है, उनके ज्ञान व मोक्ष कल्याणक मनाये जाते हैं।

प्र. 6. *पाँच, तीन और दो कल्याणकवाले तीर्थंकर कहाँ उत्पन्न होते हैं?*

उत्तर— भरत और ऐरावतक्षेत्रों में पाँच कल्याणकधारी ही तीर्थंकर होते हैं, 'विदेह-क्षेत्र में पाँच, तीन, दो-कल्याणकधारी-तीर्थंकर होते हैं।

प्र. 7. *तीर्थंकर-प्रकृति का बंध कौन-से जीव को किसके पादमूल में होता है?*

उत्तर— तीर्थंकर-प्रकृति का बंध कर्मभूमिया-मनुष्य, उपशम, क्षायोपशम व क्षायिक तीनों सम्यक्त्वधारी जीव को केवली, श्रुतकेवली के पादमूल में होता है।

प्र. 8. *'भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बार-बार चिन्तन करने को 'भावना' कहते हैं।

प्र. 9. *तीर्थंकर-प्रकृति का बंध कितनी भावना भाने से होता है?*

उत्तर— तीर्थंकर-प्रकृति का बंध सोलह-कारण-भावनायें भाने से होता है।

प्र. 10. *'दर्शन-विशुद्धि-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पच्चीस-दोष-रहित और आठ-अंग-सहित सम्यग्दर्शन का पालन करना, अरिहंत भगवान् के द्वारा कहे गए निर्ग्रन्थतारूप मोक्षमार्ग में रुचि होना 'दर्शनविशुद्धि' है।

प्र. 11. *'विनय-सम्पन्नता' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रत्नत्रय तथा उनके धारकों की विनय करना विनय-सम्पन्नता है। दर्शन-विनय, ज्ञान-विनय, चारित्र-विनय, उपचार-विनय — इनका पालन करना चाहिए।

प्र. 12. *'शीलव्रतेष्वनतिचार-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अहिंसादि-व्रत और उनके रक्षक, क्रोध-त्याग आदि शीलों में निर्दोषरूप से प्रवृत्ति करना 'शीलव्रतेष्वनतिचार' है।

प्र. 13. *'अभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— निरन्तर ज्ञानमय-उपयोग रखना 'अभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग' है।

प्र. 14. *'संवेग-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संसार-शरीर-भोगों से विरक्तता एवं धर्म तथा उसके फल में अनुराग रखना 'संवेग-भावना' है।

प्र. 15. *'शक्तितस्त्याग-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपनी शक्ति को छिपाये बिना चारों प्रकार के दान देना 'शक्तितस्त्याग भावना' है।

प्र. 16. *'शक्तितस्तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शक्त्यानुसार उपवासादि करना 'शक्तितस्तप-भावना' है।

प्र. 17. *'साधु-समाधि-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— साधुओं के विघ्नादि को दूर करना, उनके संयम की रक्षा करना 'साधु-समाधि-भावना' है।

प्र. 18. *'वैयावृत्यकरण-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रोगी तथा बाल-वृद्ध-मुनियों की सेवा करना, गुणी-पुरुषों की सहायता करना 'वैयावृत्यकरण-भावना' है।

प्र. 19. *'अरिहन्त-भक्ति-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सर्वज्ञ, वीतराग, हितोपदेशी केवली भगवान के गुणों का अनुराग होना। जन्म के दस, केवलज्ञान के दस, चौदह देवकृत अतिशय, आठ प्रातिहार्य, चार अनंत-चतुष्टय — इसप्रकार छियालीस अतिशय सहित गुणों का चिन्तन 'अरिहन्त-भक्ति' है।

प्र. 20. *'आचार्य-भक्ति-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आचार्य-परमेष्ठी के गुणों में भक्ति होना, बारह तप, दस धर्म, छह आवश्यक, पाँच पंचाचार, तीन गुप्ति — इन छत्तीस गुणों में प्रीति होना 'आचार्य-भक्ति-भावना' है।

प्र. 21. *'बहुश्रुत-भक्ति-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ग्यारह अंग, चौदह पूर्व के ज्ञाता, चार अनुयोगों के पारगामी ऐसे उपाध्याय-परमेष्ठी की भक्ति करना 'बहुश्रुत-भक्ति-भावना' है।

प्र. 22. *'प्रवचन-भक्ति-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अरिहन्त-भगवान् द्वारा भाषित आगम-शास्त्र को योग्य-काल में पढ़ना, पढ़ाना, सुनना, सुनाना, मनन करना 'प्रवचन-भक्ति-भावना' है।

प्र. 23. *'आवश्यकापरिहाणि-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अवश्य करने योग्य क्रिया को 'आवश्यक' कहा है; साधु की अपेक्षा सामायिक, स्तवन, वन्दना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान व कायोत्सर्ग — इन षट्-आवश्यकों का पालन करना 'आवश्यकापरिहाणि-भावना' है।

प्र. 24. *'मार्ग-प्रभावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रत्नत्रय धारण करना व समयानुसार तप, दान, विधान द्वारा जगत् में धर्म का प्रचार एवं प्रसार करना 'मार्ग-प्रभावना' है।

प्र. 25. *'प्रवचनवात्सल्य-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जैसे गाय अपने बच्चे को सहज स्नेह करती है, वैसे ही साधर्मीजन को देखकर खुश होना, देव-शास्त्र-गुरु, असंयत सम्यग्दृष्टि, महाव्रती, अणुव्रती में प्रीति करना 'प्रवचनवात्सल्य-भावना' है। ✿✿

परात्म-निन्दा-प्रशंसे सदसद्गुणोच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य ॥25॥

अर्थ — परनिन्दा, आत्मप्रशंसा, दूसरों के सद्गुणों का उच्छादन और अपने असद्गुणों का उद्भावन — ये नीचगोत्र के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 1. *'नीच-गोत्र-कर्म' के आस्रव का कारण क्या है?*

उत्तर— दूसरे की निन्दा और अपनी प्रशंसा करना, दूसरे के मौजूद-गुणों को ढाँकना और अपने झूठे गुणों को प्रकट करना 'नीच-गोत्र-कर्म' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 2. *'निन्दा' व 'परनिन्दा' किन्हें कहते हैं?*

उत्तर— सच्चे या झूठे दोषों के प्रकट करने की वृत्ति 'निन्दा' कहलाती है, जबकि दूसरों की निन्दा 'पर-निन्दा' है।

प्र. 3. *'प्रशंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सच्चे या झूठे-गुणों को प्रकट करने का भाव 'प्रंशसा' है।

प्र. 4. *'आत्म-प्रशंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपनी बड़ाई करना 'आत्म-प्रशंसा' है।

प्र. 5. *'सद्गुणोच्छादन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरे में गुणों के होने पर भी यह कहना कि इसमें कोई भी अच्छा-गुण नहीं है, 'सद्गुणोच्छादन' है।

प्र. 6. *'असद्गुणोद्भावन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने में कोई अच्छे गुण नहीं हैं, फिर भी यह कहना कि मुझमें अनेक गुण हैं, 'असद्गुणोद्भावन' है।

प्र. 7. *नीच-गोत्र किनके होते हैं?*

उत्तर— एकेन्द्रिय से संज्ञी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्त तक सभी तिर्यंच, नारकी तथा लब्धि-अपर्याप्तक मनुष्यों के नीच-गोत्र है। ✿✿

तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ।।26।।

अर्थ — उनका विपर्यय अर्थात् परप्रशंसा, आत्मनिन्दा, दूसरों के सद्गुणों का उद्भावन और अपने असद्गुणों का आच्छादन तथा नम्रवृत्ति और अनुत्सेक — ये 'उच्चगोत्र-कर्म' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 1. *'उच्च-गोत्र-कर्म' के आस्रव के कारण क्या हैं?*

उत्तर— पर-प्रशंसा और आत्म-निन्दा, नम्र-वृत्ति और मद का अभाव 'उच्च-गोत्र-कर्म' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 2. *सूत्र में 'तद्विपर्यय' से क्या ग्रहण होता है?*

उत्तर— आत्मनिन्दा, परप्रशंसा, दूसरों के सद्गुणों का उद्भावन और अपने असद्गुणों का उच्छादन — इन चार का ग्रहण होता है।

प्र. 3. *'नीचैर्वृत्ति' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— जो गुणों में उत्कृष्ट है, उनके प्रति विनय से नम्र रहना 'नीचैर्वृत्ति' है। इसे 'नम्रवृत्ति' भी कहते हैं।

प्र. 4. *'अनुत्सेक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ज्ञानादि की अपेक्षा श्रेष्ठ होते हुए भी उसका मद न करना 'अनुत्सेक' है। ✿✿

विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥27॥

अर्थ — दानादिक में विघ्न डालना 'अन्तराय-कर्म' के आस्रव का कारण है।

प्र. 1. *'अंतराय-कर्म' के आस्रव का कारण क्या है?*

उत्तर— पर के दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य करने में विघ्न करना 'अन्तराय-कर्म' के आस्रव के कारण हैं।

प्र. 2. *'विघ्न' और 'विघ्नकरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'बाधा' को 'विघ्न' कहते हैं। दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य में विघ्न करना 'विघ्नकरण' है।

प्र. 3. *अन्तराय किसे कहते हैं?*

उत्तर— दाता और पात्र के बीच में जो बाधा आती है, वह 'अन्तराय' है।

प्र. 4. *'दानान्तराय-कर्म' का आस्रव कैसे होता है?*

उत्तर— दान देने में विघ्न करने से 'दानान्तराय-कर्म' का आस्रव होता है।

प्र. 5. *'लाभान्तराय-कर्म' का आस्रव कैसे होता है?*

उत्तर— किसी के लाभ में बाधा डालने से 'लाभान्तराय-कर्म' का आस्रव होता है।

प्र. 6. *'भोगान्तराय-कर्म' का आस्रव कैसे होता है?*

उत्तर— किसी के भोग में बाधा डालने से 'भोगान्तराय-कर्म' का आस्रव होता है।

प्र. 7. *'उपभोगान्तराय-कर्म' का आस्रव कैसे होता है?*

उत्तर— किसी के उपभोग में बाधा डालने से 'उपभोगान्तराय-कर्म' का आस्रव होता है।

प्र. 8. *'वीर्यान्तराय-कर्म' का आस्रव कैसे होता है?*

उत्तर— किसी के वीर्य अर्थात् पुरुषार्थ के कार्य में बाधा डालने से 'वीर्यान्तराय-कर्म' का आस्रव होता है।

✿✿

हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥1॥

अर्थ — हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्म और परिग्रह से विरक्त होना 'व्रत' है।

प्र. 1. *'हिंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रमाद के योग से अपने और दूसरों के प्राणों का घात करना 'हिंसा' है।

प्र. 2. *'असत्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो सत्य न हो, उसे 'असत्य' कहते हैं।

प्र. 3. *'चोरी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— नहीं दी हुई वस्तु ग्रहण करना 'चोरी' है।

प्र. 4. *'अब्रह्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कुशील-सेवन को 'अब्रह्म' कहते हैं।

प्र. 5. *'परिग्रह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चारों तरफ से ग्रहण किया जाये, वह 'परिग्रह' है। अथवा पर-पदार्थों में ममत्वपरिणाम-रूप मूर्च्छाभाव ही 'परिग्रह' है।

प्र. 6. *'व्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पाँच पापों का बुद्धिपूर्वक त्याग करने को 'व्रत' कहते हैं।

प्र. 7. *अहिंसादि पाँच व्रतों में अहिसा व्रत को प्रारम्भ में क्यों रखा है?*

उत्तर— अहिंसा-व्रत प्रधान है, जैसे खेत में धान बोने पर उनकी रक्षा के लिए चारों ओर बाड़ लगा देते हैं, वैसे ही सत्यादि-चार-व्रत अहिंसा-व्रत की रक्षा के लिए हैं।

प्र. 8. *व्रत तो संवर के हेतु हैं, फिर यहाँ व्रतों को आस्रव का कारण क्यों कहा गया है?*

उत्तर— व्रत तो संवररूप होते हैं, और संवर निवृत्तिरूप होता है; परन्तु हिंसादि-पापों से निवृत्तिकर अहिंसा-व्रत स्वीकार किये जाते हैं। प्रवृत्तिकर होने से व्रतों का आस्रव का कारण कहा गया है।

प्र. 9. *आचार्यों का इन व्रतों को बताने का क्या प्रयोजन है?*

उत्तर— जीव को संसार से छुटकारा दिलाकर मोक्ष प्राप्त करना है। और मोक्ष आत्मा का अपने स्वरूप में ही स्थित होना है, जो निवृत्ति और प्रवृत्ति दोनों से परे है। यहाँ पर व्रत निवृत्तिरूप नहीं, शुभ-प्रवृत्तिरूप है।

प्र. 10. *साधु-परमेष्ठी के पाँच-महाव्रतों के साथ छठा 'रात्रि-भोजन-विरमण' नामक अणुव्रत को क्यों नहीं लिया?*

उत्तर— 'रात्रि-भोजन-विरमण' छठे-अणुव्रत का अहिंसादि-व्रतों की भावनाओं में से 'आलोकितपान-भोजन' नाम की भावना में अन्तर्भाव हो जाता है।

प्र. 11. *'आलोकितपान-भोजन' नाम की भावना का अर्थ क्या है?*

उत्तर— इसका अर्थ है देखकर खाना-पीना रात्रि में प्रकाश की कमी रहने के कारण और त्रस-जीवों का संचार अधिक होने के कारण देखकर खाना-पीना नहीं बन सकता। इसलिए जीवन में इस भावना से ही रात्रि-भोजन का त्याग हो जाता है।

प्र. 12. *रात्रि में भोजन न करने के क्या लाभ है?*

उत्तर— रात्रि में भोजन न करने से आरोग्य की वृद्धि होती है, जठर को विश्राम मिलता है, कार्य-क्षमता बढ़ती है, निद्रा अच्छी आती है, ब्रह्मचर्य के पालन करने में सहायता मिलती है। ✿✿

देश-सर्वतोऽणु-महती ॥2॥

अर्थ — हिंसादिक से एक देश-निर्वृत्त होना 'अणुव्रत' है और सब प्रकार से निर्वृत्त होना 'महाव्रत' है।

प्र. 1. *'अणुव्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पाँच पापों का एकदेश त्याग होना 'अणुव्रत' है।

प्र. 2. *'महाव्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पाँच पापों का सर्वदेश त्याग होना 'महाव्रत' है।

प्र. 3. *सूत्र में आये 'देश' और 'सर्व' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'देश' शब्द का अर्थ है 'एक देश' और 'सर्व' शब्द का अर्थ 'सकल' है।

प्र. 4. *सूत्र में आये 'अणु' और 'महत्' शब्दों का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'अणु' का अर्थ 'अणुव्रत' है और 'महत्' का अर्थ 'महाव्रत' है।

प्र. 5. *'व्रत' के कितने भेद हैं? कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'व्रत' के दो भेद हैं — अणुव्रत और महाव्रत।

प्र. 6. *'अणुव्रत' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— अणुव्रत के पाँच-भेद हैं — अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, ब्रह्मचर्याणुव्रत, परिग्रहपरिमाणाणुव्रत।

प्र. 7. *'महाव्रत' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'महाव्रत' के पाँच-भेद हैं — अहिंसा-महाव्रत, सत्य-महाव्रत, अचौर्य-महाव्रत, ब्रह्मचर्य-महाव्रत, और अपरिग्रह-महाव्रत।

प्र. 8. *अणुव्रत और महाव्रतों का पालन कौन करते हैं?*

उत्तर— गृहस्थ अणुव्रतों का पालन कर सकते हैं और मुनिराज महाव्रतों का पालन करते हैं; आर्यिकायें उपचार से महाव्रती होती है।

प्र. 9. *मुनिराज के व्रतों को 'महाव्रत' क्यों कहते हैं?*

उत्तर— पूर्ववर्ती बड़े-बड़े आचार्यों, तीर्थंकरों, गणधरों व केवलियों ने इनका आचरण किया है, ये व्रत स्वयं श्रेष्ठ हैं, इसलिए मुनियों के व्रत 'महाव्रत' कहे जाते हैं।

प्र. 10. *इन व्रतों का पालन करने का फल क्या है?*

उत्तर— जो उत्तम-पुरुष इन व्रतों का पूर्णरूप से पालन करते हैं, उसके जन्म, जरा, मृत्यु से पीड़ित आत्मा महाव्रतरूप औषधि के सेवन से आसाध्य उक्त जन्मादि त्रय-रोगों से मुक्त हो जाती है। ✿✿

तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च-पञ्च ।।3।।

अर्थ — उन व्रतों को स्थिर करने के लिए प्रत्येक व्रत की पाँच-पाँच भावनायें हैं।

प्र. 1. *व्रतों की स्थिरता के लिए क्या है?*

उत्तर— व्रतों की स्थिरता के लिए प्रत्येक व्रत की पाँच-पाँच भावनायें हैं, जिनके चिंतन से व्रत में दृढ़ता आती है। ✿✿

वाङ्-मनो-गुप्तीर्यादाननिक्षेपण-समित्यालोकितपान-भोजनानि पञ्च ।।4।।

अर्थ — वचनगुप्ति, मनोगुप्ति, ईर्यासमिति, आदाननिक्षेपण-समिति और आलोकितपान-भोजन — ये 'अहिंसाव्रत' की पाँच-भावनायें हैं।

प्र. 1. *अहिंसाव्रत की पाँच-भावनायें कौन-सी हैं?*

उत्तर— मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, ईर्यासमिति, आदाननिक्षेपण-समिति, आलोकितपान-भोजन — ये पाँच अहिंसाव्रत की भावनायें हैं।

प्र. 2. *'वचनगुप्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वचन की प्रवृत्ति को रोककर मौन धारण करना 'वचनगुप्ति' है।

प्र. 3. *'मनोगुप्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन को अशुभध्यान से बचाकर आत्महितकारी-विचारों में लगाना 'मनोगुप्ति' है।

प्र. 4. *'ईर्यासमिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी को कष्ट न हो, इसलिए यत्नाचारपूर्वक चार-हाथ भूमि शोधते हुए गमन करना 'ईर्यासमिति' है।

प्र. 5. *'आदान-निक्षेपण-समिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शास्त्र, पीछी, कमण्डल को लेते और रखते समय योग्य-स्थान का अवलोकन व प्रमार्जन करके, किसी भी वस्तु को जीव-रक्षा का ध्यान रखते हुए उठाना-रखना 'आदान-निक्षेपण-समिति' है।

प्र. 6. *'आलोकितपान-भोजन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दिन में अच्छी तरह देखभाल कर खाना-पीना 'आलोकितपान-भोजन' है।

प्र. 7. *'वचन-गुप्ति' को 'अहिंसाव्रत' की भावना में क्यों स्थान दिया है? हिंसा तो काय की प्रवृत्ति है?*

उत्तर— हिंसा मात्र काय से ही नहीं होती है, वचन की दुष्प्रवृत्ति भी अहिंसाव्रत की बाधक है। वचनों के घाव कभी नहीं भरते, इनसे महाहिंसा होती है, वचनगुप्तिवाला वाचनिक-हिंसा को रोक लेता है; इसलिए वचन-गुप्ति को अहिंसाव्रत में लिया है।

प्र. 8. *मनोगुप्ति को अहिंसाव्रत की भावना में क्यों दिया है?*

उत्तर— संसारी-जीव शारीरिक-पीड़ा से अधिक मनासिक-पीड़ा से पीड़ित होता है। जीवों का हानि-लाभ उनके कर्माधीन है, जीव व्यर्थ में अच्छे-बुरे का विचारकर 'भावहिंसा' करता है। इसलिए भावहिंसा से बचने के लिए मनोगुप्ति को अहिंसाव्रत में लिया है।

प्र. 9. *'ईर्यासमिति' और 'आदाननिक्षेपण-समिति' का 'अहिंसाव्रत' से क्या सम्बन्ध है?*

उत्तर— द्रव्यहिंसा से बचने के लिए 'ईर्यासमिति' और 'आदान-निक्षेपण-समिति' को 'अहिंसा-व्रत' में ग्रहण किया है।

प्र. 10. *'आलोकितपान-भोजन' को 'अहिंसाव्रत' की भावना में क्यों लिया है?*

उत्तर— रात्रि के समय भोजन बनाते और सेवन करते समय द्रव्य-भाव — दोनों हिंसा का पाप लगता है; इसलिए आलोकित-भोजनपान को अहिंसाव्रत की रक्षा के लिए लिया है।

प्र. 11. *अहिंसाव्रत की भावनाओं के भाने का फल क्या है?*

उत्तर— अहिंसाव्रत की भावनाओं के भाने से परिणामों में विशुद्धि और असंख्यात-गुणी कर्मनिर्जरा होती है।

✿✿

क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्यनुवीचीभाषणञ्च पञ्च ॥5॥

अर्थ — क्रोध-प्रत्याख्यान, लोभ-प्रत्याख्यान, भीरुत्व-प्रत्याख्यान, हास्य-प्रत्याख्यान और अनुवीची-भाषण — ये सत्यव्रत की पाँच-भावनायें हैं।

प्र. 1. *'प्रत्याख्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'प्रत्याख्यान' का अर्थ है 'त्याग'।

प्र. 2. *सत्यव्रत की पाँच-भावनायें कौन-सी हैं?*

उत्तर— क्रोध-प्रत्याख्यान, लोभ-प्रत्याख्यान, भीरुत्व-प्रत्याख्यान, हास्य-प्रत्याख्यान, अनुवीची-भाषण — ये पाँच 'सत्यव्रत' की भावनायें हैं।

प्र. 3. *'क्रोध-प्रत्याख्यान' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'क्रोध प्रत्याख्यान' का अर्थ है 'क्रोध का त्याग करना'।

प्र. 4. *'लोभ-प्रत्याख्यान' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'लोभ-प्रत्याख्यान' का अर्थ है 'लोभ का त्याग करना'।

प्र. 5. *'भीरुत्व-प्रत्याख्यान' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'भीरुत्व-प्रत्याख्यान' का अर्थ है 'भय का त्याग करना'।

प्र. 6. *'हास्य-प्रत्याख्यान' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'हास्य-प्रत्याख्यान' का अर्थ है 'हास्य का त्याग करना'।

प्र. 7. *'अनुवीचिभाषण' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'अनुवीचिभाषण' का अर्थ है 'शास्त्र की आज्ञा के अनुसार निर्दोष वचन बोलना'।

प्र. 8. *यहाँ पाँच-भावनाओं में से चार का त्याग और एक का ग्रहण क्यों किया है?*

उत्तर— क्रोध, लोभ, हास्य और भय का त्याग ये चार निषेधरूप हैं और अनुवीचिभाषण विधिरूप है; इसलिये चार का त्याग एवं एक का ग्रहण कहा गया है।

प्र. 9. *क्रोध, लोभ और भय के त्याग का सत्यव्रत के साथ क्या सम्बन्ध है?*

उत्तर— अधिकतर लोग क्रोध, लोभ और भय के वश होकर असत्य बोलते हैं, इसलिए सत्यव्रत के पालने के लिये इनका त्याग करना आवश्यक है। ✿✿

शून्यागार-विमोचितावास-परोपरोधाकरण-भैक्ष्यशुद्धि-सधर्मा-विसंवादा: पञ्च ॥6॥

अर्थ — शून्यागारावास, विमोचितावास, परोपरोधाकरण, भैक्ष्यशुद्धि और

सधर्म-अविसंवाद — ये अचौर्यव्रत की पाँच-भावनायें हैं।

प्र. 1. *'अचौर्यव्रत' की पाँच-भावनायें कौन-सी हैं?*

उत्तर— शून्यागारवास, विमोचितावास, परोपरोधाकरण, भैक्ष्यशुद्धि, सधर्म-अविसंवाद — ये 'अचौर्यव्रत' की पाँच-भावनायें हैं।

प्र. 2. *'शून्यागारवास' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— पर्वतों की गुफा, वन, वृक्षों की कोटरों आदि निर्जन-स्थानों में रहना 'शून्यागारवास' है।

प्र. 3. *'विमोचितावास' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— दूसरों के द्वारा छोड़े गए ऊजाड़-स्थानों में निवास करना। ये दोनों ही स्थान अस्वामिक (स्वामीरहित) हैं; अतः ऐसे स्थानों को उपयोग में लाने से अचौर्यव्रत की रक्षा होती है।

प्र. 4. *'परोपरोधाकरण' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— जहाँ आप ठहरे हों, वहाँ दूसरे को आने से नहीं रोकना। यदि कोई रोके, तो उस स्थान में निजत्व की कल्पना संभव होने से चोरी का दोष लगता है।

प्र. 5. *'भैक्ष्यशुद्धि' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— शास्त्रानुसार भिक्षा की शुद्धि रखना, उसकी त्रुटि को न छिपाना। स्वादिष्ट-वस्तु को अपने हिस्से से अधिक खा लेने से चोरी का दोष आता है।

प्र. 6. *'सधर्माविसंवाद' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— साधर्मी से 'यह आपका है, यह हमारा है' — इसतरह झगड़ा नहीं करना 'सधर्माविसंवाद' है।

प्र. 7. *पाँचों भावनायें भाने से क्या होता है?*

उत्तर— पाँच-भावनायें भाने से मन परिग्रह से अलिप्त रहता है, 'अचौर्यव्रत' में दृढ़ता आती है। ✿✿

स्त्रीरागकथाश्रवण-तन्मनोहरांगनिरीक्षण-पूर्वरतानुस्मरण-वृष्येष्टरस-स्वशरीर-संस्कारत्यागाः पञ्च ॥7॥

अर्थ — स्त्रियों में राग को पैदा करनेवाली कथा के सुनने का त्याग, स्त्रियों के मनोहर अंगों को देखने का त्याग, पूर्व में भोगों के स्मरण का त्याग, गरिष्ठ और इष्ट-रस का त्याग तथा अपने शरीर के संस्कार का त्याग — ये ब्रह्मचर्य-व्रत की पाँच-भावनायें हैं।

प्र. 1. *ब्रह्मचर्य-व्रत की पाँच-भावनायें कौन-सी हैं?*

उत्तर— स्त्रीराग-कथा-श्रवण-त्याग, तन्मनोहरांग-निरीक्षण-त्याग, पूर्वरतानुस्मरण-त्याग, वृष्येष्ट-रस-त्याग और स्वशरीर-संस्कार-त्याग — ये पाँच 'ब्रह्मचर्य-व्रत' की भावनायें हैं।

प्र. 2. *'स्त्रीराग-कथा-श्रवण-त्याग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्त्रियों में राग बढ़ानेवाली कथाओं को बाँचने-सुनने का त्याग करना 'स्त्रीराग-कथा-श्रवण-त्याग' है।

प्र. 3. *'तन्मनोहरांग-निरीक्षण-त्याग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्त्रियों के मुख, आँख, कुच और कटि आदि सुन्दर अंगों को देखने का त्याग। इच्छापूर्वक उनको नहीं देखना, इससे कामभाव की जागृति से बचाव होता है, उसको 'तन्मनोहरांग-निरीक्षण-त्याग कहते हैं।

प्र. 4. *'पूर्वरतानुस्मरण-त्याग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पहिले भोगे हुए भोगों का स्मरण नहीं करना। उनका स्मरण करने से कामवासना बढ़ती है, उसे 'पूर्वरतानुस्मरण-त्याग' कहते हैं।

प्र. 5. *'वृष्येष्ट-रस-त्याग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गरिष्ठ-कामोद्दीपन करनेवाले रसों व खानपान का सेवन न करना 'वृष्येष्ट-रस-त्याग' है।

प्र. 6. *'स्वशरीर-संस्कार-त्याग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने शरीर को इत्र-तैल आदि से न सजाना, जिससे स्वपर के मन में आसक्ति पैदा हो सकती है; उसे 'स्वशरीर-संस्कार-त्याग' कहते हैं।

प्र. 7. *इन पाँच-भावनाओं के भाने का फल क्या है?*

उत्तर— इन पाँच-भावनाओं के भाने से ब्रह्मचर्य-व्रत स्थिर होता है।

प्र. 8. *इन पाँच-क्रियाओं का त्याग न करने से क्या होता है?*

उत्तर— इन पाँच-क्रियाओं का त्याग न करने से मानसिक-विकार उत्पन्न होते हैं, और ब्रह्मचर्य-व्रत का घात होता है।

प्र. 9. *और कौन-सी क्रियायें हैं, जिनसे ब्रह्मचर्य-व्रत का घात होता है?*

उत्तर— अश्लील-चित्र देखना, चलचित्र, टी.वी. में अश्लील-दृश्यों को देखना, अश्लील-गाने सुनना, उपन्यास पढ़ना, बेढंगी-वेशभूषा पहनने से भी 'ब्रह्मचर्य-व्रत' का घात होता है। ✿✿

मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च ॥8॥

अर्थ — मनोज्ञ और अमनोज्ञ-इन्द्रियों के विषयों में क्रम से राग और द्वेष का

त्याग करना — ये 'अपरिग्रहव्रत' की पाँच-भावनायें हैं।

प्र. 1. *'मनोज्ञ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो मन को प्रिय लगे, उसे 'मनोज्ञ' कहते हैं।

प्र. 2. *'अमनोज्ञ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो मन को प्रिय न लगे, उसे 'अमनोज्ञ' कहते हैं।

प्र. 3. *अपरिग्रहव्रत की रक्षा के लिए क्या करना चाहिए?*

उत्तर— आठ-स्पर्श, पाँच-रस, दो-गन्ध, पाँच-वर्ण, और सात-स्वर — इन पाँच-इन्द्रियों के इष्ट-विषयों में राग नहीं करें और अनिष्ट-विषयों से द्वेष नहीं करें।

प्र. 4. *अपरिग्रह-व्रत की पाँच-भावनायें कौन-सी हैं?*

उत्तर— मनोज्ञामनोज्ञ-स्पर्श-राग-द्वेष त्याग, मनोज्ञामनोज्ञ-रस-राग-द्वेष-त्याग, मनोज्ञामनोज्ञ-गंध-राग-द्वेष-त्याग, मनोज्ञामनोज्ञ-वर्ण-रागद्वेष-त्याग, मनोज्ञामनोज्ञ-शब्द-राग-द्वेष-त्याग।

प्र. 5. *'मनोज्ञामनोज्ञ-स्पर्श-राग-द्वेष-त्याग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्पर्शन-इन्द्रिय के विषय चिकना, रूखा, कोमल, कठोर, हल्का, भारी, शीत, उष्णगुणयुक्त-पदार्थों में राग-द्वेष के त्याग की भावना को 'मनोज्ञामनोज्ञ-स्पर्श-राग-द्वेष-त्याग' कहते हैं।

प्र. 6. *'मनोज्ञामनोज्ञ-रस-राग-द्वेष-वर्जन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रसना-इन्द्रिय के खट्टे, मीठे, कड़वे, कषायले, चरपरे गुणयुक्त पदार्थों में राग-द्वेष के त्याग की भावना रखना 'मनोज्ञामनोज्ञ-रस-राग-द्वेष-वर्जन' है।

प्र. 7. *'मनोज्ञामनोज्ञ-गंध-राग-द्वेष-वर्जन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— घ्राण-इन्द्रिय के विषय सुगंधित, दुर्गंधितरूप-पदार्थों में राग-द्वेष न करने का विचार बनाए रखना 'मनोज्ञामनोज्ञ-गंध-राग-द्वेष-वर्जन' है।

प्र. 8. *'मनोज्ञामनोज्ञ-वर्ण-राग-द्वेष-वर्जन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चक्षु-इन्द्रिय के विषय सुरीले और कर्ण-कठोर शब्दों में राग-द्वेष के त्याग की भावना को 'मनोज्ञामनोज्ञ-वर्ण-राग-द्वेष-वर्जन' कहते हैं।

प्र. 9. *'मनोज्ञामनोज्ञ-शब्द-राग-द्वेष-वर्जन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्ण-इन्द्रिय के विषय सुरीले और कर्ण कठोर-शब्दों में राग-द्वेष के त्याग की भावना को 'मनोज्ञामनोज्ञ-शब्द-राग-द्वेष-वर्जन' कहते हैं।

प्र. 10. *अपरिग्रह-व्रत की पाँच-भावनाओं का फल क्या है?*

उत्तर— परिग्रह से आसक्ति छूट जाती है, और परिग्रह-त्याग में स्थिरता आती है। ✿✿

हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ॥9॥

अर्थ — हिंसादि पाँच-दोषों में ऐहिक और पारलौकिक 'अपाय' और 'अवद्य' का दर्शन भावना करने योग्य है।

प्र. 1. *हिंसादि पाँच-पाप करने से क्या होता है?*

उत्तर— हिंसादि पाँच-पाप करने से इस लोक और परलोक में अनेक आपत्तियाँ प्राप्त होती हैं, और इस लोक में निन्दा भी सहनी होती है।

प्र. 2. *'अपाय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'अपाय' का अर्थ 'विनाश' है अर्थात् स्वर्ग और मोक्ष की प्रयोजक-क्रियाओं का विनाश-करनेवाली प्रवृत्ति 'अपाय' है।

प्र. 3. *'अवद्य' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'अवद्य' का अर्थ 'निंदा' है।

प्र. 4. *हिंसा-पाप से इसलोक, परलोक में होनेवाले 'अपाय' और 'अवद्य' कौन-से हैं?*

उत्तर— जो हिंसा करता है, लोग सदा उसके बैरी रहते हैं। हिंसक-व्यक्ति इस लोक में वध, बन्ध और क्लेश आदि को प्राप्त होता है और परलोक में निंद्य अशुभगति को प्राप्त होता है।

प्र. 5. *असत्य-पाप से होनेवाले 'अपाय' और 'अवद्य' कौन-से हैं?*

उत्तर— झूठ बोलनेवाले का कोई विश्वास नहीं करता, इस लोक में राजा पहले उसकी जीभ कटवा देते थे, तथा झूठ बोलकर उसने जिनसे बैर बाँधा था, वे उसके दुश्मन बन जाते हैं, और मरकर वह अशुभगति में जाता है।

प्र. 6. *चोरी-पाप से होनेवाले 'अपाय' और 'अवद्य' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— चोरी करनेवाले का सब तिरस्कार करते हैं इस लोक में मारना, बाँधना, हाथ-पैर नाक, कान, ओंठ को छेदना-भेदना आदि दुःखों को सहना पड़ता है, परलोक में अशुभगति को प्राप्त होता है।

प्र. 7. *'अब्रह्म' में क्या दोष है?*

उत्तर— अब्रह्मचारी-व्यक्ति का चित्त सदा भ्रान्त रहता है। जिसप्रकार वन में नकली हथिनी के धोखे से हाथी को पकड़ा जाता है, वैसे ही व्यभिचारी-व्यक्ति को पकड़कर लोग उसकी दुर्गति कर देते हैं, कठोर दंड देते हैं, जिससे वह मरकर दुर्गति में जाता है।

प्र. 8. *परिग्रह के दोष कौन-से हैं?*

उत्तर— परिग्रही-व्यक्ति के पीछे चोर लगे रहते हैं, उसे धन कमाने-जोड़ने में बहुत कष्ट उठाना पड़ता है; फिर भी उसकी तृष्णा कभी शान्त नहीं होती है। लोग 'लोभी'

कहकर उसकी निंदा करते हैं और मरकर वह दुर्गति में जाता है।

प्र. 9. *परिग्रहधारी लोक में सम्मान पाता है, सभा में आगे पूजा को प्राप्त होता है; फिर इसे पाप क्यों कहा?*

उत्तर— सब पापों का बाप 'परिग्रह' है परिग्रही सम्मान नहीं पाता, परिग्रह-त्याग कर धन को चार प्रकार के दान में लगानेवाले लोक में सम्मान पाते हैं। ✿✿

दुःखमेव वा ॥10॥

अर्थ — अथवा हिंसादिक दुःख ही है — ऐसी भावना करनी चाहिए।

प्र. 1. *हिंसादि पाँच-पापों से क्या होता है?*

उत्तर— हिंसादि पाँच-पापों से दुःख ही होता है।

प्र. 2. *हिंसादि पाँच-पापों को दुःख का कारण क्यों कहा है?*

उत्तर— हिंसादि पाँच-पापों से असातावेदनीय-कर्म का आस्रव होता है और असातावेदनीय दुःखस्वरूप है; इसलिए हिंसादि पापों से दुःख होता है।

प्र. 3. *हिंसादि पापों में प्रवृत्ति होने से क्या होता है?*

उत्तर— हिंसादि पापों में प्रवृत्त होने से अपने आत्मा की अंतर्ध्वनि को दबाना पड़ता है, जिसमें पहले ही आत्मा का घात हो, उससे दुःख ही होता है।

प्र. 4. *विषय-रमणता से तथा भोग-विलास से रति-सुख उत्पन्न होता है, तो उसे दुःखरूप क्यों कहा है?*

उत्तर— विषयादि में सुख नहीं, अज्ञानी-लोग भ्रान्ति से उन्हें सुखरूप मानते हैं। ऐसा मानना कि 'पर से सुख होता है', सो बड़ी मूल-भ्रान्ति है। जीव स्वयं इन्द्रियों के वश होता है, यही दुःख है।

प्र. 5. *धन-संचय में सुख दिखाई देता है, उसे दुःख क्यों कहते हैं?*

उत्तर— संपत्तिशाली पुरुष माँस का टुकड़ा लिए हुए पक्षी की भाँति सबके द्वारा नोचा जाता है, चारों ओर से परेशान किया जाता है; उसीप्रकार परिग्रहधारी आकुलित होता हुआ दुःखी होता है।

प्र. 6. *हिंसादि पापों को छोड़ने के लिए कहा, परन्तु मिथ्यात्व तो महापाप है, उसे छोड़ने के लिए क्यों नहीं कहा?*

उत्तर— अहिंसादि अणुव्रत तथा महाव्रत सम्यग्दृष्टि के ही होते हैं, उनके मिथ्यात्व का पहिले से अभाव होता है। अतः व्रतों का प्रकरण होने से मिथ्यात्व के त्याग का कथन नहीं किया। ✿✿

मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थानि च सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्यमानाविनेयेषु ॥11॥

अर्थ — प्राणीमात्र में मैत्री, गुणाधिकों में प्रमोद, क्लिश्यमानों में करुणावृत्ति और दुष्ट-लोगों में माध्यस्थ-भावना करनी चाहिए।

प्र. 1. *निरंतर चिंतन-करने-योग्य भावनायें कौन-सी हैं?*

उत्तर— मैत्री, प्रमोद, कारुण्य और माध्यस्थ-भावनायें निरंतर-चितंन-करने-योग्य हैं।

प्र. 2. *'मैत्री' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरों को दुःख न देना और 'दूसरों को कभी दुःख न हो' — ऐसी भावना 'मैत्री' है।

प्र. 3. *'प्रमोद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्यग्ज्ञानादि अपने से अधिक-गुणों के धारक-जीवों के प्रति प्रसन्नता आदि से अंतरंग-भक्ति प्रगट होना 'प्रमोद-भावना' है।

प्र. 4. *'कारुण्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दुःखी व्यक्तियों को देखकर कारुण्यभावपूर्वक उनके दुःख दूर करने की भावना 'कारुण्य' है।

प्र. 5. *'माध्यस्थ-भावना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अविनयी, व्यसनी, मिथ्यादृष्टि — ऐसे जीवों के प्रति राग-द्वेष-भाव न रखकर समताभाव रखना 'माध्यस्थ-भावना' है।

प्र. 6. *'मैत्री-भावना' का विषय क्या है?*

उत्तर— 'मैत्री-भावना' का विषय प्राणीमात्र है। मैत्रीभाव से हृदय में विशालता आती है, तेरे-मेरे की संकुचित-वृत्ति नष्ट होती है।

प्र. 7. *'प्रमोद-भावना' का विषय क्या है?*

उत्तर— इस भावना का विषय अधिक गुणवान् हैं। इस भावना से अहंकार मिटता है।

प्र. 8. *'कारुण्य-भावना' का विषय क्या है?*

उत्तर— इस भावना का विषय विशेष-दुःख से दुःखी प्राणी ही हैं। इससे दयारूप परिणाम बनते हैं।

प्र. 9. *'माध्यस्थ-भावना' का विषय क्या है?*

उत्तर— इसका विषय अयोग्य-पात्र है, इस भावना से समता आती है।

प्र. 10. *'सत्त्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बुरे कर्मों के फल से जो नाना-योनियों में जन्मते और मरते हैं, वे सत्त्व हैं। सत्त्व का अर्थ है 'जीव'।

प्र. 11. 'गुणाधिक' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो सम्यग्ज्ञानादि-गुणों में बढ़े-चढ़े हैं, वे 'गुणाधिक' कहलाते हैं।

प्र. 12. 'क्लिश्यमान' किसे कहते हैं?

उत्तर— असातावेदनीय-कर्म के उदय से जो दुःखी हैं, वे 'क्लिश्यमान' कहलाते हैं।

प्र. 13. 'अविनेय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिनमें जीवादि-पदार्थों के सुनने व ग्रहण करने का गुण नहीं है, जो सम्यक्त्वादि-गुणों से रहित हैं, वे 'अविनेय' कहलाते हैं।

प्र. 14. इन भावनाओं के चिन्तन का फल क्या है?

उत्तर— इन भावनाओं के चिन्तन से अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह-व्रत पूर्णता को प्राप्त होते हैं। ✿✿

जगत्कायस्वभावौ वा संवेगवैराग्यार्थम् ।।12।।

अर्थ — संवेग और वैराग्य के लिए जगत् के स्वभाव और शरीर के स्वभाव का चिंतन करना चाहिए।

प्र. 1. 'संवेग' किसे कहते हैं?

उत्तर— संसार के दुःखों से भयभीत होना 'संवेग' कहलाता है।

प्र. 2. 'वैराग्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— शरीर और पञ्चेन्द्रियों के विषयों से विरक्ति को 'वैराग्य' कहते हैं।

प्र. 3. 'जगत्' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसमें जीव भ्रमण करे, उसे जगत् कहते हैं, जगत् का ही अर्थ संसार है।

प्र. 4. 'शरीर' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो विशेष-नामकर्म के उदय से प्राप्त होकर गलते हैं, वे 'शरीर' कहलाते हैं। शरीर को 'काय' भी कहते हैं।

प्र. 5. शरीर का स्वभाव क्या है, इसका चिंतन करने से क्या होता है?

उत्तर— शरीर की अस्थिरता, अशुचिता और निस्सारता आदि रूप स्वभाव का चिन्तन करने से वैराग्य उत्पन्न होता है। ✿✿

प्रमत्तयोगात्प्राण-व्यपरोपणं हिंसा ।।13।।

अर्थ — प्रमत्तयोग से प्राणों का वध करना हिंसा है।

प्र. 1. 'प्रमत्त' का अर्थ क्या है?

उत्तर— 'प्रमत्त' का अर्थ 'प्रमाद से युक्त' है।

प्र. 2. *'प्रमाद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कषाय-सहित अवस्था को 'प्रमाद' कहते हैं।

प्र. 3. *'प्रमत्त-योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रमाद से युक्त जो आत्मा का परिणाम होता है, वह 'प्रमत्त-योग' है।

प्र. 4. *'प्रमाद' कितने होते हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— प्रमाद पन्द्रह होते हैं — चार विकथा, चार कषायें, पाँच इन्द्रियाँ, निद्रा और स्नेह।

प्र. 5. *चार-विकथायें कौन-सी हैं?*

उत्तर— स्त्रीकथा, भोजनकथा, राजकथा, चोरकथा — ये चार विकथायें है।

प्र. 6. *'हिंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रमादी-जीव के द्वारा मन, वचन, काय-योग से अपने और दूसरे के प्राणों का घात करना 'हिंसा' है।

प्र. 7. *हिंसा कितने प्रकार की होती है और कौन-कौन-सी है?*

उत्तर— हिंसा चार प्रकार की होती है — आरम्भी-हिंसा, उद्योगी-हिंसा, विरोधी-हिंसा, और संकल्पी-हिंसा।

प्र. 8. *'आरम्भी-हिंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो हिंसा गृहस्थों को भोजन बनाने, शरीर, मकान आदि के स्वच्छ रखने में होती है, उसे 'आरम्भी-हिंसा' कहते हैं।

प्र. 9. *'उद्योगी-हिंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो हिंसा आजीविका के लिए कोई योग्य व्यवसाय के करने में होती है, उसे 'उद्योगी-हिंसा' कहते हैं।

प्र. 10. *'विरोधी-हिंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो अत्याचारियों से स्व-धन-जन की रक्षा करने में होती है, उसे 'विरोधी-हिंसा' कहते हैं।

प्र. 11. *'संकल्पी-हिंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो हिंसा केवल किसी के प्राण लेने अथवा दुःख पहुँचाने के संकल्प से की जाती है, उसे 'संकल्पी-हिंसा' कहते हैं।

प्र. 12. *मुनि कौन-कौन-सी हिंसा के त्यागी होते हैं।*

उत्तर— मुनि चारों प्रकार की हिंसा के त्यागी होते हैं।

प्र. 13. *सूत्र में 'प्रमत्तयोगात्' शब्द का क्या अभिप्राय है?*

उत्तर— प्राणों के वियोग होने मात्र से हिंसा का पाप नहीं है, किन्तु प्रमादभाव हिंसा

है और उससे पाप होता है — यह इस शब्द का भाव है।

प्र. 14. *ईर्यासमिति-पूर्वक गमन करनेवाले मुनि के पैर के नीचे कोई जीव आकर मर जाये, तो उसमें हिंसा का दोष क्यों नहीं होता?*

उत्तर— क्योंकि उनके भाव में प्रमत्त-योग नहीं है।

प्र. 15. *एक प्राणी किसी दूसरे प्राणी को मारना चाहता है, पर मार नहीं सका, तो इसमें हिंसा का दोष कैसे है?*

उत्तर— क्योंकि वह प्रमादसहित है और उसके भावों से प्राणों की हिंसा होती है।

प्र. 16. *'प्रमाद' शब्द का और क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'प्रमाद' शब्द का अर्थ आत्मस्वरूप की असावधानी है।

प्र. 17. *रागादि-भावों की उत्पत्ति न होना क्या है?*

उत्तर— रागादि-भावों की उत्पत्ति न होना 'अहिंसा' है।

प्र. 18. *रागादि-भावों की उत्पत्ति होना क्या है?*

उत्तर— रागादि-भावों की उत्पत्ति होना 'हिंसा' है।

प्र. 19. *भाव-हिंसा किसे कहते हैं?*

उत्तर— कषाय के प्रकट होने से जीव के भावों से प्राणों का जो घात होता है, उसे 'भाव-हिंसा' कहते हैं।

प्र. 20. *'द्रव्य-हिंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इस हिंसा के समय यदि दूसरे जीव के प्राणों का वियोग हो, तो वह 'द्रव्य-हिंसा' है।

प्र. 21. *लोक में सर्वत्र सूक्ष्म-बादर जीव ठसाठस भरे हैं, इनकी हिंसा से बचने का उपाय क्या है?*

उत्तर— प्रमत्त-योग हिंसा का मूल है। यत्नाचारपूर्वक उठना-बैठना चाहिए। खाना, पीना, चलना, फिरना आदि सब क्रियाओं में यत्नाचारपूर्वक-प्रवृत्ति करने से इनकी हिंसा से बचा जा सकता है।

प्र. 22. *एक मछुवारा मछली पकड़ नहीं पाया, इससे वह हिंसा का पाप बंध करेगा या नहीं?*

उत्तर— जाल में मछली नहीं आने से द्रव्य-हिंसा नहीं होने पर भी उसके निरन्तर भाव-हिंसा तो हो ही रही है; अतः वह हिंसक है, बंधक है।

प्र. 23. *एक महिला बहुत यत्नाचारपूर्वक गृहकार्य कर रही है। फिर भी सब्जी काटते हुए, झाड़ू लगाते हुए जीवों का नाश होने पर वह हिंसक है या नहीं?*

उत्तर— नहीं, क्योंकि उस महिला की क्रिया प्रमादयुक्त नहीं है। यत्नाचारपूर्वक क्रिया

करने में जीव मर भी जाए, तो पाप-बंध नहीं होता।

प्र. 24. *जिन वस्तुओं पर हाथी घोड़ा चिड़िया आदि के चित्र छपे हों, उन्हें व्रती-श्रावक उपयोग कर सकते हैं या नहीं?*

उत्तर— जिन पर जीवों के चित्र बने हों, उन वस्तुओं का उपयोग व्रती नहीं कर सकते; क्योंकि इस निमित्त से वह भाव-हिंसा का बंधक होता है।

प्र. 25. *बच्चों को हाथी-घोड़ा-बन्दर आदि की आकृति के बिस्कुट, मिठाई आदि खिलाए जाते हैं। क्या यह उचित है?*

उत्तर— नहीं, यह साक्षात् पाप का कारण है। भाव-हिंसा का पाप-बंध ऐसी वस्तुओं के भक्षण से ही होता है, इन्हें दूर से ही छोड़ देना चाहिए। ✿✿

असदभिधानमनृतम् ।।14।।

अर्थ — असत् बोलना 'अनृत' (झूठ) है।

प्र. 1. *'असत्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'प्रमत्त-योगपूर्वक सत्य न बोलना, दुःखदायक मिथ्यावचन बोलने को 'असत्य' कहते हैं।

प्र. 2. *'अप्रशस्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिन वचनों से प्राणियों को पीड़ा होती है, उसे 'अप्रशस्त' कहते हैं।

प्र. 3. *माता-पिता या अध्यापक बच्चों को सुमार्ग पर लाने लिए कठोर-वचन बोलते हैं, तो क्या यह सब असत्य है?*

उत्तर— माता, पिता, गुरु कठोर-वचन बोलते हैं, तो उनके बोलने में प्रमाद नहीं है।

प्र. 4. *असत्य-अभिधान कितने प्रकार का है, और कौन-कौन-सा है?*

उत्तर— असत्य-अभिधान चार प्रकार का है — अविद्यमान-पदार्थ का कथन करना, विद्यमान-वस्तु का निषेध करना, अन्य को अन्य-रूप कहने के विपरीत-वचन, पीड़ाकारी-वचन या गर्हित-वचन।

प्र. 5. *अविद्यमान-पदार्थ का कथन करना — इसका अर्थ क्या है?*

उत्तर— जैसे किसी के दोष न होने पर भी कहना कि 'इसमें दोष है।'

प्र. 6. *विद्यमान-वस्तु का निषेध करना — इसका अर्थ क्या है?*

उत्तर— जैसे किसी के रुपये माँगने पर रुपये होते हुए भी कहना कि 'हैं नहीं।'

प्र. 7. *अन्य को अन्यरूप कहना विपरीत-वचन — इसका अर्थ क्या है?*

उत्तर— जैसे 'चेतन' को 'जड़' कहना।

प्र. 8. *पीड़ाकारी-वचन या गर्हित-वचन का अर्थ क्या है?*

उत्तर— हँसी-मजाक, चुगली, गाली-गलौच, सावद्य-सूचक-वचन कहना पीड़ाकारी-वचन या गर्हित-वचन हैं।

प्र. 9. *सद्‌गृहिणी को घर में वस्तु के होते हुए भी 'नहीं' कहना पड़ता है, वह वचन सत्य है या असत्य है?*

उत्तर— गृहस्थ-जीवन की मर्यादा बनाये रखने के लिए एवं मुसीबत के समय अपमानित न होना पड़े, इसलिए उनका असत्य-वचन भी सत्य है; क्योंकि यहाँ प्रमाद नहीं है।

अदत्तादानं स्तेयम् ।।15।।

अर्थ — बिना दी हुई वस्तु को लेना स्तेय (चोरी) है।

प्र. 1. *'चोरी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिना दी हुई वस्तु को लेना 'चोरी' है।

प्र. 2. *'स्तेय' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'स्तेय' का अर्थ 'चोरी' है।

प्र. 3. *'अदत्त' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'दत्त' का अर्थ है 'दिया गया'। 'अदत्त' का अर्थ है 'नहीं दिया गया'।

प्र. 4. *'आदान' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'आदान' का अर्थ है 'ग्रहण करना'।

प्र. 5. *यदि बिना दी गई वस्तु लेना चोरी है, तो कर्म द्वारा नोकर्म को ग्रहण करना भी चोरी है; क्योंकि ये किसी के द्वारा दिये नहीं जाते?*

उत्तर— क्योंकि जहाँ लेन-देन संभव होता है, वहीं चोरी का व्यवहार होता है। कर्म-वर्गणाओं में यह व्यवहार नहीं होता।

प्र. 6. *भिक्षुओं के नगरादि में भ्रमण करते समय गली-कूचा आदि में प्रवेश करके जाने पर क्या अदत्तग्रहण होगा?*

उत्तर— यह कोई दोष नहीं; क्योंकि साधुजन उन्हीं गली-कूचों में प्रवेश करते हैं, जो सभी के लिए खुले रहते हैं। व्यक्तिगत, बंद जगह में वे प्रवेश नहीं करते। तथा प्रवेश करते हुए उनके प्रमत्तयोग का अभाव होता है।

प्र. 7. *मार्ग में पड़ी किसी की कीमती वस्तु उठाकर उसे शुभ-काम में लगाना सही या नहीं?*

उत्तर— शुभ-काम में लगाने के परिणाम सही हैं; किन्तु जिसकी वस्तु है; वह वहाँ ढूँढने आए और न मिले, तो उसके परिणामों में संक्लेश होगा। उत्तम

यही है कि परद्रव्य की ओर दृष्टिपात ही नहीं करना। ✿✿

मैथुनमब्रह्म ॥16॥

***अर्थ* — मैथुन अब्रह्म है।**

प्र. 1. *'मैथुन' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'मैथुन' का अर्थ है 'अब्रह्म' अर्थात् 'कुशील'।

प्र. 2. *'कुशील' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रमत्त-योग से रति-सुख अर्थात् स्त्री-पुरुष कीं परस्पर-स्पर्श करने की इच्छा 'कुशील' है।

प्र. 3. *'मिथुन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्त्री-पुरुष का जोड़ा 'मिथुन' कहलाता है।

प्र. 4. *'मैथुन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चारित्र-मोहनीय-कर्म का उदय होने पर राग-परिणामों से युक्त होकर स्त्री-पुरुष के द्वारा की गई स्पर्शन आदि क्रिया 'मैथुन' है।

प्र. 5. *'मैथुन' को 'अब्रह्म' क्यों कहा है?*

उत्तर— मैथुन में उत्तमगुण का वास नहीं रहता, इससे हिंसा आदि दोषों की पुष्टि होती है, इसीलिए 'मैथुन' को 'अब्रह्म' कहा है।

प्र. 6. *'ब्रह्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अहिंसादिक-गुण जिसके पालन करने पर बढ़ते हैं, वह 'ब्रह्म' कहलाता है।

प्र. 7. *'अब्रह्म' को पाप क्यों कहा है?*

उत्तर— एक बार भोग करने में नौ लाख त्रस जीवों का घात होता है। यह हिंसी आदि सब पापों को पुष्ट करता है। मैथुन-सेवन में दक्ष जीव त्रस-स्थावर-जीवों की हिंसा करता है, झूठ बोलता है, चोरी करता है, चेतन-अचेतन परिग्रहों का संचय करता है।

प्र. 8. *'मिथ्याचार-अब्रह्म' क्या है?*

उत्तर— केवल स्त्री या केवल पुरुष का कामराग के आवेश में आकर जड़-वस्तु के अवलम्बन से या अपने हस्त आदि द्वारा कुटिल काम-क्रिया करना 'मिथ्याचार-अब्रह्म' है। ✿✿

मूर्च्छा परिग्रहः ॥17॥

***अर्थ* — मूर्च्छा 'परिग्रह' है।**

प्र. 1. 'परिग्रह' किसे कहते हैं?

उत्तर— किसी भी परवस्तु में आसक्ति 'परिग्रह' है।

प्र. 2. 'मूर्च्छा' किसे कहते हैं?

उत्तर— मूर्च्छा 'आसक्ति' को कहते हैं; मोहकर्म के उदय से परपदार्थों में ममत्व का भाव ही 'मूर्च्छा' है।

प्र. 3. परिग्रह के कितने भेद हैं? और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— परिग्रह के दो भेद हैं — अंतरग-परिग्रह, बहिरंग-परिग्रह।

प्र. 4. अंतरंग-परिग्रह कितने प्रकार का है, और कौन-कौन-सा है।

उत्तर· अंतरंग-परिग्रह चौदह प्रकार का है — मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुसंकवेद।

प्र. 5. बहिरंग-परिग्रह कितने प्रकार का है, और कौन-कौन-सा है?

उत्तर— बहिरंग-परिग्रह दस प्रकार का है — क्षेत्र, वास्तु (घर, कोठी) सोना, चाँदी, धन, धान्य, दास, दासी, वस्त्र और बर्तन।

प्र. 6. 'परिग्रह' कितने प्रकार का होता है?

उत्तर— परिग्रह 24 प्रकार का होता है।

प्र. 7. यदि हम वस्तु के संग्रह को 'परिग्रह' कहते हैं, तो नग्न रहनेवाले पशु-पक्षी अपरिग्रही और चक्रवर्ती महान् परिग्रही होंगे क्या?

उत्तर— बाह्य चेतन-अचेतन-वस्तुओं में तथा आंतरिक-राग-द्वेष-विकारों में जो ममत्व-भाव है कि 'ये मेरे हैं' — इस भाव का नाम 'मूर्च्छा' है। पास में एक पैसा न होने पर भी जिसे दुनिया भर की तृष्णा है, वह परिग्रही है।

प्र. 8. 'परिग्रह' का लक्षण क्या है?

उत्तर— बाह्य धन-धान्यादि-पदार्थों तथा अन्तरंग रागदि-परिणामों में 'यह मेरा है' — इसप्रकार का संकल्प 'परिग्रह' है। क्योंकि इसप्रकार के संकल्प के होने पर संरक्षण आदि भाव होते हैं।

प्र. 9. रागादि-परिणामों के समान-ज्ञानादिक में भी "यह मेरा है" — ऐसा कहने से ज्ञानादिक भी परिग्रह होंगे क्या?

उत्तर— ज्ञानादिक आत्मा के स्वभाव होने से रागादिक के समान हेय नहीं हैं, इसलिए ज्ञानादिक में परिग्रहपना नहीं है।

प्र. 0. हिंसादि पाँच-पापों में प्रसिद्ध जीव कौन-से हैं?

उत्तर— 'धनश्री' हिंसा-पाप में, 'सत्यघोष' असत्य में, 'तपस्वी' चोरी में, 'कोतवाल थमदंड' कुशील में, और 'श्मश्रु-नवनीत' परिग्रह-पाप में प्रसिद्ध हुए हैं।

प्र. 1. अपरिग्रही-साधु को वस्त्र आदि का त्याग करना जरूरी है, तो क्या उन्हें पीछी-कमण्डलु का त्याग करना भी आवश्यक नहीं होना चाहिए?

उत्तर— साधु पीछी और कमण्डलु को स्वेच्छा से नहीं लेता है, किन्तु संयम की रक्षा के लिए ये होते हैं, इसलिए उन्हें रखना पड़ता है; अतः उनमें उनकी मूर्च्छा न होने से वे 'परिग्रह' में शामिल नहीं होते। ✿✿

निश्शल्यो व्रती ।।18।।

अर्थ — जो शल्य-रहित है, वह 'व्रती' है।

प्र. 1. 'व्रती' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो शल्य-रहित हो, वह 'व्रती' है।

प्र. 2. 'शल्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो आत्मा को काँटे की तरह दुःख देती है, उसे 'शल्य' कहते हैं।

प्र. 3. 'शल्य' कितने प्रकार की होती है और कौन-कौन-सी है?

उत्तर— 'शल्य' तीन प्रकार की होती है — माया, मिथ्यात्व, निदान।

प्र. 4. 'माया-शल्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— व्रतों के पालन करने में कपट, ढोंग की वृत्ति का बने रहना 'माया-शल्य' है।

प्र. 5. 'मिथ्यात्व-शल्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— मिथ्या-तत्त्वों का श्रद्धान करना, कुदेवों को पूजना, व्रतों का पालन करते हुए भी सत्य पर विश्वास न करना 'मिथ्यात्व-शल्य' है।

प्र. 6. 'निदान-शल्य' किसे कहते हैं?

उत्तर— व्रतों के फलस्वरूप विषय-भोगों की चाह रखना 'निदान-शल्य' है।

प्र. 7. 'निदान-शल्य' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'निदान-शल्य' के तीन भेद हैं — प्रशस्त-निदान, अप्रशस्त-निदान, भोगार्थ-निदान।

प्र. 8. 'प्रशस्त-निदान' किसे कहते हैं?

उत्तर— संयम-धारण के लिए उत्तम-कुल-वृद्धि शुभ-संगति आदि की इच्छा रखना 'प्रशस्त-निदान' है।

प्र. 9. 'अप्रशस्त-निदान' किसे कहते हैं?

उत्तर— अभिमान की पुष्टि-हेतु अपनी आज्ञा चलाने को उत्तम-कुल-जाति-बल-बुद्धि आदि की वाञ्छा रखना 'अप्रशस्त-निदान' है।

प्र. 10. 'भोगार्थ-निदान' किसे कहते हैं?

उत्तर— सांसारिक-भोगों की उत्कण्ठा रखना 'भोगार्थ-निदान' है।

प्र. 11. क्या इस शल्यों के रहते व्रतों का पालन किया जा सकता है?

उत्तर— नहीं, इन शल्यों के रहते व्रतों का पालन नहीं हो सकता है।

प्र. 12. 'निदान-बंध' और 'निदान-शल्य' में अंतर क्या है?

उत्तर— 'अगामी-समय में मुझे ये फल मिलेगा या नहीं' — इसप्रकार की बात चुभते रहना 'निदान-शल्य' है, तथा इसके फलस्वरूप 'भविष्य में मुझे ऐसा संयोग मिले' — ऐसी आकांक्षा करना 'निदान-बंध' है। ✿✿

अगार्यनगारश्च ॥19॥

अर्थ — उस व्रती के 'अगारी' और 'अनगारी' – ये दो भेद हैं।

प्र. 1. 'अगारी' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिन्होंने घर का त्याग नहीं किया, वह 'अगारी' हैं।

प्र. 2. 'अनगारी' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिन्होंने घर का त्याग कर दिया, वह 'अनगारी' हैं।

प्र. 3. अगारी के पूर्णव्रत नहीं होते हैं, फिर उसे 'व्रती' क्यों कहा जाता है?

उत्तर— जैसे कोई व्यक्ति शहर के किसी एक हिस्से में ही रहता है, फिर भी उसके सम्बन्ध में कहा जाता है 'वह उस शहर में रहता है'; उसीप्रकार अगारी के पूरिपूर्ण-व्रत के न होने पर भी उसे 'व्रती' कहा जाता है।

प्र. 4. किसी एक पाप को त्यागनेवाले को 'व्रती' कहा जाता है क्या?

उत्तर— नहीं! पाँच-पापों का एकदेश-त्याग-करनेवाला अपरिपूर्ण-व्रतों का पालन करनेवाला ही 'व्रती' कहलाता है। किसी एक पाप का त्यागी 'व्रती' नहीं कहा जा सकता। ✿✿

अणुव्रतोऽगारी ॥20॥

अर्थ — अणुव्रतों का धारी 'अगारी' है।

प्र. 1. 'अणुव्रत' का अर्थ क्या है?

उत्तर— 'अणु' का अर्थ 'अल्प', 'व्रत' का अर्थ 'विरक्ति का भाव'। अर्थात् अल्पव्रतों को 'अणुव्रत' कहते हैं।

प्र. 2. अगारी के व्रतों को 'अल्पव्रत' क्यों कहा है?

उत्तर— अल्पव्रतों में पाप-क्रिया का पूर्ण-त्याग का अभाव है। इसलिए ये 'अल्पव्रत' कहलाते हैं।

प्र. 3. 'अगारी-अणुव्रती-श्रावक' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो अहिंसादि-व्रतों को सम्पूर्णरूप से पालने में समर्थ न हो, वह गृहस्थ मर्यादा में रहकर त्यागवृत्ति से इन व्रतों को कुछ अंशों में पालता है, उसे 'अगारी-अणुव्रती-श्रावक' कहते हैं।

प्र. 4. 'अहिंसाणुव्रत' किसे कहते हैं?

उत्तर— 'त्रस' और 'स्थावर' सबप्रकार के जीवों की हिंसा का त्याग न हो सकने के कारण जीवन-पर्यन्त संकल्पी त्रस-हिंसा का त्याग कर देना और स्थावर-जीवों की हिंसा तथा आरम्भ भी यथासंभव कम करते जाना 'अहिंसाणुव्रत' है।

प्र. 5. 'सत्याणुव्रत' किसे कहते हैं?

उत्तर— राग-द्वेष अथवा मोह के वशीभूत होकर ऐसा असत्य-वचन न बोलना, जिससे किसी का कोई नुकसान हो, वह 'सत्याणुव्रत' है।

प्र. 6. 'अचौर्याणुव्रत' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसमें राज-दण्ड का भय हो, ऐसी बिना दी हुई वस्तु को न लेने का त्याग 'अचौर्याणुव्रत' है।

प्र. 7. 'ब्रह्मचर्याणुव्रत' किसे कहते हैं?

उत्तर— अपनी विवाहिता-स्त्री या पुरुष के अतिरिक्त शेष सब स्त्री-पुरुषों को बुरी-नजर से नहीं देखना 'ब्रह्मचर्याणुव्रत' है।

प्र. 8. 'परिग्रह-परिमाण-व्रत' किसे कहते हैं?

उत्तर— धन, धान्य आदि को आवश्यकता के अनुसार एक प्रमाण निश्चित कर लेना 'परिग्रह-परिमाण-व्रत' है। ✿✿

दिग्देशानर्थदण्डविरति-सामायिक-प्रोषधोपवासोपभोग-परिभोग-परिमाणातिथिसंविभागव्रत-संपन्नश्च ।।21।।

अर्थ — वह अणुव्रती-श्रावक दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्डव्रत, सामायिकव्रत, प्रोषधोपवासव्रत, उपभोग-परिभोग-परिमाणव्रत और अतिथि-संविभागव्रत — इन व्रतों से भी सम्पन्न होता है।

प्र. 1. 'अणुव्रत' में सहायक कौन-से व्रत हैं?

उत्तर— अणुव्रतों में सहायक सात 'शीलव्रत' हैं।

प्र. 2. सात-शीलव्रत कौन-से हैं?

उत्तर— दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्डव्रत — ये तीन 'गुणव्रत' और सामायिक, प्रोषधोपवास, भोगोपभोग-परिमाणव्रत, अतिथि-संविभाग-व्रत — ये चार

'शिक्षाव्रत'। इसप्रकार ये सात शीलव्रत हैं।

प्र. 3. *'गुणव्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो अणुव्रतों में गुणात्मकरूप से वृद्धि करें, उन्हें पुष्ट करें, उनको 'गुणव्रत' कहते हैं।

प्र. 4. *'शिक्षाव्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिनसे मुनिव्रत-पालन करने की शिक्षा मिले, उन्हें 'शिक्षाव्रत' कहते हैं।

प्र. 5. *'दिग्व्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पूर्व आदि दशों दिशाओं में नदी, ग्रामादि, प्रसिद्ध-स्थानों की मर्यादा बांधकर जीवन-पर्यन्त धर्मकार्य के सिवाय उससे बाहर नहीं जाना 'दिग्व्रत' है।

प्र. 6. *'देशव्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जीवन-पर्यन्त 'दिग्व्रत' में और भी संकोच करके घड़ी-घण्टा-दिन आदि तक किसी गृह-बाजारादि तक आना-जाना सीमित रखना 'देशव्रत' है। उतने समय के लिए श्रावक उस क्षेत्र में महाव्रती के तुल्य है।

प्र. 7. *'अनर्थदण्डत्यागव्रत' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिससे अपना कुछ लाभ या प्रयोजन तो सिद्ध न हो और व्यर्थ ही पाप का संचय होता हो, ऐसे कार्य को 'अनर्थदण्ड' कहते हैं। और उसके त्याग को 'अनर्थदण्डव्रत' कहते हैं।

प्र. 8. *'अनर्थदण्ड' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अनर्थदण्ड' के पाँच-भेद हैं — अपध्यान, पापोपदेश, प्रमादचर्या, हिंसादान, दुःश्रुति।

प्र. 9. *'अपध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरों का बुरा विचारना, राग-द्वेष की कथा करना, खोटा-चिंतन करना 'अपध्यान' है।

प्र. 10. *'पापोपदेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरों को पाप कार्य के लिए सलाह देना, जिससे प्राणियों को कष्ट पहुँचे, उसे 'पापोपदेश' कहते हैं।

प्र. 11. *'प्रमादचर्या' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिना प्रयोजन यहाँ-वहाँ घूमना, पृथ्वी-खोदना, पानी खराब करना, घास का तिनका आदि तोड़ना 'प्रमादचर्या' है।

प्र. 12. *''हिंसादान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— विषैली गैस, अस्त्र आदि हिंसा की सामग्री, उपकरण देना 'हिंसादान' है।

प्र. 13. 'दु:श्रुति' किसे कहते हैं?

उत्तर— हिंसा और राग आदि को बढानेवाले खोटे-शास्त्रों को पढ़ना, सुनना, पढ़ाना आदि 'दु:श्रुति' है।

प्र. 14. 'सामायिक' किसे कहते हैं?

उत्तर— प्रातः संध्याकाल में समस्त पाप के कर्मों से विरत होकर निश्चित-स्थान पर निश्चित-समय के लिए मन, वचन, काय को एकाग्र करके चिंतवन करने को 'सामायिक' कहते हैं।

प्र. 15. 'प्रोषधोपवास' किसे कहते हैं?

उत्तर— अष्टमी, चौदस पर्व के दिन सम्पूर्ण आरम्भिक-हिंसाओं का त्याग करके पहिले और बाद के दिन एकाशन करना और पर्व के दिन उपवास करना 'प्रोषधोपवास' है।

प्र. 16. 'भोगोपभोग-परिमाणव्रत' किसे कहते हैं?

उत्तर— एक बार काम में आ सकने योग्य खान-पान आदि को 'भोग' कहते हैं। पुन: पुन: उपयोग में आ सकने योग्य वस्त्र, आभरण, अलंकार आदि को 'उपभोग' कहते हैं। अल्प-समय या जीवन-पर्यन्त के लिए इनका परिमाण करना 'भोगोपभोग-परिमाणव्रत' है।

प्र. 17. 'भोग' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो वस्तु एक बार भोगने में आवे, उसे 'भोग' कहते हैं।

प्र. 18. 'उपभोग' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो वस्तु बार-बार भोगने में आवे, उसे 'उपभोग' कहते हैं।

प्र. 19. 'अतिथिसंविभाग-व्रत' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो अपने संयम की रक्षा करते हुए विहार करते हैं, उनको 'अतिथि' कहते हैं। इस अतिथि अर्थात् मुनि-त्यागियों के लिए आहार, औषधि, शास्त्रादि दान देने के लिये अपनी संपत्ति में संविभाग करना 'अतिथि-संविभाग' है।

प्र. 20. सूत्र में 'च' शब्द क्यों दिया है?

उत्तर— श्रावक के बारह-व्रतों में देवपूजा, स्वाध्याय आदि भी गर्भित है — यह बात बताने के लिए 'च' शब्द दिया है।

प्र. 21. श्रावक के बारह-व्रत कौन-से हैं?

उत्तर— 5 अणुव्रत, 3 गुणव्रत और 4 शिक्षाव्रत के भेद के श्रावक के बारह-व्रत होते हैं।

✿✿

मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।22।।

अर्थ — तथा वह मारणान्तिक सल्लेखना का प्रीतिपूर्वक सेवन करनेवाला

होता है।

प्र. 1. *'मरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने परिणामों से प्राप्त हुई आयु का, इन्द्रियों का और मन, वचन, काय — इन तीन बलों का कारण-विशेष के मिलने पर नाश होना 'मरण' है।

प्र. 2. *सूत्र में 'मरण' के साथ 'अन्त' क्यों जोड़ा गया है?*

उत्तर— उसी भव के मरण का ज्ञान कराने के लिए सूत्र में 'मरण' शब्द के साथ 'अन्त' पद को ग्रहण किया है।

प्र. 3. *'मारणान्तिकी' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— वर्तमान-भव का अवसान मरणान्त है, और जिसका यह मरणान्त ही प्रयोजन है, वह 'मारणान्तिकी' है।

प्र. 4. *'सल्लेखना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बाह्य में शरीर को और अभ्यंतर में कषायों को सम्यक्-प्रकार से कृश करना 'सल्लेखना' है।

प्र. 5. *सूत्र में 'जोषिता' पद के स्थान पर 'सेविता' पद देने से सूत्र का अर्थ सरलता से स्पष्ट हो जाता है?*

उत्तर— नहीं। 'सेविता' का अर्थ है 'सेवन करना'। यहाँ मात्र सेवन करना ही भाव नहीं है, क्योंकि सल्लेखना बलपूर्वक नहीं करायी जाती, प्रीतिपूर्वक जीव स्वयं ही सल्लेखना करता है। इसी अर्थ के लिए सूत्र में 'जोषिता' पद ग्रहण किया है।

प्र. 6. *सल्लेखना में आयु आदि दस प्राणों का त्याग किया जाता है, अतः सल्लेखना आत्मघात है क्या?*

उत्तर— सल्लेखना में प्रमाद का अभाव है, प्रमत्त-योग से प्राणों का वध करना हिंसा है। सल्लेखना में प्रमाद न होने से वह आत्मघात नहीं है, हिंसा के उपकरणों का प्रयोग करके अपना घात करने से आत्मघात का दोष आता है।

प्र. 7. *सल्लेखना कब और क्यों धारण करना चाहिए?*

उत्तर— कोई उपसर्ग आने पर, अकाल पड़ने पर, अतिवृद्धावस्था में जब अपनी चर्या का सही पालन नहीं कर पा रहा हो, तथा कोई लाइलाज-रोग होने पर रत्नत्रय-धर्म की रक्षा के लिए सल्लेखना धारण करना चाहिए। ✿✿

शंकाऽऽकांक्षा-विचिकित्सा-अन्यदृष्टिप्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः ॥23॥

अर्थ — शंका, आकांक्षा, विचिकित्सा, अन्यदृष्टि-प्रशंसा और अन्यदृष्टि-

संस्तव — ये सम्यदृष्टि के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'शंका-अतिचार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सर्वज्ञ, वीतराग अरिहंतदेव के द्वारा कहे हुए तत्त्वों के स्वरूप मेंसंदेह करना 'शंका' है।

प्र. 2. *'कांक्षा-अतिचार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इहलोक व परलोक-सम्बन्धी विषयों की अभिलाषा करना 'कांक्षा' है।

प्र. 3. *'विचिकित्सा-अतिचार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रत्नत्रय के द्वारा पवित्र, किन्तु बाह्य में मलिन शरीरवाले मुनियों को देखकर उसके प्रति अथवा धर्मात्मा के गुणों के प्रति या दुःखी-दरिद्री जीवों को देखकर उनके प्रति ग्लानि होना 'विचिकित्सा-अतिचार' है।

प्र. 4. *'अन्यदृष्टि-प्रशंसा-अतिचार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मिथ्यादृष्टि के ज्ञान, तप आदि को मन से अच्छा समझना, 'अन्य-दृष्टि'-प्रंशसा अतिचार है।

प्र. 5. *'संस्तव' और 'प्रंशसा' में क्या अन्तर है?*

उत्तर— 'संस्तव' वचनात्मक होता है, 'प्रंशसा' मन से होती है।

प्र. 6. *सम्यग्दर्शन के आठ-अंग कौन-से हैं?*

उत्तर— निःशंकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढ़दृष्टि, उपगूहन, स्थितिकरण, वात्सल्य और प्रभावना — ये आठ-अंग हैं।

प्र. 7. *सम्यग्दर्शन के आठ-अंग हैं, तो सम्यदृष्टि के अतिचार भी आठ होने चाहिए, फिर ये पाँच क्यों कहे हैं?*

उत्तर— 'अन्यदृष्टि-प्रशंसा' और 'अन्यदृष्टि-संस्तव' में 'अनुपगूहन' आदि दोषों का अन्तर्भाव हो जाने से सम्यदृष्टि के पाँच अतिचार कहे हैं।

प्र. 8. *'अतिचार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आवश्यक-कार्यों के करने में आलस्य करना या व्रतों में दोष लगाना 'अतिचार' है।

प्र. 9. *'अनाचार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो जीव दोषों को दोष-रूप न माने और उपादेय माने, उसको 'अनाचार' कहते हैं।

प्र. 10. *व्रत के भंग होने से सहायक परिणाम कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— व्रत-भंग के लिए सहायक परिणाम चार हैं — अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार।

प्र. 11. *'अतिक्रम' किसे कहते हैं?*
उत्तर— मन की शुद्धि में कमी आना 'अतिक्रम' है।
प्र. 12. *'व्यतिक्रम' किसे कहते हैं?*
उत्तर— विषयों की अभिलाषा में रुचि होना 'व्यतिक्रम' है।
प्र. 13. *'अतिचार' किसे कहते हैं?*
उत्तर— विषयों में एक बार प्रवृत्ति 'अतिचार' है।
प्र. 14. *'अनाचार' किसे कहते हैं?*
उत्तर— बार-बार विषयों में प्रवृत्ति 'अनाचार'
प्र. 15. *व्रत में लगे दोषों के प्रायश्चित्त का अधिकारी कौन हो सकता है?*
उत्तर— अतिक्रम, व्यतिक्रम और अतिचार-व्रतों के प्रति होनेवाले दोषों को प्रायश्चित्त के द्वारा शुद्धिकरण किया जा सकता है; किन्तु अनाचार का कोई प्रायश्चित्त नहीं है। ✿✿

व्रतशीलेषु पञ्च-पञ्च यथाक्रमम् ॥24॥

अर्थ — व्रतों और शीलों में पाँच-पाँच अतिचार हैं, जो क्रम से इसप्रकार हैं।

प्र. 1. *पाँच-अणुव्रतों के और सात-शीलव्रतों के कितने-कितने अतिचार हैं?*
उत्तर— पाँच-अणुव्रत, सात-शीलव्रतों के पाँच-पाँच 'अतिचार' हैं।
प्र. 2. *सात-शीलव्रत कौन-से हैं?*
उत्तर— तीन-गुणव्रत और चार-शिक्षाव्रत — ये सात-शीलव्रत हैं।
प्र. 3. *'शील' किसे कहते हैं?*
उत्तर— जो व्रतों की रक्षा के लिए होते हैं उन्हें 'शील' कहते हैं।
प्र. 4. *श्रावक-व्रतों के कुल 'अतिचार' कितने हैं?*
उत्तर— कुल अतिचार व्रतों की अपेक्षा से 12×5=60 है तथा सम्यग्दर्शन के पाँच-अतिचार और सल्लेखना के पाँच-अतिचार — ये सब मिलाकर 60+5 +5=70 अतिचार हैं। ✿✿

बन्ध-वधच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ॥25॥

अर्थ — बन्ध, वध, छेद, अतिभार का आरोपण और अन्नपान का निरोध — ये 'अहिंसा-अणुव्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'अहिंसाणुव्रत' के पाँच-अतिचार कौन-कौन-से हैं?*
उत्तर— बंध, वध, छेद, अतिभार-आरोपण और अन्नपान-निरोध — ये पाँच

'अहिंसाणुव्रत' के अतिचार हैं।

प्र. 2. *'बंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी भी प्राणी को रस्सी, सांकल वगैरह से बांधना या पिंजरे में बंद कर देना, जिससे वह इच्छानुसार कहीं जा न सके, उसे 'बंध' कहते हैं।

प्र. 3. *'वध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लाठी, डंडे और कोड़े वगैरह से पीटना 'वध' है। वध से तात्पर्य प्राणरहित करने से नहीं है, क्योंकि वह तो 'अनाचार' है।

प्र. 4. *'अतिभारारोपण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शक्ति और मर्यादा का विचार न करके अधिक बोझ लादना 'अति-भारारोपण' है।

प्र. 5. *'अन्नपान-निरोध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— खानपान में रुकावट डालना या समय पर नहीं देना 'अन्नपान-निरोध' है।

प्र. 6. *व्रती-पुरुष अपने घर में पशुओं को बाँधकर रख सकता है या नहीं?*

उत्तर— व्रती-पुरुष पशुओं को बाँधकर नहीं रख सकता, यदि बाँधता भी है, तो इसप्रकार कि विपत्ति पड़ने पर वहाँ से निकल सके — ऐसा ढीला बाँधे। ✿✿

मिथ्योपदेश-रहोभ्याख्यान-कूटलेखक्रिया-न्यासापहार-साकार-मन्त्रभेदाः ॥26॥

अर्थ — मिथ्योपदेश, रहोभ्याख्यान, कूटलेख-क्रिया, न्यासापहार और साकारमंत्रभेद — ये 'सत्याणुव्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'सत्याणुव्रत' के अतिचार कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— मिथ्या-उपदेश, रहोभ्याख्यान, कूटलेख-क्रिया, न्यासापहार, और साकार-मंत्रभेद — ये पाँच सत्याणुव्रत के अतिचार हैं।

प्र. 2. *'मिथ्या-उपदेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— झूठा और अहितकर-उपदेश देना 'मिथ्योपदेश' है।

प्र. 3. *'रहोभ्याख्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्त्री और पुरुष के द्वारा एकान्त में की गई क्रिया को प्रकट कर देना 'रहोभ्याख्यान' है।

प्र. 4. *'कूटलेख-क्रिया' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी का दबाव पड़ने से ऐसी झूठी बात लिख देना, जिससे दूसरा फंस जाये, उसे 'कूटलेख-क्रिया' कहते हैं।

प्र. 5. ***'न्यासापहार' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **दूसरे की धरोहर को कम करके देना, उसे 'न्यासापहार' कहते हैं।**

प्र. 6. ***'साकार-मन्त्र-भेद' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **चर्चा आदि से, मुख की आकृति आदि से मन की बात जानकर इसलिए प्रकट कर देना कि जिससे दूसरे की बदनामी हो, उसे 'साकार-मन्त्र-भेद' कहते हैं।**

प्र. 7. ***क्या सत्याणुव्रती कोर्ट में झूठी गवाही दे सकता है?***

उत्तर— नहीं दे सकता; क्योंकि उसे ऐसा करने पर 'कूटलेखक्रिया' नामक अतिचार होगा।

प्र. 8. ***'सत्याणुव्रती' परनिंदा कर सकता है क्या?***

उत्तर— नहीं कर सकता! यदि करता है, तो उसका सत्यव्रत दूषित होता है। ✿✿

स्तेनप्रयोग-तदाहृतादान-विरुद्धराज्यातिक्रम-हीनाधिकमानोन्मान-प्रतिरूपकव्यवहाराः ॥27॥

अर्थ — स्तेनप्रयोग, स्तेनआहृतादान, विरुद्धराज्यातिक्रम, हीनाधिकमानोन्मान और प्रतिरूपक-व्यवहार — ये 'अचौर्य-अणुव्रत' के पाँच-अतिचार है।

प्र. 1. *'अचौर्याणुव्रत' के अतिचार कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— स्तेनप्रयोग, स्तेन-आहृतादान, विरुद्ध-राज्यातिक्रम, हीनाधिक-मानोन्मान और प्रतिरूपक-व्यवहार — ये पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'स्तेनप्रयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चोर को चोरी करने की प्रेरणा देना, चोरी के उपाय बताना आदि 'स्तेनप्रयोग' है।

प्र. 3. *'स्तेन-आहृतादान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चोर को चोरी की प्रेरणा न देते हुए भी चोरी का माल खरीदना 'स्तेन-आहृतादान' है।

प्र. 4. *'विरुद्ध-राज्यातिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— राजनियम के विरुद्ध चोर-बाजारी (टैक्स आदि नहीं देना) करना 'विरुद्ध-राज्यातिक्रम' है।

प्र. 5. *'हीनाधिकमानोन्मान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तोलने के बाँटों को 'मान कहते हैं, तराजू को 'उन्मान' कहते हैं। बाँट-तराजू दो तरह के रखना, कम-वस्तु देना 'हीनाधिकमानोन्मान' लाता है।

प्र. 6. *'प्रतिरूपक-व्यवहार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कीमती-वस्तु में कम-कीमत की वस्तु मिलाकर बेचना, नकली-वस्तु को 'असली' कहकर बेचना 'प्रतिरूपक-व्यवहार' है।

प्र. 7. *अचौर्याणुव्रती विदेश से लाई गई वस्तु का प्रयोग कर सकता है या नहीं?*

उत्तर— यदि विदेश से राजाज्ञा-पूर्वक लाई गई वस्तु है, तो अचौर्याणुव्रती उपयोग कर सकता है। छिपाकर, और चोरी से लाई गई वस्तु प्रयोग नहीं कर सकता।

परविवाहकरणेत्वरिका-परिगृहीतापरिगृहीता-गमनानंगक्रीडा-कामतीव्राभिनिवेशाः ॥28॥

अर्थ — परविवाहकरण, इत्वरिका-परिगृहीता-गमन, इत्वरिका-अपरिगृहीता-गमन, अनंग-क्रीड़ा और कामतीव्राभिनिवेश — ये 'स्वदार-सन्तोष-अणुव्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'ब्रह्मचर्याणुव्रत' के पाँच-अतिचार कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— परविवाहकरण, अपरिगृहीता-इत्वरिकागमन, परिगृहीता-इत्वारिकागमन, अनंग-क्रीड़ा, कामतीव्राभिनिवेश — ये 'ब्रह्मचर्याणुव्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'परविवाहकरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दूसरे के पुत्र-पुत्रियों का विवाह कराना 'परविवाहकरण' है।

प्र. 3. *'विवाह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कन्यादान को 'विवाह' कहते हैं।

प्र. 4. *'इत्वरिका' किसे कहते हैं*

उत्तर— जिसका स्वभाव अन्य-पुरुषों के पास आना-जाना है, वह 'इत्वरिका' कहलाती है।

प्र. 5. *'परिगृहीता' कौन होती है?*

उत्तर— जिसका कोई एक पुरुष भर्ता हो, वह 'परिगृहीता' कहलाती है।

प्र. 6. *'अपरिगृहीता' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो व्यभिचारिणी होने से दूसरे पुरुषों के पास आती-जाती रहती है, जिसका कोई पुरुष स्वामी नहीं है, वह 'अपरिगृहीता' कहलाती है।

प्र. 7. *'अपरिगृहीत-इत्वरिकागमन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पतिरहित-व्यभिचारिणी स्त्रियों के यहाँ जाना-आना अपरिगृहीत-इत्वरिका-गमन है।

प्र. 8. *'परिगृहीत-इत्वरिका-गमन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पतिसहित-व्यभिचारिणी स्त्रियों के पास आना-जाना, लेन-देन रखना,

समभावपूर्वक बातचीत करना 'परिगृहीत-इत्वरिका-गमन' है।

प्र. 9. *'अनंग-क्रीड़ा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कामसेवन के लिए निश्चित-अंगों को छोड़कर अन्य-अंगों से काम-सेवन करना 'अनंग-क्रीड़ा' है।

प्र. 10. *'काम-तीव्राभिनिवेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कामसेवन की तीव्र-लालसा रखना, नाटक-सिनेमा देखने में अतिशय-आसक्तिभाव का होना 'काम-तीव्रभिनिवेश'-है।

प्र. 11. *विवाह पुत्र का होता है या कन्या का?*

उत्तर— विवाह कन्या का ही होता है।

प्र. 12. *एक बार जो वस्तु दान दी जा चुकी है, उसे पुनः दान दिया जा सकता है क्या?*

उत्तर— नहीं! दान दी गई वस्तु पुनः छूने योग्य भी नहीं, तो पुनः दान कैसे दी जा सकती है।

प्र. 13. *कन्या का पुनर्विवाह या विधवा-विवाह हो सकता है क्या?*

उत्तर— जो कन्या एक बार दान दी जा चुकी हो, वह पुनः दान के योग्य नहीं है; इसलिए कन्या का पुनर्विवाह और विधवा-विवाह दोनों ही आगम की अपेक्षा निषिद्ध हैं।

प्र. 14. *ब्रह्मचर्याणुव्रती टी.वी. सिनेमा देख सकता है क्या?*

उत्तर— टी.वी. सिनेमा में अश्लील-चित्रों के देखने से ब्रह्मचर्य-व्रत में दोष लगता है, इसलिए देख नहीं सकता। ✿✿

क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य-सुवर्ण-धन-धान्य-दासी-दास-कुप्य-प्रमाणातिक्रमाः ॥29॥

अर्थ — क्षेत्र और वस्तु के प्रमाण का अतिक्रम, धन और धान्य के प्रमाण का अतिक्रम, दासी और दास के प्रमाण का अतिक्रम तथा कुप्य के प्रमाण का अतिक्रम — ये परिग्रह-परिमाण-व्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'परिग्रह-परिणाम-व्रत' के पाँच-अतिचार कौन-से हैं?*

उत्तर— क्षेत्र-वास्तु-प्रमाणातिक्रम, हिरण्य-सुवर्ण-प्रमाणतिक्रम, धन-धान्य प्रमाणातिक्रम, दासी-दास प्रमाणातिक्रम, कुप्य-प्रमाणतिक्रम — ये पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'क्षेत्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— धान्य के उत्पत्ति-स्थान को 'क्षेत्र' कहते हैं।

प्र. 3. *'वास्तु' किसे कहते हैं?*

उत्तर— घर या मकान को 'वास्तु' कहते हैं।

प्र. 4. *'क्षेत्र-वास्तु-प्रमाणतिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— खेत तथा रहने के घरों के प्रमाण का उल्लंघन करना 'क्षेत्र-वास्तु प्रमाणातिक्रम' है।

प्र. 5. *'हिरण्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हिरण्य 'चाँदी' को कहते हैं।

प्र. 6. *'सुवर्ण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सुवर्ण 'सोने' को कहते हैं।

प्र. 7. *'हिरण्य-सुवर्ण-प्रमाणातिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चाँदी और सोने के प्रमाण का उल्लंघन करना 'हिरण्य-सुवर्ण-प्रमाणातिक्रम' है।

प्र. 8. *'धन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गाय, बैल, हाथी, रत्नाभूषण आदि को 'धन' कहते हैं।

प्र. 9. *'धान्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चावल, अनाज आदि को 'धान्य' कहते हैं।

प्र. 10. *'धन-धान्य-प्रमाणातिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गाय, भैंस तथा अनाजादि के प्रमाण का उल्लंघन करना 'धन-धान्य-प्रमाणातिक्रम' है।

प्र. 11. *'दास-दासी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— नौकर स्त्री-पुरुष को 'दास-दासी' कहते हैं।

प्र. 12. *'कुप्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रेशम, कपास और कोसा के वस्त्रों को 'कुप्य' कहते हैं।

प्र. 13. *'दास-दासी-प्रमाणातिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— नौकर-चाकरों के प्रमाण का उल्लंघन करना 'दास-दासी-प्रमाणातिक्रम' है।

प्र. 14. *'कुप्य-भांड-प्रमाणातिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वस्त्र बर्तन आदि के प्रमाण का उल्लंघन करना 'कुप्य-भाण्ड-प्रमाणातिक्रम' है।

प्र. 15. *'प्रमाणातिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किये गये प्रमाण का उल्लंघन 'प्रमाणातिक्रम' है। ✿✿

ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम-क्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यन्तराधानानि ।।30।।

अर्थ — ऊर्ध्वव्यतिक्रम, अधोव्यतिक्रम, तिर्यग्व्यतिक्रम, क्षेत्रवृद्धि और

स्मृत्यन्तराधान — ये दिग्व्रत के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'दिग्व्रत' के पाँच-अतिचार कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— ऊर्ध्वव्यतिक्रम, अधोव्यतिक्रम, तिर्यग्व्यतिक्रम, क्षेत्रवृद्धि, स्मृत्यन्तराधान — ये पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'ऊर्ध्वव्यतिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रमाण से अधिक ऊँचाईवाले पर्वतादि पर चढ़ना 'ऊर्ध्वव्यतिक्रम' है।

प्र. 3. *'अधोव्यतिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रमाण से अधिक नीचाईवाले कुयें आदि में उतरना 'अधोव्यतिक्रम' है।

प्र. 4. *'तिर्यग्-व्यतिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— समान-स्थान अर्थात् सुरंग आदि में मर्यादा से अधिक लम्बे जाना 'तिर्यगव्यतिक्रम' है।

प्र. 5. *'क्षेत्रवृद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दिशाओं का जो परिमाण किया है, लोभ में आकर उससे अधिक-क्षेत्र में जाने की इच्छा करना 'क्षेत्रवृद्धि' है।

प्र. 6. *'स्मृत्यन्तराधान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रमाण की हुई मर्यादा को भूल जाना 'स्मृत्यन्तराधान' है।

प्र. 7. *व्रतों में की गई मर्यादा का उल्लंघन या विस्मरण किस कारण होता है?*

उत्तर— मर्यादा का उल्लंघन या विस्मरण प्रमाद एवं मोह से होता है। ✿✿

आनयन-प्रेष्यप्रयोग-शब्दरूपानुपात-पुद्‌गलक्षेपा: ।।31।।

अर्थ — आनयन, प्रेष्यप्रयोग, शब्दानुपात, रूपानुपात, और पुद्‌गलक्षेप — ये 'देशव्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'देशव्रत' के पाँच-अतिचार कौन-से हैं?*

उत्तर— आनयन, प्रेष्यप्रयोग, शब्दानुपात, रूपानुपात, और पुद्‌गलक्षेप — ये पाँच 'देशव्रत' के अतिचार हैं।

प्र. 2. *'आनयन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने संकल्पित-देश में रहते हुए मर्यादा से बाहर के क्षेत्र की वस्तु को किसी के द्वारा मंगाना 'आनयन' है।

प्र. 3. *'प्रेष्य-प्रयोग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मर्यादा से बाहर के क्षेत्र में किसी को भेजकर काम करा लेना 'प्रेष्यप्रयोग' है।

प्र. 4. *'शब्दानुपात' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मर्यादा से बाहर-क्षेत्र में काम करनेवाले पुरुषों को लक्ष्य कर के ताली, चुटकी बजाकर, खांसी आदि इशारे से अपने अभिप्राय को समझा देना 'शब्दानुपात' है।

प्र. 5. *'रूपानुपात' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मर्यादा से बाहर रहनेवाले आदमियों को अपने शरीर के अंग मुँह आदि दिखाकर इशारा करना 'रूपानुपात' है।

प्र. 6. *'पुद्‌गल-क्षेप किसे कहते हैं?*

उत्तर— मर्यादा के बाहर कंकर-पत्थर आदि फेंककर अपना अभिप्राय समझाना 'पुद्‌गल-क्षेप' है।

प्र. 7. *व्रती-पुरुष मर्यादा के बाहर क्षेत्र में फोन पर बात करना पत्र-व्यवहार करना ठीक है या नहीं?*

उत्तर— मर्यादा के बाहर क्षेत्र में फोन पर बात करके कार्य सिद्ध कर लेना, पत्र-व्यवहार करके कार्य सिद्ध कर लेना व्रती के योग्य नहीं है, इससे उसके व्रत दूषित होते हैं।

प्र. 8. *मर्यादा के बाहर स्वयं न जाकर अन्य-उपायों से कार्य-सिद्ध करने से व्रती की किस भावना की क्षति होती है?*

उत्तर— व्रती संतोषी होता है, मर्यादा का उल्लंघन करने से उसके सन्तोष-गुण की क्षति होती है। ✿✿

कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्यासमीक्ष्याधिकरणोपभोग-परिभोगानर्थक्यानि ।।32।।

अर्थ — कन्दर्प, कौत्कुच्य, मौखर्य, असमीक्ष्याधिकरण और उपभोग-परिभोगानर्थक्य — ये 'अनर्थदण्डव्रत' के पाँच अतिचार हैं।

प्र. 1. *'अनर्थदण्डव्रत' के पाँच-अतिचार कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— कन्दर्प, कौत्कुच्य, मौखर्य, असमीक्ष्याधिकरण और उपभोग-परिभोग-आनर्थक्य — ये अनर्थदण्डव्रत के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'कन्दर्प' किसे कहते हैं?*

उत्तर— राग की अधिकता होने से हास्य के साथ अशिष्ट-वचन बोलना 'कन्दर्प' है।

प्र. 3. *'कौत्कुच्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हास्य और अशिष्ट-वचन के साथ शरीर से भी कुचेष्टा करना 'कौत्कुच्य' है।

प्र. 4. *'मौखर्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— धृष्टतापूर्वक बहुत अधिक बोलना 'मौखर्य' है।

प्र. 5. *'असमीक्ष्याधिकरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिना प्रयोजन मन-वचन-काय की अधिक-प्रवृत्ति करना 'असमीक्ष्याधिकरण' है।

प्र. 6. *'उपभोग-परिभोग-आनर्थक्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जितने उपभोग-परिभोग में अपना काम चल सकता हो, उससे अधिक संग्रह करना 'उपभोग-परिभोग-आनर्थक्य' है।

प्र. 7. *'अर्थक्य-अनर्थक्य' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— जितनी वस्तु की आवश्यकता है, वह 'अर्थक्य' है; इसके विपरीत आवश्यकता से अधिक रखना 'अनर्थक्य' है।

प्र. 8. *मिथ्यादृष्टियों के द्वारा रचित अनर्थक-काव्यादि का चिन्तन करना कौन-सा अतिचार है?*

उत्तर— मिथ्या-काव्यों का चिन्तन 'मनोगत-असमीक्ष्याधिकरण' नामक अतिचार है।

प्र. 9. *बिना प्रयोजन दूसरों को पीड़ा देनेवाले भण्ड-वचन बोलना कौन-सा अतिचार है?*

उत्तर— पीड़ाकारक-वचन बोलना 'वचनगत-असमीक्ष्याधिकरण' नामक अतिचार है।

प्र. 10. *बिना प्रयोजन सचित्त-अचित्त पुष्प आदि को छेदना, विष, अग्नि, शस्त्र आदि को देना कौन-सा अतिचार है।*

उत्तर— बिना प्रयोजन पुष्प फल आदि छेदना, सब 'कायगत-असमीक्ष्याधिकरण' अतिचार है।

✿✿

योग-दुष्प्रणिधानानादर-स्मृत्यनुपस्थानानि ।।33।।

अर्थ — काययोगदुष्प्रणिधान, वचनयोगदुष्प्रणिधान, मनोयोगदुष्प्रणिधान, अनादर और स्मृति का अनुपस्थान — ये 'सामायिक-व्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'सामायिक-व्रत' के पाँच-अतिचार कौन-से हैं?*

उत्तर— मनःदुष्प्रणिधान, वचन-दुष्प्राणिधान, काय-दुष्प्रणिधान, अनादर और स्मृत्यनुपस्थान — ये पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'मनःदुष्प्रणिधान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सामायिक के समय मन में अन्य-विकल्प ले आना, सामायिक में मन को न लगाना 'मनःदुष्प्रणिधान' है।

प्र. 3. *'वचन-दुष्प्रणिधान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सामायिक के मंत्र को अशुद्ध और जल्दी-जल्दी बोलना 'वचन-दुष्प्रणिधान' है।

प्र. 4. *'काय-दुष्प्रणिधान' किसे कहते हैं*

उत्तर— सामायिक के समय शरीर को निश्चल न रखना 'काय-दुष्प्रणिधान' है।

प्र. 5. *'अनादर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सामायिक में उत्साह का न होना, ज्यों-त्यों कर सामायिक को पूरा करना 'अनादर' है।

प्र. 6. *'स्मृत्यनुपस्थान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चित्त की चंचलता से पाठ वगैरह क्रियाओं को भूल जाना 'स्मृत्यनुपस्थान' है।

प्र. 7. *'योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन, वचन, काय की क्रिया से जो आत्मप्रदेशों में प्रकम्पन होता है, उसे 'योग' कहते हैं।

प्र. 8. *'योग-दुष्प्रणिधान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— योगों की दुष्ट-प्रवृत्ति को 'योगदुष्प्रणिधान' कहते हैं।

प्र. 9. *'दुष्ट-प्रवृत्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सामायिक के समय क्रोध, मान, माया और लोभ् सहित मन-वचन-काय की प्रवृत्ति 'दुष्टप्रवृत्ति' है। ✿✿

अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गाऽऽदान-संस्तरोपक्रमणानादर-स्मृत्यनुपस्थानानि ।।34।।

अर्थ — अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित भूमि में उत्सर्ग, अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित वस्तु का आदान, अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित संस्तर का उपक्रमण, अनादार और स्मृति का अनुपस्थान — ये 'प्रोषधोपवास-व्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'प्रोषधोपवास-व्रत' के पाँच-अतिचार कौन-से हैं?*

उत्तर— अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित-भूमि में उत्सर्ग, अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित-वस्तु का आदान, अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित-संस्तर का उपक्रमण, अनादर और स्मृति का अनुपस्थान — ये 'प्रोषधोवास-व्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'प्रत्यवेक्षित' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'यहाँ जीव हैं या नहीं' — इसप्रकार अपनी आँखों से देखना 'प्रत्यवेक्षित' है।

प्र. 3. *'प्रमार्जित' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कोमल-उपकरण पीछी आदि से झाड़ने को 'प्रमार्जित' कहते हैं।

प्र. 4. *'उत्सर्ग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मल-मूत्र आदि का छोड़ना 'उत्सर्ग' है।

प्र. 5. *अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित-भूमि में 'उत्सर्ग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिना देखी, बिना शोधी हुई जमीन में मल-मूत्र आदि करने को कहते हैं।

प्र. 6. *अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित-वस्तु का 'आदान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिना देख और बिना शोधे पूजा की सामग्री उपकरण और अपने पहनने के वस्त्र आदि उठा लेने को कहते हैं।

प्र. 7. *'अप्रत्यवेक्षित-अप्रमार्जित-संस्तरोपक्रमण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बिना देखी और बिना साफ की हुई भूमि पर चटाई वगैरह बिछाना, उस पर सोने को कहते हैं।

प्र. 8. *'अनादार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उपवास के कारण भूख-प्यास से पीड़ित होने से आवश्यक-क्रियाओं में उत्साह न होने को कहते हैं।

प्र. 9. *'स्मृत्यनुपस्थान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आवश्यक-क्रियाओं के भूल जाने को कहते हैं। ✿✿

सचित्त-सम्बन्ध-सम्मिश्राभिषव-दुष्पक्वाहाराः ॥35॥

अर्थ — सचित्ताहार, सम्बन्धाहार, सम्मिश्राहार, अभिषवाहार और दुःपक्वाहार — ये 'उपभोग-परिभोग-परिमाणव्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'उपभोग-परिभोग-परिमाणव्रत' के पाँच-अतिचार कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— सचित्त-आहार, सचित्त-सम्बन्धाहार, सचित्त-संमिश्र-आहार, अभिषव-आहार, दुःपक्व-आहार — ये पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'सचित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'चित्त' अर्थात् 'जीव'। जो चित्त-सहित है, वह 'सचित्त' कहलाता है।

प्र. 3. *'सचित्त-आहार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भूल से सचेतन हरे फल-फूल-पत्र वगैरह का खाना 'सचित्त-आहार' है।

प्र. 4. *'सचित्त-सम्बन्धाहार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सचित्त-पदार्थों से छुये, ढँके या उन पर रखे-पदार्थों को खाना 'सचित्त-सम्बन्धाहार' है।

प्र. 5. *'सचित्त-संमिश्र-आहार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सचित्त-पदार्थ से मिले हुए पदार्थ को खाना 'सचित्त-संमिश्र-आहार' है।

प्र. 6. *'सचित्त-सम्बन्ध' और 'सचित्त-संमिश्र' में क्या अंतर है?*

उत्तर— 'सचित्त-सम्बन्ध' में आहार को सचित्त से अलग किया जा सकता, किन्तु 'सचित्त-संमिश्र' में आहार सचित्त के साथ इसप्रकार मिश्रित हो जाता है, जिसे

अलग नहीं किया जा सकता ।

प्र. 7. *व्रती-गृहस्थ सचित्तादिक में प्रवृत्ति किस कारण से करता है?*

उत्तर— मोह, प्रमाद के कारण और पिपासा से आतुर हुआ सचित्त-विशिष्ट-पदार्थों में प्रवृत्ति करता है।

प्र. 8. *'अभिषवाहार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्रियों में मद उत्पन्न करनेवाले गरिष्ठ-पदार्थों को 'अभिषवाहार' कहते हैं।

प्र. 9. *'दुःपक्वाहार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ठीक रीति से नहीं पके हुए अधपके, अधिक पके, जले हुए भोजन को करना 'दुःपक्वाहार' है।

प्र. 10. *'अभिषव' और 'दुःपक्वाहार' का सेवन करने से क्या हानि है?*

उत्तर— अभिषव-आहार के सेवन से इन्द्रियों में मद की वृद्धि होती है, दुःपक्वाहार के सेवन से वातादि का प्रकोप, उदर-पीड़ा आदि रोगों में उत्पत्ति होती है। इससे व्रतों की हानि होती है। ✿✿

सचित्तनिक्षेपापिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः ॥36॥

अर्थ — सचित्तनिक्षेप, सचित्तापिधान, परव्यपदेश, मात्सर्य, और कालतिक्रम — ये 'अतिथि-संविभाग-व्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'अतिथि-संविभाग-व्रत' के पाँच-अतिचार कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— सचित्त-निक्षेप, सचित्त-अपिधान, पर-व्यपदेश, मात्सर्य, कालातिक्रम — ये 'अतिथि-संविभाग-व्रत के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'सचित्त-निक्षेप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सचित्त कमल या केले के पत्ते वगैरह पर रखकर आहारदान देना 'सचित्त-निक्षेप' है।

प्र. 3. *'अपिधान' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'अपिधान' का अर्थ ढँकना है।

प्र. 4. *'सचित्त-अपिधान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आहार को कमल-पत्र आदि से ढँक देना 'सचित्त-अपिधान' है।

प्र. 5. *'परव्यपदेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्वयं दान न देकर दूसरे से दिलवाना और दूसरे का द्रव्य उठाकर स्वयं दे देना 'परव्यपदेश' है।

प्र. 6. *यदि कोई व्यक्ति धन तो खर्च करता है, किन्तु स्वयं दान न करके दूसरों से*

दान कराता है, तो उस दान का फल क्या है?

उत्तर— अपना द्रव्य खर्च करके दूसरों से दान करानेवाले जीवों को धनादिक की प्राप्ति तो होती है; परन्तु उसको वह स्वयं नहीं भोगता, उसका भोक्ता दूसरा ही होता है।

प्र. 7. *कृत, कारित, अनुमोदना तीनों का फल बराबर है, फिर मात्र धन-खर्च करनेवाले को उचित-फल की प्राप्ति क्यों नहीं होती?*

उत्तर— पात्रदान, जिनपूजा और पुत्रोत्पत्ति — ये तीन कार्य स्वयं ही करने पर ही फलित होते हैं। हाँ, यदि कोई अपंग या रोगी-व्यक्ति है, तो वह दूसरों से पूजा-दान कराके उचित फल पा सकता है। तिर्यंच और मानव दान-पूजा की अनुमोदना करके उचित-फल पा सकता है।

प्र. 8. *स्वयं दानधर्म करने का फल क्या है?*

उत्तर— भोजन और भोजन की शक्ति, रति-शक्ति, स्त्री की प्राप्ति और दान-शक्ति — ये स्वयं दानधर्म करने के फल हैं।

प्र. 9. *'मात्सर्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आदरपूर्वक दान न देना, अन्य-दाताओं से ईर्ष्या करना 'मात्सर्य' है।

प्र. 10. *'कालातिक्रम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— योग्यकाल का उल्लंघन करना 'कालातिक्रम' है।

प्र. 11. *भिक्षा का काल कौन-सा होता है?*

उत्तर— सूर्योदय के तीन घड़ी पश्चात् एवं सूर्यास्त के तीन घड़ी पूर्व का काल 'भिक्षाकाल' है।

❖❖

जीवितमरणाशंसा-मित्रानुराग-सुखानुबंध-निदानानि ।।37।।

अर्थ — जीविताशंसा, मरणाशंसा, मित्रानुराग, सुखानुबन्ध, और निदान — ये 'सल्लेखना-व्रत' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 1. *'सल्लेखना-व्रत' के पाँच-अतिचार कौन-से हैं?*

उत्तर— जीविताशंसा, मरणाशंसा, मित्रानुराग, सुखानुबन्ध और निदान — ये 'सल्लेखना' के पाँच-अतिचार हैं।

प्र. 2. *'जीविताशंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पूजा, सेवा आदि देखकर जीने की इच्छा करना 'जीविताशंसा' है।

प्र. 3. *संसार में प्रत्येक व्यक्ति जीना चाहता है, फिर जीने की इच्छा को 'सल्लेखना का अतिचार' क्यों कहते हैं?*

उत्तर— निश्चय से यह शरीर नाशवान् है, हेय है; जब तक ये शरीर व्रतों को पालने में

सहायक है; तब तक इसमें रहना ठीक है; जब यह व्रतों में बाधक हो तब इसको छोड़ देना उचित है, तब अधिक समय जीने की चाह करना अतिचार है।

प्र. 4. *'मरणाशंसा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रोग आदि के कष्ट से घबराकर जल्दी मरने की इच्छा करना 'मरणांशसा-अतिचार' है।

प्र. 5. *कोई सल्लेखनाधारी असाध्य-वेदना से पीड़ित है, वह शीघ्र मरकर वेदना से बच जाता है, तो इसमें अतिचार है क्या?*

उत्तर— सल्लेखना का अर्थ जीवन-मरण में साम्यभाव है। वेदना या संक्लेश-परिणामों को समतापूर्वक जीतना चाहिए। कायर होकर मरने की इच्छा अतिचार है। मात्र मर जाने से पूर्वकृत-कर्म का फल नहीं छूटता, अगली पर्याय में भोगना पड़ता है।

प्र. 6. *'मित्रानुराग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मित्रों का अनुरागपूर्वक स्मरण करना 'मित्रानुराग' है।

प्र. 7. *'सुखानुबंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पूर्व में भोगे हुए सुखों का पुनःपुनः स्मरण करना 'सुखानुबंध' है।

प्र. 8. *'निदान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तपस्या के फल से अगामी काल में भोगों की चाह करना 'निदान' अतिचार है।

प्र. 9. *सम्यग्दृष्टि के भी मोक्ष की, दुःखों के नाश की, कर्मों के नाश की इच्छा होती है, तो क्या वह भी 'निदान' है?*

उत्तर— 'निदान दो प्रकार का होता है — प्रशस्त-निदान, अप्रशस्त-निदान। प्रशस्त-निदान सम्यग्दृष्टि के होता है, यह अनन्त-कर्म-बन्ध का कारण नहीं होता; जबकि मिथ्यादृष्टि का विषय-भोगरूप निदान अनन्त-कर्मबन्ध का कारण है। ✿✿

अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।।38।।

अर्थ — अनुग्रह के लिए अपनी वस्तु को देना दान है।

प्र. 1. *'अनुग्रह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्वयं अपना और दूसरे का उपकार करना 'अनुग्रह' है।

प्र. 2. *'दान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने और पर के उपकार के लिए धनादि का त्याग करना दान है।

प्र. 3. *'दान' देने से अपना उपकार कैसे होता है?*

उत्तर— दान देने से दाता को विशेष-पुण्य का संचय होता है। यह स्वयं पर उपकार है।

प्र. 4. *दान लेनेवाले को लज्जा का अनुभव होता है, फिर उससे पर का उपकार कैसे हैं?*

उत्तर— दान देने से पात्र के सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की वृद्धि रूप परोपकार होता है।

प्र. 5. *आहार आदि देने से मुनियों के रत्नत्रय की वृद्धि कैसे होती है?*

उत्तर— सरस-आहार देने से मुनियों के शरीर में शक्ति-आरोग्यता होती है; इससे ज्ञानाभ्यास, तीर्थवदंना आदि में प्रवृत्ति करते हैं।

प्र. 6. *दाता देयवस्तु को अन्य-दातार से दिला सकता है क्या?*

उत्तर— यदि दाता रोगादि से विवश है, तो वह अन्य से भी दिला सकता है।

प्र. 7. *दाता के द्वारा दिया जानेवाला द्रव्य कैसा होना चाहिए?*

उत्तर— दाता के द्वारा दिया जानेवाला द्रव्य शुद्ध, स्वच्छ और शास्त्रानुकूल होना चाहिए।

प्र. 8. *दान कितने प्रकार का है और कौन-कौन-सा है?*

उत्तर— दान चार प्रकार का है — आहार, औषधि, अभय और ज्ञान। ✿✿

विधि-द्रव्य-दातृ-पात्र-विशेषात्तद्विशेषः ॥39॥

अर्थ — विधि, देय-वस्तु, दाता और पात्र की विशेषता से उसकी दान की विशेषता है।

प्र. 1. *'पात्र-दान' में विशेषता किन कारणों से हैं?*

उत्तर— विधि, द्रव्य, दाता, और पात्र की विशेषता से दान में विशेषता होती है।

प्र. 2. *'विधि-विशेष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आदरपूर्वक, नवधाभक्ति से आहार देना 'विधि-विशेष' है।

प्र. 3. *'नवधाभक्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संग्रह, उच्चस्थान, पादोदक, अर्चन, प्रणाम, मन-वचन-काय-शुद्धि, एषणा-शुद्धिपूर्वक दान देना 'नवधाभक्ति' है।

प्र. 4. *'संग्रह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— "हे स्वामि! नमोऽस्तु-नमोऽस्तु, अत्र तिष्ठ अत्र तिष्ठ, आहार-जल-शुद्ध है" — ऐसा कहकर भक्ति-भावपूर्वक मुनि को बुलाना 'संग्रह' है।

प्र. 5. *'उच्चस्थान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उनको ऊँचे आसन पर बैठाना 'उच्चस्थान' है।

प्र. 6. *'पादोदक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रासुक-शुद्ध-जल से उनके चरण-धोना 'पादोदक' है।

प्र. 7. *'अर्चन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उनकी पूजा करना 'अर्चन' है,

प्र. 8. *'प्रणाम' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उन्हें नमस्कार करना 'प्रणाम' है।

प्र. 9. *'योगशुद्धि' क्या है?*

उत्तर— मन, वचन, काय की शुद्धि 'योगशुद्धि' है।

प्र. 10. *'एषणा-शुद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आहार की शुद्धि 'एषणा-शुद्धि' है।

प्र. 11. *'द्रव्य-विशेष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तप, स्वाध्याय आदि की वृद्धि में कारण ऐसे आहारादिक को द्रव्य-विशेष कहते हैं। गरिष्ठ, मादक-आहार नहीं देना चाहिये।

प्र. 12. *दाता कौन-से हैं?*

उत्तर— ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य — ये दाता होते हैं।

प्र. 13. *दाता-विशेष किसे कहते हैं?*

त्तर— श्रद्धा, भक्ति, अलोलुपता, अलोभी, दयावान, संतोष, क्षमावान, विवेकवान, सत्यपरायण — इन गुणों की विद्यमानता से दान के फल में विशेषता आती है। किसी से ईर्षा न करना, देते हुए खेद न होना दाता की विशेषता है।

प्र. 14. *पात्र-विशेष किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो सम्यक्चारित्र आदि गुणों से सहित हो — ऐसे मुनि आदि को पात्र-विशेष कहते हैं।

प्र. 15. *पात्र कितने प्रकार के हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— पात्र तीन प्रकार के हैं — उत्तम-पात्र, मध्यम-पात्र, जघन्य-पात्र।

प्र. 16. *'उत्तम-पात्र' कौन-से हैं?*

उत्तर— मुनि 'उत्तम-पात्र' हैं।

प्र. 17. *'मध्यम-पात्र' कौन-से हैं?*

उत्तर— आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, प्रतिमाधारी 'मध्यम-पात्र' हैं।

प्र. 18. *'जघन्य-पात्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अविरत-सम्यग्दृष्टि श्रावक-श्राविका 'जघन्य-पात्र' हैं।

प्र. 19. *'कुपात्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो जीव बिना सम्यग्दर्शन के बाह्य-व्रतसहित हो, वह 'कुपात्र' है।

प्र. 20. 'अपात्र' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो सम्यग्दर्शन से रहित और बाह्य-व्रत-चारित्र से भी रहित हो, वे 'अपात्र' हैं।

प्र. 21. योग्य-पात्र को विधिवत् दान दने का फल क्या है?

उत्तर— जिसप्रकार भूमि में बोया हुआ छोटा-सा वट का बीज प्राणियों को समय पर छाया देता है, उसीप्रकार थोड़ा-सा दान भी समय पर इष्ट-बहुफल देता है।

✿✿

अष्टम अध्याय

मिथ्यादर्शनाविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्धहेतवः ॥1॥

अर्थ — मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग — ये बन्ध के हेतु हैं।

प्र. 1. *'बन्ध के कारण' कौन-से हैं?*

उत्तर— मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग 'बन्ध के कारण' हैं।

प्र. 2. *'मिथ्यादर्शन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अतत्त्व के श्रद्धान को अर्थात् विपरीत-श्रद्धान को 'मिथ्यादर्शन' कहते हैं।

प्र. 3. *मिथ्यादर्शन कितने प्रकार का है और कौन-कौन-सा है?*

उत्तर— मिथ्यादर्शन दो प्रकार का है — अगृहीत-मिथ्यादर्शन, गृहीत-मिथ्यादर्शन।

प्र. 4. *'अगृहीत-मिथ्यादर्शन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मिथ्यात्व-कर्म के उदय से दूसरे के उपदेश के बिना ही अनादिकाल से लगा हुआ जो आत्मस्वरूप की भ्रान्तिरूप मिथ्यादर्शन होता है, उसे 'अगृहीत-मिथ्यादर्शन' कहते हैं।

प्र. 5. *'गृहीत-मिथ्यादर्शन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो मिथ्यात्व दूसरे के उपदेश से होता है, उसे 'गृहीत-मिथ्यात्व' कहते हैं।

प्र. 6. *'गृहीत-मिथ्यात्व' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— गृहीत-मिथ्यात्व के पाँच भेद हैं — एकान्त, विपरीत, संशय, विनय, अज्ञान।

प्र. 7. *'एकान्त-मिथ्यात्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनेकधर्मरूप वस्तु को एकधर्मरूप ही मानना 'एकान्त-मिथ्यात्व' है, जैसे — वस्तु सत् ही है या असत् ही है।

प्र. 8. *'विपरीत-मिथ्यात्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मा के व अन्य-वस्तु के स्वरूप को बिल्कुल विपरीत मानना, जैसे — हिंसा में धर्म मानना।

प्र. 9. *'संशय-मिथ्यात्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तत्त्व-श्रद्धान में संशय रहना, जैसे — धर्म का लक्षण हिंसा है या नहीं।

प्र. 10. *'विनय-मिथ्यात्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सब देवताओं को, सब धर्मों को और सब साधुओं को समान मानना।

प्र. 11. *'अज्ञान-मिथ्यात्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हित और अहित का विचार विवेक न होना 'अज्ञान-मिथ्यात्व' है।

प्र. 12. मिथ्यात्व को कैसे दूर किया जा सकता है?

उत्तर— देव, शास्त्र, गुरु का सच्चा-स्वरूप समझकर गृहीत-मिथ्यात्व से बचा जा सकता है, और जीवादि-तत्त्वों की सच्ची जानकारीपूर्वक आत्मानुभूति पाकर अगृहीत-मिथ्यात्व को दूर किया जा सकता है।

प्र. 13. 'अविरति' किसे कहते हैं?

उत्तर— छहकाय के जीवों की रक्षा न करना तथा पाँच इन्द्रियों व छठे मन को वश में नहीं रखना 'अविरति' है। अविरति के बारह-भेदरूप हैं, इसका दूसरा नाम 'असंयम' भी है।

प्र. 14. छह-काय में कौन-कौन-से जीव आते हैं?

उत्तर— पृथ्वीकाय, जलकाय, वायुकाय, अग्निकाय, वनस्पतिकाय व त्रसकाय।

प्र. 15. सभी प्रकार की अविरति किस जीव के पाई जाती है?

उत्तर— जिस जीव के अनन्तानुबन्धी और अप्रत्याख्यानावरण कषाय का उदय रहता है, उसके सभी प्रकार की अविरति पाई जाती है।

प्र. 16. 'प्रमाद' किसे कहते हैं?

उत्तर— अपने कर्तव्य में अनादरभाव को 'प्रमाद' कहते हैं।

प्र. 17. प्रमाद के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— प्रमाद के पन्द्रह भेद हैं — स्त्रीकथा, भोजनकथा, चोरकथा, राजकथा, क्रोध, मान, माया, लोभ, पाँच इन्द्रियों के विषय, निद्रा और स्नेह।

प्र. 18. वे कौन-से कार्य हैं, जिनमें आदर न करने से प्रमाद का दोष आता है?

उत्तर— 5 समिति, 3 गुप्ति, दसलक्षण धर्मादि को आदर से न करने से प्रमाद का दोष आता है।

प्र. 19. पाँच समिति, तीन गुप्तियों की शुद्धि कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर— विनयशुद्धि, कायशुद्धि, वचनशुद्धि, मनःशुद्धि, ईर्यापथशुद्धि, व्युत्सर्गशुद्धि, भैक्ष्यशुद्धि, शयनशुद्धि और आसनशुद्धि।

प्र. 20. 'कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो आत्मा को कसे अर्थात् चारों गतियों में भटकाकर दुःख दे, उसे 'कषाय' कहते हैं।

प्र. 21. कषाय के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— कपाय के पच्चीस-भेद हैं — अनंतानुबंधी-क्रोध-मान-माया-लोभ, अप्रत्याख्यान-क्रोध-मान-माया-लोभ, प्रत्याख्यान-क्रोध-मान-माया-लोभ, संज्वलन-क्रोध-मान-माया-लोभ और हास्य, रति, अरति, शोक, भय,

जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नंपुसकवेद।

प्र. 22. *कषाय कौन-से गुणस्थान तक पाई जाती है?*

उत्तर— कषाय 'मिथ्यात्व-गुणस्थान' से लेकर न्यूनाधिक-प्रमाण में दसवें-गुणस्थान तक पाई जाती है।

प्र. 23. *'योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन, वचन और काय के द्वारा आत्म-प्रदेशों का परिस्पंद होना 'योग' है।

प्र. 24. *'योग' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'योग' के पन्द्रह-भेद हैं — सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग, अनुभयमनोयोग, सत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, उभयवचनयोग, अनुभय-वचनयोग, औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियिक, वैक्रियिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र, और कार्मणकाययोग।

प्र. 25. *पहले गुणस्थान में बंध के पाँच-कारणों में से कौन-कौन-से होते हैं?*

उत्तर— 'मिथ्यात्व-गुणस्थान' में मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग — ये पाँचों ही बंध के कारण होते हैं।

प्र. 26. *दूसरे, तीसरे, चौथे-गुणस्थान में बंध के पाँच-कारणों में से कौन-कौन होते हैं?*

उत्तर— सासादन, मिश्र और अविरत-सम्यक्त्व नामक गुणस्थानों में मिथ्यात्व को छोड़कर अविरति, प्रमाद, कषाय और योग — ये चार बन्ध के कारण होते हैं।

प्र. 27. *पाँचवे-गुणस्थान में बन्ध के पाँच-कारणों में से कौन-कौन-से होते हैं?*

उत्तर— 'संयतासंयत' नाम के गुणस्थान में अविरति और विरति तो मिली हुई है; क्योंकि उसमें त्रस-हिंसा का त्याग तथा यथाशक्ति इन्द्रिय-निरोध होता है। प्रमाद कषाय और योग भी बंध के कारण होते हैं।

प्र. 28. *छठे-गुणस्थान में बंध के पाँच-कारणों में से कौन-कौन-से होते हैं?*

उत्तर— 'प्रमत्तसंयत' नामक छठे-गुणस्थान में प्रमाद, कषाय, योग — ये तीन बंध के कारण होते हैं।

प्र. 29. *साँतवें, आठवें, नौवे, दसवें-गुणस्थान में बंध के पाँच-कारणों में से कौन-कौन-से होते हैं?*

उत्तर— अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्मसाम्पराय नामक गुणस्थानों में 'कषाय' और 'योग' बंध के कारण होते हैं।

प्र. 30. *ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें-गुणस्थान में बंध के पाँच-कारणों में से कौन-कौन-से होते हैं?*

उत्तर— उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय और सयोगकेवलीजिन नामक 'गुणस्थान' में मात्र 'योग' बंध के कारण होता है।

प्र. 31. *चौदहवें-गुणस्थान में बंध के पाँच कारणों में से कौन-कौन-से होते हैं?*

उत्तर— अयोगकेवलीजिन नामक गुणस्थान में एक भी बंध का कारण नहीं है।

प्र. 32. *148 कर्म-प्रकृतियों में से कितनी कर्म-प्रकृतियों से बंध होता है?*

उत्तर— 148 कर्म-प्रकृतियों में से कुल 120 प्रकृतियों में बंध होता है। ✿✿

सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्‌गलानादत्ते स बन्धः ॥2॥

अर्थ — कषाय-सहित जीव कर्म के योग्य-पुद्‌गलों का जो ग्रहण करता है, वही 'बन्ध' है।

प्र. 1. *'बन्ध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जीव कषायसहित होने से कर्म के योग्य कार्मणवर्गणारूप पुद्‌गल-परमाणुओं का जो ग्रहण करता है, उसे 'बंध' कहते हैं।

प्र. 2. *जीव कर्म-पुद्‌गल-परमाणुओं को किसप्रकार ग्रहण करता है?*

उत्तर— जीव-जिस स्थान पर जब भी कषाय से संलग्न होता है व योग के द्वारा हलन-चलन करता है, तो सब ओर से कर्म-योग्य पुद्‌गलों को ग्रहण करता है; जैसे आग से तपा गर्म-लोहे का गोला पानी में गिरते ही सब ओर से पानी खींचता है।

प्र. 3. *जीव के नवीन-कर्मों का बंध किसप्रकार होता है?*

उत्तर— जीव और कर्म का सम्बन्ध अनादिकाल से है। पूर्वबद्ध-कर्म का उदय आने पर जीव में कषाय उत्पन्न होती है, और उससे नवीन-कर्मों का बंध होता है।

प्र. 4. *पहले सूत्र में कषाय को बंध का कारण कह चुके, तो पुन यहाँ 'सकषायत्वात्' कहकर कषाय को बंध का कारण क्यों कहा है?*

उत्तर— तीव्र, मन्द, मध्यम कषाय के भेदों से स्थितिबन्ध, अनुभाग भी तीव्र, मन्द, मध्यम होता है। इसी बात को स्पष्ट करने के पुनः 'सकषायत्वात्' पद को लिया है।

प्र. 5. *अमूर्तिक-आत्मा मूर्तिक-कर्म को ग्रहण कैसे करता है?*

उत्तर— अमूर्तिक-आत्मा कर्म को ग्रहण नहीं करता है। संसारी-अवस्था में जीव को उपचार से कर्मों का ग्रहण करनेवाला कहा गया है।

प्र. 6. *'जीव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो दस प्राणों को धारण करता है, जिसके आयु का सद्‌भाव होता है, वह

'जीव' है। जो ज्ञाता-दृष्टा है, उसे 'जीव' कहते हैं।

प्र. 7. *सूत्र में 'जीव' पद क्यों कहा है?*

उत्तर— आयुप्राण-सहित जीव के कर्मों को ग्रहण करता है, इसी को बताने के लिए सूत्र में 'जीव' पद ग्रहण किया है।

प्र. 8. *सूत्र में 'कर्मयोग्यान्' न कहकर 'कर्मणो योग्यान्' — ऐसा क्यों कहा है।*

उत्तर— जीव कर्म की वजह से सकषाय होता है और कषायसहित होने से योग्य-पुद्गलों को ग्रहण करता है — इससे यह सिद्ध होता है कि जीव और कर्म का सम्बन्ध अनादिकाल से है।

प्र. 9. *जीव और कर्म का बन्ध सादि मानने से क्या दोष आएगा?*

उत्तर— बन्ध को सादि मानने पर शुद्धि को धारण करनेवाले सिद्ध-जीव के समान संसारी-जीव के भी बन्ध का अभाव हो जाएगा।

प्र. 10. *जीव और कर्म का स्वभाव क्या है?*

उत्तर— जीव का स्वभाव रागादिरूप परिणमने का और कर्म का स्वभाव तद्रूप परिणमाने का है।

प्र. 11. *शरीर में जीव के अस्तित्व की सिद्धि कैसे होती है?*

उत्तर— अहंप्रत्यय से शरीर में विराजमान-जीव का अस्तित्व सिद्ध होता है। 'मैं' शब्द ही जीव का वाचक है।

प्र. 12. *जीव के साथ कर्म के अस्तित्व की सिद्धि कैसे होती है?*

उत्तर— संसार में अनन्त-जीव हैं; किसी के ज्ञान का क्षयोपशम की वृद्धि है, तो किसी के हानि; किसी के दरिद्रता, किसी के दु:ख — इत्यादि इन भिन्नताओं के देखने से कर्म का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है।

प्र. 13. *सूत्र में 'पुद्गल' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— पुद्गल का कर्म के साथ तादात्म्य दिखलाने के लिए 'पुद्गल' शब्द ग्रहण किया है।

प्र. 14. *जीवद्रव्य स्वतंत्र-द्रव्य होकर भी संसार में परिभ्रमण क्यों कर रहा है?*

उत्तर— जीवद्रव्य का स्वतंत्र-अस्तित्व होने पर भी अनादिकाल से वह कर्मों के आधीन हो रहा है, अत: वह संसार में परिभ्रमण कर रहा है। ✿✿

प्रकृति-स्थित्यनुभव-प्रदेशास्तद्विधयः ।।3।।

अर्थ — उस बन्ध के प्रकृति, स्थिति, अनुभव (अनुभाग) और प्रदेश — ये चार-भेद हैं।

प्र. 1. *'बंध' कितने प्रकार का होता है? और कौन-कौन-सा है?*

उत्तर— 'बंध' चार-प्रकार का होता है — प्रकृतिबंध, प्रदेशबंध, स्थितिबंध, और अनुभागबंध।

प्र. 2. *'प्रकृति-बंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों के स्वभाव को 'प्रकृति-बंध' कहते हैं। जैसे — ज्ञानावरणादि-कर्म 'प्रकृतिबंध' कहलाते हैं।

प्र. 3. *'स्थितिबंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ज्ञानावरणादि-कर्म अपने स्वभावरूप से जितने जीव के प्रदेशों के साथ समय तक निबद्ध रहें, वह 'स्थितिबंध' है।

प्र. 4. *'अनुभागबंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों में जो तीव्र या मंद फल देने की शक्ति है, उसे 'अनुभागबंध' कहते हैं।

प्र. 5. *'प्रदेशबंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ज्ञानावरणादि-कर्मरूप से होनेवाले पुद्गल-स्कन्धों के परमाणुओं की जो संख्या है, उसे 'प्रदेशबंध' कहते हैं

प्र. 6. *ये चारों-बंध किस कारण होते हैं?*

उत्तर— प्रकृति-बंध और प्रदेश-बंध 'योग' से होते हैं और स्थितिबंध तथा अनुभागबंध 'कषाय' से होते हैं।

प्र. 7. *कौन-सा आस्रव चार-बन्धरूप में देखा जाता है?*

उत्तर— साम्परायिक-आस्रव से जो भी कर्म बँधता है, उसे हम प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश — इन चार-रूपों में देखते हैं।

प्र. 8. *चारों-प्रकार का बंध कौन-से गुणस्थान तक होता है?*

उत्तर— चारों-प्रकार का बंध प्रथम गुणस्थान से दसवें-गुणस्थान तक होता है।

प्र. 9. *ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें-गुणस्थान में कौन-सा बंध होता है?*

उत्तर— ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें-गुणस्थान में सातावेदनीय का बंध होता है, पर वहाँ कषाय न होने से स्थिति-अनुभाग का बंध नहीं होता, योग के रहने से प्रकृति और प्रदेश का बंध होता है।

प्र. 10. *प्रकृति, प्रदेश, स्थिति व अनुभाग-बंध कौन-कौन-से गुणस्थान तक होते हैं?*

उत्तर— प्रकृति-प्रदेश-बंध प्रथम-गुणस्थान से तेरहवें-गुणस्थान तक होते हैं, तथा स्थिति, अनुभाग दसवें-गुणस्थान तक ही होते हैं।

प्र. 11. *'अयोग-केवली-गुणस्थान' में कौन-सा बन्ध होता है?*

उत्तर— 'अयोग-केवली-गुणस्थान' में योग और कषाय के अभाव में बंध का भी

अभाव होता है।

प्र. 12. *सिद्ध-भगवान् बंधरहित क्यों होते हैं?*

उत्तर— सिद्ध भगवानों के कषाय एवं योग — दोनों बन्ध-कारणों का अभाव होने से बन्धरूप-कार्य का भी अभाव हो जाता है। ✿✿

आद्यो ज्ञानदर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयायुर्नाम-गोत्रान्तरायाः॥4॥

अर्थ — पहला अर्थात्-'प्रकृतिबंध' ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय-रूप है।

प्र. 1. *'प्रकृति-बंध' के कितने भेद हैं? और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'प्रकृति-बंध' के आठ-भेद हैं — ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र, अन्तराय-कर्म।

प्र. 2. *'आवरण' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— आवरण का अर्थ 'ढँकना' है, अर्थात् जो आवृत्त करता है, वह आवरण कहलाता है।

प्र. 3. *'ज्ञानावरण-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आत्मा के ज्ञान गुण को ढँके, उसे 'ज्ञानावरण-कर्म' कहते हैं।

प्र. 4. *'दर्शनावरण-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आत्मा के दर्शन-गुण को ढँके, उसे 'दर्शनावरण-कर्म' कहते हैं।

प्र. 5. *'वेदनीय-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीवों को सुख-दुःख होता है, उसे 'वेदनीय-कर्म' कहते हैं।

प्र. 6. *'मोहनीय-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीव अपने स्वरूप को भूलकर पर को अपना समझने लगे, उसे 'मोहनीय-कर्म' कहते हैं।

प्र. 7. *'आयुकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आत्मा को नरक, तिर्यंच, मनुष्य, देवों के शरीर में रोके, उसे 'आयुकर्म' कहते हैं।

प्र. 8. *'नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीरादि की रचना हो, उसे 'नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 9. *'गोत्रकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीव ऊँच-नीच कुल में उत्पन्न हो, उसे 'गोत्रकर्म' कहते हैं।

प्र. 10. *'अन्तराय-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य में विघ्न आए उसे 'अन्तराय-कर्म' कहते हैं।

प्र. 11. *इन आठ-कर्मों में से किस कर्म के द्वारा नवीन-कर्मों का बंध होता है?*

उत्तर— केवल मोहनीय-कर्म के उदय से ही नवीन-कर्मों का बंध होता है।

प्र. 12. *अष्ट-कर्मों के दो भेद कौन-से हैं?*

उत्तर— अष्ट-कर्मों के 'घातिया' और 'अघातिया' — ये दो भेद हैं।

प्र. 13. *'घातिया-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ये आत्मा के स्वाभाविक-गुणों (अनुजीवी) को प्रकट नहीं होने देते अर्थात् आत्मा के अनुजीवी-गुणों को घातते हैं, वे 'घातिया-कर्म' हैं।

प्र. 14. *'घातिया-कर्म' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय — ये चार 'घातिया-कर्म' हैं।

प्र. 15. *'अघातिया-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आत्मा के अनुजीवी-गुणों को नहीं घातते, उनको 'अघातिया-कर्म' कहते हैं।

प्र. 16. *'अघातिया-कर्म' कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— वेदनीय, आयु, नाम और गोत्र — ये 'अघातिया-कर्म' हैं।

प्र. 17. *घातिया-कर्मों की कितनी प्रकृतियाँ हैं और कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— घातिया-कर्मों की प्रकृति दो-प्रकार की है — सर्वघाती, देशघाती।

प्र. 18. *सर्वघाती-प्रकृति कौन-कौन सी है?*

उत्तर— केवलज्ञानावरण, केवलदर्शनावरण, पाँच-निद्रा, अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान — ये बारह-कषायें और मिथ्यात्व-प्रकृति — ये सब मिलाकर बीस-सर्वघाती प्रकृतियाँ हैं।

प्र. 19. *'देशघाती-प्रकृतियाँ' कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— ज्ञानावरण की चार (केवलज्ञान को छोड़कर), दर्शनावरण की तीन (चक्षु, अचक्षु, अवधि) सम्यक्त्व-प्रकृति, संज्वलन-कषाय की चार, हास्यादि नोकषाय और अन्तराय की पाँच — ये छब्बीस देशघाती-प्रकृतियाँ हैं।

प्र. 20. *केवल विभावरूप आत्म-परिणामों के द्वारा ग्रहण किये गए पुद्गल ज्ञानावरणादि अनेक-भेदों को कैसे प्राप्त करते हैं?*

उत्तर— जिसप्रकार एक बार खाए गए अन्न का जिसप्रकार रस, रुधिर आदि रूप से अनेक-प्रकार का परिणमन होता है, उसीप्रकार एक आत्म-परिणाम के द्वारा ग्रहण किए गये पुद्गल ज्ञानावरणादि अनेक-भेदों को प्राप्त होता है। ✿✿

पञ्च-नव-द्व्यष्टाविंशति-चतुर्द्विचत्वारिंशद्-द्वि-पञ्च-भेदा यथाक्रमम् ॥5॥

अर्थ — आठ मूल-प्रकृतियों के अनुक्रम से पाँच, नौ, दो, अट्ठाईस, चार, बयालीस, दो और पाँच-भेद हैं।

प्र. 1. *'प्रकृति-बंध' के उत्तर-भेद कितने हैं?*

उत्तर— ज्ञानावरण की पाँच, दर्शनावरण की नौ, वेदनीय की दो, मोहनीय की अट्ठाईस, आयु की चार, नाम की तिरानवे, गोत्र की दो, अन्तराय की पाँच — इसप्रकार 148 कर्म-प्रकृतियाँ हैं। ✿✿

मति-श्रुतावधि-मनःपर्यय-केवलानाम् ॥6॥

अर्थ — मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान — इनको आवरण करनेवाले पाँच-ज्ञानावरण कर्म हैं।

प्र. 1. *ज्ञानावरण-कर्म के कितने भेद हैं? और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— ज्ञानावरण-कर्म के पाँच-भेद हैं – मतिज्ञानावर्ण, श्रुतज्ञानावर्ण, अवधिज्ञानावर्ण मनःपर्ययज्ञानावर्ण और केवलज्ञानावर्ण।

प्र. 2. *'मतिज्ञानावरण' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— जो मतिज्ञान को प्रकट न होने दे, उसे 'मतिज्ञानावरण' कहते हैं।

प्र. 3. *'श्रुतज्ञानावरण' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— जो श्रुतज्ञान को प्रगट न होने दे, उसे 'श्रुतज्ञानावरण' कहते हैं।

प्र. 4. *'अवधिज्ञानावरण' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— जो अवधिज्ञानप्रकट न होने दे, उसे 'अवधिज्ञानावरण' कहते हैं।

प्र. 5. *'मनःपर्ययज्ञानावरण' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— जो मनःपर्ययज्ञान प्रकट न होने दे, उसे 'मनःपर्ययज्ञानावरण' कहते हैं।

प्र. 6. *'केवलज्ञानावरण' का लक्षण क्या है?*

उत्तर— जो केवलज्ञान को प्रकट न होने दे, उसे 'केवलज्ञानावरण' कहते हैं।

प्र. 7. *पाँचों ज्ञानावरण-कर्म किन-किन जीवों में पाये जाते हैं?*

उत्तर— भव्य और अभव्य दोनों प्रकार के जीवों में पाँचों ज्ञानावरण-कर्म पाये जाते हैं।

प्र. 8. *अभव्य-जीव के मनःपर्ययज्ञान व केवलज्ञान की शक्ति होती है या नहीं?*

उत्तर— द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा से अभव्य के भी दोनों ज्ञानों की शक्ति है; किन्तु पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा से नहीं है।

प्र. 9. *अभव्यजीव के भी दोनों ज्ञान-शक्तियाँ हैं, तो भव्य और अभव्य का भेद कैसे है?*

उत्तर— शक्ति के होने और न होने से भव्य और अभव्य का भेद नहीं है, किन्तु शक्ति के प्रकट होने की अपेक्षा से भव्य-अभव्य का भेद है।

प्र. 10. *ज्ञान के आठ भेद हैं या पाँच?*

उत्तर— पाँच ही भेद हैं। मति, श्रुत और अवधिज्ञान मिथ्यात्व के उदय में विपरीत हो जाने के कारण कुमति, कुश्रुत और कुअवधि कहलाने लगते हैं। ✿✿

चक्षुरचक्षुरवधि-केवलानां निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचला-प्रचला-स्त्यानगृद्धयश्च ।।7।।

अर्थ — चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और केवलदर्शन — इन चारों के चार-आवरण तथा निद्रा, निद्रा-निद्रा, प्रचला, प्रचला-प्रचला और स्त्यानगृद्धि — ये पाँच-निद्रादिक — इसप्रकार नौ-दर्शनावरण हैं।

प्र. 1. *'दर्शनावरण-कर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— दर्शनावरण कर्म के नौ-भेद हैं — चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रा, निद्रा-निद्रा, प्रचला, प्रचला-प्रचला, और स्त्यानगृद्धि।

प्र. 2. *'चक्षु-दर्शनावरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चक्षु-इन्द्रिय के निमित्त से जो 'दर्शन' होता है, उसे जो प्रकट न होने दें, उसे 'चक्षुदर्शनावरण' कहते हैं।

प्र. 3. *'अचक्षुदर्शनावरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— नेत्र के सिवाय बाकी इन्द्रियों और मन के निमित्त से होनेवाले प्रतिभास को 'अचक्षुदर्शन' कहते हैं, और जो उसे प्रकट न होने दे, उसे 'अचक्षुदर्शनावरण' कहते हैं।

प्र. 4. *'अवधिदर्शनावरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अवधिज्ञान से पहले होनेवाले सामान्य-प्रतिभास को 'अवधिदर्शन' कहते हैं और जो अवधिदर्शन का आवरण करे, उसे 'अवधिदर्शनावरण' कहते हैं।

प्र. 5. *'केवलदर्शनावरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— केवलज्ञान के साथ-साथ होनेवाले सामान्य-प्रतिभास को 'केवलदर्शन' कहते हैं और जो केवलदर्शन को प्रगट न होने दे, उसे 'केवलदर्शनावरण' कहते हैं।

प्र. 6. *'निद्रा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मद, खेद और परिश्रमजन्य थकावट को दूर करने के लिए नींद लेना 'निद्रा' है।

प्र. 7. *'निद्रा-दर्शनावरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सामान्य-निद्रा जिस कर्म के उदय से आती है, उसे 'निद्रा-दर्शनावरण' कहते हैं।

प्र. 8. *'निद्रा-निद्रा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गहरी नींद को, जिसमें जीव का आँखें खोलना अशक्य होता है, उसे 'निद्रा-निद्रा' कहते हैं।

प्र. 9. *'निद्रा-निद्रा-दर्शनावरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से जीव को नींद पर नींद आती है, वह अपनी आँखें नहीं खोल पाता, उसे 'निद्रा-निद्रा-दर्शनावरण' कहते हैं।

प्र. 10. *'प्रचला-दर्शनावरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से प्राणी कुछ जागता है, और कुछ सोता है, उसे 'प्रचला-दर्शनावरण' कहते हैं।

प्र. 11. *'प्रचला-प्रचला-दर्शनावरण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से सोते समय मुख से लार बहती है और कुछ अंगोपांग भी चलते हैं तथा सुई आदि चुभाने पर भी चेत नहीं होता, उसे 'प्रचला-प्रचला-दर्शनावरण' कहते हैं।

प्र. 12. *'स्त्यानगृद्धि' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से नींद में ही अपनी शक्ति से बाहर कोई काम कर डाले और जागने पर मालूम भी न हो कि क्या किया है, उसे 'स्त्यानगृद्धि' दर्शनावरण कहते हैं।

प्र. 13. *दर्शन के चार-भेद होते हैं, किन्तु यहाँ दर्शनावरण नौ-प्रकार का क्यों कहा है?*

उत्तर— संसारी-जीव के पहले दर्शनोपयोग होता है, फिर ज्ञान। और निद्रा आदिक दर्शन के न होने देने में बाधक हैं, इसलिए इन पाँचों को भी दर्शनावरण में लिया है। ✿✿

सदसद्वेद्ये ॥8॥

अर्थ — सद्वेद्य (सातावेदनीय) और असद्वेद्य (असातावेदनीय) — ये दो वेदनीय हैं।

प्र. 1. *'वेदनीय-कर्म' के दो भेद कौन-से हैं?*

उत्तर— सद्वेद्य अर्थात् सातावेदनीय और असद्वेद्य अर्थात् असाता-वेदनीय।

प्र. 2. *'साता-वेदनीय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से देव आदि गतियों में शारीरिक और मानसिक-सुख प्राप्त हो, उसे 'सातावेदनीय' कहते हैं।

प्र. 3. *'असातावेदनीय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से नरकादि गतियों में तरह-तरह के मानसिक व शारीरिक-दुःखों का अनुभव हो, उसे 'असातावेदनीय' कहते हैं। ❀❀

दर्शन-चारित्र-मोहनीयाकषाय-कषायवेदनीयाख्यास्त्रि-द्वि-नव-षोडशभेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदुभयान्यकषाय-कषायौ हास्य-रत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः।।9।।

अर्थ — दर्शनमोहनीय, चारित्रमोहनीय, अकषायवेदनीय और कषाय-वेदनीय इनके क्रम से तीन, दो, नौ और सोलह भेद हैं। सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और तदुभय — ये तीन दर्शनमोहनीय हैं। अकषायवेदनीय और कषायवेदनीय — ये दो चारित्र-मोहनीय हैं। हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुंवेद और नपुंसकवेद — ये नौ 'अकषायवेदनीय' है। तथा अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन — इनके प्रत्येक के क्रोध, मान, माया और लोभ के भेद से सोलह 'कषायवेदनीय' हैं।

प्र. 1. *मोहनीय-कर्म के दो भेद कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'दर्शन-मोहनीय' और 'चारित्र-मोहनीय' मोहनीय-कर्म के दो भेद हैं।

प्र. 2. *'दर्शन-मोहनीय' कर्म के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— दर्शन-मोहनीय-कर्म के तीन भेद हैं — सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और सम्यक्मिथ्यात्व।

प्र. 3. *'दर्शन-मोहनीय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आत्मा के सम्यक्त्व गुण का घात करता है, उसे 'दर्शन-मोहनीय' कहते हैं।

प्र. 4. *'मिथ्यात्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीव सर्वज्ञ के द्वारा कहे गए मार्ग से विमुख हो, उसे 'मिथ्यात्व' कहते हैं।

प्र. 5. *'सम्यक्त्व-प्रकृति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से सम्यग्दर्शन में दोष उत्पन्न हो उसे 'सम्यक्त्व-प्रकृति' है।

प्र. 6. *'सम्यग्मिथ्यात्व' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से मिले हुए दही-गुड़ के स्वाद की तरह उभयरूप (सम्यक्त्व और मिथ्यात्व) श्रद्धान होता है, उसे 'सम्यग्मिथ्यात्व' कहते हैं।

प्र. 7. *'चारित्र-मोहनीय-कर्म' के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— 'चारित्र-मोहनीय-कर्म' के दो भेद हैं — 'अकषाय-वेदनीय' और 'कषाय-वेदनीय'।

प्र. 8. *'अकषाय-वेदनीय' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अकषाय-वेदनीय' के नौ-भेद हैं — हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद।

प्र. 9. *'चारित्र-मोहनीय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से आत्मा के चारित्र-गुण का घात होता है, उसे 'चारित्र-मोहनीय' कहते हैं।

प्र. 10. *'हास्य-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से हँसी आती है, उसे 'हास्य-कर्म' कहते हैं।

प्र. 11. *'रति-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से इष्ट विषयों में आसक्ति/प्रीति होती है, उसे 'रति' कहते हैं।

प्र. 12. *'अरति-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से अनिष्ट-विषयों में द्वेष उत्पन्न हो, उसे 'अरति-कर्म' कहते हैं।

प्र. 13. *'शोक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से रंज होता है, उसे 'शोक' कहते हैं।

प्र. 14. *'भय-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से भय लगता है, उसे 'भय' कहते हैं।

प्र. 15. *'जुगुप्सा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से ग्लानि होती है, उसे 'जुगुप्सा' कहते हैं।

प्र. 16. *'स्त्रीवेद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से पुरुष से रमने की इच्छा होती है, उसे 'स्त्रीवेद' कहते हैं।

प्र. 17. *'पुरुषवेद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से स्त्री से रमने की इच्छा होती है, उसे 'पुरुषवेद' कहते हैं।

प्र. 18. *'नपुंसकवेद' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से स्त्री-पुरुष दोनों से रमने की इच्छा होती है, उसे 'नपुंसकवेद' कहते हैं।

प्र. 19. 'कषायवेदनीय-कर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'कषायवेदनीय-कर्म' के सोलह-भेद हैं — अनंतानुबंधी-क्रोध, मान, माया, लोभ; अप्रत्याख्यानावरण-क्रोध, मान, माया, लोभ; प्रत्याख्यानावरण-क्रोध, मान, माया लोभ; और संज्वलन-क्रोध, मान, माया, लोभ।

प्र. 20. अनंतानुबंधी-क्रोध, मान, माया लोभ का स्वरूप (लक्षण) क्या है?

उत्तर— ये चौकड़ी आत्मा के चारित्र-गुण को घातती है, साथ ही अनंत-संसार का कारण है और सम्यग्दर्शन को प्रगट नहीं होने देती है।

प्र. 21. अप्रत्यख्यानावरण-क्रोध, मान, माया, लोभ का स्वरूप (लक्षण) क्या है?

उत्तर— जिसके उदय से थोड़ा-सा देशचारित्ररूप भाव भी प्रगट नहीं होता है।

प्र. 22. प्रत्याख्यानावरण-क्रोध, मान, माया, लोभ का स्वरूप (लक्षण) क्या है?

उत्तर— जिसके उदय से जीव के सकलचारित्ररूप भाव नहीं होते हैं।

प्र. 23. संज्वलन-क्रोध, मान, माया, लोभ का स्वरूप (लक्षण) क्या है?

उत्तर— जिसके उदय से शुद्धोपयोगरूप यथाख्यात चारित्र प्रगट नहीं होता है।

प्र. 24. 'क्रोध-कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से अपने और पर के घात करने के परिणाम हो और पर के उपकार करने के अभावरूप भाव व क्रूरभाव हो, उसे 'क्रोध-कषाय' कहते हैं।

प्र. 25. 'मान-कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से जाति, कुल, बल, ऐश्वर्य, विद्या, रूप, तप और प्रभुता के गर्व से उद्धतरूप तथा अन्य से नम्रीभूत न होने के परिणाम हो, उसे 'मान-कषाय' कहते हैं।

प्र. 26. 'माया-कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से दूसरे को धोखा देने और ठगने के लिए मन-वचन-काय में कुटिलता आये, उसे 'माया-कषाय' कहते हैं।

प्र. 27. 'लोभ-कषाय' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से अपने उपकारक-द्रव्यों में अभिलाषा-वाञ्छा हो, उसे 'लोभ-कषाय' कहते हैं।

प्र. 28. 'अनंतानुबंधी-क्रोध' के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?

उत्तर— अनंतानुबंधी-क्रोध के कारण जीव का क्रोध पाषाण की लकीर के समान होता है, इससे जीव के 'नरकायु' का बंध होता है।

प्र. 29. 'अप्रत्याख्यान-क्रोध' के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?

उत्तर— 'अप्रत्याख्यान-क्रोध'के कारण जीव का क्रोध पृथ्वी की लकीर के समान होता है, इससे जीव के 'तिर्यञ्चायु' का बंध होता है।

प्र. 30. *'प्रत्याख्यान-क्रोध'के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?*

उत्तर— प्रत्याख्यान-क्रोध के कारण जीव का क्रोध धूल की रेखा के समान होता है इससे जीव के 'मनुष्यायु' का बंध होता है।

प्र. 31. *'संज्वलन-क्रोध'के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?*

उत्तर— सज्वंलन के कारण जीव का क्रोध जल की रेखा के समान होता है, इससे जीव के 'देवायु' का बंध होता है।

प्र. 32. *'अनन्तानुबंधी-मान'के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?*

उत्तर— 'अनन्तानुबंधी-मान'के कारण जीव का मान पाषाण के स्तम्भ जैसा होता है, जो टूट तो जाए, पर झुके नहीं; इससे जीव को 'नरकायु' का बंध होता है।

प्र. 33. *'अप्रत्याख्यान-मान' के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?*

उत्तर— अप्रत्याख्यान-मान के कारण जीव का मान हड्डी जैसा होता है, जो किसी कारण-विशेष से कुछ काल के पीछे झुक जाए और इससे 'तिर्यञ्चायु' का बंध होता है।

प्र. 34. *'प्रत्याख्यान-मान' के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?*

उत्तर— प्रत्याख्यान-मान के कारण जीव का मान नये काठ जैसा जो नमने का कारण मिलने पर थोड़े ही काल में झुक जाए और इससे 'मनुष्यायु' का बंध होता है।

प्र. 35. *'संज्वलन-मान' के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?*

उत्तर— संज्वलन-मान के कारण जीव का मान बेल की डंडी जैसा होता है, जो तत्काल झुक जाता है, इससे 'देवायु' का बंध होता है।

प्र. 36. *'अनंतानुबंधी-माया' के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?*

उत्तर— अनंतानुबंधी-माया के कारण जीव में बांस की जड़ की कुटिलता होती है, इससे 'नरकायु' का बंध होता है।

प्र. 37. *'अप्रत्याख्यान-माया' के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?*

उत्तर— 'अप्रत्याख्यान-माया' के कारण जीव में मेंढे के सींग की तरह कुटिलता होती है, इससे 'तिर्यञ्चायु' का बंध होता है।

प्र. 38. *'प्रत्याख्यान-माया' के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है।*

उत्तर— प्रत्याख्यान- माया के कारण जीव में गोमूत्र की तरह कुटिलता होती है, इससे 'मनुष्यायु' का बंध होता है।

प्र. 39. *'संज्वलन-माया' के कारण जीव की कैसी अवस्था होती है?*

उत्तर— 'संज्वलन-माया' के कारण जीव की अवस्था चमरी-गाय के केश की तरह या लेखनी के टेढ़ेपन की तरह होती है, इससे 'देवायु' का बंध होता है।

प्र. 40. *'अनन्तानुबंधी-लोभ' के कारण जीव की कैसी कषाय होती है?*

उत्तर— 'अनन्तानुबंधी-लोभ' के कारण जीव की कषाय किरमिच के रंग के समान होती है, इससे 'नरकायु' का बंध होता है।

प्र. 41. *'अप्रत्याख्यान-लोभ' के कारण जीव की कषाय कैसी होती है?*

उत्तर— अप्रत्याख्यान-लोभ के कारण जीव की कषाय काजल के रंग के सदृश होती है, इससे 'तिर्यञ्चायु' का बंध होता है।

प्र. 42. *'प्रत्याख्यान-लोभ' के कारण जीव की कषाय कैसी होती है?*

उत्तर— 'प्रत्याख्यान-लोभ' के कारण जीव की कषाय कीचड़ के रंग-सदृश होती है, इससे 'मनुष्यायु' का बंध होता है।

प्र. 43. *'संज्वलन-लोभ' के कारण जीव की कषाय कैसी होती है?*

उत्तर— 'संज्वलन-लोभ' के कारण जीव की कषाय हल्दी के रंग सदृश होती है, इससे 'देवायु' का बंध होता है।

प्र. 44. *इन चारों कषायों की वासना का काल कितना होता है?*

उत्तर— 'अनन्तानुबंधी' का संख्यात-असंख्यात-अनन्तभव, 'अप्रत्याख्यान' का 6 माह, 'प्रत्याख्यान' का 15 दिन, 'संज्वलन' का अन्तर्मुहूर्त वासनाकाल है।

प्र. 45. *'वासनाकाल' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उदय का अभाव होते हुए भी कषाय का संस्कार जितने काल तक रहे, उसका नाम 'वासनाकाल' है। ✿✿

नारक-तैर्यग्योन-मानुष-दैवानि ॥10॥

अर्थ — नरकायु, तिर्यंचायु, मनुष्यायु और देवायु — ये चार आयुकर्म के भेद हैं।

प्र. 1. *आयु-कर्म के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— आयु-कर्म के चार भेद हैं — नरकायु, तिर्यंचायु, मनुष्यायु और देवायु।

प्र. 2. *'नरकायु' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीव नारकी के शरीर में रुका रहे, उसे 'नरकायु' कहते हैं।

प्र. 3. *'तिर्यंचायु' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीव तिर्यंच के शरीर में रुका रहे, उसे 'तिर्यंचायु' कहते हैं।

प्र. 4. *'मनुष्यायु' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीव मनुष्य के शरीर में रुका रहे, उसे 'मनुष्यायु' कहते हैं।

प्र. 5. *'देवायु' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीव देव के शरीर में रुका रहे, उसे 'देवायु' कहते हैं।

प्र. 6. *'आयुकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दस-प्राणों में आयु-प्राण मुख्य है। इसके सद्भाव में जीवन और अभाव में मरण हो, वह 'आयुकर्म' है।

प्र. 7. *भव-धारण करने का मुख्य-कारण क्या है?*

उत्तर— भव धारण करने का मुख्य-कारण 'आयुकर्म' है।

प्र. 8. *चारों-आयु में कौन-सी आयु अशुभ और कौन-सी शुभ है?*

उत्तर— तीन-आयु तिर्यंच, मनुष्य, देव आयु शुभ हैं तथा नरक-आयु अशुभ है।

प्र. 9. *तिर्यंच-आयु को 'शुभ' क्यों माना है।*

उत्तर— तिर्यंच-आयु में कोई जाना नहीं चाहता, अतः यह अशुभ है; परन्तु तिर्यंच-आयु में सम्यग्दर्शन के निमित्त मिलना संभव है, इसलिए 'शुभ' है।

प्र. 10. *नरकायु को 'अशुभ' क्यों कहा है?*

उत्तर— नरकायु में कोई जाना नहीं चाहता, यदि कर्मोदय से जाना पड़े, तो वहाँ जीव प्रतिपल मरना ही चाहता है तथा सम्यक्त्व के निमित्त भी वहाँ दुर्लभ हैं, इसलिए 'अशुभ' है। ✿✿

गति-जाति-शरीरांगोपांग-निर्माण-बंधन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गंध-वर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघात-परघातातपोद्योतोच्छ्वास-विहायोगतयः प्रत्येकशरीर-त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय-यशःकीर्तिः सेतराणि तीर्थंकरत्व च ॥11॥

अर्थ — गति, जाति, शरीर, अंगोपांग, निर्माण, बन्धन, संघात, संस्थान, संहनन, स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण, आनुपूर्व्य, अगुरुलघु, उपघात, परघात, आतप, उद्योत, उच्छ्वास, और विहायोगति तथा इन सबकी प्रतिपक्षभूत-प्रकृतियों के साथ अर्थात् साधारण-शरीर और प्रत्येक-शरीर, स्थावर और त्रस, दुर्भग और सुभग, दुःस्वर और सुस्वर, अशुभ और शुभ, बादर और सूक्ष्म, अपर्याप्त और पर्याप्त, अस्थिर और स्थिर, अनादेय और आदेय, अयशःकीर्ति और यशःकीर्ति एवं तीर्थंकरत्व -- ये तिरानवे (93) नामकर्म के भेद हैं।

प्र. 1. *'गति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीव एक-भव से दूसरे-भव में गमन करे, वह 'गति-

नामकर्म' है। यह चार-प्रकार का होता है — नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति और देवगति।

प्र. 2. *'नरकगति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से आत्मा को नरकगति प्राप्त हो, उसे 'नरकगति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 3. *'तिर्यंचगति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से आत्मा को तिर्यंच-गति प्राप्त हो, उसे 'तिर्यंचगति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 4. *'मनुष्यगति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से आत्मा को मनुष्यगति प्राप्त हो, उसे 'मनुष्यगति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 5. *'देवगति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से आत्मा को देवगति प्राप्त हो, उसे 'देवगति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 6. *'जाति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म उदय से जीव नरकादि-गतियों में अव्यभिचाररूप समानता से एकरूपता को प्राप्त हो, वह 'जाति-नामकर्म' है।

प्र. 7. *'जाति-नामकर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'जाति-नामकर्म' के पाँच-भेद हैं — एकेन्द्रिय-जाति, द्वीन्द्रिय-जाति, त्रीन्द्रिय-जाति, चतुरिन्द्रिय-जाति और पञ्चेन्द्रिय-जाति नामकर्म।

प्र. 8. *'एकेन्द्रिय-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से जीव एकेन्द्रिय में पैदा हो, उसे 'एकेन्द्रिय-जाति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 9. *'द्वीन्द्रिय-जाति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से जीव द्वीन्द्रिय में पैदा हो, उसे 'द्वीन्द्रिय-जाति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 10. *'त्रीन्द्रिय-जाति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से जीव त्रीन्द्रिय में पैदा हो, उसे 'त्रीन्द्रिय-जाति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 11. *'चतुरिन्द्रिय-जाति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से जीव चतुरिन्द्रिय में पैदा हो, उसे 'चतुरिन्द्रिय जाति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 12. 'पंचेन्द्रिय-जाति-नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिस कर्म के उदय से जीव पंचेन्द्रिय में पैदा हो, उसे 'पंचेन्द्रिय-जाति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 13. 'शरीर-नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से शरीर की रचना हो, उसे 'शरीर-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 14. 'शरीर-नामकर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— इसके पाँच-भेद हैं — औदारिक, वैक्रियिक, आहारक, तैजस्, कार्मण।

प्र. 15. 'औदारिक-शरीर-नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से औदारिक-शरीर की रचना हो, उसे 'औदारिक-शरीर-नामकर्म' कहते हैं। ये शरीर मनुष्य और तिर्यंचों के होते हैं।

प्र. 16. 'वैक्रियिक-शरीर-नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से वैक्रियिक-शरीर की उत्पत्ति हो, उसे 'वैक्रियिक-शरीर-नामकर्म' कहते हैं। ये शरीर देव और नारकियों के होते हैं।

प्र. 17. 'आहारक-शरीर-नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से आहारक-शरीर की उत्पत्ति हो, उसे 'आहारक-शरीर-नामकर्म' कहते हैं। सूक्ष्म-पदार्थों को जानने के लिए केवली के पास भेजने के लिए मुनि के मस्तक से जो एक हाथ का सफेद-रंग का पुलता निकलता है, उसे 'आहारक्र-शरीर' कहते हैं।

प्र. 18. 'तैजस्-शरीर-नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से तैजस्-शरीर की उत्पत्ति हो, उसे 'तैजस्-शरीर-नामकर्म' कहते हैं। तैजस्-वर्गणा से बने हुए शरीर को 'तैजस्-शरीर' कहते हैं।

प्र. 19. 'कार्मण-शरीर-नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर-- जिसके उदय से कार्मण-शरीर की उत्पत्ति हो, उसे 'कार्मण-शरीर-नामकर्म' कहते हैं। ज्ञानावर्णादि आठ-कर्मों के समूह को 'कार्मण-शरीर' कहते हैं।

प्र. 20. 'अंगोपां.-नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से दो हाथ, दो पैर, नितम्ब, पीठ, हृदय, मस्तक, आँख, नाक आदि की रचना हो, उसे 'अंगोपांग-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 21. 'अंगोपांग-नामकर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— 'अंगोपांग-नामकम' के तीन-भेद हैं — औदारिक-अंगोपांग, वैक्रियिक-अंगोपांग, और आहारक-अंगोपांग।

प्र. 22. 'औदारिक-अंगोपांग-नामकर्म' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसके उदय से औदारिक-अंगोपांग की रचना हो, उसे 'औदारिक-अंगोपांग-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 23. *'वैक्रियिक-अंगोपांग-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से वैक्रियिक-अंगोपांग की रचना हो, उसे 'वैक्रियिक-अंगोपांग-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 24. *'आहारक-अंगोपांग-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से आहारक-अंगोपांग की रचना हो, उसे 'आहारक-अंगोपांग-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 25. *'निर्माण-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से अंगोपांग की यथास्थान और यथाप्रमाण रचना होती है, उसे 'निर्माण-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 26. *'बंधन-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म कें उदय से ग्रहण किए हुए औदारिक आदि शरीर के परमाणु आपस में मिले रहें, उसे 'बंधन-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 27. *'संघात-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से औदारिक आदि शरीर के परमाणु बिना छिद्र के आपस में मिले रहें, वह 'संघात-नामकर्म' है।

प्र. 28. *'संस्थान-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसकर्म के उदय से शरीर की आकृति बने, उसे 'संस्थान-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 29. *'संस्थान-नामकर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'संस्थान-नामकर्म' के छह-भेद हैं — समचतुरस्र, न्यग्रोधपरिमंडल, स्वाति, वामन, कुब्जक, हुंडक।

प्र. 30. *'समचतुरस्र-संस्थान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से शरीर की आकृति बिल्कुल ठीक आकार में सन्तुलित बनती है, उसे 'समचतुरस्र-संस्थान' कहते हैं।

प्र. 31. *'न्यग्रोधपरिमंडल-संस्थान-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से जीव का शरीर वट-वृक्ष की तरह नाभि से नीचे पतला और ऊपर मोटा हो, उसे 'न्यग्रोधपरिमंडल-संस्थान-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 32. *'स्वाति-संस्थान-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से जीव का शरीर नीचे मोटा व ऊपर पतला होता है,

जैसे सर्प की बाँवी।

प्र. 33. *'कुब्जक-संस्थान-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर कुबड़ा होता है, उसे 'कुब्जक-संस्थान-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 34. *'वामन-संस्थान-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से शरीर बौना होता है, उसे 'वामन-संस्थान-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 35. *'हुंडक-संस्थान-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से शरीर विषम, बेडौल, आकार का बने, उसे 'हुंडक-संस्थान-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 36. *'संहनन-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसकर्म के उदय से हड्डियों के बंधन में विशेषता हो, उसे 'संहनन-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 37. *'संहनन-नामकर्म' के कितने भेद हैं, और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'संहनन-नामकर्म' के छह-भेद हैं — वज्रवृषभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलक, असंप्राप्तसृपाटिका।

प्र. 38. *'वज्रवृषभनाराच-संहनन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से वृषभ (वेष्टन) नाराच (कीलें) और संहनन (हड्डियाँ) वज्र की तरह अभेद्य हों, उसे 'वज्रवृषभनाराच-संहनन' कहते हैं।

प्र. 39. *'वज्र-नाराच-संहनन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से हड्डियाँ और कील वज्र की तरह हो और वेष्टन सामान्य हो, उसे 'वज्रनाराच-संहनन' कहते हैं।

प्र. 40. *'नाराच-संहनन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से हड्डियों के जोड़ों में कीली लगी रहती हो, उसे 'नाराच-संहनन' कहते हैं।

प्र. 41. *'अर्द्धनाराच-संहनन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से हड्डियों की सन्धियाँ अर्धकीलित हों, उसे 'अर्द्धनाराच-संहनन' कहते हैं।

प्र. 42. *'कीलक-संहनन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से हड्डियाँ परस्पर में ही कीलित हों अर्थात् अलग से कील न हो, वह 'कीलक-संहनन' है।

प्र. 43. *'असंप्राप्तसृपाटिका-संहनन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जुदी-जुदी हड्डियाँ नसों से बंधी हुई रहती हैं, उसे 'असंप्राप्तसृपाटिका-संहनन' कहते हैं।

प्र. 44. *'स्पर्श-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर में स्पर्श की उत्पत्ति हो, उसे 'स्पर्श-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 45. *स्पर्श के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— स्पर्श के आठ भेद हैं — स्निग्ध-रूक्ष, शीत-उष्ण, मृदु-कठोर, लघु-गुरु।

प्र. 46. *'रस-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर में प्रतिनियत-रस हो, उसे 'रस-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 47. *'रस-नामकर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'रस-नामकर्म' के पाँच-भेद हैं — अम्ल, मधुर, कुटु, तिक्त, कषैला।

प्र. 48. *'गंध-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर में गंध की उत्पत्ति हो, उसे 'गंध-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 49. *'वर्ण-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर में वर्ण अर्थात् रूप हो, उसे 'वर्ण-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 50. *'वर्ण-नामकर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'वर्ण-नामकर्म' के पाँच-भेद हैं — कृष्ण, नील, पीत, रक्त, श्वेत।

प्र. 51. *'आनुपूर्व्य-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से विग्रहगति में आत्मा के प्रदेश मरण से पहले के शरीर के आकार के रहे, उसे 'आनुपूर्व्य-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 52. *'आनुपूर्व्य-नामकर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'आनुपूर्व्य-नामकर्म' के चार भेद हैं — नरकगत्यानुपूर्व्य, तिर्यग्गत्यानुपूर्व्य, मनुष्यगत्यानुपूर्व्य, देवगत्यानुपूर्व्य।

प्र. 53. *'नरकगत्यानुपूर्व्य-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस समय मनुष्य या तिर्यंच मरकर के नरकगति की ओर जाते हैं, तो मार्ग में उनकी आत्मा के प्रदेशों का आकार वैसा ही बना रहता है, जैसा उनका मरण से पूर्व शरीर का आकार था; वह 'नरकगत्यानुपूर्व्य-नामकर्म' है।

प्र. 54. *'आनुपूर्व्य-कर्म' का उदय किस गति में होता है?*

उत्तर— इस कर्म का उदय 'विग्रह-गति' में ही होता है।

प्र. 55. *'अगुरुलघु-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर न तो लोहे के गोले की तरह भारी हो, और न आक

की रुई की तरह हल्का हो, उसे 'अगुरुलघु-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 56. *'उपघात-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से अपने ही घात करनेवाले अंग-उपांग या वात-पित्तादि हों, जैसे बारहसिंघा के सींग आदि; उसे 'उपघात-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 57. *'परघात-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से दूसरों के घात करनेवाले अंग-उपांग हों, जैसे पैने सींग, नख, डंक आदि, उसे 'परघात-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 58. *'आतप-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से आतपकारी-शरीर हो, उसे 'आतप-नामकर्म' कहते हैं। इनका उदय सूर्य के विमानों में स्थित बादर-पर्याप्त-पृथ्वीकायिक-जीवों के होता है, अन्य के नहीं, जैसे — सूर्य की किरणें।

प्र. 59. *'उद्योत-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शीतल-चमकरूप-शरीर हो, उसे 'उद्योत-नामकर्म' कहते हैं। इसका उदय चन्द्र-विमानों के पृथ्वीकायिक-जीवों में एवं जुगनू, सिंह, बिल्ली आदि के होता है।

प्र. 60. *'उच्छ्वास-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से 'श्वास-उच्छ्वास' की क्रिया होती है, उसे 'उच्छ्वास-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 61. *'विहायोगति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से विहाय (आकाश) में गमन हो, उसे 'विहायोगति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 62. *'विहायोगति-नामकर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं।*

उत्तर— 'विहायोगति-नामकर्म' के दो भेद हैं — प्रशस्त, अप्रशस्त।

प्र. 63. *'प्रशस्त-विहायोगति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हाथी, बैल आदि की सुन्दर-गति को 'प्रशस्त-विहायोगति-नामकर्म' कहते हैं?

प्र. 64. *'अप्रशस्त-विहायोगति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ऊँट, गधे आदि की कुटिल-गति को 'अप्रशस्त-विहायोगति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 65. *'प्रत्येकशरीर-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से एक शरीर का स्वामी एक जीव हो, उसे 'प्रत्येकशरीर-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 66. *'साधारणशरीर-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से एक शरीर में अनेक जीव हों, उसे 'साधारणशरीर-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 67. *'त्रस-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से द्वीन्द्रिय आदि जीवों में जन्म हो, उसे 'त्रस-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 68. *'स्थावर-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से एकेन्द्रियों में जन्म हो, वह 'स्थावर-नामकर्म' है।

प्र. 69. *'सुभग-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से दूसरे जीव अपने से प्रीति करे, उसे 'सुभग-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 70. *'दुर्भग-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से कुरूप होने के कारण दूसरे अपने से प्रीति न करें, अर्थात् घृणा करें, उसे 'दुर्भग-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 71. *'सुस्वर-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से स्वर अच्छा हो, जो दूसरों को प्रिय लगे, उसे 'सुस्वर-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 72. *'दुस्वर-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से अप्रिय-स्वर हो, उसे 'दुस्वर-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 73. *'शुभ-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर के अवयव सुन्दर हों, उसे 'शुभ-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 74. *'अशुभ-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर के अवयव सुन्दर न हों, उसे 'अशुभ-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 75. *'सूक्ष्म-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से ऐसा सूक्ष्म-शरीर हो, जो न स्वयं दूसरे शरीर से रुके, न दूसरे को रोके, उसे 'सूक्ष्म-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 76. *'बादर-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से दूसरे को रोकने योग्य तथा दूसरे से रुकने योग्य स्थूल-शरीर हो, उसे 'बादर-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 77. *'पर्याप्ति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से अपने-अपने योग्य यथासंभव आहार आदि पर्याप्तियों की पूर्णता हो, उसे 'पर्याप्ति-नामकर्म' कहते हैं। इसके छह-भेद हैं — आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मनःपर्याप्ति।

प्र. 78. *'अपर्याप्ति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से पर्याप्तियों की पूर्णता नहीं होती और मरण हो जाए, उसे 'अपर्याप्ति-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 79. *'स्थिर-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस कर्म के उदय से शरीर के धातु व उपधातु अपने अपने-अपने नियत स्थान पर हो, उसे 'स्थिर-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 80. *'अस्थिर-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर के धातु और उपधातु अपने-अपने ठिकाने पर नहीं रहते हैं, जरा-सी सर्दी-गर्मी लग जाने से शरीर म्लान हो जाता है, उसे 'अस्थिर-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 81. *'आदेय-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर प्रभासहित हो, उसे 'आदेय-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 82. *'अनादेय-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से शरीर प्रभारहित हो, उसे 'अनादेय-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 83. *'यशःकीर्ति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से संसार में जीव का यश फैले, उसे 'यशःकीर्ति-नामकर्म' कहते हैं?

प्र. 84. *'अयशःकीर्ति-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से संसार में अपयश फैले, वह 'अयशःकीर्ति-नामकर्म' है।

प्र. 85. *तीर्थंकर-नामकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से अचिन्त्य-विभूति-सहित अरिहंत-पद के साथ धर्मतीर्थ का प्रवर्तन हो, उसे 'तीर्थंकर-नामकर्म' कहते हैं।

प्र. 86. *प्राणापान-पर्याप्ति से उच्छ्वास प्रकट हो जाता है, फिर 'श्वासोच्छ्वास-प्रकृति' को अलग क्यों लिया है?*

उत्तर— श्वासोच्छ्वास-पर्याप्ति कारणरूप है और श्वासोच्छ्वास-प्रकृति कार्यरूप है।

प्र. 87. *तैजस्-शरीर से ही प्रभा हो जाती है, फिर 'आदेय-प्रकृति' को क्यों लिया है?*

उत्तर— तैजस्-शरीर सभी संसारी-जीवों के होता है, किन्तु सभी जीवों में समान प्रभा देखने में नहीं आती, इसलिए विशेष-विशेष प्रभा 'आदेय-नामकर्म' से होती है। ✿✿

उच्चैर्नीचैश्च ॥12॥

अर्थ — उच्चगोत्र और नीचगोत्र — ये दो गोत्रकर्म के भेद हैं।

प्र. 1. *'गोत्रकर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संतान-क्रम से चले आये जीव के आचरण को 'गोत्रकर्म' कहते हैं।

प्र. 2. *'गोत्रकर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'गोत्रकर्म' के दो भेद हैं — उच्च-गोत्र और नीच-गोत्र।

प्र. 3. *'उच्च-गोत्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से लोकमान्य-कुल में देह-धारण करे, उसे 'उच्च-गोत्र' कहते हैं।

प्र. 4. *'नीच-गोत्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से जीव लोक निंद्य-कुल में देह-धारण करे, उसे 'नीच-गोत्र' कहते हैं।

प्र. 5. *'उच्च-गोत्र' किसका होता है?*

उत्तर— देवों, भोग-भूमि के मनुष्यों मात्र के ही 'उच्च-गोत्र' होता है।

प्र. 6. *'नीच-गोत्र' किसका होता है?*

उत्तर— नारकियों और तिर्यचों मात्र के ही 'नीच-गोत्र' होता है।

प्र. 7. *उच्च और नीच-गोत्र किसके होता है?*

उत्तर— कर्मभूमि के मनुष्यों के उच्च और नीच — दोनों गोत्र होते हैं। ✿✿

दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणाम् ॥13॥

अर्थ — दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य — ये पाँच अन्तराय-कर्म हैं।

प्र. 1. *'अन्तराय-कर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अन्तराय का अर्थ 'रोक' अथवा 'बाधा' है; जो कर्म दान-लाभ आदि में विघ्न डाले, उसे 'अन्तराय-कर्म' कहते हैं।

प्र. 2. *'अन्तराय-कर्म' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अन्तराय-कर्म' के पाँच-भेद हैं — दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, और वीर्यान्तराय।

प्र. 3. *'दानान्तराय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से दान देना चाहे और देने की वस्तु भी हो, तो भी दान न कर सके, उसे 'दानान्तराय' कहते हैं।

प्र. 4. *'लाभान्तराय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से प्रयत्न करते हुए भी लाभ की प्राप्ति न हो, उसे 'लाभान्तराय' कहते हैं।

प्र. 5. *'भोगान्तराय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से भोग्य-वस्तु होते हुए भी भोग न सके, उसे 'भोगान्तराय' कहते हैं।

प्र. 6. *'उपभोगान्तराय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उपभोग्य-वस्तु होते हुए भी उपभोग न कर सके, उसे 'उपभोगान्तराय' कहते हैं।

प्र. 7. *'भोग' और 'उपभोग' किन्हें कहते हैं?*

उत्तर— जो एक बार भोगने से नष्ट हो जाए, उसे 'भोग' कहते हैं, जैसे — भोजन, तैल आदि, तथा जिन्हें बार-बार उपयोग में लाये जा सकें, जैसे — गहने, वस्त्र आदि वस्तुयें 'उपभोग' कहलाती हैं।

प्र. 8. *'वीर्यान्तराय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसके उदय से बल-प्राप्ति के साधन मिलते हुए भी बल-शक्ति न हो उसे 'वीर्यान्तराय' कहते हैं।

प्र. 9. *'स्थिति-बंध' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'स्थिति-बंध' के दो-भेद हैं — उत्कृष्ट, जघन्य।

प्र. 10. *'उत्कृष्ट-स्थितिबंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक समय के बंधे हुए कर्मों का आत्मा के साथ अधिक-से-अधिक काल तक सम्बन्ध 'उत्कृष्ट-स्थितिबंध' है।

प्र. 11. *'जघन्य-स्थितिबंध' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक समय के बंधे हुए कर्मों का आत्मा के साथ कम-से-कम काल तक सम्बन्ध को 'जघन्य-स्थितिबंध' कहते हैं। ✿✿

आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्-सागरोपम-कोटीकोट्यः परा स्थितिः ।।14।।

अर्थ — आदि की तीन प्रकृतियाँ अर्थात् ज्ञानावरण, दर्शनावरण, और वेदनीय तथा अन्तराय — इन चार की उत्कृष्ट-स्थिति 'तीस-कोटाकोटि-सागरोपम' है।

प्र. 1. *ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय तथा अन्तराय-कर्म की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— इन चारों की उत्कृष्ट-स्थिति 'तीस-कोटाकोटि-सागरोपम' है।

प्र. 2. *इन चारों की उत्कृष्ट-स्थिति के बंधक जीव कौन-से हैं?*

उत्तर— अति तीव्र-संक्लेश परिणामों में मिथ्यादृष्टि, संज्ञी, पञ्चेन्द्रिय, पर्याप्तक-जीव 'तीस-कोटाकोटि-सागरोपम' की उत्कृष्ट-स्थिति बाँधते हैं। ✿✿

सप्ततिर्मोहनीयस्य ।।15।।

अर्थ — मोहनीय की उत्कृष्ट-स्थिति 'सत्तर-कोटाकोटि-सागरोपम' है।

प्र. 1. मोहनीय-कर्म की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?

उत्तर— मोहनीय-कर्म की उत्कृष्ट-स्थिति 'सत्तर-कोडाकोडी-सागर' की है।

प्र. 2. मोहनीय-कर्म की उत्कृष्ट-स्थिति के बंधक जीव कौन-से हैं?

उत्तर— मोहनीय-कर्म की उत्कृष्ट-स्थिति मिथ्यादृष्टि, संज्ञी-पञ्चेन्द्रिय-पर्याप्तक-जीव ही बाँधते हैं। ✿✿

विंशतिर्नाम-गोत्रयोः ॥16॥

अर्थ — नाम और गोत्र की उत्कृष्टस्थिति 'बीस-कोटाकोटि-सागरोपम' है।

प्र. 1. नाम और गोत्रकर्म की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?

उत्तर— नामकर्म और गोत्रकर्म की उत्कृष्ट-स्थिति 'बीस-कोटाकोटि-सागरोपम' है।

प्र. 2. नाम और गोत्रकर्म की उत्कृष्ट-स्थिति के बधंक-जीव कौन-से हैं?

उत्तर— नाम और गोत्रकर्म की उत्कृष्ट-स्थिति का बंधक मिथ्यादृष्टि संज्ञी-पंचेन्द्रिय पर्याप्तक-जीवों के ही होता है, अन्य के नहीं। ✿✿

त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाण्यायुषः ॥17॥

अर्थ — आयु की उत्कृष्ट-स्थिति तैंतीस-सागरोपम है।

प्र. 1. आयुकर्म की उत्कृष्ट-स्थिति कितनी है?

उत्तर— आयुकर्म की उत्कृष्ट-स्थिति 'तैतीस-सागरोपम-प्रमाण' है।

प्र. 2. आयुकर्म की उत्कृष्ट-स्थिति के बंधक जीव कौन-से हैं?

उत्तर— यह उत्कृष्ट-स्थितिबंध संज्ञी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्तक मिथ्यादृष्टि और सम्यग्दृष्टि दोनों के होता है। ✿✿

अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ॥18॥

अर्थ — वेदनीय-कर्म की जघन्य-स्थिति 'बारह-मुहूर्त' है।

प्र. 1. वेदनीय-कर्म की जघन्य-स्थिति कितनी है?

उत्तर— वेदनीय-कर्म की जघन्य-स्थिति .ारह-मुहूर्त है अर्थात् 9 घंटे 36 मिनट है। ✿✿

नामगोत्रयोरष्टौ ॥19॥

अर्थ — नाम और गोत्र की जघन्य-स्थिति आठ-मुहूर्त है।

प्र. 1. नाम और गोत्र-कर्म की जघन्य-स्थिति कितनी है?

उत्तर— नाम और गोत्र-कर्म की जघन्य-स्थिति आठ-मुहूर्त है, अर्थात् 6 घंटे 24 मिनट है।

प्र. 2. *वेदनीय-नाम और गोत्र-कर्मों की जघन्य-स्थिति का बंध कब होता है?*

उत्तर— इनका बंध 'क्षपक-श्रेणी' में 'सूक्ष्म-साम्पराय' नामक दसवें-गुणस्थान में ही होता है। ✿✿

शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ।।20।।

अर्थ — बाकी के पाँच-कर्मों की जघन्य-स्थिति अन्तर्मुहूर्त है।

प्र. 1. *शेष-कर्मों की जघन्य-स्थिति कितनी है?*

उत्तर— शेष-कर्मों की जघन्य-स्थिति अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है।

प्र. 2. *मोहनीय-कर्म की जघन्य-स्थिति कब बंधती है?*

उत्तर— मोहनीय-कर्म की जघन्य-स्थिति नौवें-गुणस्थान में बंधती है।

प्र. 3. *आयुकर्म की जघन्य-स्थिति कब बंधती है?*

उत्तर— आयुकर्म की जघन्य-स्थिति संख्यात-वर्ष की आयुवाले कर्मभूमि के मनुष्यों और तिर्यंचों के ही बंधती हैं।

प्र. 4. *ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अंतराय-कर्मों की जघन्य-स्थिति कब बंधती है?*

उत्तर— ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अंतराय-कर्मों की जघन्य-स्थिति का बंध 'क्षपक-श्रेणी' के दसवें-गुणस्थान में होता है। ✿✿

विपाकोऽनुभवः ।।21।।

अर्थ — 'विपाक' अर्थात् विविध-प्रकार के फल देने की शक्ति का पड़ना ही 'अनुभव' है।

प्र. 1. *'अनुभव' (अनुभाग) किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'विपाक' अर्थात् विविध-प्रकार के फल देने की शक्ति का पड़ना ही 'अनुभाग' है।

प्र. 2. *'विपाक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— (विशिष्ट) नानाप्रकार के 'पाक' यानि 'उदय' को 'विपाक' कहते हैं।

प्र. 3. *'अनुभाग' के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— 'अनुभाग' के दो भेद हैं — स्वमुख से, परमुख से।

प्र. 4. *'स्वमुख-फलोदय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो कर्म जिस प्रकृतिरूप बंधे, उसका उसी रूप में उदय आकर फल देना,

'स्वमुख-फलोदय' है।

प्र. 5. *'परमुख-फलोदय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो कर्म जिस प्रकृतिरूप बंधे, उसका उससे अन्य-प्रकृतिरूप होकर फल देना, 'परमुख-फलोदय' है।

प्र. 6. *स्वमुख से अनुभाग किन-किन प्रकृतियों का होता है?*

उत्तर— सब मूल-प्रकृतियों का अनुभव स्वमुख से ही होता है। आयु, दर्शनमोहनीय, चारित्र-मोहनीय — इनका अनुभव स्वमुख से ही होता है। नरकायु के मुख से तिर्यंचायु या मनुष्यायु का विपाक नहीं होता और दर्शनमोह, चारित्रमोहरूप से और चारित्रमोह-दर्शनमोह रूप से विपाक को प्राप्त नहीं होता है।

प्र. 7. *परमुख से उदय किन प्रकृतियों का आता है?*

उत्तर— आयु, दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय के सिवा तुल्यजातीय-प्रकृतियों का अनुभव परमुख से प्रवृत्त होता है। ✿✿

स यथानाम् ॥22॥

अर्थ — वह जिस कर्म का जैसा नाम है, उसके अनुरूप होता है।

प्र. 1. *कर्मों का फल कैसा होता है?*

उत्तर— जिस कर्म का जैसा नाम है, उसके अनुरूप ही फल होता है।

प्र. 2. *ज्ञानावरण-कर्म का विपाक क्या है?*

उत्तर— ज्ञानावरण-कर्म के पाँच-भेद हैं, उनका फल है उस-उस ज्ञान का अभाव करना। यह ज्ञानावरण का विपाक है, ज्ञानावरण का फल है, ज्ञान-शक्ति का आच्छादन करना।

प्र. 3. *दर्शनावरण-कर्म का फल क्या है?*

उत्तर— दर्शनशक्ति का आच्छादन करना दर्शनावरण-कर्म का फल है।

प्र. 4. *वेदनीय-कर्म का अनुभव क्या है?*

उत्तर— वेदनीय-कर्म का फल है 'सुख-दुःख प्रदान करना'।

प्र. 5. *मोहनीय-कर्म का फल क्या है?*

उत्तर— मोह का उत्पादन करना मोहनीय-कर्म का फल है।

प्र. 6. *आयु-कर्म का विपाक क्या है?*

उत्तर— आयु-कर्म का विपाक भव-धारण करना है।

प्र. 7. *नामकर्म का विपाक क्या है?*

उत्तर— नामकर्म का विपाक है'नानाप्रकार की शरीर-रचना का अनुभव करना।

प्र. 8. गोत्रकर्म का विपाक क्या है?

उत्तर— गोत्रकर्म का फल उच्चत्व-नीचत्व का अनुभव करना है।

प्र. 9. अन्तराय-कर्म का अनुभव क्या है?

उत्तर— अन्तराय-कर्म का फल विघ्नों का अनुभव कराना है।

प्र. 10. कर्मों का विपाक-फलोदय की अपेक्षा से 148 प्रकृतियों को कितने भागों में बाँटा है?

उत्तर— 148 प्रकृतियों को 4 भागों में बाँटा है — जीव-विपाकी, पुद्गल-विपाकी, भव विपाकी, और क्षेत्र-विपाकी।

प्र. 11. 'जीव-विपाकी' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसका फल जीव की उपयोगादि-शक्ति में हो, उसको 'जीव-विपाकी' कहते हैं।

प्र. 12. 'पुद्गल-विपाकी' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिस कर्म का फल शरीर में होता है, उसको 'पुद्गल-विपाकी' कहते हैं।

प्र. 13. 'भव-विपाकी' किस कहते हैं?

उत्तर— जिस कर्म का फल पर्याय में होता है, वह 'भव-विपाकी' है।

प्र. 14. 'क्षेत्र-विपाकी' किसे कहते हैं?

उत्तर— इनका फल विग्रहगति में जीव के प्रदेशों के आकाररूप ही है।

प्र. 15. 'जीव-विपाकी'-प्रकृतियाँ कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर— 148 प्रकृतियों में से 4 घातिया-कर्मों की 47, वेदनीय की 2, गोत्र की 2, नामकर्म की 27 (4 गति + 5 जाति + 2 विहायोगति + 2 त्रस-स्थावर + 2 सूक्ष्म-बादर + 2 पर्याप्तक-अपर्याप्तक + 2 सुस्वर-दु:स्वर + 2 सुभग-दुर्भग + 2 आदेय-अनादेय + 2 यश:कीर्ति-अपयश:कीर्ति + 1 श्वासोच्छ्‌वास + 1 तीर्थंकरत्व = 27) — इस प्रकार 78 प्रकृतियों को 'जीव-विपाकी' कहते हैं।

प्र. 16. 'पुद्गल-विपाकी'-प्रकृतियाँ कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर— 5 शरीर, 5 बंधन, 5 संघात, 6 संहनन, 6 संस्थान, 3 अंगोपांग 20 स्पर्श, रस, गंध, वर्ण की प्रत्येक-साधारण 2-2, स्थिर-अस्थिर 2, शुभ-अशुभ एक, अगुरु-लघु, उपघात-परघात 2, आतप-उद्योत और निर्माण — ये 62 प्रकृतियाँ 'पुद्गल-विपाकी' हैं।

प्र. 17. 'भव-विपाकी'-प्रकृतियाँ कौन-कौन-सी हैं?

उत्तर— आयुकर्म की चार-प्रकृतियाँ 'भव-विपाकी' हैं।

प्र. 18. 'क्षेत्र-विपाकी'-प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?

उत्तर— नामकर्म की चार-आनुपर्वी-प्रकृतियाँ 'क्षेत्र-विपाकी' हैं।

✿✿

ततश्च निर्जरा ॥23॥

अर्थ — इसके बाद कर्मों की निर्जरा हो जाती है।

प्र. 1. फल देने के बाद कर्मों का क्या होता है?

उत्तर— फल देने के बाद कर्मों की निर्जरा होती है।

प्र. 2. 'निर्जरा' किसे कहते हैं?

उत्तर— जैसे खाया हुआ आहार पचकर झड़ जाता है, वैसे ही कर्म अपना फल देकर झड़ जाते हैं, यही 'निर्जरा' है।

प्र. 3. निर्जरा कितने प्रकार की है और कौन-कौन-सी है?

उत्तर— निर्जरा दो-प्रकार की है — सविपाक-निर्जरा और अविपाक-निर्जरा।

प्र. 4. 'सविपाक-निर्जरा' किसे कहते हैं?

उत्तर— क्रम से उदयकाल आने पर कर्म का अपना फल देकर झड़ जाना 'सविपाक-निर्जरा' है।

प्र. 5. 'अविपाक-निर्जरा' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिस कर्म का उदयकाल तो नहीं आया, किन्तु तपस्यादि से पुरुषार्थ द्वारा उदीरणा (उदय) द्वारा समय से पहले फल देकर झड़ जाने को 'अविपाक-निर्जरा' कहते हैं।

प्र. 6. उदाहरण द्वारा 'सविपाक' और 'अविपाक'-निर्जरा समझाइये?

उत्तर— जैसे पेड़ पर लगा आम स्वयं ही पककर गिर जाता है, वह 'सविपाक-निर्जरा' है, और उसे पेड़ से तोड़कर पाल में दबाकर जो जल्दी पका लिया जाता है, तो वह 'अविपाक-निर्जरा' है।

प्र. 7. इस सूत्र में 'च' शब्द क्यों दिया है?

उत्तर— निर्जरा के दूसरे भी हेतु का बोध कराने के लिए सूत्र में 'च' शब्द लिया है। अर्थात् विपाकपूर्वक भी निर्जरा होती है और दूसरी तरह से अथवा अन्य-कारण से भी निर्जरा होती है। ✿✿

नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ॥24॥

अर्थ — कर्म-प्रकृतियों के कारणभूत प्रतिसमय योग-विशेष से सूक्ष्म, एकक्षेत्रावगाही और स्थित अनंतानन्त-पुद्गल-परमाणु सब आत्मप्रदेशों में (सम्बन्ध को प्राप्त) होते हैं।

प्र. 1. 'प्रदेश-बन्ध' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो पुद्गल कर्मरूप से आत्मा के साथ बंध को प्राप्त होते हैं, उन्हीं की अवस्था-विशेष को 'प्रदेश-बंध' कहते हैं।

प्र. 2. *'नाम-प्रत्यय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बंध को प्राप्त होनेवाले पुद्गल को 'नाम-प्रत्यय' कहते हैं। अर्थात् नाम ही है प्रत्यय या कारण जिनका, उनको 'नामप्रत्यय' कहते हैं।

प्र. 3. *संसारी-जीवों के प्रदेश-बंध से क्या बनता है?*

उत्तर— जैसे ही वे बंधते हैं, वैसे ही आयुकर्म को छोड़कर शेष-सात कर्मरूप हो जाते हैं, और यदि उस समय आयुकर्म का भी बंध-काल है, तो आठों कर्मरूप हो जाते हैं।

प्र. 4. *वे कर्म-प्रदेश कब और कहाँ बंधते हैं?*

उत्तर— वे सब भवों में बँधते हैं, ऐसा कोई भव नहीं और एक भव में ऐसा कोई क्षण नहीं, जब कर्म-बंध नहीं होता है।

प्र. 5. *वे कर्म कैसे बंधते हैं?*

उत्तर— वे योग-विशेष से बंधते हैं।

प्र. 6. *'योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन, वचन और काय के निमित्त से जो आत्म-प्रदेशों का परिस्पदंन होता है, उसको 'योग' कहते हैं।

प्र. 7. *उन कर्मों का स्वभाव कैसा है?*

उत्तर— ये बंधनेवाले सभी पुद्गल सूक्ष्म होते हैं, बादर नहीं होते।

प्र. 8. *बंधनेवाले-कर्म रहते कहाँ हैं?*

उत्तर— वे एक ही क्षेत्र में अवगाह करनेवाले होते हैं, न कि क्षेत्रान्तर में भी अवगाह करनेवाले।

प्र. 9. *बंध के समय कर्म गतिशील होते हैं या ठहरे हुए?*

उत्तर— स्थितिशील-कर्मों का बंध होता है, गतिशील-स्कन्ध चलायमान होने से बंध को प्राप्त नहीं होते।

प्र. 10. *बंध सर्व आत्म-प्रदेशों में होता है या कुछ हिस्से में?*

उत्तर— सभी कर्म-प्रकृतियों के योग्य पुद्गल जीव के सम्पूर्ण-प्रदेशों में बंधते हैं। ऐसा नहीं है कि जीव के कुछ प्रदेशों पर ही बंध होता है और कुछ बिना बंध के रहते हों।

प्र. 11. *वे कर्म-स्कन्ध कितने परिणामवाले होते हैं?*

उत्तर— आत्मा का एक एक प्रदेश अनन्त-कर्म-प्रदेशों के द्वारा बद्ध है। प्रत्येक प्रदेश

में प्रतिसमय अनन्तानंत-पुद्गल-स्कन्ध बंधरूप होते हैं। ✿✿

सद्वेद्य-शुभायुर्नाम-गोत्राणि पुण्यम् ॥25॥

अर्थ — साता-वेदनीय, शुभ-आयु, शुभ-नाम और शुभ-गात्र — ये प्रकृतियाँ पुण्यरूप हैं।

प्र. 1. *कौन-सी प्रकृतियाँ 'पुण्यरूप' हैं?*

उत्तर— सातावेदनीय, शुभ-आयु, शुभ-नाम और शुभ-गोत्र — ये प्रकृतियाँ 'पुण्यरूप' हैं।

प्र. 2. *पुण्यरूप-प्रकृतियाँ कितनी हैं और कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— पुण्यरूप-प्रकृतियाँ 42 हैं — साता-वेदनीय, मनुष्यायु, देवायु, तिर्यंच-आयु, उच्च-गोत्र, और नामकर्म की अभेद में 37 और भेद में 63 (मनुष्यगति, देवगति, पंचेन्द्रिय-जाति, निर्माण, समचतुरस्र-संस्थान, वज्रवृषभ-नाराच-संहनन, मनुष्य-गत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्‌वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त, विहायोगति, प्रत्येक-शरीर, त्रस, सुस्वर, शुभ, सुभग, बादर, पर्याप्ति, स्थिर, आदेय, यशःकीर्ति, तीर्थंकर, 5 शरीर, 5 बंधन, 5 संघात, 3 अंगोपांग, प्रशस्त, 8 स्पर्श, 5 रस, 2 गंध, 5 वर्ण = 63) भेद-विवक्षा में ये यह 68 पुण्य-प्रकृतियाँ हैं; क्योंकि वर्णादि में 16 और शरीर के अन्तर्गत 5 बंधन, 5 संघात — इसप्रकार 26 प्रकृतियाँ घटाने से 42 होती हैं। ✿✿

अतोऽन्यत्पापम् ॥26॥

अर्थ — इनके अतिरिक्त शेष सब प्रकृतियाँ पापरूप हैं।

प्र. 1. *कौन-सी मूल-प्रकृतियाँ 'पापरूप' हैं?*

उत्तर— असाता-वेदनीय, अशुभ-आयु, अशुभ-नाम और अशुभ-गोत्र — ये मूल-प्रकृतियाँ 'पापरूप' हैं।

प्र. 2. *पापरूप-प्रकृतियाँ कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— घातिया-कर्मों की 47, असाता-वेदनीय की एक, नरकायु, नीच-गोत्र, नामकर्म की 50 (नरकगति, नरक-गत्यानुपूर्वी, तिर्यंच-गति, तिर्यंच-गत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, दो-इन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चार-इन्द्रिय-जाति), 5 संस्थान (समचतुरस्र छोड़कर), 5 संहनन, (वज्रवृषभनाराच छोड़कर), 20 स्पर्श, रस, गंध, वर्ण की; उपघात, अप्रशस्त-विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुस्वर, अनादेय, अयशःकीर्ति) भेद-विवक्षा से यह 100 पाप-प्रकृतियाँ हैं, वैसे 84 हैं; क्योंकि वर्णादि के 16 उपभेद घटाने से

84 भेद रहते हैं। इनमें भी सम्यक्त्व, मिथ्यात्व-प्रकृति का बंध नहीं होता, अत: भेद-विवक्षा से 98 और वैसे 82 पाप-प्रकृतियों का बंध होता है; परन्तु इन दोनों प्रकृतियों का सत्त्व तथा उदय होता है, अत: भेद-विवक्षा से 100 और अभेद्-विवक्षा से 84 प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

प्र. 3. *बन्धयोग्य-प्रकृतियाँ कौन-सी हैं?*

उत्तर— 16 स्पर्श, रस, गंध, वर्ण की कम, 5 बन्धन, 5 संघात कम, सम्यक्त्व-मिथ्यात्व और सम्यग्प्रकृति का बंध नहीं होता; अत: 16+10+2=28 प्रकृतियाँ कम होने से 120 प्रकृतियाँ बंध-योग्य हैं। ✿✿

नवम अध्याय

आस्रवनिरोधः संवरः ॥1॥

अर्थ — आस्रव का निरोध 'संवर' है।

प्र. 1. *'संवर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आस्रव को रोकने को 'संवर' कहते हैं।

प्र. 2. *'आस्रव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— नवीन-कर्मों के आने में जो कारण है, उसे 'आस्रव' कहते हैं।

प्र. 3. *संवर के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— संवर के दो भेद हैं — भाव-संवर, और द्रव्य-संवर।

प्र. 4. *'भाव-संवर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शुभाशुभ-भाव को रोकने में समर्थ जो शुद्धोपयोग है, उसे 'भाव-संवर' कहते हैं।

प्र. 5. *'द्रव्य-संवर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भाव-कर्म के आधार से नवीन पुद्गल-कर्म का निरोध होना 'द्रव्य-संवर' है।

प्र. 6. *'भाव-संवर' पहले होता है या 'द्रव्य-संवर'?*

उत्तर— भाव-संवरपूर्वक ही द्रव्य-संवर होता है।

प्र. 7. *'संवर' से क्या लाभ है?*

उत्तर— 'संवर' के बाद ही संचित हुये दोषों व उनके कारणों का परिमार्जन किया जा सकता है और तभी मुक्ति-लाभ होता है। ✿✿

स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षा-परिषहजय-चारित्रैः ॥2॥

अर्थ — वह संवर गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परिषहजय और चारित्र से होता है।

प्र. 1. *'संवर' किसके द्वारा होता है?*

उत्तर— संवर गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा, परिषहजय और चारित्र से होता है।

प्र. 2. *'गुप्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संसार-भ्रमण के कारणस्वरूप मन, वचन और काय - इन तीन योगों के निग्रह करने को 'गुप्ति' कहते हैं।

प्र. 3. *'समिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्राणियों को कष्ट न पहुँचे — इस भावना से यत्नाचारपूर्वक प्रवृत्ति 'समिति' है।

प्र. 4. *'धर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो आत्मा को संसार के दुःखों से छुड़ाकर उसके इष्ट-स्थान में पहुँचाये, वह 'धर्म' है।

प्र. 5. *'अनुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संसार, शरीर आदि का स्वरूप बार-बार चिंतवन करना 'अनुप्रेक्षा' है।

प्र. 6. *'परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भूख-प्यास आदि का कष्ट होने पर कर्मों की निर्जरा के लिए शान्त-भावों से सहन करने को 'परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 7. *'चारित्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— राग-द्वेष को दूर करने के लिए ज्ञानी-पुरुष की चर्या को 'चारित्र' कहते हैं।

प्र. 8. *सूत्र में 'स' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— सूत्र में आए 'स' शब्द से पता चलता है कि 'संवर' गुप्ति वगैरह से ही हो सकता है, किसी दूसरे उपायों से नहीं। ✿✿

तपसा निर्जरा च ।।3।।

अर्थ — तप से संवर के साथ-साथ निर्जरा भी होती है।

प्र. 1. *तप करने से क्या लाभ है?*

उत्तर— तप करने से संवर के साथ साथ निर्जरा भी होती है।

प्र. 2. *सूत्र में 'च' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— तप के द्वारा कर्मों का एकदेश-क्षय होता है तथा 'च' शब्द संवर को सूचित करता है।

प्र. 3. *तप का दस-धर्मों में अन्तर्भाव होता है, उसी से संवर और निर्जरा हो जायेगी, तो यहाँ पुनः तप क्यों लिया है?*

उत्तर— यद्यपि दस-धर्मों में तप गर्भित है, उसी तप से संवर और निर्जरा भी होती है; फिर भी तप नवीन-कर्मों के संवरपूर्वक कर्म-क्षय का कारण होता है तथा तप संवर का प्रधान-कारण है — यह बताने के लिए पुनः तप को लिया है।

प्र. 4. *तप करने का फल क्या है?*

उत्तर— तप करने का प्रधान-फल कर्मों का क्षय होता है और गौण-फल संसारिक-अभ्युदय की प्राप्ति है। ✿✿

:

सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः ।।4।।

अर्थ — योगों का सम्यक्-प्रकार से निग्रह करना 'गुप्ति' है।

प्र. 1. *'गुप्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— योगों का सम्यक्-प्रकार से निग्रह करना 'गुप्ति' है।

प्र. 2. *'योग' किसे कहते हैं और इसके कितने भेद हैं?*

उत्तर— मन-वचन-काय के निमित्त से होनेवाले आत्मप्रदेशों के परिस्पन्दन को 'योग' कहते हैं। इसके तीन भेद हैं — काययोग, मनोयोग, वचनयोग।

प्र. 3. *'निग्रह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— योगों की स्वच्छंद-प्रवृत्ति को रोकना 'निग्रह' है।

प्र. 4. *सूत्र में 'सम्यक्' शब्द क्यों दिया है?*

उत्तर— विषय-सुख की अभिलाषा के लिए की जानेवाली प्रवृत्ति का निषेध करने के लिए सूत्र में 'सम्यक्' शब्द दिया है।

प्र. 5. *'गुप्ति' के कितने भेद हैं? और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'गुप्ति' के तीन भेद हैं — मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति।

प्र. 6. *'मनोगुप्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन की राग-द्वेषरूप-प्रवृत्ति को रोकना अर्थात् संकल्प-विकल्प से जीव की रक्षा करना 'मनोगुप्ति' है।

प्र. 7. *'वचनगुप्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वचन की प्रवृत्ति को रोकना, मौन धारण करना 'वचनगुप्ति' है।

प्र. 8. *'कायगुप्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शरीर की प्रवृत्तियों को भलीप्रकार से नियमन करना (वश में करना) 'कायगुप्ति' है।

प्र. 9. *जो मुनिराज गुप्ति के पालने में असमर्थ हैं, उनके निर्दोष-संयम की प्रवृत्ति कैसे हो?*

उत्तर— जो मुनिराज 'गुप्ति' के पालने में असमर्थ हैं, उन्हें निर्दोष-चारित्र, संयम-पालन के लिए 'समिति' में प्रवृत्ति करनी चाहिये। ✿✿

ईर्या-भाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ।।5।।

अर्थ — ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेप और उत्सर्ग — ये पाँच-समितियाँ हैं।

प्र. 1. *'समिति' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'समिति' के पाँच भेद हैं — ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेपण और उत्सर्ग।

प्र. 2. *'समिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जब मुनि गुप्तिरूप रहने में असमर्थ हो, तो आहार, विहार, उपदेश आदि रूप क्रिया करनी पड़ती है; अतः प्रवृत्ति करते हुए भी जिससे अशुभ-आस्रव नहीं होता, ऐसा उपाय बताने को 'समिति' कहते हैं।

प्र. 3. *'ईर्या-समिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आवश्यक-कार्य के लिए ही संयम की रक्षा करने के लिए सब तरफ चार-हाथ भूमि को देखकर धीरे-धीरे पैर रखकर चलने को 'ईर्या-समिति' कहते हैं।

प्र. 4. *'भाषा-समिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हित-मित-प्रिय और सन्देहरहित वचन बोलना 'भाषा-समिति' है।

प्र. 5. *'एषणा-समिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दिन में एक बार श्रावक के घर जाकर नवधा-भक्तिपूर्वक तथा कृत-कारित-अनुमोदना आदि दोषों से रहित दिया हुआ निर्दोष-आहार खड़े होकर अपने पाणिपात्र में ग्रहण करना 'एषणा-समिति' है।

प्र. 6. *'आदान-निक्षेपण-समिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शास्त्र-कमण्डलु आदि धर्म के उपकरणों को देखभाल कर तथा पिच्छी से शोधन करके रखना उठाना 'आदान-निक्षेपण-समिति' है।

प्र. 7. *'उत्सर्ग-समिति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— त्रस और स्थावर-जीवों को बाधा न पहुँचे, इसतरह से शुद्ध, जन्तुरहित भूमि में मल-मूत्र आदि का त्याग करना 'उत्सर्ग-समिति' है।

प्र. 8. *समिति-प्रवृत्तिरूप है, प्रवृत्ति से 'संवर' कैसे हो सकता है, क्योंकि '' निवृत्ति से होता है?*

उत्तर— 'समिति' में अशुभ की निवृत्ति होने से वह संवररूप ही है। ✿✿

उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्यागाकिंचन-ब्रह्मचर्याणि धर्मः ।।6।।

अर्थ — उत्तम-क्षमा, उत्तम-मार्दव, उत्तम-आर्जव, उत्तम-शौच, उत्तम-सत्य, उत्तम-संयम, उत्तम-तप, उत्तम-त्याग, उत्तम-आकिंचन और उत्तम-ब्रह्मचर्य — ये दस-प्रकार के धर्म हैं।

प्र. 1. *धर्म के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— धर्म के दस-भेद हैं — उत्तम-क्षमा, उत्तम-मार्दव, उत्तम-आर्जव, उत्तम-शौच,

उत्तम-सत्य, उत्तम-संयम, उत्तम-तप, उत्तम-त्याग, उत्तम-आकिंचन और उत्तम-ब्रह्मचर्य।

प्र. 2. *'उत्तम-क्षमा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— क्रोध की उत्पत्ति के कारण होते हुए भी क्रोध न करके सहनशीलता को बनाये रखना, मन में बदला लेने का भाव भी न आना 'उत्तम-क्षमा' है।

प्र. 3. *'उत्तम-मार्दव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भीतर और बाहर निरभिमानता धारण करना और मान-कषाय का त्याग करना 'उत्तम- मार्दव' है।

प्र. 4. *'उत्तम-आर्जव' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन-वचन-काय की कुटिलता का न होना अर्थात् मायाचार-रहित अतंरंग-भाव को 'उत्तम-आर्जव' कहते हैं।

प्र. 5. *'उत्तम-शौच' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लोभरहित प्रवृत्ति कर आत्मा को पवित्र बनाना 'उत्तम-शौच' है।

प्र. 6. *'उत्तम-सत्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— राग-द्वेषपूर्वक असत्य-वचनों को छोड़कर हित-मित-प्रिय-वचन बोलना उत्तम-सत्य है।

प्र. 7. *उत्तम-संयम किसे कहते हैं?*

उत्तर— पाँच-इन्द्रियों और मन को वश में करना, षट्काय के जीवों की रक्षा करना अर्थात् योग के निग्रह करने को 'संयम' कहते हैं।

प्र. 8. *'उत्तम-तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों का क्षय करने के लिए अनशन आदि 12 प्रकार के तप करना 'उत्तम-तप' है। अर्थात् आत्म-शक्तियों को प्रकट करने के लिए जो तप किये जाते हैं, उन्हें 'उत्तम-तप' कहते हैं।

प्र. 9. *उत्तम त्याग किसे कहते हैं?*

उत्तर— चेतन-अचेतन परिग्रह को छोड़ना 'त्याग' है, व्यवहार से चार-प्रकार के दान देना 'उत्तम-त्याग' है।

प्र. 10. *'उत्तम-आकिंचन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी भी वस्तु में यहाँ तक कि शरीर में भी ममत्व-बुद्धि न रखना आकिंचन है अर्थात् 'आत्मा का अपने गुणों के सिवाय जगत् में अन्य कोई भी वस्तु मेरी नहीं है' ऐसा चिंतन 'उत्तम-आकिंचन' है।

प्र. 11. *'उत्तम-ब्रह्मचर्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— समस्त विषयों से अनुराग छोड़कर ब्रह्म अर्थात् सिद्ध-स्वभावी आत्मा में चर्या, रमण करना 'उत्तम-ब्रह्मचर्य' है।

प्र. 12 *'धर्म' किसे कहते हैं?*

उत्तर— धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है धारण करना। 'धर्म' शब्द का अर्थ है जो जीवों को संसार के दुःखों से उठाकर मोक्ष-सुख में धरता है, उसे 'धर्म' कहते हैं। ✿✿

अनित्याशरण-संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रव-संवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ-धर्मस्वाख्याः तत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ॥7॥

अर्थ — अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ और धर्म नामक बारह तत्त्वों का बार-बार चिन्तन करना 'अनुप्रेक्षा' है।

प्र. 1. *'अनुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गहराई और सच्चाई से बारम्बार तात्त्विक-चिंतन करने को 'अनुप्रेक्षा' कहते हैं।

प्र. 2. *'अनुप्रेक्षा' कितनी है और कौन-कौन-सी हैं?*

उत्तर— अनुप्रेक्षा बारह हैं — अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, लोक, बोधिदुर्लभ और धर्म।

प्र. 3. *'अनित्यानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शरीर, शय्या, आसन, वस्त्र, आदि बाह्य और अभ्यंतर-द्रव्य तथा अन्य समस्त संयोगमात्र हैं, अनित्य हैं, — ऐसा पुनः पुनः चिन्तवन करना 'अनित्यानुप्रेक्षा' है।

प्र. 4. *'अशरणानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जगत् के सभी प्राणी जन्म-जरा-मृत्यु और व्याधियों से घिरे हुये हैं, उनको कोई भी शरण नहीं है। जगत् में धर्म के सिवा जीव को कोई शरण नहीं है — इसप्रकार विचार करना 'अशरण-भावना' है।

प्र. 5. *'संसारानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'संसार' नाम संसरण अर्थात् परिभ्रमण का है। कर्म के अनुसार चारों गतियों में भ्रमण करनेवाले जीव का किसी के साथ कोई नियत-सम्बन्ध नहीं होता। जिसको संसार में सुख या इष्ट समझते हैं, वह भी दुःख ही है — इसप्रकार का चिंतन करना 'संसारानुप्रेक्षा' है।

प्र. 6. *'एकत्वानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जीव अकेला ही सुख-दुःख, पाप-पुण्य को भोगता है और अकेला ही कर्मों का क्षय कर मुक्ति पाता है, दूसरा कोई उसका साथ नहीं देता। धर्म ही साथ देता है, — इसप्रकार का चिंतन करना 'एकत्वानुप्रेक्षा' है।

प्र. 7. *'अन्यत्वानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शरीर जड़ है, मैं चेतन हूँ। शरीर अनित्य है, मैं नित्य हूँ अर्थात् शरीर और बाह्य-पदार्थों से अपने को भिन्न चिंतन करना 'अन्यत्वानुप्रेक्षा' है।

प्र. 8. *'अशुचि-अनुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— यह शरीर महा-अपवित्र है, स्नानादि से कभी पवित्र नहीं हो सकता। इसमें एकत्व-ममत्वबुद्धि से आत्मा भी अशुद्धि बन रही है; इस जीव की अशुचिता सम्यग्दर्शनादि उत्तम-गुणों से दूर की जा सकती है, पर शरीर की अशुचिता कभी दूर नहीं होती — ऐसा चिंतन करना 'अशुचि-अनुप्रेक्षा' है।

प्र. 9. *'आस्रवानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मिथ्यात्व, कषाय आदि भावों से कर्मों का आस्रव होता है। यह आस्रव ही संसार-परिभ्रमण का मूल-कारण है — इसप्रकार आस्रव के दोषों का चिंतन करना 'आस्रवानुप्रेक्षा' है।

प्र. 10. *'संवरानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मा में नवीन-कर्मों का प्रवेश नहीं होने देना 'संवर' है, संवर से ही आत्म-शुद्धि होती है — इसप्रकार का चिंतन करना 'संवरानुप्रेक्षा' है।

प्र. 11. *'निर्जरानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों का झड़ना 'निर्जरा' है। सविपाक-निर्जरा से आत्मा का भला नहीं होता है, किन्तु तप के द्वारा अविपाक-निर्जरा ही कार्यकारी है — इसप्रकार निर्जरा के गुण-दोषों का चिंतन करना 'निर्जरानुप्रेक्षा' है।

प्र. 12. *'लोकानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— लोक के स्वरूप, रचना, आकार आदि का विचार करना 'लोकानुप्रेक्षा' है।

प्र. 13. *'बोधिदुर्लभानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनादिकाल से कर्म के आधीन प्राणी को परिभ्रमण करते हुए रत्नत्रय के सिवाय सभी वस्तुयें अनन्तबार मिली; परन्तु रत्नत्रय एक बार भी नहीं मिला। यह अत्यन्त-दुर्लभ है — ऐसा चिंतन करना 'बोधिदुर्लभानुप्रेक्षा' है।

14. *'धर्मानुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिनेन्द्र-भगवान् के द्वारा कहा हुआ अहिंसा-लक्षणवाला धर्म ही जीवों का कल्याण करनेवाला है, मोक्ष को प्राप्त करानेवाला है — इसप्रकार का चिंतन करना 'धर्मानुप्रेक्षा' है।

✿✿

मार्गाच्यवन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परिषहाः ॥8॥

अर्थ — मार्ग से च्युत न होने के लिए और कर्मों की निर्जरा के लिए जो सहन करने योग्य हों, वे 'परिषह' हैं।

प्र. 1. *'परिषह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मोक्षमार्ग के साधन में अथवा कर्मों की निर्जरा के उपायभूत तपश्चरण में विघ्न आते हैं, पीड़ायें होती हैं, उनको 'परिषह' कहते हैं।

प्र. 2. *'परिषह' क्यों सहन करने चाहिए?*

उत्तर— संवर के मार्ग से च्युत न होने के लिए कर्मों की निर्जरा के लिए बाईस (22) परिषह सहन करने चाहिए।

प्र. 3. *'परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— परिषहों को समभावों से सह लेना 'परिषहजय' कहलाता है। ✿✿

क्षुत्पिपासा-शीतोष्ण-दंशमशक-नाग्न्यारति-स्त्री-चर्या-निषद्या-शय्याऽऽक्रोश-वध-याचना-अलाभ-रोग-तृणस्पर्श-मल-सत्कार-पुरस्कार-प्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ॥9॥

अर्थ — क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, नग्नता, अरति, स्त्री, चर्या, निषद्या, शय्या, आक्रोश, वध, याचना, अलाभ, रोग, सत्कार, मल, तृणस्पर्श, पुरस्कार, प्रज्ञा, अज्ञान और अदर्शन — यह नामवाले 'परिषह' हैं।

प्र. 1. *बाईस-परिषह कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, नग्नता, अरति, स्त्री, चर्या, निषद्या, शय्या, आक्रोश, वध, याचना, अलाभ, रोग, तृणस्पर्श, मल, पुरस्कार, प्रज्ञा, अज्ञान और अदर्शन — ये बाईस-'परिषह' हैं।

प्र. 2. *'क्षुधा-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उपवास होने पर, अनेक प्रकार की तपस्याओं से शरीर कृश होने पर भी क्षुधा-वेदना के कारण अपने विशुद्ध-ध्यान से च्युत न होना और मोक्षमार्ग में विशेष-उत्साह से लगना 'क्षुधा-परिषहजय' है।

प्र. 3. *'तृषा-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रकृति-विरुद्ध आहार, ग्रीष्मकालीन-आतप, पित्त-ज्वर और अनशन आदि के कारण उत्पन्न हुई प्यासरूपी अग्नि-शिखा को सन्तोषरूपी शीतल सुगन्धित-जल से शान्त करते हैं, उसे 'तृषा-परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 4. *'शीत-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तीव्र शीत-ऋतु में हवा, तुषार के बीच मैदान में वन में, आत्म-साधना के अर्थ आवास करने पर शीत-वेदना के कारण आत्म-साधना से विचलित नहीं होते, उन्हें 'शीत-परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 5. *'उष्ण-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तीव्र-उष्ण (ग्रीष्म)-काल में तप्त-मार्ग पर विहार करने पर भी जलते हुए वन के बीच रहने पर भी भेदविज्ञान के बल से समता-परिणाम में स्थिर होने को 'उष्ण-परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 6. *'दंशमशक-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— डांस, मच्छर आदि क़ीटों के काटने से उत्पन्न हुई वेदना को समता से सहन करने को 'दंशमशक-परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 7. *'नग्नता-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चित्त को मलिन करनेवाले अनेक-कारणों के मिलने पर भी सहज-स्वरूप के साधक नग्न रहने की प्रतिज्ञा में स्थिर रहने को 'नग्नता-परिषहजय' है।

प्र. 8. *'अरति-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनिष्ट-पदार्थों को समागम हो जाने पर भी पूर्व-रति का स्मरण न करते हुए विरोध-ग्लानि न करके आत्म-साधना में बने रहना 'अरति-परिषहजय' है।

प्र. 9. *'स्त्री-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रूप-यौवन में गर्वोन्मत्त-युवती के द्वारा एकान्त में नाना अनुकूल-प्रयत्न करने पर भी निर्विकार रहने को 'स्त्री-परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 10. *'चर्या-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पवन की तरह एकाकी-विहार करते हुए भयानक-वन में भी सिंह की तरह निर्भय रहना और पैरों में कंकड़-पत्थर चुभने पर भी खेद-खिन्न न होना 'चर्या-परिषहजय' है।

प्र. 11. *'निषद्या-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस आसन में ध्यान आदि में बैठे हों, उससे उपसर्ग आदि के आने पर भी विचलित न होना 'निषद्या-परिषहजय' है।

प्र. 12. *'शय्या-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रात्रि में ऊँची-नीची कठोर-भूमि पर पूरा-बदन सीधा रखकर एक करवट से सोने को 'शय्या-परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 13. *'आक्रोश-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी के द्वारा बाणों की तरह मर्मभेदी दुर्वचन-गाली आदि के प्रयोग किए जाने पर भी प्रतिकार में समर्थ होने पर उन्हें क्षमाकर देने और विकार उत्पन्न न होने देने को 'आक्रोश-परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 14. *'वध-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— किसी चोर, डाकू बैरी आदि के द्वारा मारने-पीटने और प्राणघात किये जाने पर भी क्रोध न करके उनका भला ही सोचना 'वध-परिषहजय' है।

प्र. 15. *'याचना-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आहारादि का लाभ न होने पर भी किसी से याचना करना तो दूर, मुँह पर दीनता भी न लाना 'याचना-परिषहजय' है।

प्र. 16. *'अलाभ-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कितनी ही वेदना होने पर भी आहार-औषधि आदि का अलाभ (न मिलना) होने पर धैर्य से विचलित न होना और आत्म-लाभ से तृप्त रहने को 'अलाभ-परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 17. *'रोग-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शरीर में अनेक-व्याधियाँ होते हुए भी उनकी चिकित्सा का विचार भी न करने को 'रोग-परिषहजय' कहते हैं।

प्र. 18. *'तृणस्पर्श-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— तृण, काँटे आदि की वेदना को सहना 'तृणस्पर्श-परिषहजय' है।

प्र. 19. *'मल-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने शरीर में लगे मल की ओर लक्ष्य न करके आत्म-भावना में लीन रहना 'मल-परिषहजय' है।

प्र. 20. *'सत्कार-पुरस्कार-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने में गुणों की अधिकता होने पर भी यदि कोई सत्कार-पुरस्कार न करे, तो चित्त में कलुषता नहीं करना 'सत्कार-पुरस्कार-परिषहजय' है।

प्र. 21. *'प्रज्ञा-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ज्ञान की अधिकता होने पर भी मान नहीं करना 'प्रज्ञा-परिषह-जय' है।

प्र. 22. *'अज्ञान-परिषह-जय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ज्ञानादिक की हीनता पर लोगों के द्वारा किये हुए तिरस्कार को शांतभाव से सह लेना 'अज्ञान-परिषहजय' है।

प्र. 23. *'अदर्शन-परिषहजय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बहुत समय तक कठोर तपस्या करने पर भी विशेष-ज्ञानऋद्धियों की प्राप्ति

नहीं होने पर अश्रद्धान के भाव नहीं होना 'अदर्शन-परिषहजय' है।

प्र. 24. *'उपसर्ग' और 'परिषह' में क्या अन्तर है?*

उत्तर— 'उपसर्ग' परकृत होने से जबरन सहन करने पड़ते हैं, और 'परिषह' स्वेच्छा से सहन किए जाते हैं। ✿✿

सूक्ष्मसाम्पराय-छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥10॥

अर्थ — सूक्ष्म-साम्पराय और छद्मस्थ-वीतराग के चौदह गुणस्थान में 'परिषह' सम्भव है।

प्र. 1. *सूक्ष्म-साम्पराय और छद्मस्थ-वीतराग के चौदह-परिषह कौन-से हैं?*

उत्तर— क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, चर्या, शय्या, वध, अलाभ, रोग, तृणस्पर्श, मल, प्रज्ञा और अज्ञान — ये चौदह-परिषह उक्त गुणस्थानों में होते हैं।

प्र. 2. *'साम्पराय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'साम्पराय' नाम 'कषाय' का है।

प्र. 3. *'सूक्ष्मसाम्पराय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जहाँ पर लोभ-कषाय अत्यन्त-मंद रह जाती है, उसको 'सूक्ष्मसाम्पराय' कहते हैं।

प्र. 4. *सूक्ष्म-साम्पराय-मुनि कौन-से होते हैं?*

उत्तर— सूक्ष्म-साम्पराय-चारित्र के धारक दसवें-गुणस्थानवर्ती-मुनि सूक्ष्म-साम्पराय-मुनि होते हैं।

प्र. 5. *छद्मस्थ किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'छद्म' का अर्थ है 'ज्ञानावरण और दर्शनावरण।' छद्म में रहनेवाला जीव 'छद्मस्थ' कहलाता है।

प्र. 6. *'वीतराग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मोहनीय-कर्म का पूर्ण-उपशम व क्षय जिन मुनियों के हो गया हो, ऐसे 11वें, 12वें गुणस्थानवर्ती-मुनियों को 'वीतराग' कहते हैं।

प्र. 7. *'वीतराग-छद्मस्थ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ज्ञानावरण और दर्शनावरण का उदय होने पर भी जिनको अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान होनेवाला है, उन क्षीणकषायी बारहवें-गुणस्थानवर्ती मुनिराज को 'छद्मस्थ-वीतरागी' कहते हैं।

प्र. 8. *छद्स्थ-वीतराग-मुनियों के मोहनीय-कर्म का अभाव होने से कौन-से परिषह नहीं होते हैं?*

उत्तर— नाग्न्य, अरति, स्त्री, निषद्या, आक्रोश, याचना, सत्कार-पुरस्कार और अदर्शन — ये आठ परिषह नहीं होते।

प्र. 9. *दसवें-गुणस्थान में कौन-से परिषह नहीं होते हैं?*

उत्तर— दसवें-गुणस्थान में केवल लोभ संज्वलन कषाय का उदय है, वह भी अत्यन्त सूक्ष्म है, इसीलिए दसवें-गुणस्थान में भी मोहजन्य आठ-परिषह नहीं होते। ✿✿

एकादश जिने ॥11॥

अर्थ **— 'जिन' (सयोगकेवलीजिन-गुणस्थान) में ग्यारह परिषह' सम्भव हैं।**

प्र. 1. *'सयोग-केवली-जिन' को कितने परिषह होते हैं?*

उत्तर— सयोग-केवली-भगवान् को क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दंशमशक, चर्या, शय्या, वध, रोग, तृण स्पर्श और मल — ये 11 परिषह होते हैं।

प्र. 2. *'सयोग-केवली-जिन' के ग्यारह-परिषह किस कर्म के सद्भाव में होते हैं?*

उत्तर— वेदनीय-कर्म के सद्भाव में ये 11 परिषह होते हैं; क्योंकि वेदनीय-कर्म का उदय तेरहवें-गुणस्थानवर्ती जिन-भगवान् के भी पाया जाता है।

प्र. 3. *यदि केवली-भगवान् के 11 परिषह होते हैं, तो उन्हें भूख-प्यास की बाधा भी होनी चाहिए।*

उत्तर— मोहनीय-कर्म का उदय न होने से वेदनीय-कर्म में भूख-प्यास की वेदना को उत्पन्न करने की शक्ति नहीं रहती। घातिया-कर्मों के नष्ट हो जाने से अनन्त-चतुष्टय से युक्त केवली-प्रभु के अन्तराय-कर्म का भी अभाव हो जाता है; इसलिए केवलियों को भूख-प्यास की बाधा नहीं रहती।

प्र. 4. *'आहार' कितने प्रकार का होता है?*

उत्तर— 'आहार' छह-प्रकार का होता है — नोकर्माहार — केवली के, कर्माहार — नारकियों के, कवलाहार — मनुष्यों और तिर्यंचों के, लेपाहार — वृक्ष आदि के, ओजाहार — अंडों के, मानसिक-आहार — देवों के। ✿✿

बादर-साम्पराये सर्वे ॥12॥

अर्थ **— 'बादर-साम्पराय' में सभी परिषह सम्भव हैं।**

प्र. 1. *छठे व नवमें-गुणस्थान तक कितने परिषह होते हैं?*

उत्तर - छठे व नवमे-गुणस्थान में परिषह के कारणभूत सब कर्मों का उदय होने से वहाँ पर सभी परिषह संभव हैं।

प्र. 2. *'बादर-साम्पराय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'बादर' का अर्थ 'स्थूल', 'साम्पराय' का अर्थ 'कषाय' है। जिसके स्थूल-कषाय का उदय पाया जाता है, उसे 'बादर-साम्पराय' कहते हैं।

प्र. 3. *सभी-परिषह कौन-से मुनि के होते हैं?*

उत्तर— बादर-साम्परायवाले मुनि के सभी-परिषह होते हैं।

प्र. 4. *बादर-साम्पराय से यहाँ कौन-से गुणस्थान का ग्रहण करना चाहिए?*

उत्तर— बादर-साम्पराय से यहाँ गुणस्थान-विशेष का ग्रहण नहीं होता। ✿✿

ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ।।13।।

अर्थ — 'ज्ञानावरण' के सद्भाव में 'प्रज्ञा' और 'अज्ञान' परीषह होते हैं।

प्र. 1. *ज्ञानावरणी-कर्म के उदय से कौन-से परिषह होते हैं?*

उत्तर— ज्ञानावरणी-कर्म के उदय में 'प्रज्ञा' और 'अज्ञान' परिषह होते हैं।

प्र. 2. *प्रज्ञा और प्रज्ञापरीषह में क्या अन्तर है?*

उत्तर— ज्ञानावरण के क्षयोपशम से प्रकट हुई बुद्धि-विशेष को 'प्रज्ञा' कहते हैं। और बुद्धि या ज्ञान का मद होना 'प्रज्ञा-परीषह' है।

प्र. 3. *ज्ञान का अभाव किस कर्म के उदय से होता है?*

उत्तर— ज्ञानावरणी-कर्म के उदय से ज्ञान का अभाव होता है। इसलिए उसके उदय से 'अज्ञान-परिषह' होता है।

प्र. 4. *'मद' कौन-से ज्ञान का होता है?*

उत्तर— 'मद' मति और श्रुतज्ञान का ही होता है।

प्र. 5. *ज्ञान का मद कहाँ तक होता है?*

उत्तर— ज्ञान का मद वहीं तक होता है, जहाँ तक कि अल्पज्ञता है, और अल्पज्ञता का कारण ज्ञानावरण-कर्म का उदय ही है। ✿✿

दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ।।14।।

अर्थ — 'दर्शनमोह' और 'अन्तराय' के सद्भाव से क्रम से 'अदर्शन' और 'अलाभ' परिषह होते हैं।

प्र. 1. *'दर्शनमोहनीय' और 'अंतरायकर्म' के उदय होने पर कौन-से परिषह होते हैं?*

उत्तर— 'दर्शनमोहनीय' के उदय में 'अदर्शन' और 'अंतराय-कर्म' के उदय में 'अलाभ' परिषह होते हैं।

प्र. 2. *दर्शनमोह से यहाँ 'दर्शनमोह' की कौन-सी प्रकृति का ग्रहण होता है?*

उत्तर— दर्शनमोह से यहाँ 'सम्यक्त्व-मोहनीय'-प्रकृति का ग्रहण होता है।

प्र. 3. *'अदर्शन' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— अदर्शन का अर्थ 'अतत्त्वश्रद्धान' है। ❀❀

चारित्रमोहे नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्याऽऽक्रोश-याचना-सत्कार-पुरस्काराः ॥15॥

अर्थ — चारित्रमोह के सद्भाव में नाग्न्य, अरति, स्त्री, निषद्या, आक्रोश, याचना, सत्कार और पुरस्कार परिषह होते हैं।

प्र. 1. *'चारित्रमोह-कर्म' के उदय से कौन-से परिषह होते हैं?*

उत्तर— 'चारित्रमोह-कर्म' के उदय से नाग्न्य, अरति, स्त्री, निषद्या, आक्रोश, याचना, सत्कार और पुरस्कार — ये सात-परिषह होते हैं।

प्र. 2. *'नाग्नय-परिषह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— निर्ग्रन्थ-लिंग के धारण करने को और उसकी बाधा के लिए आई विपत्तियों को नाग्न्य-परिषह कहते हैं।

प्र. 3. *'अरति-परिषह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'अनिष्ट-पदार्थ' के संयोग में अप्रीतिरूप-भाव के होने को 'अरति-परिषह' कहते हैं।

प्र. 4. *'स्त्री-परिषह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ब्रह्मचर्य को भंग करने आदि की अपेक्षा से स्त्रियों के द्वारा होनेवाले आक्रमण को 'स्त्री-परिषह' कहते हैं।

प्र. 5. *'निषद्या' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ध्यान या सामायिक के लिए एक-आसन से स्थिर हो जाने पर आसन की कठिनता के अनुभव को 'निषद्या-परिषह' कहते हैं।

प्र. 6. *'आक्रोश-परिषह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— "यह ढोंगी है, साधु के वेश में छिपा हुआ पापी है, दुष्ट है" — इत्यादि अज्ञानियों के द्वारा लगाये गये मिथ्या-आक्षेपों को, उनके दुर्वचनों को 'आक्रोश-परिषह' कहते हैं।

प्र. 7. *'याचना-परिषह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संक्लेश या विपत्ति के समय उससे घबड़ाकर उसको दूर करने के लिए किसी भी वस्तु को अपने लिए मांगने के भाव होने को 'याचना-परिषह' कहते हैं।

प्र. 8. *'सत्कार-पुरस्कार-परिषह' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनेक तरह से योग्य रहते हुए भी प्रसंग पर आदर या अग्रपद को न पाकर

चित्त में विचलित न हो जाने को 'सत्कार-पुरस्कार-परिषह' कहते हैं।

वेदनीये शेषा: ॥ 16 ॥

अर्थ - बाकी के सब परिषह वेदनीय-कर्म के सद्भाव में होते हैं।

प्र. 1. वेदनीय-कर्म के उदय से कितने परिषह होते हैं?

उत्तर- वेदनीय-कर्म के उदय से क्षुधा, तृषा, शीत, उष्ण, दशंमशक, चर्या, शय्या, वध, रोग, तृणस्पर्श, मल-ये 11 परिषह होते हैं।

प्र. 2. वेदनीय-कर्म का उदय हो, किन्तु मोहनीय और अंतराय-कर्म का उदय न हो, तो जीव के विकार क्यों नहीं होता?

उत्तर- 13 वें और 14 वें गुणस्थानों में जीव के विकार नहीं होता; क्योंकि वहाँ 'अनंत-चतुष्टय' प्रगट हो जाता है।

प्र. 3. वेदनीय-कर्म का उदय हो और मोहनीय-कर्म का मंद उदय हो, तो भी वह विकार निमित्त क्यों नहीं होता?

उत्तर- तब जीव के बहुत-पुरूषार्थ प्रगट हो जाता है, इसलिए 8 वें से 14 वें गुणस्थान तक पूर्ण-परिषहजयी रहता है, यहाँ कोई परिषह फलोदयरूप नहीं होते। उनका अस्तित्व-मात्र होने से उपचार-मात्र कहा है।

प्र. 4. 'चर्या' और 'शय्या' को वेदनीय-निमित्तक कहा है-ऐसा क्यों?

उत्तर- 'चर्या' और 'शय्या' को कंटक आदि की वेदना की मुख्यता होती है-इसका परिज्ञान कराने के लिए 'चर्या' और 'शय्या' को वेदनीय-निमित्तक कहा है।

प्र. 5. 'निषद्या' को मोहनीय-निमित्तक कहा है-ऐसा क्यों?

उत्तर- प्राण-पीड़ारूप परिणाम मोहोदय से होता है और निषद्या-परिषहजय में इसप्रकार के परिणाम पर विजय पाने की मुख्यता है, इसलिए उसे चारित्र-मोहनीय-निमित्तक कहा है। ✿✿

एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः ॥ 17 ॥

अर्थ - एक-बार एक-आत्मा में एक से लेकर उन्नीस तक परिषह विकल्प से हो सकते हैं।

प्र. 1. एक-जीव में एकसाथ कम-से कम और अधिक-से-अधिक कितने परिषह होते हैं?

उत्तर- एक-जीव में एकसाथ कम-से कम और अधिक-से-अधिक उन्नीस परिषह होते हैं।

प्र. 2. *कौन-से परिषह एकसाथ नहीं होते?*

उत्तर— शय्या, निषद्या, चर्या इन तीन में से कोई एक, और शीत-उष्ण में से एक-समय में कोई एक-परिषह होता है।

प्र. 3. *एकसाथ एक-आत्मा में एक से उन्नीस तक परिषह कैसे होते हैं?*

उत्तर— शीत-उष्ण में से एक, और चर्या, शय्या, निषद्या में से दो — इस तरह तीन-परिषहों का एक-काल में अभाव रहता है, इसलिए 22 परिषहों में से तीन के घटने पर 19 परिषह रहते हैं।

प्र. 4. *'प्रज्ञा' और 'अज्ञान'-परिषह में भी विरोध है, तो क्या इसलिए इन दोनों का भी एकसाथ होना असम्भव है?*

उत्तर— नहीं; क्योंकि एकसाथ एक-आत्मा में श्रुतजान की अपेक्षा 'प्रज्ञा-परिषह' और अवधि-मनःपर्यय-केवलज्ञान के अभाव की अपेक्षा 'अज्ञान-परिषह' रह सकते हैं; इसलिए 'प्रज्ञा' व 'अज्ञान' में परस्पर-विरोध नहीं है। ✿✿

सामायिक-च्छेदोपस्थापना-परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसांपराय-यथाख्यातमिति चारित्रम् ।।18।।

अर्थ — सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्म-साम्पराय और यथाख्यात — यह पाँच-प्रकार का 'चारित्र' है।

प्र. 1. *'चारित्र' के कितने भेद होते हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— चारित्र के पाँच-भेद होते हैं — सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात-चारित्र।

प्र. 2. *'सामायिक-चारित्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भेदरहित सम्पूर्ण-पापों के त्याग करने को 'सामायिक-चारित्र' कहते हैं।

प्र. 3. *'छेदोपस्थापना-चारित्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रमादादि के द्वारा चारित्र में दोष लग जाने पर प्रायश्चित्त के द्वारा उसको दूरकर पुनः निर्दोष-चारित्र को स्वीकार करना 'छेदोपस्थापना-चारित्र' है।

प्र. 4. *'परिहारविशुद्धि-चारित्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिस चारित्र में जीवों की हिंसा का त्याग हो जाने से विशेष-शुद्धि प्राप्त होती है, उसे 'परिहारविशुद्धि-चारित्र' कहते हैं।

प्र. 5. *'सूक्ष्म-साम्पराय-चारित्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अत्यन्त-सूक्ष्म लोभ-कषाय का उदय होने पर जो चारित्र होता है, उसे 'सूक्ष्म-साम्पराय-चारित्र' कहते हैं।

प्र. 6. *'यथाख्यात-चारित्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्पूर्ण-मोहनीयकर्म के क्षय अथवा उपशम से आत्मा के शुद्ध-स्वरूप में स्थिर होने को 'यथाख्यात-चारित्र' कहते हैं।

प्र. 7. *सूत्र में 'यथाख्यात-चारित्र' के बाद 'इति' शब्द से क्या अभिप्राय है?*

उत्तर— सूत्र में 'यथाख्यात' के बाद 'इति' शब्द का अभिप्राय यह है कि यथाख्यात-चारित्र से सकल-कर्मों के क्षय की पूर्ति हो जाती है।

प्र. 8. *सामायिक-शिक्षाव्रत, सामायिक प्रतिमा, सामायिक-आवश्यक और सामायिक-चारित्र में क्या अन्तर है?*

उत्तर— देशव्रती-श्रावक के सामायिक-शिक्षाव्रत दूसरी-प्रतिमा में अभ्यासरूप होता है। सामायिक तीसरी-प्रतिमा में व्रतरूप होता है, और 'सामायिक-आवश्यक' छठे-गुणस्थानवर्ती-मुनि के होता है, जबकि 'निश्चय-सामायिक-चारित्र' आत्मध्यान की प्रमुखतावाले अप्रमत्त-मुनिराज के होता है।

प्र. 9. *'चारित्र' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संसार के कारणभूत कर्मों के बन्ध के लिए जो क्रियायें उनका निरोध कर शुद्ध आत्म-स्वरूप का लाभ करने के लिए जो सम्यग्ज्ञानपूर्वक-प्रवृत्ति होती है, उसको 'चारित्र' कहते हैं। ✿✿

अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्याग-विविक्त-शय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः ।।19।।

अर्थ — अनशन, अवमौदर्य, वृत्तिपरिसंख्यान, रसपरित्याग, विविक्त-शय्यासन और कायक्लेश — यह छह-प्रकार का बाह्य-तप है।

प्र. 1. *तप के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— तप के दो-भेद हैं — ब्राह्य-तप, और आभ्यन्तर-तप।

प्र. 2. *बाह्य-तप के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— बाह्य-तप के छह-भेद हैं — अनशन, अवमौदर्य, वृत्ति-परिसंख्यान, रस-परित्याग, विविक्त-शय्यासन और कायक्लेश।

प्र. 3. *'तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कर्मों का क्षय करने के लिए जो तपा जाता है, उसे 'तप' कहते हैं अथवा इच्छाओं को रोकने/जीतने को 'तप' कहते हैं।

प्र. 4. *'अनशन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संयम की वृद्धि के लिए चार-प्रकार के आहार का त्याग करना 'अनशन' है।

प्र. 5. *'अवमौदर्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संयम पालने में प्रमादादि न आए, इसलिए भूख से कम खाना 'अवमौदर्य' है।

प्र. 6. *'वृत्ति-परिसंख्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— भिक्षा के लिए जाते समय घर-गली का नियम करना, आहार की विधि का संकल्प लेना 'वृत्ति-परिसंख्यान' है।

प्र. 7. *'रस-परित्याग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन्द्रियों को वश करने के लिए घृत-दुग्धादि रसों का त्याग करना 'रस-परित्याग' है।

प्र. 8. *'विविक्तशय्यासन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ब्रह्मचर्य, स्वाध्याय, ध्यानादि की सिद्धि के लिए एकांत और पवित्र-स्थान में शयन करना और आसन लगाना 'विविक्तशय्यासन' है।

प्र. 9. *'कायक्लेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शरीर से ममत्व न रखकर आतापन-योग आदि धारण करना 'कायक्लेश' है।

प्र. 10. *'परिषह' और 'कायक्लेश' में क्या अन्तर है?*

उत्तर— 'कायक्लेश' स्वयं किया जाता है और 'परिषह' अचानक आ जाता है।

प्र. 11. *'अनशन' आदि को 'बाह्य-तप' क्यों कहते हैं?*

उत्तर— अनशन आदि तप बाह्य-द्रव्य के आलम्बन से होते हैं, ये तप दूसरों के प्रत्यक्ष होते हैं; इसलिए इनको 'बाह्य-तप' कहते हैं।

प्र. 12. *क्या बाह्य-तप करना व्यर्थ है; क्योंकि मुक्ति का कारण तो अन्तरंग-तप ही है?*

उत्तर— बाह्य-तप करना व्यर्थ नहीं है; क्योंकि अन्तरंग-तप की वृद्धि के लिए ही अत्यन्त-कठिन अनशनादि-बाह्य-तप का आचरण किया जाता है। ✿✿

प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरम्॥20॥

अर्थ — प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान — ये छह-प्रकार के आभ्यन्तर-तप हैं।

प्र. 1. *आभ्यन्तर-तप कितने होते हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— आभ्यन्तर-तप छह होते हैं — प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, व्युत्सर्ग और ध्यान।

प्र. 2. *'प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रमाद अथवा अज्ञान से लगे दोषों की शुद्धि करना 'प्रायश्चित्त-तप' है।

प्र. 3. *'विनय-तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— पूज्य-पुरुषों की विनय करने के लिए अपने परिणामों को कोमल-स्वच्छ बनाना 'विनय-तप' है।

प्र. 4. *'वैयावृत्य-तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन, वचन, काय से मुनियों, त्यागियों की सेवा-टहल करना 'वैयावृत्य-तप' है।

प्र. 5. *'स्वाध्याय-तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति के साधनरूप शास्त्रों का आलस्यरहित अभ्यास करना 'स्वाध्याय-तप' है।

प्र. 6. *'व्युत्सर्ग-तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बाह्य-आभ्यन्तर-परिग्रह को त्यागकर आत्मा के भावों को शुद्ध बनाना 'व्युत्सर्ग-तप' है।

प्र. 7. *'ध्यान-तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चित्त की चंचलता को रोककर उसे एकाग्र करना 'ध्यान-तप' है।

प्र. 8. *'अंतरंग-तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इन सभी तपों में बाह्य-क्रिया होते हुए जो अंतरंग-भावों की शुद्धता होती है, वही 'अंतरंग-तप' है। ✿✿

नव-चतुर्दश-पञ्च-द्विभेदा यथाक्रमं प्राग् ध्यानात् ॥21॥

अर्थ — 'ध्यान' से पूर्व के 'आभ्यन्तर तपों' के क्रमशः नौ, चार, दश, पाँच और दो-भेद हैं।

प्र. 1. *क्रम से आदि के पाँच आभ्यंतर-तपों के भेद कितने है?*

उत्तर— 'प्रायश्चित्त' नौ-प्रकार का है, 'विनय' चार-प्रकार है; 'वैयावृत्य' दस-प्रकार का है, 'स्वाध्याय' पाँच-प्रकार का है और 'व्युत्सर्ग' दो-प्रकार का है। ✿✿

आलोचन-प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारोपस्थापनाः ॥22॥

अर्थ — आलोचना, प्रतिक्रमण, तदुभय, विवेक, व्युत्सर्ग, तप, छेद, परिहार और उपस्थापना यह नव प्रकार का प्रायश्चित्त है।

प्र. 1. *'प्रायश्चित्त-तप' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'प्रायश्चित्त तप' के नौ-भेद हैं — आलोचना, प्रतिक्रमण, तदुभय, विवेक, व्युत्सर्ग, तप, छेद, परिहार, और उपस्थापना।

प्र. 2. *'आलोचना-प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने से कोई अपराध हो जाने पर उसको गुरुओं के समक्ष दस-दोष (दस-दोष पीछे लिखें हैं) रहित होकर प्रकट करने को 'आलोचना-प्रायश्चित्त' कहते हैं।

प्र. 3. *'प्रतिक्रमण-प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— "मेरे द्वारा किये हुए अपराध मिथ्या हो" — इसतरह के भावों का वाचिक-संप्रयोग होने को 'प्रतिक्रमण-प्रायश्चित्त' कहते हैं।

प्र. 4. *'तदुभय-प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिसमें आलोचना और प्रतिक्रमण प्रायश्चित दोनों ही करने पड़ें, उसको 'तदुभय-प्रायश्चित्त' कहते हैं।

प्र. 5. *'विवेक-प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— संयुक्त आहार-पानी का तथा अन्य-उपकरण नियमित-समय तक पृथक्-पृथक् कर देना 'विवेक-प्रायश्चित्त' है।

प्र. 6. *'व्युत्सर्ग-प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दोष दूर करने के लिए जिन-स्मरणपूर्वक किसी नियतकाल तक देह से ममत्व त्यागकर गुरुआज्ञा का पालन करना 'व्युत्सर्ग-प्रायश्चित्त' है।

प्र. 7. *'तप-प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उपवास आदि छह-प्रकार का बाह्य-तप 'तप-प्रायश्चित्त' है।

प्र. 8. *'छेद-प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कोई बड़ा अपराध हो जाने पर उसकी शुद्धि के लिए दिवस, पक्ष, महीना, वर्ष आदि की 'दीक्षा-छेद' लेने की गुरु-आज्ञा का पालन करना 'छेद-प्रायश्चित्त' है।

प्र. 9. *'परिहार-प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कुछ परिमित-काल के लिए संघ से पृथक् कर देना 'परिहार-प्रायश्चित्त' है।

प्र. 10. *'उपस्थापना-प्रायश्चित्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— सम्पूर्ण-दीक्षा को छेदकर फिर से नवीन-दीक्षा लेना 'उपस्थापना-प्रायश्चित्त' है।

प्र. 11. *प्रायश्चित्त देनेवाले आचार्य में कौन-कौन-से गुण होने चाहिए?*

उत्तर— पंचाचार के पालनेवाले, चारों अनुयोगों के ज्ञाता, द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावानुसार व्यवहार-जाननेवाले, समस्त-संघ की व्यावृत्ति करने में समर्थ व अग्रणी, रत्नत्रय के नाश तथा रक्षा के गुण-दोष दिखानेवाले, हितैषी, प्रभावान्, शिष्य के दोषों को दूसरों पर प्रकट न करनेवाले, संसार-समुद्र से पार करानेवाले होने चाहिए।

प्र. 12. *'प्रायश्चित्त' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— 'प्रायः' अर्थात् 'अपराध', 'चित्त' अर्थात् 'शुद्धि', अर्थात् 'अपराध की शुद्धि

करना' प्रायश्चित्त है।

प्र. 13. *'आलोचना' में लगनेवाले दस-दोष कौन-से हैं?*

उत्तर— आकम्पित, अनुमानित, दृष्ट, बादर, सूक्ष्म, प्रच्छन्न, शब्दाकुलित, बहुजन-शक्ति, अव्यक्त, तत्सेवी-दोष — ये दस-दोष 'आलोचना' के हैं।

प्र. 14. *'आकम्पित-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आचार्य दया करके थोड़ा प्रायश्चित्त दें — इस भाव से आचार्य को पीछी, कमंडल आदि भेंट करके दोष का निवेदन करना 'आकम्पित-दोष' है।

प्र. 15. *'अनुमानित-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपने को दुर्बल-बीमार विचारकर कहना कि "गुरुजी! मुझे थोड़ा-ही दंड दें, तो दोष कहूँ" 'अनुमानित-दोष' है।

प्र. 16. *'दृष्ट-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो दोष किसी न करते नहीं देखा, उसे छिपा लेना और जो दोष करते हुए देख लिया हो, उसे कह देना 'दृष्ट-दोष' है।

प्र. 17. *'बादर-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— केवल स्थूल-दोष का निवेदन करना, सूक्ष्म-दोष को छिपा लेना 'बादर-दोष' है।

प्र. 18. *'सूक्ष्म-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— महान् प्रायश्चित्त के भय से बड़ा-दोष छिपा लेना, छोटे दोषों का निवेदन करना 'सूक्ष्म-दोष' है।

प्र. 19. *'प्रच्छन्न-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गुप्त-दोष के प्रकट होने के भय से प्रच्छन्ना (छिपाना) की — ऐसा दोष 'प्रच्छन्न-दोष' है।

प्र. 20. *'शब्दाकुलित-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रतिक्रमण के समय खूब हल्ला हो रहा हो, उस समय दोष कहना, जिससे पूर्णरूप से गुरु व अन्य कोई सुन न सके, 'शब्दाकुलित-दोष' है।

प्र. 21. *'बहुजन-शक्ति-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'गुरु ने जो प्रायश्चित्त दिया है, वह उचित है या नहीं' — ऐसी आशंका से अन्य-साधुओं से पूछना 'बहुजन-शक्ति-दोष' है।

प्र. 22. *'अव्यक्त-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— गुरु से दोष न कहकर अपने सहयोगी अन्य-साधुओं से दोष कहना 'अव्यक्त-दोष' है।

प्र. 23. *'तत्सेवी-दोष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अपना अपराध गुरु से न कहकर उसके सदृश-दोष किसी दूसरे को लगाकर, उसका प्रायश्चित्त जानकर, स्वयं वैसा ही प्रायश्चित्त लेना 'तत्सेवी-दोष' है। ✿✿

ज्ञान-दर्शन-चारित्रोपचाराः ॥23॥

अर्थ — ज्ञान-विनय, दर्शन-विनय, चारित्र-विनय और उपचार-विनय — यह चार-प्रकार की 'विनय' है।

प्र. 1. *'विनय-तप' के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— 'विनय-तप' के चार-भेद हैं — ज्ञान-विनय, दर्शन-विनय, चारित्र-विनय, और उपचार-विनय।

प्र. 2. *'ज्ञान-विनय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आदरपूर्वक योग्यकाल में सत्य-शास्त्र का अभ्यास करना, मोक्ष के लिए ज्ञान का ग्रहण करना, स्मरण करना 'ज्ञान-विनय' है।

प्र. 3. *'दर्शन-विनय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शंका, कांक्षा आदि दोषरहित सम्यग्दर्शन को धारण करना 'दर्शन-विनय' है।

प्र. 4. *'चारित्र-विनय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— निर्दोष-रीति से चारित्र के पालने में अपने मन को लगाना 'चारित्र-विनय' है।

प्र. 5. *'उपचार-विनय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन, वचन, काय से देव-शास्त्र-गुरु की प्रत्यक्ष व परोक्ष-विनय करना, पूज्य-पुरुषों को देखकर खड़े होना, नस्कारादि करना 'उपचार-विनय' है। ✿✿

आचार्योपाध्याय-तपस्वि-शैक्ष-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधु-मनोज्ञानाम् ॥24॥

अर्थ — आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, शैक्ष, ग्लान, गण, कुल, संघ, साधु और मनोज्ञ — इनके भेद से 'वैयावृत्य' दस-प्रकार का है।

प्र. 1. *'वैयावृत्य-तप' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— 'वैयावृत्य-तप' के दस-भेद हैं — आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, शैक्ष, ग्लान, गण, कुल, संघ, साधु और मनोज्ञ।

प्र. 2. *'आचार्य' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो मुनि स्वयं पंचाचारों का आचारण करे और दूसरों को आचारण करावे, वह 'आचार्य' है।

प्र. 3. ***'उपाध्याय' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **जिनके पास मोक्षोपयोगी-शास्त्रों का अभ्यास किया जाता है, वे 'उपाध्याय' कहलाते हैं।**

प्र. 4. ***'तपस्वी' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **जो महान्-उपवास आदि बड़े और कठोर-तप करते हैं, वे 'तपस्वी' हैं।**

प्र. 5. ***'शैक्ष्य' किसे कहते हैं?***

उत्तर— जो शिक्षा लेनेवाले श्रुताभ्यासी हैं, वे 'शैक्ष्य' हैं।

प्र. 6. *'ग्लान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रोगी-साधुओं को 'ग्लान' कहते हैं।

प्र. 7. *'गण' किसे कहते हैं?*

उत्तर— वृद्ध-मुनियों की परिपाटी में जो मुनि होते हैं, उन्हें 'गण' कहते हैं।

प्र. 8. *'कुल' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दीक्षा-देनेवाले आचार्य की शिष्य-परम्परा को 'कुल' कहते हैं।

प्र. 9. *'संघ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ऋषि, यति, मुनि, और अनगार के भेद से चार-प्रकार के साधुओं को 'संघ' कहते हैं। अथवा मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका के समूह को भी 'संघ' कहते हैं।

प्र. 10. *'साधु' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बहुत-समय के दीक्षित-मुनि को 'साधु' कहते हैं।

प्र. 11. *'मनोज्ञ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो मुनि विद्वान्, अच्छा-वक्ता, महाकुलीन और लोकमान्य समझा जाता है, वह 'मनोज्ञ' है।

प्र. 12. *'वैयावृत्य-तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उपर्युक्त 10 प्रकार के मुनियों की मन, वचन, काय से तथा बाह्य, औषधि-भोजन-पान आदि से उनके अंतर-बाह्यमल आदि को दूर करके सेवा करना 'वैयावृत्य-तप' है।

प्र. 13. *चार-प्रकार के ऋद्धिधारी-मुनि कौन-से हैं?*

उत्तर— राजर्षि, ब्रह्मर्षि, देवर्षि, परमर्षि — ये चार-प्रकार के ऋद्धिधारी-मुनि हैं। ✿✿

वाचना-पृच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नाय-धर्मोपदेशाः ॥25॥

अर्थ — वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा, आम्नाय और धर्मोपदेश — ये पाँच-

प्रकार का 'स्वाध्याय' है।

प्र. 1. *'स्वाध्याय-तप' कितने हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— 'स्वाध्याय-तप' पाँच हैं — वाचना, पृच्छना, अनुप्रेक्षा आम्नाय और धर्मोपदेश।

प्र. 2. *'वाचना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शिष्यों को पढ़ाने का नाम 'वाचना-स्वाध्याय' है।

प्र. 3. *'पृच्छना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ग्रन्थ के अर्थ को अथवा शब्द-पाठ को पूछना, इसको 'पृच्छना' कहते हैं।

प्र. 4. *'अनुप्रेक्षा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— ग्रन्थ-पाठ और उसके अर्थ का मन के द्वारा अभ्यास करने को 'अनुप्रेक्षा' कहते हैं।

प्र. 5. *'आम्नाय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शुद्धतापूर्वक पाठ के कंठस्थ करने को या पुनः पुनः पाठ पढ़ने को 'आम्नाय' कहते हैं।

प्र. 6. *'धर्मोपदेश' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मकल्याण के लिए मिथ्यामार्ग व संदेह-निवृत्ति के लिए, पदार्थ का स्वरूप-दिग्दर्शन के लिये, श्रोताओं में रत्नत्रय की प्रवृत्ति के लिए धर्म का उपदेश करना 'धर्मोपदेश' है

प्र. 7. *स्वाध्याय करने के क्या लाभ है?*

उत्तर— स्वाध्याय से ज्ञान में वृद्धि होती है, वैराग्य बढ़ता है, तप बढ़ता है, व्रतों में अतिचार नहीं लगते, कषायों को जीता जाता है, इन्द्रियों को वश में किया जाता है, मोक्ष के उपायों में जीव की प्रवृत्ति होती है। ✿✿

बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥26॥

अर्थ — बाह्य और आभ्यन्तर-उपाधि का त्याग — यह दो-प्रकार का 'व्युत्सर्ग' है।

प्र. 1. *'व्युत्सर्ग-तप' के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— 'व्युत्सर्ग-तप' के दो भेद हैं — बाह्य-उपाधि-व्युत्सर्ग और आभ्यन्तर-उपाधि-व्युत्सर्ग।

प्र. 2. *'व्युत्सर्ग' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— व्युत्सर्ग का अर्थ है 'त्याग'।

प्र. 3. *'बाह्य-उपाधि-व्युत्सर्ग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— धन-धान्यादि बाह्य-पदार्थों का त्याग 'बाह्य-उपाधि-व्युत्सर्ग' है।

प्र. 4. *'अभ्यान्तर-उपाधि-व्युत्सर्ग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मा के परिणाम क्रोध-मान-माया-लोभ आदि भावों का त्याग करना 'अभ्यान्तर-उपाधि-व्युत्सर्ग' है।

प्र. 5. *'व्युत्सर्ग-प्रायश्चित्त' में होने पर भी यहाँ अलगरूप से क्यों कहा है?*

उत्तर— प्रायश्चित्त में व्युत्सर्ग अपराध की निवृत्ति के लिए किया जाता है। तप परिग्रहत्याग, भय की निवृत्ति आदि के लिये विशेषरूप से किया जाता है, इसलिए इसे अलग से लिया है। ✿✿

उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ॥27॥

अर्थ — उत्तम-संहननवाले का एक विषय में चित्तवृत्ति का रोकना 'ध्यान' है, जो अन्तर्मुहूर्त-काल तक होता है।

प्र. 1. *'ध्यान-तप' किसे कहते हैं?*

उत्तर— उत्तम-संहननवाले के अन्तर्मुहूर्त तक एकाग्रतापूर्वक-चिंता का निरोध 'ध्यान-तप' है।

प्र. 2. *सही-ध्यान किस संहननवाले को कितने समय तक होता है?*

उत्तर— सही-ध्यान उत्तम-संहननवाले को एक-पदार्थ का ध्यान 'अन्तर्मुहूर्त' से अधिक समय तक नहीं होता।

प्र. 3. *'उत्तम-संहनन' कौन-से हैं?*

उत्तर— वज्रवृषभ-नाराज, वज्रनाराच, नाराच — ये तीन उत्तम-संहनन है। मोक्ष में कारणरूप प्रथम-संहनन है।

प्र. 4. *ध्यान का अवधिकाल कितना है?*

उत्तर— ध्यान का अवधिकाल 'अन्तर्मुहूर्त' मात्र है।

प्र. 5. *'मुहूर्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— दो घड़ी को 'मुहूर्त' कहते हैं।

प्र. 6. *'घड़ी' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 24 मिनिट को एक 'घड़ी' कहते हैं।

प्र. 7. *'अन्तर्मुहूर्त' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो मुहूर्त के भीतर होता है, वह 'अन्तर्मुहूर्त' कहलाता है।

प्र. 8. *ध्यान का काल अन्तर्मुहूर्त ही क्यों कहा?*

उत्तर— अन्तर्मुहूर्त-काल के बाद एकाग्र-चिन्ता 'दुर्धर' होती है।

प्र. 9. *ध्यान का फल क्या है?*

उत्तर— ध्यान सर्व-कर्म को भस्म कर देता है। अन्तर्मुहूर्त किया हुआ एक बार का ध्यान घातिया-कर्म को नष्टकर 'केवलज्ञान' प्राप्त कराता है।

प्र. 10. *ध्यान के लिए क्या जरूरी है?*

उत्तर— ध्यान के लिए ध्याता, ध्यान, ध्येय और ध्यान का काल — ये चार बातें जानना जरूरी हैं। ✿✿

आर्त्त-रौद्र-धर्म्य-शुक्लानि ।।28।।

अर्थ — आर्त्त, रौद्र, धर्म्य और शुक्ल — ये ध्यान के चार-भेद हैं।

प्र. 1. *ध्यान के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— ध्यान के चार भेद हैं — आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान।

प्र. 2. *'आर्त्तध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'आर्त्त' नाम दु:ख का है, दु:खानुभवन में चिन्तन का रुकना, लगना 'आर्त्तध्यान' है।

प्र. 3. *'रौद्रध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'रुद्र' का अर्थ निर्दयता, क्रूरता है — ऐसे खोटे-परिणामों के निमित्त से जो ध्यान होता है, वह 'रौद्रध्यान' है।

— *'धर्मध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— शुभ-राग और सदाचरण का पोषक व अरिहंतादि के स्वरूप में चिन्तन का रुकना 'धर्मध्यान' है।

प्र. 5. *'शुक्लध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'शुक्ल' का अर्थ है 'स्वच्छ' अर्थात् नि:कषाय-भावों से किसी एक-पदार्थ पर चित्त का लगना 'शुक्ल-ध्यान' है। यहाँ परिणाम उज्जवल, शुद्ध, पवित्र और निर्मल होते हैं।

प्र. 6. *चार-ध्यानों में कौन-से 'प्रशस्त' हैं व कौन-से 'अप्रशस्त'?*

उत्तर— धर्मध्यान और शुक्लध्यान 'प्रशस्त-ध्यान' हैं, और आर्त्तध्यान व रौद्रध्यान 'अप्रशस्त-ध्यान' हैं।

प्र. 7. *'आर्त्त' और 'रौद्र' ध्यानों को 'अप्रशस्त' क्यों कहा है?*

उत्तर— पापास्रव व संसार के कारण होने से इन्हें 'अप्रशस्त' कहा है।

प्र. 8. *धर्मध्यान और शुक्लध्यान को 'प्रशस्त-ध्यान' क्यों कहा है?*

उत्तर— कर्मों का क्षय करने में समर्थ होने से धर्मध्यान और शुक्लध्यान को 'प्रशस्त-ध्यान' कहा है। ✿✿

परे मोक्षहेतू ।।29।।

अर्थ — उनमें से 'पर' अर्थात् 'अन्त' के दो-ध्यान मोक्ष के हेतु हैं।

प्र. 1. *मोक्ष के कारण और संसार के कारण कौन-से ध्यान हैं?*

उत्तर— धर्मध्यान और शुक्लध्यान 'मोक्ष' के कारण तथा आर्तध्यान और रौद्रध्यान 'संसार' के कारण हैं।

प्र. 2. *साक्षात्-मोक्ष का कारण कौन-सा ध्यान है?*

उत्तर— शुक्लध्यान साक्षात्-मोक्ष का कारण है।

प्र. 3. *परम्परा से मुक्ति का हेतु कौन-सा ध्यान है?*

उत्तर— धर्मध्यान परम्परा से मुक्ति का कारण है। ✿✿

आर्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति-समन्वाहार: ।।30।।

अर्थ — अमनोज्ञ-पदार्थ के प्राप्त होने पर उसके वियोग के लिए चिन्ता-सातत्य का होना प्रथम 'आर्तध्यान' है।

प्र. 1. *'अमनोज्ञ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— विष, कंटक, शत्रु और शस्त्र आदि जो अप्रिय-पदार्थ हैं, वे बाधा के कारण होने से 'अमनोज्ञ' कहे जाते हैं।

प्र. 2. *'अमनोज्ञ-पदार्थ' कितने प्रकार के होते हैं?*

उत्तर— 'अमनोज्ञ-पदार्थ' दो-प्रकार के होते हैं — सचेतन और अचेतन।

प्र. 3. *'सचेतन-अमनोज्ञ' कौन-से हैं?*

उत्तर— दुर्गन्ध-शरीर, सर्प आदि सचेतन-अमनोज्ञ-पदार्थ हैं।

प्र. 4. *'अचेतन-अमनोज्ञ-पदार्थ' कौन-से हैं?*

उत्तर— शस्त्र, कंटक, विष आदि 'अचेतन-अमनोज्ञ-पदार्थ' हैं।

प्र. 5. *'स्मृति-समन्वाहार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चिन्ता के अन्य-विकल्पों से हटकर पुन: पुन: उसी की चिन्ता में लगे रहना 'स्मृति-समन्वाहार' है।

प्र. 6. *अनिष्ट-संयोगज-ध्यान में जीवों के परिणाम कैसे होते हैं?*

उत्तर— अनिष्ट-वस्तु का संयोग होने पर 'इनका मेरे से वियोग कब होगा' — ऐसे अशुभ-परिणाम संतत होते रहते हैं। अर्थात् इससे द्वेषभाव होता है। ✿✿

विपरीतं मनोज्ञस्य ॥31॥

अर्थ — मनोज्ञ-वस्तु के वियोग होने पर उसकी प्राप्ति की सतत-चिन्ता करना दूसरा 'आर्त्तध्यान' है।

प्र. 1. *'इष्टवियोगज-आर्त्तध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्त्री, पुत्र आदि इष्ट-पदार्थों का वियोग होने पर उनके संयोग के लिए बार-बार चिन्तन करना 'इष्ट-वियोगज-आर्त्तध्यान' है। ✿✿

वेदनायाश्च ॥32॥

अर्थ — वेदना के होने पर उसे दूर करने के लिए सतत चिन्ता करना तीसरा-आर्त्तध्यान है।

प्र. 1. *'वेदनाजन्य-आर्त्तध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— रोगजनित-पीड़ा का निरन्तर चिंतन करना 'वेदनाजन्य-आर्त्तध्यान' है।

प्र. 2. *'वेदना' शब्द का अर्थ क्या है?*

उत्तर— सुख-दु:ख का वेदन करना 'वेदना' है। ✿✿

निदानं च ॥33॥

अर्थ — 'निदान' नाम का चौथा 'आर्त्तध्यान' है।

प्र. 1. *'निदान' नामक आर्तध्यान किसे कहते हैं?*

उत्तर— अगामी-काल-सम्बन्धी-विषयों की प्राप्ति में चित्त को तल्लीन करना, 'निदान' नामक आर्तध्यान है।

प्र. 2. *सूत्र में 'च' क्यों दिया है?*

उत्तर— सूत्र में 'च' शब्द का अर्थ है कि केवल इष्टवियोगज, अनिष्टसंयोगज, पीड़ाचिन्तन ही आर्त्तध्यान नहीं है, 'निदान' नाम चौथा-आर्त्तध्यान भी है।

प्र. 3. *'निदान' नामक आर्त्तध्यान का स्वरूप क्या है?*

उत्तर— संकल्प तथा निरन्तर-चिन्ता करना इसका स्वरूप है। ✿✿

तदविरत-देशविरत-प्रमत्तसंयतानाम् ॥34॥

अर्थ — यह 'आर्त्तध्यान' अविरत, देशविरत और प्रमत्तसंयत-जीवों के होता है।

प्र. 1. *'अविरत-जीव' कौन है?*

उत्तर— जिसके व्रत नहीं है, वह जीव 'अविरत' है।

प्र. 2. *अविरत-जीव कौन-से गुणस्थानवर्ती होते हैं?*

उत्तर— मिथ्यादृष्टि, सासादन, मिश्र और असंयत सम्यग्दृष्टि — ये चार गुणस्थानवर्ती-जीव 'अविरत' होते हैं।

प्र. 3. *'देशविरत' कौन-से गुणस्थान में होते हैं?*

उत्तर— पंचमगुणस्थानवर्ती श्रावक 'देशविरत' होते हैं।

प्र. 4. *'प्रमत्तसंयत' कौन-से जीव होते हैं?*

उत्तर— चारित्र का अनुष्ठान करनेवाले प्रमादयुक्त मुनिगण 'प्रमत्तसंयत' होते हैं।

प्र. 5. *आर्त्तध्यान किन गुणस्थानों में होता है?*

उत्तर— मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, असंयत, देशसंयत, प्रमत्तसंयत — इन छह-गुणस्थानों में आर्त्तध्यान होता है।

प्र. 6. *'निदान' कौन-से गुणस्थानवाले मुनियों के नहीं होता?*

उत्तर— प्रमत्तसंयत-गुणस्थानवाले मुनियों के निदान नहीं होता।

प्र. 7. *कौन-से गुणस्थानवाले जीवों को तिर्यंचायु का बंध नहीं होता?*

उत्तर— चौथे, पाँचवे, छठे-गुणस्थान में जो आर्त्तध्यान होता है, वह इतना मंद और मंदतर होता है कि वह तिर्यंचायु के बंध का कारण नहीं होता।

✿✿

हिंसानृत-स्तेय-विषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत-देशविरतयोः ।।35।।

अर्थ — हिंसा, असत्य, चोरी और विषय-संरक्षण के लिए सतत-चिन्तन करना 'रौद्रध्यान' है। वह 'अविरत' और 'देशविरत'-गुणस्थानवर्ती-जीवों के होता है।

प्र. 1. *'रौद्रध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हिंसा, असत्य, चोरी, और विषय-संरक्षण के भाव से उत्पन्न हुआ ध्यान 'रौद्रध्यान' है।

प्र. 2. *यह ध्यान कौन-से गुणस्थानों में होता है?*

उत्तर— यह ध्यान अविरत और देशविरत अर्थात् पहले से पाँचवें-गुणस्थानों में होता है; किन्तु संयमी-मुनि के नहीं होता है।

प्र. 3. *रौद्रध्यान के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— रौद्रध्यान के चार भेद हैं — हिंसानन्दी, मृषानन्दी, चौर्यानन्दी, परिग्रहानन्दी।

प्र. 4. *'हिंसानन्दी-रौद्रध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— हिंसा में आनंद मानकर उसके साधन मिलाने में तल्लीन रहना 'हिंसानन्दी-रौद्रध्यान' है।

प्र. 5. *'मृषानन्दी-रौद्रध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— झूठ बोलने में आनन्द मानकर उसका चिंतन करना 'मृषानन्दी-रौद्रध्यान' है।

प्र. 6. *'चौर्यानन्दी-रौद्रध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— चोरी में आनन्द मानकर उसका विचार करना 'चौर्यानन्दी' है।

प्र. 7. *'परिग्रहानन्दी-रौद्रध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— परिग्रह की रक्षा की चिन्ता में तल्लीन हो जाना 'परिग्रहानन्दी-रौद्रध्यान' है।

प्र. 8. *'आर्त्तध्यान' और 'रौद्रध्यान' का फल क्या है?*

उत्तर— आर्त्तध्यान का फल 'तिर्यंचगति' तथा रौद्रध्यान का फल 'नरकगति' है।

प्र. 9. *अविरत-जीव के रौद्रध्यान और देशविरत के रौद्रध्यान में क्या विशेषता है?*

उत्तर— देशविरत के होनेवाला रौद्रध्यान नरक आदि दुर्गतियों का कारण नहीं होता है, क्योंकि सम्यग्दर्शन की ऐसी ही सामर्थ्य है; जबकि अविरति का रौद्रध्यान नरकादि-गमन का कारण होता है। ✿✿

आज्ञापाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम् ।।36।।

अर्थ — आज्ञा, अपाय, विपाक और संस्थान — इनकी विचारणा के निमित्त मन को एकाग्र करना 'धर्म्यध्यान' है।

प्र. 1. *'धर्मध्यान' किसे कहते हैं?*

उत्तर— धर्म से युक्त ध्यान को 'धर्मध्यान' कहते हैं।

प्र. 2. *'धर्मध्यान' के कितने भेद हैं और कौन-से हैं?*

उत्तर— 'धर्मध्यान' के चार भेद हैं — आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय और संस्थानविचय।

प्र. 3. *'आज्ञाविचय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— कोई भी कार्य करते समय, पदार्थ के सूक्ष्म होने से जब युक्त और उदाहरण की गति न हो, तो ऐसी अवस्था में सर्वज्ञदेव के द्वारा कहे आगम को प्रमाण मानकर गहन-पदार्थ का श्रद्धान कर लेना 'आज्ञाविचय' है।

प्र. 4. *'अपायविचय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— स्वयं के और संसारी-जीवों के दुःख का विचार करना और उससे छूटने के उपाय का चिन्तन करना 'अपायविचय-धर्मध्यान' है।

प्र. 5. *'विपाक-विचय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव — इनकी अपेक्षा कर्म कैसे-कैसे फल देते हैं — इसका सतत-विचार करना 'विपाकविचय-धर्मध्यान' है।

प्र. 6. ***'संस्थान-विचय' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **लोक के आकार और उसके स्वरूप के विचार में अपने चित्त को लगाना 'संस्थानविचय-धर्मध्यान' है।**

प्र. 7. ***'संस्थानविचय-धर्मध्यान' कितने प्रकार का है?***

उत्तर— **'संस्थानविचय-धर्मध्यान' चार-प्रकार का है — पिंडस्थ, पदस्थ, रूपस्थ और रूपातीत।**

प्र. 8. ***'पिण्डस्थ-ध्यान' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **इसमें ध्याता मन-वचन-काय शुद्ध करके एकान्त-स्थान में खड्गासन या पद्मासन से बैठकर अपने पिंड अर्थात् शरीर में स्थित निर्मल-गुणवाले आत्मा का ध्यान करता है।**

प्र. 9. ***पिण्डस्थ-ध्यान की कितनी धारणायें हैं?***

उत्तर— **पिण्डस्थ-ध्यान की पाँच-धारणायें हैं — पार्थिवीधारणा, आग्नेयीधारणा, पवनधारणा, जलधारणा, तत्त्वरूपवती-धारणा।**

प्र. 10. *'पार्थिवी-धारणा' किसे कहते हैं?*

उत्तर— इसमें मध्यलोक के बराबर गम्भीर क्षीरसमुद्र को सोचे, उस क्षीरसागर के मध्य में जम्बूद्वीप-प्रमाण एक-हजार पत्रोंवाले तपाये-सोने के रंग का कमल विचारें। इस कमल के मध्य सुमेरु-पर्वत समान पीतवर्ण की एक कर्णिका को सोचे, उस कर्णिका के ऊपर उन्नत-स्फटिकमणि का धवल-सिंहासन विचारे, उसपर स्वयं को सोचे और अपने शुद्ध-स्वभाव का चिन्तनकर मन को उसमें तल्लीन करना 'पार्थिवी-धारणा' है।

प्र. 11. *'आग्नेयी-धारणा' किसे कहते हैं?*

उत्तर-- ध्याता उसी सिंहासन पर बैठा हुआ सोचे कि मेरे नाभि-स्थान में अन्दर ऊपर को मुख किए खिला हुआ सोलह-पांखुड़ी का एक श्वेत-कमल है। उसके प्रत्येक पत्ते पर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः -- ऐसे सोलह-स्वर और बीच में 'हं' लिखा सोचे, फिर इसी के ऊपर हृदयस्थान में एक आधा-खिला आठ-पांखुड़ी का कमल विचारे। इस कमल के पत्ते को ज्ञानावरण, दर्शनावरण आदि आठ ऐसे कर्मरूप सोचे। नाभिकमलवाले बीच के मंत्र से धुआँ, अग्निशिखा निकलकर ऊपर बढ़ती है, हृदयकमल को जलाने लगती है, द्रव्यकर्मरूपी वन को जलाती हुई अग्नि मस्तक पर आ जाती है, फिर शरीर के दोनों तरफ रेखारूप आकर नीचे दोनों कोणों से मिलती हुई शरीर के चारों और त्रिकोणरूप हो जाती है। इस त्रिकोण की तीनों रेखाओं पर रं रं रं अग्निमय, तीनों कोणों के बाहर अग्निमय स्वस्तिक,

भीतर तीनों कोणों में ॐ रं लिखें हैं — ऐसा विचारे। इसप्रकार यह अग्निमंडल भीतर तो आयुकर्मों को और बाहर-शरीर को दग्ध करके राखरूप होकर शान्त हो जाना है। अग्नि-शिखा जहाँ से उठी थी, वहीं समा जाती है — ऐसी विचारणा 'अग्नि-धारणा' है।

प्र. 12. 'पवन-धारणा' किसे कहते हैं?

उत्तर— दूसरी धारणा के बाद सोचें कि मेरे चारों ओर वायु मण्डल घूम रहा है। हवा ने साँय-साँय करते हुए द्रव्यकर्म और नोकर्म की सारी राख उड़ा डाली और और भस्म को उड़ाकर वह पवन शांत हो गयी, इसे 'पवन-धारणा' कहते हैं।

प्र. 13. 'जल-धारणा' किसे कहते हैं?

उत्तर— तीसरी धारणा के बाद सोचें कि मेरे ऊपर जोर के बादल छाये हुए हैं, पानी खूब बड़ी-बड़ी बूंदों को लेकर बरस रहा है, इस वर्षा ने कर्म की राख के धब्बे भी धो डाले और आत्मा (मैं) अब निर्मल, स्वच्छ रह गयी है। इसे 'जल-धारणा' कहते हैं।

प्र. 14. 'तत्त्वरूपवती-धारणा' किसे कहते हैं?

उत्तर— चौथी धारणा के बाद द्रव्यकर्म, भावकर्म, और नोकर्म से रहित शुद्ध-सिद्ध-समान अमूर्तिक, स्फटिकवत् निर्मल-अनंतदर्शन-ज्ञान-सुख-वीर्य, सूक्ष्मत्व, अवगाहन, अगुरुलघुत्व, अव्याबाध आदि चैतन्य-गुणों का समुदायरूप एक अखण्ड-चैतन्यघनरूप से अपना अनुभव करें — यह 'तत्त्वरूपवती-धारणा' है।

प्र. 15. 'पदस्थ-ध्यान' किसे कहते हैं?

उत्तर— इस ध्यान में ध्याता अपनी इच्छानुसार भिन्न-पदों पर विचार करता है, जैसे हृदयस्थान में आठ-पांखुड़ी का कमल सोचकर प्रत्येक पत्ते पर 'णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, सम्यग्दर्शनाय नमः, सम्यग्ज्ञानाय नमः, सम्यक्चारित्राय नमः पदों को सोचे उन पर रुककर उस अर्थ को अपने स्वरूप में मिलाए। स्वाध्याय, मंत्र-जाप में जो चित्त की एकाग्रता होती है, उसे 'पदस्थ-ध्यान' कहते हैं।

प्र. 16. 'रूपस्थ-ध्यान' किसे कहते हैं?

उत्तर— सोचें कि मैं समवसरण में साक्षात् तीर्थंकर-भगवान् को स्वर्ण-सिंहासन पर कमल के ऊपर अंतरिक्ष-विराजमान परम-वीतराग भगवान को आठ-प्रतिहार्य-सहित देख रहा हूँ अथवा तपरूप अपने आप ही बैठा हूँ। इसको 'रूपस्थ-ध्यान' कहते हैं। अथवा किसी भी अरिहंत की प्रतिमा को चित्त में लाकर उसके द्वारा अरिहंत का स्वरूप विचारें।

प्र. 17. 'रूपातीत-ध्यान' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिसमें ध्याता अपने को शुद्ध-सिद्ध-भगवान् जैसा ही परम-निर्विकल्प हुआ ध्यावे, वह 'रूपातीत-ध्यान' है। ✿✿

शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥37॥

अर्थ — आदि के दो शुक्लध्यान 'पूर्वविद्' के होते हैं।

प्र. 1. आदि के दो कौन-से ध्यान 'पूर्वविद्' के होते हैं?

उत्तर— 'पृथक्त्ववितर्क-विचार' और 'एकत्ववितर्क-विचार' — ये दो शुक्लध्यान पूर्वविद् के होते हैं।

प्र. 2. 'पूर्वविद्' से किसका ग्रहण होता है?

उत्तर— 'पूर्वविद्' से पूर्वज्ञानधारी-श्रुतकेवली का ग्रहण होता है।

प्र. 3. 'श्रुतकेवली' किसे कहते हैं?

उत्तर— 11 अंग, 14 पूर्व के जाननेवाले सकल-श्रुत के धारक को 'श्रुतकेवली' कहते हैं।

प्र. 4. सूत्र में 'च' शब्द क्यों दिया है?

उत्तर— 'च' शब्द से स्पष्ट होता है कि उपशान्त-कषाय और क्षीणकषाय-गुणस्थान में धर्मध्यान भी होता है और आदि के दो-शुक्लध्यान भी होते हैं।

प्र. 5. दो शुक्लध्यान कौन-से गुणस्थान में होते हैं?

उत्तर— अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसाम्पराय और उपशान्तकषाय — इन चारों-गुणस्थानों में 'पृथक्त्ववितर्क-विचार' नामक प्रथम-शुक्लध्यान होता है; तथा क्षीणकषाय नामक 12वें गुणस्थान में 'एकत्ववितर्क-विचार' नामक दूसरा शुक्लध्यान होता है। ✿✿

परे केवलिनः ॥38॥

अर्थ — शेष दो शुक्लध्यान 'केवली' के होते हैं।

प्र. 1. शेष के दो कौन-से ध्यान कौन-से केवली के होते हैं?

उत्तर— अंत के 'सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाती-ध्यान' सयोग-केवली-जिन के होता है और 'व्युपरतक्रिया-निवर्ति-ध्यान' अयोग-केवली-जिन के होता है। ✿✿

पृथक्त्वैकत्ववितर्क-सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-व्युपरतक्रिया-निवर्तीनि ॥39॥

अर्थ — पृथक्त्ववितर्क, एकत्ववितर्क, सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाति और

व्युपरतक्रिया-निवर्ति — ये चार 'शुक्लध्यान' हैं।

प्र. 1. ***'शुक्लध्यान' किसे कहते हैं?***

उत्तर— **'शुद्धध्यान' को शुक्लध्यान कहते हैं।**

प्र. 2. ***'शुक्लध्यान' के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?***

उत्तर— **शुक्लध्यान के चार भेद हैं — पृथक्त्ववितर्क, एकत्व-वितर्क, सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाती और व्युपरतक्रिया-निर्वर्ति।**

प्र. 3. ***'पृथक्त्ववितर्क' किसे कहते हैं?***

उत्तर— श्रुतज्ञान के अवलम्बन द्वारा अनेकप्रकार से एक-द्रव्य से दूसरे-द्रव्य पर, एक पर्याय से दूसरी पर्याय पर, एक शब्द अथवा वचन से दूसरे वचन पर, अथवा मन-वचन-काय में से किसी एक योग से दूसरे में पलटते हुए भी किसी एक-विषय पर चिंतन रुकना 'पृथक्त्ववितर्क-शुक्लध्यान' है।

प्र. 4. *'एकत्व-वितर्क' किसे कहते हैं?*

उत्तर— श्रुतज्ञान के अवलम्बन द्वारा बिना पलटे हुए किसी एक द्रव्य, पर्याय अथवा योग का चिंतन करना 'एकत्ववितर्क-शुक्लध्यान' है।

प्र. 5. *'सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बादर-काय-योगी बन सूक्ष्म-काय-योग के निरोधक-रूप न गिरते हुए आत्मा की आत्मा में एकाग्रता 'सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाति-शुक्लध्यान' है।

प्र. 6. *'व्युपरत-क्रिया-निवर्ति' किसे कहते हैं?*

उत्तर— विशेषरूप से मिट गई है योग की क्रिया जिसकी, ऐसे अनिवर्तिरूप अर्थात् न गिरते हुए आत्मा की आत्मा में एकाग्रता 'व्युपरत-क्रिया-निवर्ति-शुक्लध्यान' है।

✿✿

त्र्येकयोग-काययोगायोगानाम् ।।40।।

अर्थ — वे चार-ध्यान क्रमशः तीन योगवाले, एक योगवाले, काययोगी, अयोगी के होते हैं।

प्र. 1. *प्रथम-शुक्लध्यान कितने योगवाले जीवों के होता है?*

उत्तर— प्रथम-शुक्ल-ध्यान मन, वचन, काययोग के धारक जीवों को होता है।

प्र. 2. *द्वितीय-शुक्लध्यान कितने योगवाले जीवों को होता है?*

उत्तर— दूसरा-शुक्लध्यान तीनों योगों में एक-योगवाले जीवों के होता है।

प्र. 3. *तृतीय-शुक्लध्यान किन जीवों के होता है?*

उत्तर— तृतीय-शुक्लध्यान केवल काययोग के धारक जीवों को होता है।

प्र. 4. *चतुर्थ-शुक्लध्यान किन जीवों के होता है?*

उत्तर— चतुर्थ-शुक्लध्यान योगरहित अयोगी-जीवों के होता है।

प्र. 5. *'त्रियोग' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— मन-वचन-काय के अवलम्बन से आत्म-प्रदेशों का परिस्पन्दन 'त्रियोग' कहलाता है।

प्र. 6. *'एक-योग' का अर्थ क्या है?*

उत्तर— मन, वचन, काय — इन तीन योगों में से किसी एक-योग के द्वारा आत्मप्रदेशों का जो कम्पन होता है, उसे 'एक-योग' कहते हैं।

प्र. 7. *'काययोग' से क्या अभिप्राय है?*

उत्तर— शरीर के अवलम्बन से आत्म-प्रदेशों का कम्पन 'काययोग' है।

प्र. 8. *'अयोग' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— इसका अर्थ 'अयोगकेवली' है। ✿✿

एकाश्रये सवितर्क-वीचरे पूर्वे ।।41।।

अर्थ — पहले के दो ध्यान एक-आश्रयवाले, 'सवितर्क' और 'सवीचार' होते हैं।

प्र. 1. *आदि के दो-शुक्लध्यान एक-आश्रय कैसे हैं?*

उत्तर— 'पृथक्त्ववितर्क' और 'एकत्ववितर्क' का आश्रय एक ही द्रव्य है — ये पूर्वविद्-श्रुतकेवली के ही होते हैं।

प्र. 2. *'पृथक्त्वविर्तक-शुक्लध्यान' की विशेषता क्या है?*

उत्तर— 'पृथक्त्वविर्तक-शुक्लध्यान' 'वितर्क' और 'वीचार' से युक्त होता है। ✿✿

अवीचारं द्वितीयम् ।।42।।

अर्थ — दूसरा-शुक्लध्यान 'अवीचार' है।

प्र. 1. *इस सूत्र का भाव क्या है?*

उत्तर— 'एकत्ववितर्क-शुक्ताध्यान' 'सवितर्क' तो है, परन्तु 'वीचार' से रहित है, जबकि प्रथम-शुक्लध्यान 'विर्तक' और 'वीचार' से सहित है। ✿✿

वितर्कः श्रुतम् ।।43।।

अर्थ — 'वितर्क' का अर्थ 'श्रुत' है।

प्र. 1. *'वितर्क' शब्द का अर्थ क्या है?*

उत्तर— 'श्रुतज्ञान' को 'वितर्क' कहते हैं।

प्र. 2. *'पृथक्त्ववितर्क' और 'एकत्ववितर्क' ध्यानों को 'सवितर्क' क्यों कहते हैं?*

उत्तर— पृथक्त्ववितर्क और एकत्ववितर्क — ये दोनों ध्यान 'श्रुतज्ञान' के बल से होते हैं, अतः ये दोनों ध्यान 'सवितर्क' कहे गये हैं। ✿✿

वीचारोऽर्थ-व्यंजन-योगसंक्रान्तिः ।।44।।

अर्थ — अर्थ, व्यंजन और योग की संक्रान्ति 'वीचार' है।

प्र. 1. *'वीचार' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अर्थ, व्यंजन और योग के पलटने को 'वीचार' कहते हैं।

प्र. 2. *'अर्थ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— 'ध्येय' को 'अर्थ' कहते हैं। इससे 'द्रव्य' और 'पर्याय' लिये जाते हैं।

प्र. 3. *'अर्थ-पलटने' का क्या अभिप्राय है?*

उत्तर— 'अर्थ' अर्थात् 'ध्यान करने योग्य पदार्थ' को छोड़कर उसकी पर्याय को ध्यावे या पर्याय को छोड़कर द्रव्य को ध्यावे, वह 'अर्थ-संक्रान्ति' है।

प्र. 4. *'व्यंजन' किसे कहते हैं?*

उत्तर— व्यंजन 'वचन' को कहते हैं।

प्र. 5. *व्यंजन-संक्रान्ति का क्या अर्थ है?*

उत्तर— श्रुत के एक-वचन को छोड़कर अन्य-वचन का अवलम्बन करना, उसे छोड़कर अन्य का अवलम्बन करना 'व्यंजन-संक्रान्ति' है।

प्र. 6. *'योग' किसे कहते हैं?*

उत्तर— मन, वचन, काय की क्रिया को 'योग' कहते हैं?

प्र. 7. *'योग-संक्रान्ति' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— काय-योग को छोड़कर मनोयोग या वचनयोग को ग्रहण करना या उन्हें छोड़कर अन्य-योग को ग्रहण करना 'योग-संक्रान्ति' है।

प्र. 8. *'संक्रान्ति' का क्या अर्थ है?*

उत्तर— संक्रान्ति का अर्थ 'परिवर्तन' है। ✿✿

सम्यग्दृष्टि-श्रावकाविरतानन्तविजोयक-दर्शनमोह-क्षपकोपशम-कोपशान्तमोह-क्षपक-क्षीणमोह-जिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणनिर्जराः।।45।।

अर्थ — सम्यग्दृष्टि, देशवती-श्रावक, पूर्ण-विरत, अनन्तानुबन्धि-वियोजक,

दर्शनमोह-क्षपक, चारित्रमोह-उपशमक, उपशान्तमोह, चारित्रमोह-क्षपक क्षीणमोह और जिन — ये क्रम से असंख्यगुणित-निर्जरावाले होते हैं।

प्र. 1. *'उत्तरोत्तर-निर्जरा' किन-किन पात्रों की अधिक होती है?*

उत्तर— सम्यग्दृष्टि, पंचमगुणस्थावर्ती श्रावक, विरत, अनंतानुबंधी का विसंयोजन-कर्ता, दर्शनमोह का क्षय करनेवाला, चारित्रमोह का उपशम करनेवाला, उपशांतमोहवाला, क्षपकश्रेणी चढ़ता हुआ, क्षीणमोह, जिनेन्द्र-भगवान् — इनकी उत्तरोत्तर असंख्यात-असंख्यातगुणी-निर्जरा होती है।

प्र. 2. *सूत्र में 'निर्जरा' में सम्यग्दृष्टि को लिया है, उससे कौन-से सम्यग्दृष्टि-जीव का ग्रहण किया है?*

उत्तर— 'प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टि'। अनादि-मिथ्यादृष्टि-जीव सर्वप्रथम प्रथमोपशम-सम्यक्त्व को ही प्राप्त होता है, उसे ही सातिशय-मिथ्यादृष्टि से असंख्येयगुणी-निर्जरा होती है।

प्र. 3. *निर्जरा में दूसरा-स्थान श्रावक को प्राप्त है, इससे किस श्रावक का ग्रहण होता है?*

उत्तर— जो प्रत्याख्यानावरण-कषाय का उदय रहने से पूर्ण-संयम को प्राप्त नहीं होता, किन्तु अप्रत्याख्यानावरण-कषाय का उदय रहने से एकदेशव्रतधारी है — ऐसा व्रती-श्रावक का ग्रहण किया है।

प्र. 4. *'विरत' से किसका ग्रहण होता है?*

उत्तर— षष्ठम, सप्तम-गुणस्थानवर्ती सकलसंयमी का यहाँ 'विरत' नाम से ग्रहण किया है।

प्र. 5. *सूत्र में आया 'अनन्तानुबंधीवियोजक' शब्द किनका वाचक है?*

उत्तर— दर्शनमोह की क्षपणा को प्रारम्भ करनेवाले असंयत, देशसंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्त-संयम जीव जो अनंतानुबंधी की विसंयोजना करनेवाले हैं, उनका यहाँ ग्रहण किया है।

प्र. 6. *अनंतानुबंधी-वियोजक क्या करता है?*

उत्तर— वह सप्तप्रकृतियों का नाश करते हुए सर्वप्रथम तीन करण करता है, उनमें से अनिवृत्तिकरण के अन्तर्मुहूर्त-काल के अन्तिम-समय में अनंतानुबंधी की चार-कषायों की विसंयोजना करता है।

प्र. 7. *'विसंयोजना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— अनंतानुबंधी-कषाय का अप्रत्याख्यान आदि 12 कषायरूप परिणमन करना 'विसंयोजना' कहलाता है।

प्र. 8. *'दर्शनमोह-क्षपक' कौन होते हैं?*

उत्तर— सात अर्थात् अनन्तानुबंधी चार और मिथ्यात्व, सम्यक्-मिथ्यात्व, सम्यक्प्रकृति का क्षय इनकी सत्ता व्युच्छित्ति करनेवाले जीव 'दर्शनमोह-क्षपक' है।

प्र. 9. 'उपशमक' शब्द से किन जीवों का ग्रहण होता है?

उत्तर— यहाँ सूत्र में 'उपशमक' शब्द उपशम-श्रेणी में स्थित 8वें, 9वें, 10वें गुणस्थानवाले जीवों का वाचक है, ये जीव चारित्रमोह की 21 प्रकृतियों के उपशमक होते हैं।

प्र. 10. उपशान्त-मोह से किन जीवों का ग्रहण होता है?

उत्तर— 11 वें गुणस्थानवर्ती जीवों का उपशान्त-मोह में ग्रहण होता है।

प्र. 11. 'क्षपक' से कौन-से जीवों का ग्रहण होता है?

उत्तर— अष्टम, नवम, दसम-गुणस्थानवर्ती-जीव जो क्षपक-श्रेणी पर आरूढ़ हैं, वे ही यहाँ 'क्षपक' में ग्रहीत होते हैं। ये जीव चारित्रमोह की 21 प्रकृतियों के क्षय करनेवाले हैं।

प्र. 12. यहाँ 'जिन' पद से कौन-से 'जिन' का ग्रहण होता है?

उत्तर— 'सयोगकेवली-जिन' और 'अयोगकेवली-जिन'। 12वें गुणस्थानवर्ती से 'सयोगी-जिन' के और उनसे भी 'अयोगी-जिन' के असंख्यात-गुणी अधिक निर्जरा होती है। ✿✿

पुलाक-बकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातका निर्ग्रन्थाः ।।46।।

अर्थ — पुलाक, बकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ और स्नातक — ये पाँच निर्ग्रन्थ (दिगम्बर मुनि) हैं।

प्र. 1. निर्ग्रन्थ-मुनि के कितने भेद हैं और कौन-कौन-से हैं?

उत्तर— निर्ग्रन्थ-मुनि के पाँच भेद हैं पुलाक, बकुश, कुशील, निर्ग्रन्थ और स्नातक।

प्र. 2. 'पुलाक' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो उत्तर-गुणों की भावना से रहित हो, तथा किसी क्षेत्र व काल में मूलगुणों में भी कभी-कभी दोष लगा लेते हैं, उनको 'पुलाक-मुनि' कहते हैं।

प्र. 3. 'बकुश' किसे कहते हैं?

उत्तर— जो मूलगुणों का निर्दोष पालन करते हों, अपने शरीर व उपकरणादि की शोभा बढ़ाने की कुछ इच्छा रखते हों, उन्हें 'बकुश' कहते हैं।

प्र. 4. 'कुशील' किन्हें कहते हैं?

उत्तर— कुशील के दो-भेद हैं — प्रतिसेवना-कुशील और कषाय-कुशील।

प्र. 5. 'प्रतिसेवना-कुशील' किसे कहते हैं?

उत्तर— जिनके उपकरण तथा शरीरादि से विरक्तता न हो और मूलगुण तथा उत्तरगुण की परिपूर्णता है; परन्तु उत्तर-गुण में कुछ विराधना-दोष हो, उन्हें 'प्रतिसेवना-कुशील' कहते हैं।

प्र. 6. *'कषाय-कुशील' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिन्होंने संज्वलन-कषाय के अलावा अन्य-कषायों को जीत लिया हो, उन्हें 'कषाय-कुशील' कहते हैं।

प्र. 7. *'निर्ग्रन्थ' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जिन का मोह कर्म क्षीण हो गया हो ऐसे बारहवें गुणस्थानवर्ती-मुनि को 'निर्ग्रन्थ' कहते हैं।

प्र. 8. *'स्नातक' किसे कहते हैं?*

उत्तर— समस्त घातिया-कर्मों का नाश करनेवाले केवली-भगवान् 'स्नातक' कहलाते हैं।

प्र. 9. *इन पाँचों को 'निर्ग्रन्थ' क्यों कहा है?*

उत्तर— ये पाँचों ही सम्यग्दृष्टि तथा परिग्रह-त्यागी हैं, इनमें चारित्र की हीनाधिकता होने पर भी परिग्रह की ग्रन्थि से रहित होने के कारण इन पाँचों को ही 'निर्ग्रन्थ' कहा है। पहले तीन 'चरणानुयोग' के और शेष दो 'करणानुयोग' के निर्ग्रन्थ हैं।

✿✿

संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थ-लिंग-लेश्योपपादस्थान-विकल्पतः साध्याः ॥47॥

अर्थ — संयम, श्रुत, प्रतिसेवना, तीर्थ, लिंग, लेश्या, उपपाद और स्थान के भेद से इन निर्ग्रन्थों का व्याख्यान करना चाहिए।

प्र. 1. *मुनियों में विशेष-भेद कौन-से होते हैं?*

उत्तर— संयम, श्रुत, प्रतिसेवना, तीर्थ, लिंग, लेश्या, उपपाद और स्थान के भेद से 'पुलाक' आदि मुनियों के विशेष-भेद हैं।

प्र. 2. *पुलाक, बकुश और प्रतिसेवना-कुशील के संयम कैसे होता है?*

उत्तर— पुलाक, बकुश और प्रतिसेवना-कुशील-मुनि के 'सामायिक' और 'छेदोपस्थापना'-संयम होता है।

प्र. 3. *'कषाय-कुशील' मुनि के कौन-सा संयम होता है?*

उत्तर— 'कषाय-कुशील' मुनि के सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि और सूक्ष्मसाम्पराय-संयम होता है।

प्र. 4. *'निर्ग्रन्थ' और 'स्नातक' मुनि के कौन-सा संयम होता है?*

उत्तर— **'निर्ग्रन्थ' और 'स्नातक' मुनि के एक 'यथाख्यात-संयम' ही होता है।**

प्र. 5. ***श्रुत की अपेक्षा 'पुलाक' आदि मुनियों में क्या विशेषता होती है?***

उत्तर— **पुलाक, बकुश और प्रतिसेवना-मुनि अधिक से अधिक दस-पूर्व के ज्ञाता होते हैं। 'कषाय-कुशील' और निर्ग्रन्थ चौदह-पूर्व के ज्ञाता होते हैं और पुलाक-मुनि कम से कम 'आचारांग' के ज्ञाता होते हैं, बकुश, कुशील और निर्ग्रन्थ पाँच-समिति और तीन-गुप्तियों के धारक होते हैं।**

प्र. 6. ***'प्रतिसेवना' की अपेक्षा 'पुलाक' आदि मुनियों की क्या विशेषता है?***

उत्तर— **'पुलाक' मुनि पाँच-महाव्रतों में तथा 'रात्रिभोजन-त्याग-व्रत' में किसी एक में परवश होकर कदाचित् दोष लगा देते हैं। बकुश-मुनि उपकरण-बकुश और शरीर-बकुश दो-प्रकार के हैं। उपकरण-बकुश को सुन्दर-उपकरणों में आसक्ति रहने से विराधना होती है। शरीर-बकुश मुनि को अपने शरीर में आसक्ति होने से विराधना होती है। प्रतिसेवना-कुशील मुनि उत्तरगुणों में कदाचित् दोष लगा लेते हैं। कषाय-कुशील, निर्ग्रन्थ और स्नातक के प्रतिसेवना नहीं होती।**

प्र. 7. *तीर्थ की अपेक्षा पाँच-मुनियों में क्या विशेषता है?*

उत्तर— सभी तीर्थंकरों के तीर्थ में पाँचों-प्रकार के निर्ग्रन्थ पाए जाते हैं।

प्र. 8. *लिंग की अपेक्षा 'पुलाक' आदि मुनियों में क्या विशेषता है?*

उत्तर— भाव-लिंग की अपेक्षा तो पाँचों ही भावलिंगी हैं; क्योंकि सभी सम्यग्दृष्टि व संयमी हैं। द्रव्यलिंग की अपेक्षा सभी निर्ग्रन्थ-दिगम्बर होते हुए भी 'स्नातक' के पिच्छी-कमण्डलु उपकरण नहीं होते, शेष के होते हैं।

प्र. 9. *'लेश्या' की अपेक्षा से पाँचों-मुनियों में क्या विशेषता है?*

उत्तर— पुलाक के तीन शुभ-लेश्या, बकुश और प्रतिसेवना कुशील के छह लेश्यायें भी होती हैं; क्योंकि उपकरणों में आसक्ति होने से कभी अशुभ-लेश्यायें भी हो सकती हैं। कषाय-कुशील के कृष्ण, नील के सिवाय चार लेश्याये होती हैं। निर्ग्रन्थ व स्नातक के शुक्ल-लेश्या ही है। अयोग-केवली के शुक्ल-लेश्या भी नहीं होती।

प्र. 10. *'उपपद' की अपेक्षा 'पुलाक-मुनियों' में क्या विशेषता है?*

उत्तर— पुलाक-मुनि अधिक से अधिक 'सहस्रार-स्वर्ग' में उत्कृष्ट-स्थिति के धारक होते हैं। बकुश और प्रतिसेवना-कुशील बाईस-सागर की स्थितिवाले 'आरण-अच्युतकल्पों' में उत्पन्न होते हैं। कषाय-कुशील व ग्यारहवें-गुणस्थानवाले निर्ग्रन्थ तैंतीस-सागर की स्थितिवाले 'सर्वार्थसिद्धि' विमान में उत्पन्न होते हैं। कम से कम उत्पत्ति सौधर्म-कल्प तक होती है तथा 'स्नातक' मोक्षगामी होते हैं।

प्र. 11. 'स्थान' का यहाँ क्या अर्थ है?

उत्तर— स्थान का यहाँ अर्थ 'संयमस्थान' है।

प्र. 12. 'संयमस्थान' कितने होते हैं?

उत्तर— कषाय-निमित्तक असंख्यात-संयमस्थान होते हैं।

प्र. 13. कषाय-निमित्तक असंख्यात-संयमस्थान कैसे बनते हैं? तथा इन्हें 'कषाय-निमित्तक' क्यों कहते हैं?

उत्तर— कषायों की तरतमता से संयम के असंख्यात-स्थान बनते हैं। कषायों की ही तरतमता से संयम के भेद होने से इनको 'कषायनिमित्तक' कहते हैं।

प्र. 14. 'पुलाक' व 'कषाय-कुशील' के कौन-सा स्थान है?

उत्तर— पुलाक व कषाय-कुशील के सबसे जघन्य-लब्धिस्थान है।

प्र. 15. सर्वनिकृष्ट-लब्धिस्थान का क्या अर्थ है?

उत्तर— पुलाक और कषाय-कुशील के पाये जानेवाले सर्वजघन्य-संयमस्थान 'सर्वनिकृष्ट-स्थान' कहलाते हैं। ✿✿

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् ॥1॥

अर्थ — मोह का क्षय होने से तथा ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय-कर्मों का क्षय होने से 'केवलज्ञान' प्रकट होता है।

प्र. 1. *किस कर्म के क्षय के बाद ज्ञानावरण, दर्शनावरण अंतराय-कर्म का क्षय होकर केवलज्ञान होता है?*

उत्तर— मोहनीय-कर्म का क्षय होने से केवल अन्तर्मुहूर्त-पर्यन्त 'क्षीणकषाय' नामक बारहवाँ गुणस्थान रहने के बाद एक साथ ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय कर्म का क्षय होने पर 'केवलज्ञान' उत्पन्न होता है।

प्र. 2. *केवलज्ञान कब प्रकट होता है?*

उत्तर— चार घातिया कर्मों का सर्वथा-क्षय हो जाने पर केवलज्ञान प्रकट होता है।

प्र. 3. *सूत्र में 'मोहक्षयात्' पद को अलग क्यों लिखा है?*

उत्तर— घातिया-कर्मों में सबसे पहले मोहनीय-कर्म का क्षय होता है, क्योंकि इसका अभाव हुए बिना शेष कर्मों का अभाव नहीं होता। इसके अभाव के अन्तर्मुहूर्त में शेष तीनों घातिया-कर्मों का नाश होता है; इसलिए इसको अलग लिखा है।

प्र. 4. *केवलज्ञान की उत्पति कितनी कर्म-प्रकृतियों के क्षय से होती है?*

उत्तर— 28 मोहनीय कर्म + 5 ज्ञानावरणी + 9 दर्शनावरणी + 5 अंतराय = 47 प्रकृतियाँ और इनके साथ नरकायु, तिर्यंचायु, देवायु — ये तीन-आयुकर्म तथा नामकर्म की 13 — इसप्रकार कुल मिलाकर 63 कर्म-प्रकृतियों के क्षय होने से केवलज्ञान प्रगट होता है।

प्र. 5. *जीव 'मुक्त-परमात्मा' कैसे बनता है?*

उत्तर— 63 प्रकृतियों का नाश करके आत्मा केवलज्ञान को प्राप्त कर अरिहंत-अवस्था को प्राप्त कर जीव 'मुक्त-परमात्मा' बन जाता है।

प्र. 6. *वास्तव में नाश तो 60 प्रकृतियों का ही होता है, तो 63 का क्यों कहा है?*

उत्तर— वास्तव में नाश तो 60 प्रकृतियों का ही होता है, तीन-आयुकर्म की प्रकृतियाँ पहिले से सत्ता में ही नहीं होतीं, इसलिए इनका नाश कह दिया है। इसप्रकार 63 प्रकृतियाँ का नाश कहा है।

प्र. 7. *दस-प्रकार के केवली कौन-कौन-से हैं?*

उत्तर— पंच-कल्याणकवाले तीर्थंकर-केवली, तीन-कल्याणकवाले तीर्थंकर-केवली,

दो-कल्याणकवाले तीर्थंकर-केवली, सातिशय-केवली, सामान्य-केवली, उपसर्ग-केवली, अंतःकृत-केवली, मूक-केवली, अनुबद्ध-केवली, सतत-केवली। ✿✿

बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥2॥

अर्थ — बन्ध के हेतुओं के अभाव और निर्जरा से सब कर्मों का आत्यन्तिक-क्षय होना ही 'मोक्ष' है।

प्र. 1. *'मोक्ष' किसे कहते हैं?*

उत्तर— बन्ध के कारणों का अभाव तथा निर्जरा के द्वारा ज्ञानावरणादि-कर्मों का अत्यन्त-क्षय होना 'मोक्ष' है।

प्र. 2. *कर्मों का अभाव कैसे होता है?*

उत्तर— मिथ्यादर्शन आदि कारणों का अभाव हो जाने से नये-कर्मों का बन्ध होना रुक जाता है और तप आदि के द्वारा पहले बंधे हुए कर्मों की निर्जरा हो जाती है, इसप्रकार आत्मा से सर्व-कर्मों का अभाव हो जाता है।

प्र. 3. *कर्म का अभाव कितने प्रकार से होता है?*

उत्तर— कर्म का अभाव दो प्रकार से होता है — यत्नसाध्य और अयत्नसाध्य।

प्र. 4. *'अयत्नसाध्य' से किनका और 'यत्नसाध्य' से किनका अभाव होता है?*

उत्तर— चरम-शरीरी जीव के नरकायु, तिर्यंचायु, देवायु का अभाव 'अयत्नसाध्य' है; क्योंकि उनके इनका अभाव स्वयं है, शेष के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। ✿✿

औपशमिकादि-भव्यत्वानां च ॥3॥

अर्थ — तथा औपशमिक आदि भावों और भव्यत्व-भाव के अभाव होने से 'मोक्ष' होता है।

प्र. 1. *मोक्ष होने पर कर्मों के सिवा और किसी का अभाव होता है?*

उत्तर— मुक्त होने पर कर्मों के सिवा औपशमिकादिभावों को तथा परिणामिक-भावों में से भव्यत्व-भाव का भी अभाव हो जाता है।

प्र. 2. *भाव कितने प्रकार के होते हैं?*

उत्तर— औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक, औदयिक और पारिणामिक — ये पाँच-प्रकार के भाव होते हैं।

प्र. 3. *औपशमिक के साथ पारिणामिक-भाव को ग्रहण क्यों नहीं किया, जबकि भव्यत्व-पारिणामिक-भाव है?*

उत्तर— पारिणामिक-भावों में सिर्फ भव्यत्व-भाव का ही नाश होता है, अन्य जीवत्व, सत्त्व, वस्तुत्व आदि भावों का क्षय नहीं होता; क्योंकि इनका क्षय होने से जीव के शून्यत्व का प्रसंग आता है। इसीलिए मात्र भव्यत्वभाव को ग्रहण किया है।

प्र. 4. द्रव्य-कर्मों का नाश होने पर उस द्रव्य के निमित्र से होनेवाले औपशमिकादि-भावों का अभाव स्वयं हो जाता है, तब इस सूत्र को क्यों कहा है?

उत्तर— यह कोई नियम नहीं है कि निमित्त के न होने पर कार्य नहीं होता है; किन्तु निमित्त के अभाव में भी कार्य देखा जाता है, अतः द्रव्य-कर्म के नाश हो जाने पर भाव कर्मों का भी नाश हो जाता है — यह सामर्थ्य से लब्ध है। भावकर्मों के क्षय की स्पष्टता करने के लिए इस सूत्र को अलग से कहा है।

प्र. 5. मुक्तावस्था में जीव के साथ कौन-सा भाव रहता है?

उत्तर— 'जीवत्व' नाम का पारिणमिक-भाव मुक्तावस्था में भी रहता है। ✿✿

केवलसम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्यः ॥4॥

अर्थ — परन्तु क्षायिक-सम्यक्त्व, केवलज्ञान, केवलदर्शन और सिद्धत्वभाव का अभाव मोक्ष में नहीं होता।

प्र. 1. मोक्ष में कौन-से भावों का अभाव नहीं होता ?

उत्तर— क्षायिक-सम्यक्त्व, केवलज्ञान, केवलदर्शन और सिद्धत्व-भाव का अभाव मोक्ष में नहीं होता।

प्र. 2. मुक्त-जीव के क्या ये चार-क्षायिक-भाव शेष रहते हैं, अनंत-सुख, अंनत-वीर्य आदि भावों का फिर तो अभाव कहलाएगा?

उत्तर— अनंतज्ञान और अनंतदर्शन के साथ ही अनंतवीर्य होता है। अनंतसुख तो अनंतज्ञानमय है ही। ऐसे ही अन्य भी भी अनंतगुण सिद्धों में होते हैं । यह सब अनन्तगुण भी एक जीवत्व-चेतनत्व-गुण के साथ-साथ रहनेवाले हैं।

प्र. 3. मुक्त-जीव का आकार नहीं होता, अतः उनका अभाव ही समझना चाहिए; क्योंकि जिस वस्तु का आकार नहीं, वह वस्तुरूप नहीं होती?

उत्तर— जिस शरीर से जीव मुक्त होता है, उस शरीर का जैसा आकार होता है, वैसा ही मुक्त-जीव का आकार रहता है।

प्र. 4. यदि जीव का आकार शरीर के आकार के अनुसार ही होता है, तो शरीर का अभाव हो जाने पर जीव को समस्त लोकाकाश में फैल जाना चाहिए; क्योंकि उसका स्वाभाविक-परिणाम तो लोकाकाश के प्रदेशों के बराबर बतलाया है।

उत्तर— यह ठीक नहीं है; क्योंकि आत्मा के प्रदेशों में संकोच और विस्तार का कारण 'नामकर्म' था। 'नामकर्म' के कारण जैसा शरीर मिलता था, उसी के अनुसार आत्म-प्रदेशों में संकोच और विस्तार होता था। मुक्त होने पर 'नामकर्म' का अभाव हो जाने से संकोच और विस्तार का भी अभाव हो गया। ✿✿

तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ॥5॥

अर्थ — मुक्त होने पर जीव लोक के अन्त तक ऊपर जाता है।

प्र. 1. *कर्मों का क्षय होने के बाद जीव कहाँ जाता है?*

उत्तर— समस्त-कर्मों का क्षय होने के बाद मुक्त-जीव लोक के अन्तभाग-पर्यन्त ऊपर को जाता है।

प्र. 2. *कर्मों का क्षय होते ही जीव को कौन-सी तीन-अवस्थायें प्राप्त होती हैं?*

उत्तर— शरीर का वियोग, सिद्धमान-गति तथा लोक के अन्त में प्राप्ति — ये तीनों अवस्थायें एकसाथ और एक ही क्षण में होती हैं।

प्र. 3. *सिद्ध-शिला कहाँ पर है?*

उत्तर— सर्वार्थसिद्धि-विमान से 12 योजन ऊपर 8 योजन मोटी, एक-राजू पूर्व-पश्चिम और 7 राजू उत्तर-दक्षिण 'ईषत्-प्राग्भार' नाम की आठवीं-पृथ्वी है, जिसके अंतिम ऊपरी-भाग में बीचों-बीच मनुष्य-लोक-प्रमाण 45 लाख-योजन समतल-अर्द्धगोलाकर 'सिद्धशिला' है। ✿✿

पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥6॥

अर्थ — पूर्व-प्रयोग से, संग का अभाव होने से, बन्धन के टूटने से और वैसा गमन करने का स्वभाव होने से मुक्तजीव ऊर्ध्वगमन करता है।

प्र. 1. *क्या कारण है कि मुक्त-जीव ऊपर ही जाता है?*

उत्तर— पूर्व-संस्कार से, संगरहित होने से, कर्म-बन्ध नष्ट होने से तथा ऊर्ध्वगमन का स्वभाव होने से मुक्त-जीव ऊपर को जाता है।

प्र. 2. *'पूर्व-प्रयोग' पद का सूत्र में क्या अर्थ है?*

उत्तर— पहले किया हुआ मोक्ष के लिये पुरुषार्थ प्रयत्न-उद्यम से है। ✿✿

आविद्ध-कुलाल-चक्रवद् व्यगत-लेपालांबुववेरण्डबीजवद-ग्निशिखावच्च ॥7॥

अर्थ — घुमाये गये कुम्हार के चक्र के समान, लेप से मुक्त हुई तूमड़ी के

समान, एरण्ड के बीज के समान और अग्नि की शिखा के समान (मुक्त-जीव ऊर्ध्वगमन ही करता है)

प्र. 1. *'पूर्व-प्रयोग' से जीव ऊर्ध्वगमन कैसे करता है, उदाहरण देकर बताइए?*

उत्तर— मुक्त-जीव कुम्भकार के द्वारा घुमाये हुए चाक की तरह पूर्वप्रयोग से ऊर्ध्वगमन करता है, जैसे कुम्भकार अपने चाक को घुमाकर छोड़ देता है, तब भी वह चाक पहले के भरे हुए वेग के वश से घूमता रहता है; उसीप्रकार जीव भी संसार-अवस्था में मोक्ष-प्राप्ति के लिए बार-बार अभ्यास करता रहता है। मुक्त होने पर यद्यपि उसका अभ्यास छूट जाता है; तथापि वह पहले के अभ्यास से ऊपर को गमन करता है।

प्र. 2. *संग-रहित होने से मुक्तात्मा का ऊर्ध्वगमन क्यों होता है, उदाहरण देकर समझाइये?*

उत्तर— मुक्त-जीव दूर हो गया है लेप जिसका, ऐसी तुम्बी की तरह ऊपर को जाता है, जैसे तुम्बी पर जब तक मिट्टी या लेप रहता है, तब तक वह वजनदार होने से पानी में डूबी रहती है; पर ज्यों ही उसकी मिट्टी गलकर दूर हो जाती है, त्यों ही वह पानी के ऊपर आ जाती है। इसीप्रकार यह जीव सब तक कर्मलेप से सहित होता है, तब तक संसार-समुद्र में डूबा रहता है; पर ज्यों ही इसका कर्म-लेप दूर हो जाता है, त्यों ही ऊपर उठकर लोक के ऊपर पहुँच जाता है।

प्र. 3. *बन्ध का उच्छेद होने से आत्मा ऊपर को किसप्रकार जाता है? उदाहरण देकर बताइए।*

उत्तर— मुक्तजीव कर्मबन्ध से मुक्त होने के कारण एरण्ड के बीज के समान ऊपर को जाता है, जैसे एरण्ड-वृक्ष का सूखा-बीज जब चटकता है, तब उसकी मिंगी ऊपर को ही जाती है, उसीप्रकार यह जीव कर्मों का बन्धन दूर होने पर ऊपर को जाता है।

प्र. 4. *'तथागति-स्वभाव' से आत्मा का ऊर्ध्वगमन सिद्ध कीजिये?*

उत्तर— मुक्त-जीव स्वभाव से ही अग्नि की शिखा की तरह ऊर्ध्वगमन करता है, जैसे हवा के अभाव में अग्नि की शिखा ऊपर को ही जाती है, उसीप्रकार कर्मों के बिना यह जीव भी ऊपर को जाता है। ✿✿

धर्मास्तिकायाभावात् ।।8।।

अर्थ — धर्मास्तिकाय-द्रव्य का अभाव होने पर मुक्त-जीव लोकान्त से और ऊपर नहीं जाता।

प्र. 1. *मुक्त-जीव लोकाग्र के आगे क्यों नहीं जाता?*

उत्तर— धर्म-द्रव्य का अभाव होने से मुक्त जीव लोकाग्रभाग के आगे नहीं जाते।

प्र. 2. *मुक्त-जीव अलोकाकाश में क्यों नहीं जाते?*

उत्तर— क्योंकि जीव और पुद्गलों का गमन धर्मद्रव्य की सहायता से ही होता है और अलोकाकाश में धर्मद्रव्य का अभाव है।

प्र. 3. *किसी भी कार्य के होने में दो कौन-से कारणों का सद्भाव होता है?*

उत्तर— उपादान-कारण ओर निमित्त-कारण।

प्र. 4. *उपादान-कारण किसे कहते हैं?*

उत्तर— पदार्थ के कार्य में होने की स्वयं की अपनी शक्ति उपादान-कारण है।

प्र. 5. *निमित्त-कारण किसे कहते हैं?*

उत्तर— पदार्थ से अन्य बाह्य-सामग्री जो उस कार्य रूप होने में सहायक हो, जैसे मिट्टी के घड़े का उपादान-कारण और कुम्हार-चक्र, दण्ड आदि निमित्त-कारण हैं।

प्र. 6. *कारण के और प्रकार से अन्य-भेद कौन-से हैं?*

उत्तर— समर्थ-कारण, असमर्थ-कारण।

प्र. 7. *समर्थ कारण किसे कहते हैं?*

उत्तर— प्रतिबंधक का अभाव होने पर उपादान-निमित्त-रूप दोनों-प्रकार की सहकारी समस्त सामग्री कारण है, इसके होने पर उसी समय तुरन्त ही कार्य की उत्पत्ति नियम से होती है।

प्र. 8. *असमर्थ-कारण किसे कहते हैं?*

उत्तर— उपादान-निमित्तरूप भिन्न-भिन्न प्रत्येक-सामग्री अथवा कोई एक दो आदि कम सामग्री को 'असमर्थ-कारण' कहते हैं।

प्र. 9. *मुक्तात्मायें पूर्ण-स्वतंत्र हो चुकी हैं, अब उन्हें बंधन कैसे संभव है?*

उत्तर— मुक्तात्मायें यद्यपि पूर्ण-स्वतंत्र हैं, किन्तु जीव-द्रव्य की गमनादि-क्रिया में उदासीन-निमित्त धर्मद्रव्य का अभाव होने से उनका लोकान्त से ऊपर गमन नहीं हो सकता है — यह स्वभाव है। ✿✿

क्षेत्र-काल-गति-लिंग-तीर्थ-चारित्र-प्रत्येकबुद्ध-बोधित-ज्ञानावगाहनान्तर-संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥9॥

अर्थ — क्षेत्र, काल, गति, लिंग, तीर्थ, चारित्र, प्रत्येकबुद्ध, बोधितबुद्ध, ज्ञान, अवगाहना, अन्तर, संख्या और अल्पबहुत्व — इनके द्वारा सिद्ध-जीव विभाग

करने योग्य है।

प्र. 1. *मुक्त-जीव में किन कारणों से भेद कर सकते हैं?*

उत्तर— क्षेत्र, काल, गति, लिंग, तीर्थ, चारित्र, प्रत्येकबुद्ध, बोधितबुद्ध, ज्ञान, अवगाहना, अन्तर, संख्या और अल्पबहुत्व की अपेक्षा सिद्ध-जीव में भेद कर सकते हैं।

प्र. 2. *'प्रत्युत्पन्न-नय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो नय केवल वर्तमान-पर्याय को ग्रहण करता है, उसे 'प्रत्युत्पन्न-नय' कहते हैं।

प्र. 3. *'भूत-प्रज्ञापन-नय' किसे कहते हैं?*

उत्तर— जो नय अतीत-पर्याय को ग्रहण करता है, उसे 'भूत-प्रज्ञापन-नय' कहते हैं।

प्र. 4. *मुक्त-जीवों की मुक्ति किस क्षेत्र से हुई है, इनमें कोई भेद हैं क्या?*

उत्तर— कोई भरत-क्षेत्र से, कोई ऐरावत-क्षेत्र से और कोई विदेह-क्षेत्र से सिद्ध हुए हैं। इसप्रकार क्षेत्र की अपेक्षा सिद्धों में भेद होता है।

प्र. 5. *मुक्त-जीवों में काल और गतिकृत-भेद है या नहीं?*

उत्तर— कोई उत्सर्पिणी-काल में सिद्ध हुए हैं और कोई अवसर्पिणी-काल में, कोई मनुष्य-गति से सिद्ध हुए हैं और कोई देव या नरकगति के मनुष्य होकर सिद्ध हुए हैं, यह काल और गतिकृत-भेद है।

प्र. 6. *लिंग की अपेक्षा किस लिंग से सिद्धि होती है?*

उत्तर— वास्तव में अलिंग से ही सिद्ध होते हैं अथवा द्रव्यपुलिंग से ही सिद्ध होते हैं। भावलिंग की अपेक्षा तीनों-लिंगों से मुक्त हो सकते हैं।

प्र. 7. *तीर्थ की अपेक्षा किस तीर्थ से सिद्धि होती है?*

उत्तर— कोई तीर्थंकर होकर सिद्ध होते हैं, कोई बिना तीर्थंकर हुए सिद्ध होते हैं। कोई तीर्थंकर-काल में सिद्ध होते हैं। और कोई तीर्थंकर के मोक्ष चले जाने के बाद उनके तीर्थ में सिद्ध होते हैं।

प्र. 8. *चारित्र की अपेक्षा से किस चारित्र में सिद्धि होती है?*

उत्तर— चारित्र की अपेक्षा कोई एक एक से अथवा कोई भूतपूर्व-नय की अपेक्षा दो-तीन चारित्र से सिद्ध होते हैं।

प्र. 9. *'प्रत्येकबुद्ध' और 'बोधितबुद्ध' किसप्रकार सिद्ध होते हैं?*

उत्तर— कोई स्वयं संसार से विरक्त होकर मोक्ष को प्राप्त होते हैं और कोई किसी के उपदेश से।

प्र. 10. *ज्ञान की अपेक्षा किस ज्ञान से जीव सिद्ध होते हैं?*

उत्तर— कोई एक ही ज्ञान से और कोई भूतपूर्व-नय की अपेक्षा दो, तीन, चार ज्ञान

से सिद्ध होते हैं।

प्र. 11. *'अवगाहना' किसे कहते हैं?*

उत्तर— आत्मप्रदेशों में व्याप्त करके रहना — इसका नाम 'अवगाहना' है।

प्र. 12. *'अवगाहना' कितने प्रकार की होती है?*

उत्तर— 'अवगाहना' उत्तम, मध्यम, जघन्य के भेद से तीन-प्रकार की होती है।

प्र. 13. *उत्तम, मध्यम, जघन्य-अवगाहना का प्रमाण कितना है?*

उत्तर— कोई उत्कृष्ट-अवगाहना पाँच-सौ-पच्चीस धनुष से सिद्ध होते हैं। कोई मध्यम अवगाहना से और कोई जघन्य अवगाहना से कुछ कम साढ़े तीन हाथ से सिद्ध होते हैं।

प्र. 14. *'अन्तर' किसे कहते हैं?*

उत्तर— एक-सिद्ध से दूसरे-सिद्ध होने मध्य का काल अथवा जितने समय तक कोई भी जीव मोक्ष नहीं जाए, उसको 'अन्तर' कहते हैं।

प्र. 15. *सिद्ध होने का अन्तर कितना है?*

उत्तर— एक सिद्ध से दूसरे सिद्ध होने का अन्तर जघन्य से एक-समय और उत्कृष्ट से आठ-समय का है; तथा विरहकाल-जघन्य से एक-समय और उत्कृष्ट से छह-मास का होता है।

प्र. 16. *'संख्या-अनुयोग' से 'अल्पबहुत्व' बताइये?*

उत्तर— जघन्य से एक समय में एक ही जीव सिद्ध होता है और उत्कृष्टता से 108 जीव सिद्ध होते हैं। तथा विदेहादि-क्षेत्रों से सिद्ध होते हैं। इसप्रकार सिद्ध-जीवों में बाह्य-निमित्त की अपेक्षा भेद की कल्पना की गई है। वास्तव में आत्मीय-गुणों की अपेक्षा कुछ भी भेद नहीं रहता। ✿✿

परिशिष्ट

तत्त्वार्थसूत्र के मूल सूत्र-पाठ

मंगलाचरण

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ।।1।।

प्रथम अध्याय

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि-मोक्षमार्गः ।।1।। तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ।।2।। तन्निसर्गादधिगमाद्वा ।।3।। जीवाजीवास्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा-मोक्षास्तत्त्वम् ।।4।। नाम-स्थापना-द्रव्य-भावतस्तन्न्यासः ।।5।। प्रमाणनयैरधिगमः ।।6।। निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः ।।7।। सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्प-बहुत्वैश्च ।।8।। मति-श्रुतावधि-मनःपर्यय-केवलानि ज्ञानम् ।।9।। तत्प्रमाणे ।।10।। आद्ये परोक्षम् ।।11।। प्रत्यक्षमन्यत् ।।12।। मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ताऽभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ।।13।। तदिन्द्रियानिन्द्रिय-निमित्तम् ।।14।। अवग्रहेहावाय-धारणाः ।।15।। बहु-बहुविध-क्षिप्रानिःसृतानुक्त-ध्रुवाणां सेतराणाम् ।।16।। अर्थस्य ।।17।। व्यञ्जनस्यावग्रहः ।।18।। न चक्षुरनिन्द्रियाभ्याम् ।।19।। श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेक-द्वादशभेदम् ।।20।। भवप्रत्ययोऽ-वधिर्देव-नारकाणाम् ।।21।। क्षयोपशम-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम् ।।22।। ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः ।।23।। विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ।।24।। विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्यो ऽवधि-मनःपर्यययोः ।।25।। मति-श्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्व-पर्यायेषु ।।26।। रूपिष्ववधेः ।।27।। तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ।।28।। सर्वद्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य ।।29।। एकादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ।।30।। मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च ।।31।। सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत् ।।32।। नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जुसूत्र-शब्द-समभिरूढैवंभूता नयाः ।।33।।

।। इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे प्रथमोऽध्यायः ।।

द्वितीय अध्याय

औपशमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिक-पारिणामिकौ च ।।1।। द्वि-नवाष्टादशैकविंशति-त्रिभेदाः यथाक्रमम् ।।2।। सम्यक्त्व-चारित्रे ।।3।। ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणि च ।।4।। ज्ञानाज्ञान-दर्शन-लब्धयश्चतुस्त्रि-त्रि-पंचभेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमासंयमाश्च ।।5।। गति-कषाय-लिंग-मिथ्यादर्शना-ज्ञानासंयतासिद्ध-लेश्याश्चतुश्चतुस्त्र्येकैकैकैक-षड्भेदाः ।।6।। जीवभव्याभव्यत्वानि

च ॥7॥ उपयोगो लक्षणम् ॥8॥ स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः ॥9॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥10॥ समनस्कामनस्का ॥11॥ संसारिणस्त्रस-स्थावराः ॥12॥ पृथिव्यप्तेजो-वायु-वनस्पतयः स्थावराः ॥13॥ द्वीन्द्रियादयस्त्रसाः ॥14॥ पंचेन्द्रियाणि ॥15॥ द्विविधानि ॥16॥ निर्वृत्त्युपकरणे द्रव्येन्द्रियम् ॥17॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥18॥ स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः-श्रोत्राणि ॥19॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः ॥20॥ श्रुतमनिन्द्रियस्य ॥21॥ वनस्पत्यन्तानामेकम् ॥22॥ कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि ॥23॥ संज्ञिनः समनस्काः ॥24॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः ॥25॥ अनुश्रेणि गतिः ॥26॥ अविग्रहा जीवस्य ॥27॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः ॥28॥ एकसमया अविग्रहा ॥29॥ एकं द्वौ त्रीन्वाऽनाहारकः ॥30॥ सम्मूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म ॥31॥ सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्चैकशस्तद्योनयः ॥32॥ जरायुजाण्डज-पोतानां गर्भः ॥33॥ देव-नारकाणामुप-पादः ॥34॥ शेषाणां सम्मूर्च्छनम् ॥35॥ औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि ॥36॥ परं परं सूक्ष्मम् ॥37॥ प्रदेशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ॥38॥ अनन्तगुणे परे ॥39॥ अप्रतीघाते ॥40॥ अनादिसम्बन्धे च ॥41॥ सर्वस्य ॥42॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्भ्यः ॥43॥ निरुपभोगमन्त्यम् ॥44॥ गर्भ-सम्मूर्च्छनजमाद्यम् ॥45॥ औपपादिकं वैक्रियिकम् ॥46॥ लब्धि-प्रत्ययं च ॥47॥ तैजसमपि ॥48॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं प्रमत्तसंयतस्यैव ॥49॥ नारक-सम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि ॥50॥ न देवाः ॥51॥ शेषास्त्रिवेदाः ॥52॥ औपपादिक-चरमोत्तमदेहासंख्येय-वर्षायुषोऽ-नपवर्त्यायुषः ॥53॥

॥ इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥

तृतीय अध्याय

रत्न-शर्करा-बालुका-पंक-धूम-तमो-महातमःप्रभा भूमयो घनाम्बुवाताकाश-प्रतिष्ठाः सप्ताऽधोऽधः ॥1॥ तासु त्रिंशत्पञ्चविंशति-पञ्चदश-दश-त्रि-पञ्चोनैक-नरक-शत-सहस्राणि पंच चैव यथाक्रमम् ॥2॥ नारका नित्याशुभतरलेश्या-परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः॥3॥ परस्परोदीरित-दुःखाः ॥4॥ संक्लिष्टाऽसुरोदीरित-दुःखाश्च प्राक् चतुर्थ्याः ॥5॥ तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमा सत्त्वानां परा-स्थितिः ॥6॥ जम्बूद्वीप-लवणोदादयः शुभनामानो द्वीप-समुद्राः ॥7॥ द्विर्द्विर्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥8॥ तन्मध्ये मेरुनाभिर्वृत्तो योजन-शत-सहस्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः॥9॥ भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि॥10॥ तद्विभाजिनः पूर्वपरायता हिमवन्महाहिमवन्निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः ॥11॥ हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः ॥12॥ मणिविचित्र-पार्श्वा उपरि-मूले च तुल्य-विस्तारा ॥13॥ पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-

पुण्डरीका ह्रदास्तेषामुपरि ।।14।। प्रथमो योजन-सहस्रायामस्तदर्द्ध-विष्कम्भो ह्रद: ।।15।। दशयोजनावगाह: ।।16।। तन्मध्ये योजनं पुष्करम् ।।17।। तद्द्विगुण-द्विगुणा ह्रदा: पुष्कराणि च ।।18।। तन्निवासिन्यो-देव्य: श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्य: पल्योपम-स्थितय: ससामानिक-पारिषत्का: ।।19।। गंगा-सिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्ण-रुप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा: सरितस्तन्मध्यगा: ।।20।। द्वयोर्द्वयो: पूर्वा: पूर्वगा: ।।21।। शेषास्त्वपरगा: ।।22।। चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गंगा-सिन्ध्वादयो नद्य: ।।23।। भरत: षड्विंशति-पञ्चयोजन-शतविस्तार: षट् चैकोनविंशति-भाग: योजनस्य ।।24।। तद्-द्विगुण-द्विगुणविस्तारा वर्षधर-वर्षा विदेहान्ता: ।।25।। उत्तरा दक्षिणतुल्या: ।।26।। भरतैरावतयोर्वृद्धिह्रासौ षट्समयाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्याम् ।।27।। ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिता: ।।28।। एक-द्वि-त्रि-पल्योपमस्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैवकुरवका: ।।29।। तथोत्तरा: ।।30।। विदेहेषु संख्येयकाला: ।।31।। भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवतिशत-भाग: ।।32।। द्विर्धातिकीखण्डे ।।33।। पुष्करार्द्धे च ।।34।। प्राङ् मानुषोत्तरान्मनुष्या: ।।35।। आर्या म्लेच्छाश्च ।।36।। भरतैरावतविदेहा: कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकुरुभ्य: ।।37।। नृस्थिती परावरे त्रिपल्योपमान्तर्मुहूर्ते ।।38।। तिर्यग्योनि-जानाञ्च ।।39।।

।। इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे तृतीयोऽध्याय: ।।

चतुर्थ अध्याय

देवाश्चतुर्णिकाया: ।।1।। आदितस्त्रिषु-पीतान्तलेश्या ।।2।। दशाष्ट-पंच-द्वादशविकल्पा: कल्पोपपन्नपर्यन्ता: ।।3।। इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषदात्मरक्ष-लोकपालानीक-प्रकीर्णकाभियोग्य-किल्विषिकाश्चैकश: ।।4।। त्रायस्त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्का: ।।5।। पूर्वयोर्द्वीन्द्रा: ।।6।। कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ।।7।। शेषा: स्पर्श-रूप-शब्द-मन:-प्रवीचारा: ।।8।। परे अप्रवीचारा: ।।9।। भवनवासिनो असुर-नाग-विद्युत्सुपर्णाग्नि-वात-स्तनितोदधि-द्वीप-दिक्कुमारा: ।।10।। व्यन्तरा: किन्नर-किंपुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचा: ।।11।। ज्योतिष्का: सूर्य-चन्द्रमसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णक-तारकाश्च ।।12।। मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।।13।। तत्कृत: कालविभाग: ।।14।। बहिरवस्थिता: ।।15।। वैमानिका: ।।16।। कल्पोपपन्ना: कल्पातीताश्च ।।17।। उपर्युपरि ।।18।। सौधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोतर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्रारेष्वानत-प्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।19।। स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धीन्द्रियावधि-विषयतो अधिका: ।।20।। गति-शरीर-परिग्रहाभिमानतो हीना: ।।21।। पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि-शेषेषु ।।22।। प्राग्ग्रैवेयकेभ्य:

कल्पाः ॥23॥ ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ॥24॥ सारस्वतादित्य-वह्न्यरुण-गर्दतोय-तुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ॥25॥ विजयादिषु द्विचरमाः ॥26॥ औपपादिक-मनुष्येभ्य शेषास्तिर्यग्योनयः ॥27॥ स्थितिरसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योप-मार्द्धहीनमिताः ॥28॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमे अधिके ॥29॥ सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त ॥30॥ त्रि-सप्त-नवैकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभिरधिकानि तु ॥31॥ आरणा-च्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु-सर्वार्थसिद्धौ च ॥32॥ अपरा पल्योपमधिकम् ॥33॥ परतः परतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ॥34॥ नारकाणां च द्वितीया-दिषु ॥35॥ दश-वर्ष-सहस्राणि प्रथमयाम् ॥36॥ भवनेषु च ॥37॥ व्यन्तराणां च ॥38॥ परा पल्योपमधिकम् ॥39॥ ज्योतिष्काणां च ॥40॥ तदष्टभागोऽपरा ॥41॥ लौकान्तिका-नामष्टौसागरोपमाणि सर्वेषाम् ॥42॥

॥ इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥

पंचम अध्याय

अजीवकाया धर्माधर्माकाश-पुद्गलाः ॥1॥ द्रव्याणि ॥2॥ जीवाश्च ॥3॥ नित्यावस्थितान्यरूपाणि ॥4॥ रूपिणः पुद्गलाः ॥5॥ आ आकाशादेकद्रव्याणि ॥6॥ निष्क्रियाणि च ॥7॥ असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मैकजीवानाम् ॥8॥ आकाशस्यानन्ताः ॥9॥ संख्येयाऽसंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥10॥ नाणोः ॥11॥ लोकाकाशेऽवगाहः ॥12॥ धर्माधर्मयोः कृत्स्ने ॥13॥ एकप्रदेशादिषु भाज्यः पुद्गलानाम् ॥14॥ असंख्येय-भागादिषु जीवानाम् ॥15॥ प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत् ॥16॥ गति-स्थित्युपग्रहौ धर्माधर्मयो-रुपकारः ॥17॥ आकाशस्यावगाहः ॥18॥ शरीर-वाङ्-मनः-प्राणापानाः पुद्गला-नाम् ॥19॥ सुख-दुःख-जीवित-मरणोपग्रहाश्च ॥20॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम् ॥21॥ वर्तना-परिणाम-क्रिया-परत्वापरत्वे च कालस्य ॥22॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः ॥23॥ शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छायाऽऽतपोद्योत-वन्तश्च ॥24॥ अणवः स्कन्धाश्च ॥25॥ भेद-संघातेभ्य उत्पद्यन्ते ॥26॥ भेदादणुः ॥27॥ भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः ॥28॥ सद् द्रव्यलक्षणम् ॥29॥ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य-युक्तं सत् ॥30॥ तद्भावाव्ययं नित्यम् ॥31॥ अर्पितानर्पितसिद्धेः ॥32॥ स्निग्ध-रूक्षत्वाद् बन्धः ॥33॥ न जघन्यगुणानाम् ॥34॥ गुणसाम्ये सदृशानाम् ॥35॥ द्वयधिकादि-गुणानां तु ॥36॥ बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च ॥37॥ गुण-पर्ययवद् द्रव्यम् ॥38॥ कालश्च ॥39॥ सोऽनन्तसमयः ॥40॥ द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः ॥41॥ तद्भावः परिणामः ॥42॥

॥ इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे पंचमोऽध्यायः ॥

छठा अध्याय

काय-वाङ्-मनःकर्मयोगः ॥1॥ स आस्रवः ॥2॥ शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य ॥3॥ सकषायाकषाययोः सांपरायिकेर्यापथयोः ॥4॥ इन्द्रिय-कषायाव्रत-क्रियाः पञ्च-चतुः-पञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥5॥ तीव्र-मन्द-ज्ञाताज्ञात-भावाधिकरण-वीर्य-विशेषेभ्यस्तद्विशेषः॥6॥ अधिकरणं जीवाजीवाः ॥7॥ आद्यं संरम्भ-समारम्भारम्भ-योग-कृत-कारितानुमत-कषाय-विशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥8॥ निर्वर्तना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा द्वि-चतु-र्द्वि-त्रिभेदाः परम्॥9॥ तत्प्रदोष-निह्नव-मात्सर्यान्तरायासादनोपघाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः ॥10॥ दुःख-शोक-तापाक्रन्दन-वध- परिदेवनान्यात्मपरोभय-स्थानान्यसद्वेद्यस्य ॥11॥ भूत-व्रत्यनुकम्पा-दान-सरागसंयमादि- योगःक्षान्तिः-शौचमिति सद्वेद्यस्य ॥12॥ केवलि-श्रुत-संघ-धर्म-देवावर्णवादो दर्शनमोहस्य ॥13॥ कषायोदयात्तीव्रपरिणामश्चारित्रमोहस्य ॥14॥ बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्यायुषः ॥15॥ माया तैर्यग्योनस्य ॥16॥ अल्पारम्भ-परिग्रहत्वं मानुष्यस्य ॥17॥ स्वभावमार्दवं च ॥18॥ निश्शील-व्रतत्वं च सर्वेषाम् ॥19॥ सरागसंयम-संयमासंयमाकामनिर्जरा-बालतपांसि देवस्य ॥20॥ सम्यक्त्वं च ॥21॥ योगवक्रता-विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः ॥22॥ तद्विपरीतं शुभस्य ॥23॥ दर्शन-विशुद्धिर्विनयसम्पन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचारोऽभीक्ष्णज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्याग-तपसी-साधुसमाधिर्वैयावृत्यकरणमर्हदाचार्य-बहुश्रुत-प्रवचनभक्तिरावश्यकापरिहाणिर्मार्ग-प्रभावना-प्रवचनवत्सलत्वमिति तीर्थंकरत्वस्य ॥24॥ परात्म-निन्दा-प्रशंसे सदसद्गुणो-च्छादनोद्भावने च नीचै-र्गोत्रस्य ॥25॥ तद्विपर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेकौ चोत्तरस्य ॥26॥ विघ्नकरणमन्तरायस्य ॥27॥

॥ इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे षष्ठोऽध्यायः ॥

सप्तम अध्याय

हिंसाऽनृत-स्तेयाब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरतिर्व्रतम् ॥1॥ देश-सर्वतोऽणु-महती ॥2॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च-पञ्च ॥3॥ वाङ्-मनो-गुप्तीर्यादाननिक्षेपण-समित्यालोकित-पान-भोजनानि पञ्च ॥4॥ क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्यनुवीचीभाषणञ्च पञ्च ॥5॥ शून्यागार-विमोचितावास-परोपरोधाकरण-भैक्ष्यशुद्धि-सधर्माविसंवादाः पञ्च ॥6॥ स्त्रीरागकथाश्रवण-तन्मनोहरांगनिरीक्षण-पूर्वरतानुस्मरण-वृष्येष्टरस-स्वशरीर-संस्कारत्यागाः पञ्च ॥7॥ मनोज्ञामनोज्ञेन्द्रियविषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च ॥8॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायावद्यदर्शनम् ॥9॥ दुःखमेव वा ॥10॥ मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थानि च सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्यमानाविनेयेषु ॥11॥ जगत्कायस्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम् ॥12॥ प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥13॥ असदभिधान-मनृतम् ॥14॥

अदत्तादानं स्तेयम् ।।15।। मैथुनमब्रह्म ।।16।। मूर्च्छा परिग्रहः ।।17।। निश्शल्यो व्रती ।।18।। अगार्यनगारश्च ।।19।। अणुव्रतोऽगारी ।।20।। दिग्देशानर्थदण्डविरति-सामायिक-प्रोषधोपवासोपभोग-परिभोग-परिमाणातिथिसंविभागव्रत-संपन्नश्च ।।21।। मारणान्तिकीं सल्लेखनां जोषिता ।।22।। शंकाऽऽकांक्षा-विचिकित्सा-अन्यदृष्टिप्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरतिचाराः ।।23।। व्रतशीलेषु पञ्च-पञ्च यथाक्रमम् ।।24।। बन्ध-वधच्छेदाति-भारारोपणान्नपाननिरोधाः ।।25।। मिथ्योपदेश-रहोभ्याख्यान-कूटलेखक्रिया-न्यासापहार-साकारमन्त्रभेदाः ।।26।। स्तेनप्रयोग-तदाहृतादान-विरुद्धराज्यातिक्रम-हीनाधिकमानोन्मान-प्रतिरूपकव्यवहाराः ।।27।। परविवाहकरणेत्वरिका-परिगृहीताऽपरिगृहीता-गमनानंग-क्रीडा-कामतीव्राभिनिवेशाः ।।28।। क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य-सुवर्ण-धन-धान्य-दासी-दास-कुप्य-प्रमाणातिक्रमाः ।।29।। ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रम-क्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यन्तराधानानि ।।30।। आनयन-प्रेष्यप्रयोग-शब्दरूपानुपात-पुद्गलक्षेपाः ।।31।। कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्या-समीक्ष्याधिकरणोपभोग-परिभोगानर्थक्यानि ।।32।। योग-दुष्प्रणिधानानादर-स्मृत्यनुप स्थानानि ।।33।। अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गाऽऽदान-संस्तरोपक्रमणानादर-स्मृत्यनुप-स्थानानि ।।34।। सचित्त-सम्बन्ध-सम्मिश्राभिषव-दुष्पक्वाहाराः ।।35।। सचित्त-निक्षेपा-पिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः ।।36।। जीवित-मरणाशंसा-मित्रानुराग-सुखानुबंध-निदानानि ।।37।। अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ।।38।। विधि-द्रव्य-दातृ-पात्र-विशेषात्तद्विशेषः ।।39।।

।। इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सप्तमोऽध्यायः ।।

अष्टम अध्याय

मिथ्यादर्शनाविरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्धहेतवः ।।1।। सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते स बन्धः ।।2।। प्रकृति-स्थित्यनुभव-प्रदेशास्तद्विधयः ।।3।। आद्यो ज्ञानदर्शनावरण-वेदनीय-मोहनीयायुर्नाम-गोत्रान्तरायाः।।4।। पञ्च-नव-द्व्यष्टा-विंशति-चतुर्द्विचत्वारिंशद्-द्वि-पञ्च-भेदा यथाक्रमम् ।।5।। मति-श्रुतावधि-मनःपर्यय-केवलानाम् ।।6।। चक्षुरचक्षुरवधि-केवलानां निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला-स्त्यानगृद्धयश्च ।।7।। सदसद्वेद्ये ।।8।। दर्शन-चारित्र-मोहनीयाकषाय-कषायवेदनीया-ख्यास्त्रि-द्वि-नव-षोडशभेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदुभयान्यकषाय-कषायौ हास्य-रत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्रीपुन्नपुंसकवेदा अनन्तानुबन्ध्यप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः ।।9।। नारक-तैर्यग्योन-मानुष-दैवानि ।।10।। गति-जाति-शरीरांगोपांग-निर्माण-बंधन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गंध-वर्णानुपूर्व्यागुरुलघूपघात-परघातातपोद्योतोच्छ्वास-विहायोगतयः प्रत्येकशरीर-त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय-यशःकीर्तिः सेतराणि तीर्थंकरत्व च ।।11।।

उच्चैर्नीचैश्च ॥12॥ दान-लाभ-भोगोपभोग-वीर्याणाम् ॥13॥ आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्-सागरोपम-कोटीकोट्यः परा स्थितिः ॥14॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य ॥15॥ विंशतिर्नाम-गोत्रयोः ॥16॥ त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमाण्यायुषः ॥17॥ अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ॥18॥ नामगोत्रयोरष्टौ ॥19॥ शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ॥20॥ विपाकोऽनुभवः ॥21॥ स यथानाम् ॥22॥ ततश्च निर्जरा ॥23॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्म-प्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ॥24॥ सद्वेद्य-शुभायुर्नाम-गोत्राणि पुण्यम् ॥25॥ अतोऽन्यत्पापम् ॥26॥

॥ इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे अष्टमोऽध्यायः ॥

नवम अध्याय

आस्रवनिरोधः संवरः ॥1॥ स गुप्ति-समिति-धर्मानुप्रेक्षा-परिषहजय-चारित्रैः ॥2॥ तपसा निर्जरा च ॥3॥ सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः ॥4॥ ईर्या-भाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥5॥ उत्तमक्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्यागाकिंचन-ब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥6॥ अनित्याशरण-संसारैकत्वान्यत्वाशुच्यास्रव-संवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ-धर्मस्वाख्याः तत्त्वानुचिन्तनमनुप्रेक्षाः ॥7॥ मार्गाच्यवन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परिषहाः ॥8॥ क्षुत्पिपासा-शीतोष्ण-दंशमशक-नाग्न्यारति-स्त्री-चर्या-निषद्या-शय्याऽऽक्रोश-वध-याचना-अलाभ-रोग-तृणस्पर्श-मल-सत्कार-पुरस्कार-प्रज्ञाज्ञानादर्शनानि ॥9॥ सूक्ष्मसाम्पराय-छद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश ॥10॥ एकादशजिने ॥11॥ बादर-साम्पराये सर्वे ॥12॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥13॥ दर्शनमोहान्तराययोरदर्शनालाभौ ॥14॥ चारित्रमोहे-नाग्न्यारति-स्त्री-निषद्याऽऽक्रोश-याचना-सत्कार-पुरस्काराः ॥15॥ वेदनीये शेषाः ॥16॥ एकादयो भाज्या युगपदेकस्मिन्नैकोनविंशतेः ॥17॥ सामायिकच्छेदोपस्थापना-परिहारविशुद्धि-सूक्ष्मसांपराय-यथाख्यातमिति चारित्रम् ॥18॥ अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्याग-विविक्तशय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः ॥19॥ प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरम् ॥20॥ नव-चतुर्दश-पञ्च-द्विभेदा यथाक्रमं प्राग् ध्यानात् ॥21॥ आलोचन-प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारोपस्थापनाः ॥22॥ ज्ञान-दर्शन-चारित्रोपचाराः ॥23॥ आचार्यो-पाध्याय-तपस्वि-शैक्ष-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधु-मनोज्ञानाम् ॥24॥ वाचना-पृच्छनाऽनुप्रेक्षाऽऽम्नाय-धर्मोपदेशाः ॥25॥ बाह्याभ्यन्तरोपध्योः ॥26॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्र-चिन्तानिरोधो ध्यानमान्तर्मुहूर्तात् ॥27॥ आर्त्त-रौद्र-धर्म्य-शुक्लानि ॥28॥ परे मोक्षहेतू ॥29॥ आर्तममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृति-समन्वाहारः ॥30॥ विपरीतं मनोज्ञस्य ॥31॥ वेदनायाश्च ॥32॥ निदानं च ॥33॥ तदविरत-देशविरत-प्रमत्तसंयतानाम् ॥34॥ हिंसानृत-स्तेय-विषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरत-देशविरतयोः ॥35॥ आज्ञापाय-

विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम् ॥36॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः ॥37॥ परे केवलिनः ॥38॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्क-सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-व्युपरतक्रियानिवर्तीनि ॥39॥ त्र्येकयोग-काययोगायोगानाम् ॥40॥ एकाश्रये सवितर्क-वीचारे पूर्वे ॥41॥ अवीचारं द्वितीयम् ॥42॥ वितर्कः श्रुतम् ॥43॥ वीचारोऽर्थ-व्यंजन-योगसंक्रान्तिः ॥44॥ सम्यग्दृष्टि-श्रावकाविरतानन्तविजोयक-दर्शनमोह-क्षपकोपशमकोपशान्तमोह-क्षपक-क्षीणमोह-जिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुण-निर्जराः ॥45॥ पुलाक-बकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातका निर्ग्रन्थाः ॥46॥ संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थ-लिंग-लेश्योपपादस्थान-विकल्पतः साध्याः ॥47॥

॥ इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे नवमोऽध्यायः ॥

दशम अध्याय

मोहक्षयाज्ज्ञान-दर्शनावरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम् ॥1॥ बन्धहेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्मविप्रमोक्षो मोक्षः ॥2॥ औपशमिकादि-भव्यत्वानां च ॥3॥ केवल-सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्यः ॥4॥ तदनन्तरमूर्ध्वं गच्छत्यालोकान्तात् ॥5॥ पूर्वप्रयोगा-दसंगत्वाद् बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च ॥6॥ आविद्ध-कुलाल-चक्रवद् व्यगत-लेपालाबुवदेरण्ड-बीजवदग्निशिखावच्च ॥7॥ धर्मास्तिकायाभावात् ॥8॥ क्षेत्र-काल-गति-लिंग-तीर्थ-चारित्र-प्रत्येकबुद्ध-बोधित-ज्ञानावगाहनान्तर-संख्याल्पबहुत्वतः साध्याः ॥9॥

॥ इतिश्री तत्त्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्यायः ॥